राजभाषा भारती

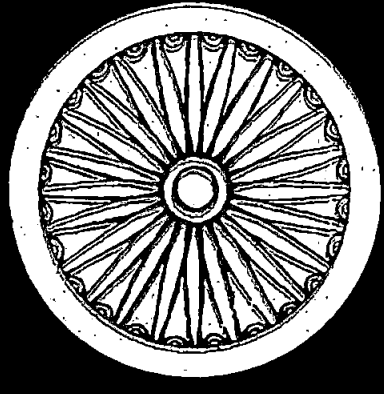

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली

गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा आयोजित क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन में पुरस्कार प्रदान करते हुए माननीय गृह राज्यमंत्री श्री माणिक राव एच. गावीत जी । साथ में हैं राजभाषा विभाग की संयुक्त सचिव श्रीमती पी.वी. वल्सला जी कुट्टी तथा निदेशक श्री शचीन्द्र शर्मा जी ।

गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा आयोजित क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन में पुस्तक, पत्र-पत्रिकाओं की प्रदर्शनी का अवलोकन करते हुए माननीय गृह राज्यमंत्री श्री माणिक राव एच. गावीत जी, श्री प्रशांत कुमार मिश्र, सचिव, भारत सरकार, श्रीमती पी.वी. वल्सला जी. कुट्टी, संयुक्त सचिव तथा श्री वी.सी. मंडल, निदेशक राजभाषा विभाग ।

भारति जय विजय करे, कनक-शस्य-कमल धरे
–निराला

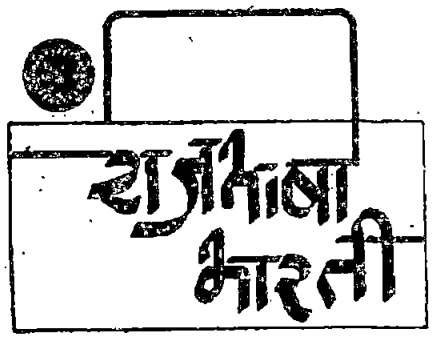

राजभाषा विभाग की त्रैमासिकी

वर्ष : 29

अंक : 116

जनवरी–मार्च, 2007

❑ संपादक
बिजय चंद्र मंडल
निदेशक (अनुसंधान)
दूरभाष : 24617807

❑ सहायक संपादक
शांति कुमार स्याल
दूरभाष : 24698054
24649387/207

❑ नि:शुल्क वितरण के लिए

पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखक के हैं । सरकार अथवा राजभाषा विभाग का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है ।

❑ पत्र-व्यवहार का पता :
संपादक, राजभाषा भारती,
राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय,
लोकनायक भवन (द्वितीय तल),
खान मार्किट, नई दिल्ली–110003

ईमेल–ru-ol@mha.nic.in
patrika–ol@mha.nic.in
पोर्टल–www.rajbhasha.gov.in.

विषय-सूची

			पृष्ठ
●	संपादकीय		(iii)
●	चिंतन		
	1. भाषा संरचना और सामर्थ्य	–बल्लभ डोभाल	1
	2. नागरी लिपि की वैज्ञानिकता	–प्रभुलाल चौधरी	3
	3. वरिष्ठ स्तर पर हिंदी का प्रयोग : समस्याएं और समाधान	–डॉ. आर. पी. सिंह	5
	4. राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी की वास्तविकता	–डॉ. नरेश कुमार	8
	5. वर्ष 2006 का हिंदी साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्य	–डॉ. सर्वदानन्द द्विवेदी	9
	6. हिंदी : तब और अब	–मुकेश कुमार (अप्पू)	11
●	प्रशासनिक		
	7. एक सच्चा एवं आदर्श सभ्य लोक-सेवक	–प्रशांत कुमार मिश्र	13
●	साहित्यिकी		
	8. काव्य का रसास्वादन	–डॉ. राम दास 'नादार'	21
●	पुरानी यादें – नए परिप्रेक्ष्य		
	9. राष्ट्रभाषा हिंदी-हिंदुस्तानी और आचार्य काका कालेलकर साहब	–बालशौरि रेड्डी	25
	10. हिंदी साहित्य के संत कवियों की प्रेम साधना	–डॉ. एन. एस. शर्मा	27
●	आर्थिक		
	11. निवेश का एक बेहतर विकल्प म्यूचुअल फंड	–राकेश कुमार उज्ज्वल	31
●	भूगोलिक		
	12. भारत में सभ्यता के विकास और यमुना घाटी	–डॉ. विजय कुमार उपाध्याय	34

2432 HA/07—1A

- **राजभाषा संबंधी गतिविधियां**
  - (क) विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समितियों की बैठकें 36
  - (ख) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों की बैठकें 45
  - (ग) कार्यशालाएं 55
  - (घ) हिंदी दिवस 65
- **संगोष्ठी/सम्मेलन** 74
- **पुरस्कार/प्रतियोगिताएं** 84
- **प्रशिक्षण** 88
- **पाठकों के पत्र** 91

संपादकीय

राजभाषा हिंदी के संवर्धन, विकास तथा प्रचार-प्रसार के लिए राजभाषा विभाग कटिबद्ध है । विभाग का यह प्रयास रहता है कि केंद्रीय सरकार के कार्यालयों के कार्मिक अपना अधिक से अधिक कार्य मूल रूप से हिंदी में करें । अपनी टिप्पणियों आदि में आम बोल-चाल के शब्दों को अपनाएं जिससे सभी कार्मिक इसे आसानी से समझ सकें । इस कार्य में तेजी लाने के लिए विभाग की अनेक प्रोत्साहन योजनाएं हैं । हिंदी में कार्य करने के लिए विभाग समय-समय पर राजभाषा सम्मेलनों का आयोजन भी करता है जिनमें काफी अधिक संख्या में अधिकारी/कर्मचारी भाग लेते हैं । इन सम्मेलनों में राजभाषा नीति के उत्कृष्ट कार्यान्वयन के लिए भारत सरकार के कार्यालयों/उपक्रमों/बैंकों आदि को पुरस्कृत किया जाता है । जनवरी-मार्च, 2007 के दौरान दक्षिण व दक्षिण-पश्चिम क्षेत्रों के लिए कोच्चि में, मध्य और पश्चिम क्षेत्रों के लिए जयपुर, दिल्ली और उत्तर क्षेत्रों के लिए वाराणसी तथा पूर्व एवं पूर्वोत्तर क्षेत्रों के लिए कोलकाता में राजभाषा विभाग ने संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन आयोजित किए हैं जिनकी राजभाषा भारती के पाठकों के लिए विस्तृत जानकारी प्रस्तुत अंक में दी गई है ।

साथ ही इस अंक में विभिन्न स्तंभों के अंतर्गत गंभीर और विचारोत्तेजक सामग्री प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है । 'चिंतन' के अंतर्गत श्री बल्लभ डोभाल द्वारा "भाषा संरचना और सामर्थ्य" को भारतीय दर्शन के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है । "नागरी लिपि की वैज्ञानिकता" (श्री प्रभुलाल चौधरी), "हिंदी का प्रयोग : समस्याएं और समाधान" (डॉ. आर. पी. सिंह), "हिंदी की वास्तविकता" (डॉ. नरेश कुमार), "वर्ष 2006 का हिंदी का साहित्यिक सांस्कृतिक परिदृश्य" (डॉ. सर्वदानन्द द्विवेदी) तथा "हिंदी : तब और अब" (मुकेश कुमार) पर लेखकों ने अपने विचार दिए हैं । इसी तरह 'साहित्यिकी' स्तंभ में "काव्य का रसास्वादन",

पुरानी यादें .....में "आचार्य काका कालेलकर" तथा "संतकवियों की प्रेम साधना" पर लेख दिए गए हैं । प्रशासनिक लेख में श्री प्रशांत कुमार मिश्र, सचिव, भारत सरकार द्वारा "एक सच्चा एवं आदर्श सभ्य लोक-सेवक" लेख बड़े ही रोचक ढंग से लोक-सेवक के लिए मार्ग दर्शन करेगा । इसके अतिरिक्त म्यूचुअल फंड तथा भूगोलिक लेखों में पाठकों के लिए सामान्य जानकारी दी गई है ।

राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के प्रति राजभाषा भारती की प्रतिबद्धता के अनुरूप राजभाषा संबंधी गतिविधियां तथा अन्य नियमित स्तंभ भी सदैव की भांति इस अंक में दिए जा रहे हैं ।

आशा है "राजभाषा भारती" का अंक पाठकों को सुरुचिपूर्ण तथा उपयोगी लगेगा ।

–संपादक

चिंतन

भाषा : संरचना और सामर्थ्य

—बल्लभ डोभाल*

"मिथ्या भाषण से बढ़कर कोई पाप नहीं है । जहां के लोग सामाजिक स्तर पर मिथ्या भाषण करते हैं, उस राष्ट्र को देवता छोड़ जाते हैं और रोग-व्याधियां उस राष्ट्र का विनाश कर डालते हैं ।"

–आचार्य आत्रेय पुनर्वसु

सृष्टि में जो भी कुछ दिखने में आता है वह मनुष्य की इच्छा के अनुकूल ही प्रकट हुआ है । मनुष्य ही सृष्टि का उपभोक्ता है । नाद (वाणी) का योग्य अधिकारी भी मनुष्य को ही बताया गया है, जिसने जीवन के हर क्षेत्र में आश्चर्यजनक उपलब्धियां अर्जित की है । सोचो, यदि नाद न होता तो इस गूंगी सृष्टि का क्या अर्थ रह जाता । नाद में जागृति है....और सृष्टि के रचना-क्रम में सर्वाधिक महत्व नाद (वाणी) का ही है । सारे शब्द, अक्षर जो ध्वनि मात्र प्रतीत होते हैं वे नाद के ही मूर्तरूप हैं ।

ऋग्वेद में नाद (ध्वनि) का अक्षर से लेकर भाषा बनने तक की स्थितियों का जो वर्णन है वह अन्यत्र नहीं मिलता । नाद को ब्रह्म का दर्जा इसलिए दिया गया है कि जागृति के साथ-साथ वहां चेतना भी सक्रिय है ।

आचार्य सायण ने वेदों की व्याख्या करते हुए उसे आहतनाद बताया है जो हमारे शरीर के विभिन्न अवयवों से टकरा कर भाषा का रूप लेता है । आचार्य पाणिनि अपने संस्कृत व्याकरण की रचना में शिव के डमरू से निकलने वाली चौदह ध्वनियों को 'माहेश्वराणि सूत्राणि' कह कर उनसे निकलने वाले अक्षरों के शरीर में आठ स्थान निर्धारित करते हैं । वाणी और अर्थ की प्राप्ति के लिए कालिदास शिव और पार्वती–दोनों को सृष्टि के माता-पिता मानकर अपनी श्रद्धा अर्पित करते हैं :–

वागर्थादिव सम्पृक्तौ वागर्थ प्रतिपत्यये ।
जगतः पितरौ बन्दे पार्वती परमेश्वरौ ।।

ऋग्वेद ध्वनि, अक्षर, शब्द और भाषा आदि, पर गहन विवेचन कर हमारे शरीर से उनका तादात्म्य स्थापित करता है । सृष्टि में व्याप्त होने वाले इस आहतनाद का मूल भी अनहद (अनाहत नाद) ही है । जो कि प्राणी के भीतर स्थायी रूप में विद्यमान है । संत कबीर के अनुसार इस घट (शरीर) के भीतर वह बजता ही रहता है । कुछ क्षणों के लिए यदि अपनी स्वास-क्रिया को रोक लें, नाक, कान, आंख, मुंह बंद कर लें तो भीतर प्राणों का जो आंदोलन चलता है, वही अनाहत नाद है, जिसे अन्तर्नाद या अन्तर्ध्वनि भी कहा गया है । साधना के द्वारा इसकी शक्ति को प्राप्त किया जा सकता है ।

छान्दोग्य उपनिषद् में लिखा है कि मनुष्य का सार वाणी है । वहां वाक्, इला, भारती, सरस्वती को वाणी का देवता कहा गया है । इस देवता शब्द को वेदों ने व्यापक अर्थों में लिया है । ऋग्वेद के अनुसार हर पदार्थ में देवतत्व समाहित है, इसीलिए कण-कण में देवता का वास कहा जाता है । वहां 'अग्निदेवता, वातोदेवता, सूर्योदेवता, चंद्रमा देवता, बसवोदेवता' कह कर उन तत्वों की संस्तुति की गई है जो सदा हमारे आसपास विद्यमान हैं और जिनके बिना जीवन असंभव है । मानव प्राणी के लिए ये ही प्रत्यक्ष और

*डब्ल्यू-46, सैक्टर-12, नोएडा-201301

2432 HA/07—2A

परम देवता हैं । लेकिन इन देवताओं की अनदेखी कर हम उन देवताओं की तलाश करते फिरते हैं जिनका जीवन से वैसा संबंध नहीं है जो इन प्रत्यक्ष देवताओं का है । नाद स्वयं वेद-रूप है । नाद से सर्वप्रथम कविता जन्म लेती है, इसलिए हमारा आदि साहित्य कविता में लिखा गया है, जिसे कविवर निराला ने-'तुम नाद वेद ओंकार सार, मैं कवि शृंगार शिरोमणि ।' कहकर स्पष्ट किया है । इस नाद वेद का स्पन्दन अक्षर, शब्द, मंत्र आदि के माध्यम से हमारे शरीर में होता रहता है जहां हमारी चेतना में सृजनात्मक शक्तियां निरंतर कार्यरत रहती हैं । हमारे शरीर के अन्दर कौन-सा देवता कहां विद्यमान है, इसका वेदों ने विस्तार से वर्णन किया है । यदि इसका सही ज्ञान प्राप्त हो जाए, तब मनुष्य स्वयं देवता बन जाता है ।

सब कुछ जानने के बावजूद मनुष्य की शक्ति के बाहर बहुत कुछ रह जाता है, तब वह किसी अदृश्य में देवता की तलाश करने लगता है । किन्तु शास्त्र कहते हैं कि 'आत्मबल का संचय करो । आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ते रहोगे तो देवता कहलाओगे ।'

'नरत्वं दुर्लभं लोके शक्तिस्तत्र च दुर्लभा' (अग्निपुराण) मनुष्य जीवन दुर्लभ है । प्राणियों में प्रकृति की सर्वाधिक सुन्दर और सार्थक रचना मनुष्य को ही माना गया है । नर से नारायण बनने की अनेकों कहानियां हैं । किन्तु अपने भीतर की शक्तियों से अपरिचित रह जाने के कारण मनुष्य देवता बनने से रह जाता है । स्वयं देवता बनने की जगह वह देवताओं की रचना करने में बहक जाता है । ये मन्दिर, मस्जिद, चर्च और तीर्थादि सब उसी के द्वारा निर्मित हैं । अपनी सम्पूर्ण आस्थाओं को वहां समर्पित कर उसने अनेक प्रकार के देवी-देवताओं की रचना कर डाली । सृष्टि के निर्माण और व्यापक विस्तार में भी मनुष्य की अहं भूमिका रही है । देवता तो वहां साक्षी भाव है । अपना अस्तित्व खोकर देवताओं की शरण में जाना मनुष्य की सबसे बड़ी दुर्बलता रही है । देवता शब्द को लेकर ऋग्वेद ने ऐसे प्रश्न खड़े किए हैं जिनका कोई समाधान नहीं है । वहां दम्पत्ति को भी देवता मान कर गृहस्थ जीवन पर विचार किया गया है ।

यो नः पिता जनिता यो विधाता.....स नो बन्धुर्जनिता स विधाता । त्वं हि नः पिता व सो । त्वं माता शतःक्रतो वभूविय । (ऋ. 1-2-179)

अर्थात् हरेक माता अपने गर्भ में एक पिता का निर्माण करती है और हर पिता अपने शुक्र से एक माता का निर्माण करता है । बताओ, कौन किसका निर्माण करता है ?.....मनुष्य और देवता के निर्माण में यही प्रश्न सामने आता है ।

भारतीय-दर्शन के अन्तर्गत राष्ट्र को भी एक देवता माना गया है । वाणी के संदर्भ को लेकर आचार्य आत्रेय पुनर्वसु एक जगह लिखते हैं कि मिथ्यावादन से बढ़कर कोई पाप नहीं है । जहां के लोग सामाजिक स्तर पर मिथ्याभाषण करते हैं, उस राष्ट्र को देवता छोड़ जाते हैं और रोग-व्याधियां उस राष्ट्र का विनाश कर डालते हैं । इसलिए वाणी का सही उपयोग होना चाहिए ।

आगे महर्षि पातंजलि का कहना है कि-'प्रतीति पदार्थ को ध्वनि शब्दः ।' यानि पदार्थ का बोध कराने वाली जो ध्वनि है उसी को व्यवहार में शब्द कहा जाता है । शक्ति को एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाने का माध्यम शब्द ही है । इसमें दो राय नहीं कि आधुनिक वैज्ञानिकों ने कितने ही प्रकार की शक्तियों को वशीभूत कर उनकी सीमाएं भी निर्धारित कर दी हैं, किंतु प्राचीन विद्वानों की मान्यता है कि शब्द की शक्ति सीमा में रहते हुए भी असीमित है । उसे भौतिक-विज्ञान की सीमा में नहीं बांधा जा सकता । इस कारण वहां शब्द को आध्यात्मिक माना गया है ।

न सोस्ति प्रत्ययो लोके यः शब्दानुगमादृते ।
अनुविद्ध मिवज्ञानं सर्वं शब्देन भासते ।।

वाणी पदार्थ के रहस्य को प्रकाशित करती है और स्वयं अपना भी । विश्व में ऐसा कोई ज्ञान नहीं जो वाणी के प्रकाश से दूर हो । सारा साहित्य वाणी (शब्द) का ही संकलन है । शब्द केवल प्रेम, विद्वेष, क्रोध, वात्सल्य आदि, भावों को ही प्रकट नहीं करता, अपितु यह ज्ञान भी कराता है कि उसका उच्चारण करने वाला स्त्री है या पुरुष । पक्षी है या जानवर, अच्छा है या बुरा है ।

मत्स्यपुराण में ध्वनि, अक्षर शब्द आदि के रहस्य को प्रकट किया गया है । वहां वर्णमाला के प्रत्येक अक्षर को मंत्र माना है । जिसका शुद्ध उच्चारण ही विघ्न-बाधाओं को दूर करने वाला है ।

नामत्रमक्षरे किञ्चिन्नच द्रव्य मनौषधम् ।
नायोग्य पुरुषः कश्चिद् प्रयोक्ताएव दुर्लभा ।।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

2432 HA/07—2B

नागरी लिपि की वैज्ञानिकता

—प्रभुलाल चौधरी*

नागरी लिपि की वैज्ञानिकता स्पष्ट करने से पहले देवनागरी लिपि का नागरी लिपि का उद्‌भव, इतिहास और उसके विकास पर विचार करना अनिवार्य हो जाता है ।

प्रस्तावना

लिपि का उद्‌भव कब हुआ इस संदर्भ में अनेक मतभेद है, उतने ही जितने भाषा की उत्पत्ति के संबंध में । भाषा और लिपि के उद्‌भव के विषय में सिर्फ अनुमान लगाया जाता है । मुनष्य अपने विचारों और भावों का लिपिबद्‌ध रूप में कब से अभिव्यक्त कर रहा है इसका अभी तक यथोचित समाधान नहीं मिला । मान्य सत्य तो यह है कि लिपि का इतिहास अत्यन्त प्राचीन है विद्‌वानों ने लिपि का इतिहास 10,000 वर्ष पूर्व मान्य किया है । विद्‌वानों का मानना है कि लगभग 4,000 वर्ष पूर्व से ही लेखन का कार्य समुचित और ढंग से चलता आ रहा है । इसी आधार पर कहा जा सकता है कि लिपि का उद्‌भव लगभग 10,000 वर्ष पूर्व हुआ था और उसका व्यवस्थित प्रयोग 5,000 वर्ष पूर्व से ही होने लगा है ।

प्राचीन काल में लगभग ग्यारह लिपियाँ प्रचलित थी ।

(1) चित्र लिपि (2) सूत्र लिपि (3) प्रतीकात्मक लिपि (4) भावमूलक लिपि (5) फन्नी लिपि (6) गढाक्षरिक लिपि (7) क्रीट लिपि (8) हिट्‌टाइप लिपि (9) सिंधु घाटी की लिपि (10) चीनी लिपि (11) ध्वनि मूलक लिपि ।

ध्वनिमूलक लिपि को छोड़कर अन्य लिपियों में चिह्नों अथवा चित्रों की प्रधानता थी । परन्तु ये चिह्न या चित्र किसी भाव या ध्वनि को पूर्णत: व्यक्त नहीं कर पाते थे, तथा जटिल व दुरुह थे इसीलिए लिपि में वर्ण या अक्षरों का अविष्कार संभव हुआ है अत: य वर्ण ध्वनि पर आधारित हैं अत: इस लिपि को ध्वनिमूलक लिपि कहते हैं ।

ध्वनिमूलक लिपि के दो भेद किए गए हैं-

1. अक्षरात्मक लिपि जिसे देवनागरी लिपि कहा गया है ।
2. वर्णात्मक लिपि जिसे रोमन लिपि कहा गया है ।

देवनागरी लिपि के 'क' चिह्न में क्‌+अ ध्वनि कहा जाता है । इसमें 'अ' ध्वनि को स्वर और 'क्‌' ध्वनि व्यंजन हैं ।

देवनागरी लिपि का इतिहास

लिपियों का इतिहास अत्यन्त प्राचीन है । प्राचीन शिलालेखों तथा सिक्कों से दो भारतीय लिपियों का पता चलता है- (1) ब्राह्‌मी लिपि (2) स्वरोष्ठी लिपि । ब्राह्मी लिपि के उदाहरण लगभग 5वीं शती तक ही मिलते हैं । आगे ब्राह्‌मी लिपि की दो शैलियाँ विकसित हुई-(1) उत्तरी शैली (2) दक्षिणी शैली ।

उत्तरी शैली में-

गुप्त लिपि, कुटिल लिपि, शारदा लिपि और प्राचीन नागरी लिपि ।

दक्षिणी शैली में

पश्चिमी लिपि, मध्यदेशी लिपि, तेलगु-कन्नड़ लिपि, ग्रंथ लिपि, तामिल लिपि, कलिंग लिपि आदि लिपियों का उल्लेख मिलता है । किन्तु अध्ययन द्‌वारा स्पष्ट रूप से प्रमाणित होना है कि देवनागरी लिपि का विकास प्राचीन ब्राह्‌मी लिपि से हुआ है ।

*शिक्षक, स्टेशन रोड, महिदपुर रोड, जिला: उज्जैन (म.प्र.) पिन-456440.

किसी भी भाषा के साथ उसकी लिपि का (अविच्छिन्न) संबंध होता है । जब हम संस्कृत, हिंदी या नेपाली की बात करते हैं, तो सीधे-सीधे इसका दृश्य रूप 'देवनागरी लिपि' के माध्यम से ही आकार लेता है । इसी तरह अंग्रेजी की बात रोमन के बगैर अधूरी है । तब प्रश्न उठता है कि किसी लिपि की वैज्ञानिकता के प्रतिमान सार्वदेशीय और सार्वकालिक होंगे कि एकदेशीय और एककालिक? वस्तुत: वैज्ञानिकता के प्रतिमान हैं तो सार्वदेशीय, किन्तु उनकी बात, किसी न किसी भाषा के प्ररिप्रेक्ष्य में ही होनी चाहिए । भारतीय संदर्भ में देखें तो देवनागरी यहाँ की प्राय: अधिकांश भाषाओं की दृष्टि से वैज्ञानिकता के निष्कर्ष पर खरी उतरती है । उसकी सबसे बड़ी शक्ति है-आन्तरिक तार्किक एवं सुनिश्चित व्यवस्था, जिसका हम आज भी संस्कृत और देवनागरी के परिप्रेक्ष्य में साक्षत् अनुभव करते हैं । इस संदर्भ में जब भी रोमन या कोई दूसरी लिपि आती है, हमारी भाषाओं के सही उच्चारण और उनके उपयुक्त लिप्यंकन के मार्ग में अवरोध खड़े हो जाते हैं । फिर इस दिशा में उच्चारण एवं लिपि-चिह्न का तादात्म्य संबंध भी महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करता है ।

देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता का सर्वप्रमुख आधार एक निश्चित ध्वनि के लिये एक निश्चित लिपि-संकेत का प्रयोग है । इस गुण के कारण प्रयोक्ता को लिपि-प्रयोग के समय पर्याप्त सुगमता का अनुभव होता है । इसके विपरीत जिस लिपि में एक ध्वनि के लिये एकाधिक लिपि-संकेतों का प्रयोग होता है, वहाँ प्रयोक्ता के सामने यह दुविधा रहती है कि वह किस संकेत का कहाँ प्रयोग करें-क के लिए K(Key), C(Cake) च के लिये CH (Chemistry) Q(Quarter), CK(cook), X (box) । इसी प्रकार अरबी लिपि में एक ज़ के लिये ज, जाद, ज़ा, जाल-ये चार संकेत काम में लाए जाते हैं । स ध्वनि के लिये भी, से 'सिन्' साद-तीन संकेत प्रयुक्त होते हैं ।

किसी लिपि की वैज्ञानिकता इस बात पर निर्भर करती है कि उसमें प्रत्येक लिपि-संकेत से मात्र एक-एक ध्वनि की ही अभिव्यंजना हो । इससे लिपि-संकेतों का पढ़ना सरल हो जाता है । देवनागरी लिपि के किसी भी संकेत का किसी भी शब्द में किसी भी स्थिति में प्रयोग करने पर उसके उच्चारण में कोई अन्तर नहीं आता तथा उसका उच्चारण वही रहता है, जो स्वतंत्र लिपि-संकेत के रूप में उच्चरित होता है । उदाहरण के लिए मन, कमल, उत्तम, परिसीमन शब्दों में 'म' संकेत का विभिन्न स्थितियों में प्रयोग किया गया है । किन्तु प्रत्येक स्थिति में उच्चारण समान है । कतिपय अपवादों को छोड़कर ही देवनागरी लिपि में वैज्ञानिकता का यह मानक रूप मिलता है । रोमन लिपि में एक संकेत से अनेक ध्वनियाँ व्यक्त की जाती हैं-एक a से आठ ध्वनियों की अभिव्यक्ति की जाती है, जो इन शब्दों में स्पष्ट दृष्टिगोचर होती है -mat, ball, many, fare, made, was, steward इत्यादि ।

किसी भी वैज्ञानिक लिपि में किसी भाषा की समग्र ध्वनियों को अंकित करने की क्षमता भी होनी चाहिए । आज संसार में प्रचलित समस्त लिपियों के बीच यह गुण जितना देवनागरी लिपि में है, उतना किसी अन्य लिपि में नहीं है । इस गुण के आधार पर देवनागरी लिपि में किसी भी उच्चरित इकाई का स्पष्ट अभिलेखन संभव हो पाता है । देवनागरी में 10 स्वर-चिह्न, अनुस्वार और विसर्ग दो अयोगवाह लिपि-चिह्नविसर्ग-सूचक चिह्न आदि पर्याप्त मात्रा में लिपि-संकेत होने के कारण न केवल संस्कृत, पालि प्राकृत, अपभ्रंश, हिंदी, मराठी, नेपाली, गुजराती आदि भारतीय भाषाओं, वरन् विश्व की किसी भी भाषा की ध्वनियों की स्पष्ट और असंदिग्ध अभिव्यक्ति की जा सकती है । इसके विपरीत रोमन लिपि में ख, छ, ठ, थ, फ, घ, झ, ढ, ध, भ आदि महाप्राण ध्वनियों अथवा ङ, ञ, ण आदि अनुनासिक ध्वनियों के लिए कोई संकेत नहीं है । इसीलिए महाप्राण ध्वनियों को व्यक्त करने के लिये अल्प्राण ध्वनि के साथ एच (H) का प्रयोग किया जाता है; यथा-ख-Kh, छ-Chh, ठ-Th, फ-Ph, घ-Gh, ध-Dh आदि ।

देवनागरी लिपि में मूल स्वरों के ह्रस्व और दीर्घ दो रूपों का प्रयोग होता है, यथा-अ-आ, इ-ई, उ-ऊ । इस स्पष्ट भेद के कारण भाषा की विभिन्न ध्वनियों को सूक्ष्मता से अंकित किया जा सकता है । यह विशेषता देवनागरी की वैज्ञानिकता का पुष्ट प्रमाण हैं । इसी वैज्ञानिकता के कारण कल, कला, काल, काला जैसे भिन्नार्थक किन्तु वर्तनी की दृष्टि से प्राय: समरूपी शब्दों को शुद्धता से लिपिबद्ध किया जा सकता है । रोमन लिपि में ह्रस्व और दीर्घ स्वरों की स्पष्ट अभिव्यक्ति की व्यवस्था का सर्वथा अभाव है, परिणामस्वरूप रोमन में लिखित Jala को इनमें से किसी भी रूप में पढ़ा जा सकता है-Jala=जल, जाल, जला, जाला ।

(शेष पृष्ठ 26 पर)

वरिष्ठ स्तर पर हिंदी का प्रयोग : समस्याएँ और समाधान

–डॉ. आर.पी. सिंह*

भारतीय संघ की राजभाषा हिंदी है । भारतीय संविधान के क्रम में आठवीं अनुसूची में दर्ज बाईस भाषाओं में से एक हिंदी भी राष्ट्र-भाषा है । राष्ट्रीय गान (जन-गण-मन), राष्ट्रीय गीत (वन्दे मातरम्), राष्ट्रीय झण्डा (तिरंगा), राष्ट्रीय चिह्न (अशोक स्तंभ), राष्ट्रीय पशु (बाघ), राष्ट्रीय पक्षी (मोर) आदि के क्रम में हिंदी राष्ट्रीय भाषा भी है । यह पूरे भारत को एक सूत्र में जोड़ने का सशक्त भाषायी माध्यम है । भारत का स्वतंत्रता संघर्ष और फिर प्राप्त अपनी आजादी, अपना संविधान और फिर प्राप्त अपनी संप्रभुता के क्रम में हिंदी को राजभाषा का संवैधानिक दर्जा प्राप्त है । इस क्रम में यह राजभाषा हिंदी केंद्र तथा राज्य के बीच एक सम्पर्क-सूत्र का व भाषायी-संप्रेषणीयता का कार्य करती है । भारत सरकार के कार्यालयों, भारत सरकार के उपक्रमों, तथा राष्ट्रीयकृत बैंकों के संघीय तथा सार्वदेशिक स्वरूप के चलते भारतीय नागरिक के सार्वदेशिक स्थानान्तरण व संवैधानिक शपथ के तहत सार्वजनिक सेवा के क्रम में संघ सरकार की कई नीतियों के साथ-साथ भारत सरकार की एक राजभाषा नीति भी है जो मानव संसाधन का एक महत्त्वपूर्ण साधन है । केन्द्र सरकार के कार्यालयों में हिंदी का प्रगामी प्रयोग इसी राजभाषा नीति का एक महनीय पक्ष है ।

उक्त पृष्ठभूमि में केंद्रीय सरकारी कार्यालयों में भारत सरकार की राजभाषा नीति के अन्तर्गत हिंदी का प्रगामी प्रयोग हो रहा है और इसके विभिन्न अंगों पर क्षेत्र विशेष व तत्संबन्धित देय लक्ष्यों के मद्देनजर कार्यालयों में हिंदी के प्रयोग में निरन्तर वृद्धि हो रही है । कुछ अपवादों को छोड़ कर अब कार्यालय में लोग हिंदी समझने लगे हैं, बात करने लगे हैं और काम करने लगे हैं । उनके बीच हिंदी में कार्य करने की निरन्तरता भी आने लगी है, संकोच दूर हो रहा है और अभिव्यक्तियां पूरी हो रही हैं ।

कार्यालय में हिंदी प्रयोग के ये कार्य कनिष्ठ और वरिष्ठ-दोनों स्तर के स्टाफ-सदस्य कर रहे हैं और कार्यालय में भरती होने के पूर्व भारतीय संविधान तथा कार्यालयी संहिता के प्रति ली गई शपथ के क्रम में 'संघ की राजभाषा हिंदी होगी' के तहत हिंदी कार्य को आगे बढ़ा भी रहे हैं । फिर भी दोनों-कनिष्ठ और वरिष्ठ स्तरों पर हिंदी के प्रयोग की समस्याएं हैं और यथासमय शनैः-शनैः कार्यालयी-प्रभारी व हिंदी-प्रभारी इन समस्याओं का समाधान ढूंढते हैं व कार्य-अंजाम देते हैं। यह कार्य कई स्तरों-शाखा कार्यालय, क्षेत्रीय कार्यालय, अंचल कार्यालय, प्रधान कार्यालय, 'बैंक-नराकास' कार्यालय, भारत सरकार (राजभाषा विभाग) पूर्व क्षेत्रीय कार्यालय, भारत सरकार (राजभाषा विभाग) केंद्रीय कार्यालय, भारतीय रिजर्व बैंक कार्यालय, बैंकिंग प्रभाग (वित्त मंत्रालय, भारत सरकार) कार्यालय, आई.बी.ए. (इंडियन बैंक एसोसिएशन) कार्यालय, केंद्रीय हिंदी समिति कार्यालय, संसदीय राजभाषा समिति कार्यालय तथा प्रत्येक केंद्रीय मंत्रालय कार्यालय व हिंदी सलाहकार समिति कार्यालय आदि के माध्यम से उसके अन्दर व उसके अन्तर्गत राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग पर बल देते हुए राष्ट्रीय एकता, संप्रभुता व संप्रेषणीयता के महत्व को रेखांकित किया जा रहा है, जिससे राष्ट्र-प्रेम बलवती हो रहा है, साथ ही विश्व में, जब संयुक्त राष्ट्र संघ में हिंदी स्थापित हो रही है, अपनी भारतीय पहचान भी बन रही है ।

ऐसे में यह आवश्यक हो गया है कि कार्यालय में संवैधानिक व वार्षिक कार्यक्रम (गृह मंत्रालय, भारत सरकार) के लक्ष्यों को कार्यान्वित करते हुए वरिष्ठ स्तर पर हिंदी के प्रयोग को बढ़ाया जाए । आज कार्यालयों की यह स्थिति तो है कि वरिष्ठ स्तर पर कार्यालय में हिंदी का प्रयोग लगभग सभी मदों पर हो रहा है लेकिन फिर भी कुछ समस्याएं हैं और इन समस्याओं के समाधान भी खोजे जा सकते हैं ।

*सहायक महाप्रबंधक (हिंदी), इंडस्ट्रियल डेवलपमेंट बैंक ऑफ इंडिया लि., आई.डी.बी.आई. हाउस, जनपथ, भुवनेश्वर-751022, ओड़िशा (भारत) ।

2432 HA/07—3A

आइए, विचार करें । पहली समस्या मानसिकता की समस्या है । आम तौर पर हिंदी में कार्य करने की मानसिकता का अभाव देखा जाता है । वरिष्ठ स्तर के कार्मिकों में यदि यह मानसिकता दूर होती है तो कनिष्ठ स्तर के कार्मिकों पर भी असर होता है । वरिष्ठ स्तर के कार्मिकों के हिंदी में कार्य करने का सकारात्मक प्रभाव नीचे के कार्मिकों पर पड़ता है। इस मानसिकता की समस्या को हम राष्ट्र-प्रेम तथा भारतीय राष्ट्र की भावना बलवती करते हुए दूर कर सकते हैं । इस क्रम में राजनीतिक दृढ़ इच्छाशक्ति की भी जरूरत है जो राष्ट्र-नायकों को करना है ।

एक समस्या संवैधानिक उत्तरदायित्व का अभाव है। अन्य चीजों में संवैधानिक जिम्मेदारियों व नियमों का पालन होता है लेकिन राजभाषा हिंदी के प्रयोग के क्रम में वे कहीं-न-कहीं चूकते नजर आते हैं । संवैधानिक जिम्मेदारी की राजभाषायी कम समझ व राजभाषा की उदार नीति-प्रेरणा, प्रोत्साहन व सद्भावना के क्रम में वे राजभाषा हिंदी को पूर्ण सम्मान नहीं देते व कार्य करने में ढुल-मुल नीति अख्तियार करते हैं व अथवा लक्ष्य-खानापूर्ति करते हैं । इस समस्या के समाधान में वरिष्ठतम अधिकारियों व कार्यालयेत्तर सरकारी संस्थाओं के प्राधिकारियों को और मेहनत करनी होगी व वर्तमान व्यवस्था में ही समयबद्ध कार्यशैलियों, कार्यनीतियों तथा कार्य-कदमों में 'शेषण-शैली' अपनानी होगी ।

वरिष्ठ स्तर पर हिंदी के प्रयोग पर एक समस्या कार्यालयी जिम्मेदारी का अभाव है । कार्यालय के अन्य सभी कामों को वह अहमियत देते हैं लेकिन हिंदी के कार्य को, जिससे उनकी उत्पादकता व लाभप्रदता आदि बढ़ती है, उतना महत्त्व नहीं देते । जरूरत है कार्यालय के अन्य लक्ष्यों के साथ-साथ हिंदी के लक्ष्यों को भी प्राप्त किया जाए । इसका समाधान प्रबंधन के सूत्र से खोजा जा सकता है । जिम्मेदारी निभानी एकपक्षीय नहीं होनी चाहिए यह चतुर्दिक व कार्यालय के सभी कार्यों व उसके सभी आयामों में होनी चाहिए-यह भाव विकसित किया जाना चाहिए ।

वरिष्ठ स्तर पर हिंदी के प्रयोग में एक बड़ी समस्या उनकी दृढ़ इच्छाशक्ति का अभाव है । तुर्की के कमाल पाशा जैसी दृढ़ इच्छाशक्ति की आज आवश्यकता है । कार्यालयों में भी वैसे अधिकारियों के खोज की जरूरत है जो इन पर ध्यान देकर कार्यालय के सर्वांगीन विकास के साथ-साथ जर्मनी व रूस आदि देशों के राष्ट्र-प्रेम के क्रम में राजभाषा हिंदी में काम करते हुए उसकी गति को बढ़ा सकें ।

उत्पादकता में कमी की मानसिकता भी एक समस्या है । वरिष्ठ अधिकारी यह सोचते हैं कि हिंदी में काम करेंगे तो उत्पादकता घटेगी लेकिन यह गलत है । गोयनका जी कहा करते थे कि 'जब हम हिंदी में विज्ञापन निकालते हैं तो हमारी बिक्री बढ़ जाती है ।' आज जितनी भी बहुराष्ट्रीय कंपनियां आ रही हैं, आज जितने भी इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के चैनल आ रहे हैं, सभी में हिंदी की अनुगूंज सुनाई पड़ती है । आज विज्ञापनों में हिंदी छा रही है । अंग्रेजी दवाइयों के डिब्बों व टैबलेटों के प्लास्टिकों पर हिंदी नजर आ रही है । इससे साफ संकेत जाता है कि ये कंपनियां बृहत् बाजार की तरफ जा कर बृहत् विपणन करना चाहती हैं । विश्व की सबसे बड़ी हस्ती बिल गेट्स की ज़गत् प्रसिद्ध कंपनी 'माइक्रोसॉफ्ट' भी हिंदी सॉफ्टवेयर में उतर गई है । आज कंप्यूटर, मोबाइल आदि सब में हिंदी जमती जा रही है । साफ संकेत है कि इससे उनकी लाभप्रदता बढ़ रही है । लाभप्रदता के सकारात्मक पहलू से उन्हें रूबरू करा कर इस समस्या का समाधान निकाला जा सकता है ।

वरिष्ठ स्तर पर हिंदी की प्रयोग की एक समस्या राजभाषा नीति के ज्ञान की जानकारी का अभाव है जिसके कारण वरिष्ठ अधिकारी चीजों को बढ़िया ढंग से समझ नहीं पाते । इस पर समाधान यह है कि उन्हें नियमित कार्यशाला में भेजा जाए । साथ ही, राजभाषा संबंधी विभिन्न बैठकों में उन्हें अनिवार्यरूपेण भेज कर हिंदी की सार्वदेशिक विपणन के क्रम में लाभप्रदता बढ़ाई जा सकती है ।

हिंदी की पूरी जानकारी का अभाव एक समस्या है । वह अपने आशुलिपिकों व निजी सचिवों को हिंदी-डिक्टेशन नहीं दे पाते । कार्यालय में भरती के पूर्व कम से कम एक मास का अनिवार्य सघन हिंदी प्रशिक्षण कार्य चलाया जा सकता है जिससे इस समस्या का समाधान निकाला जा सकता है ।

वरिष्ठ स्तर पर कई-कई अधिकारियों को अभी भी हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान नहीं है जो एक बहुत बड़ी समस्या है । भारत सरकार के सेवाकालीन अनिवार्य हिंदी प्रशिक्षण इस समस्या का समाधान है जिस पर तीव्र गति से कार्य

2432 HA/07—3B

किया भी जा रहा है । साथ ही, कम्प्यूटर पर हिंदी-प्रशिक्षण देने की भी आवश्यकता है ।

वरिष्ठ स्तर पर हिंदी के प्रयोग पर एक समस्या यह नजर आती है कि वरिष्ठ अधिकारी के अंतर्गत जो निजी सचिव कार्य करते हैं उन्हें हिंदी आशुलिपि का ज्ञान व प्रशिक्षण प्राप्त नहीं होता जिसके कारण कई बार वरिष्ठ अधिकारी को हिंदी जानकारी रहने के बावजूद भी वे अपने निजी सचिव को हिंदी में डिक्टेशन देने में असमर्थ होते हैं । समस्या के समाधान के क्रम में संबद्ध निजी सचिव को भी हिंदी आशुलिपि का गहन प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए ।

कभी-कभी वरिष्ठ स्तर के अधिकारी हिंदी के प्रयोग पर बजट या पैसा का रोना रोते हैं जिसका सच्चाई से वास्ता नहीं होता । यह रोना अन्य खर्चों पर नहीं होता । आम-आवाम के संप्रेषण व एक सशक्त संचार माध्यम पर खर्च को अनिवार्यता के क्रम में देखा जाना चाहिए, सकारात्मकता के क्रम में देखा जाना चाहिए ताकि भारतीय बहुसंख्यक ग्राहकों से सीधा संपर्क साधते हुए हम अपनी लाभप्रदता को भी बढ़ा सकें और इस समस्या का समाधान भी इसी में दिखता है, जिससे हमारी संस्था की अपूर्व कमाई होती है ।

निष्कर्षत: हिंदी आज पूरे भारतवर्ष के आम जन की भाषा बन गयी है । इसका 'लिंगुवाफ्रांका' रूप सार्वदेशिक व सार्वजनिन हो गया है । भूमंडलीकरण के दौर में लाभप्रदता के क्रम में विज्ञापन में हिंदी आज अंतर्राष्ट्रीय छवि बना रही है । ऐसे में कार्यालयों में भी वरिष्ठ स्तर पर हिंदी का प्रयोग वांछनीय हो जाता है । आज आवश्यकता इस बात की है कि हम अपनी मानसिकता बदलें तथा उभरी विभिन्न समस्याओं पर गंभीरता से मनन करें तथा उसके समाधान के विभिन्न पहलुओं पर हृदय से, राष्ट्रप्रेम से, भारतीयता से, सार्वदेशिकता से, राष्ट्रीयता से, नागरिकता से व संवैधानिकता से सोचें और अपने को तथा अपने राष्ट्र को गौरवान्वित करें । ■

(पृष्ठ 2 का शेष)

अर्थात् कोई अक्षर ऐसा नहीं जिसमें मंत्र की शक्ति न हो । कोई द्रव्य ऐसा नहीं जो औषधि के गुणों से रहित हो । ...और कोई मनुष्य ऐसा नहीं जो सर्वथा अयोग्य हो । यदि कमी है तो यही कि उनके गुणों की पहचान कर उससे लाभ लेने वाले ही नहीं मिलते ।

प्राचीन चिकित्सा-विज्ञान में मंत्र-चिकित्सा नाम से एक नई विधा का आविर्भाव हुआ था । जो शब्द और ध्वनियों पर ही आधारित थी । वहां चिकित्सक की मानसिक शक्ति ही ध्वनि पर सवार होकर मंत्र बन जाती है, जो अनेक प्रकार के रोग-शोक को दूर करने की क्षमता रखती है । सुश्रुत संहिता में भी अक्षर और मंत्रों की शक्ति पर विस्तृत विवेचन मिलता है । प्राचीन बौद्ध और जैन-ग्रन्थों में भी ऐसे कूट-मंत्रों की कमी नहीं जो अक्षर और ध्वनियों के माध्यम से कामनाओं की पूर्ति का माध्यम बनते हैं ।

ध्वनि की शक्ति बड़ी प्रबल है । कृष्ण की बांसुरी की ध्वनि जहां गोपियों को घरों से बाहर खींच लाती है, पशु-पक्षियों को वशीभूत कर लेती है । राग-रागनियों पर बादल बरस जाते हैं, बुझे दीप जल उठते हैं । वहीं प्राचीन ध्वनि-मीमांसकों का कहना है कि ध्वनियों, शब्दों का उच्चारण यदि ठीक-ठीक न किया गया तो वह वक्ता और श्रोता-दोनों के लिए अनर्थकारी भी हो सकता है । इसलिए बात को कहने में सच्चाई, एकाग्रता, दृढ़ता और प्रबल इच्छाशक्ति का होना अनिवार्य है । योगशास्त्र में इसी को 'धारणा' कहा गया है । इसके वितरीत असत्य, अशुद्ध और अनर्गल भाषण से आयु घटती है, आत्मशक्ति क्षीण होती है और कई प्रकार के मानसिक-विकार, रोग-व्याधियों मनुष्य को घेरे रखती हैं ।

शब्द और वाणी के अनर्गल पर कविवर रहीम का यह दोहा—

रहिमन जिह्वा बावरी कह गइ सरग पताल,
आपु तो कहि भीतर भई जूती खात कपाल ।

आचार्य पाणिनि ने भी वाणी के मिथ्या और अनुचित प्रयोग को बज्र के समान घातक माना है । सारा खेल वाणी का है । प्रेम की वाणी से प्रेम उपजेगा, क्रोध की भाषा क्रोध पैदा करेगी । दुर्योधन के प्रति द्रौपदी के एक वाक्य ने महाभारत की विभीषिका खड़ी कर दी । इसलिए कवि सावधान करता है—

बोलिए तो तब जब बोलिवे की सुधि होय,
ना तो मुख मौन गहि चुप होय रहिए ।

(संत सुन्दरदास)

बुद्धिमान व्यक्ति उतनी ही बात करते हैं जितने से उनका अभिप्राय सिद्ध होता है, वे शब्दों का अपव्यय नहीं करते । सिद्ध-पुरुषों का मौन धारण भी वाणी को अनुशासित करना है । कालान्तर में यही अनुशासन उनकी आत्मशुद्धि के साथ-साथ वाक्सिद्धि का कारण भी बनता है । ■

राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी की वास्तविकता

–डॉ. नरेश कुमार*

हिंदी एक अखिल भारतीय भाषा के रूप में राष्ट्रीय एकता को परिपुष्ट करती रही । जहां हिंदी केंद्र सरकार की कामकाज की भाषा है, वहां यह सांस्कृतिक भाषा के रूप में आध्यात्मिक, राजनीतिक, आर्थिक, व्यापारिक एवं सामाजिक संपर्क को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका रखती है । सरल भाषा होने के कारण अधिकांश भारतीयों द्वारा बोली और समझी जाती है । सामान्य जन की भाषा होने के कारण भारत के अधिकांश भागों के निवासी व्यावहारिक एवं प्रचलित हिंदी में अपने विचारों को अभिव्यक्त कर गौरव का अनुभव करते हैं । हिंदी के माध्यम से राजनीतिज्ञ अपनी पार्टी की नीतियों को सामान्य जनता को सरलतापूर्वक समझाते रहे हैं । आज अहिंदी भाषी राजनीतिज्ञ हिंदी के राष्ट्रव्यापी महत्त्व को समझने लगे हैं । वे यह अनुभव करने लगे हैं कि हिंदी के कार्यसाधक ज्ञान के बिना वे हिंदी भाषी क्षेत्रों में अपनी पैठ नहीं बना पाएंगे । भारत की लोकतांत्रिक व्यवस्था में लोकतंत्र को मजबूत आधार प्रदान करने में हिंदी का प्रमुख योगदान रहा है ।

'क' क्षेत्र के अंतर्गत बिहार, झारखंड, उ.प्र., उत्तरांचल, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश, राजस्थान, अंडमान तथा निकोबार द्वीप समूह और दिल्ली राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में हिंदी ही प्रमुख राजभाषा है जबकि 'ख' क्षेत्र के अंतर्गत गुजरात में गुजराती, महाराष्ट्र में मराठी, पंजाब तथा चंडीगढ़ संघ राज्य क्षेत्र में पंजाबी को प्रमुख किंतु हिंदी भाषा को द्वितीय स्थान दिया गया है । शेष राज्यों की स्थिति निम्न प्रकार है :

आंध्र प्रदेश में तेलुगु, असम में असमिया, जम्मू कश्मीर में कश्मीरी व उर्दू, कर्नाटक में कन्नड, केरल में मलयालम, मणिपुर में अंग्रेजी व मणिपुरी, मिजोरम में अंग्रेजी व मिजो, उड़ीसा में उड़िया, सिक्किम में अंग्रेजी, भुटिया, नेपाली व लेपचा, तमिलनाडु में तमिल, त्रिपुरा में बंगला, त्रिपुरी व मणिपुरी, बंगाल में बंगला, गोवा में कोंकणी, दादर नगर हवेली में गुजराती व मराठी, पांडिचेरी में तमिल व अंग्रेजी, मेघालय में अंग्रेजी, खासी, गारो व असमिया, अरुणाचल प्रदेश में अंग्रेजी, मिजो, मोचा व नागालैंड में अंग्रेजी व नामामी आदि भाषाओं का सरकारी कामकाज में प्रयोग किया जाना जारी है । इन हिंदीतर भाषी राज्यों में अंग्रेजी के प्रयोग करने संबंधी व्यवस्था तब तक जारी रहेगी, जब तक हिंदी को राजभाषा के रूप में न अपनाने वाले राज्यों के विधान मंडल अंग्रेजी के प्रयोग समाप्त करने के लिए संकल्प पारित न करे और इन संकल्पों पर विचार करने के बाद संसद का प्रत्येक सदन ऐसे प्रस्ताव को पारित न कर दे । आज हिंदी को राजभाषा के रूप में न अपनाने वाले राज्यों और केंद्र सरकार के बीच पत्रव्यवहार अंग्रेजी में होता है और हिंदी भाषी राज्यों की सरकारें हिंदीतर भाषी राज्यों की सरकारों के साथ अंग्रेजी में पत्रव्यवहार करती हैं और यदि हिंदी में कोई पत्र भेजा जाता है तो उसका अंग्रेजी अनुवाद भी भेजना अपेक्षित होता है । आज भारत के हिंदीतर भाषी राज्यों में वहां की क्षेत्रीय भाषा के राजभाषा के रूप में प्रतिष्ठित होने के साथ-साथ हिंदी को भी वांछनीय स्थान दिलाना अपेक्षित है । संभवतः जब भावी राजनीतिज्ञों की पीढ़ी हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान रखेगी, तब ही इन अहिंदी भाषी राज्यों में हिंदी को गौरवपूर्ण स्थान मिल सकेगा । त्रिभाषा सूत्र के अंतर्गत हिंदी के अध्यापन की समुचित व्यवस्था के उपरांत ही इस दिशा में कुछ अच्छे परिणामों की आशा की जा सकती है ।

कार्यालयी हिंदी की प्रगति पर दृष्टि डालने पर पाते हैं कि कुछ सरकारी अधिकारी व कर्मचारी हिंदी जानते हुए भी फाइलों में अंग्रेजी में टिप्पण लिखते हैं । द्विभाषिक रूप में अर्थात् अंग्रेजी या हिंदी में काम करने की छूट होने के कारण

(शेष पृष्ठ 33 पर)

*जे 235, पटेलनगर प्रथम, गाजियाबाद-201001

वर्ष 2006 का हिंदी साहित्यिक-साँस्कृतिक परिदृश्य

–डॉ. सर्वदानन्द द्विवेदी*

वर्ष 2006 का साहित्य का नोबुल पुरस्कार तुर्की-साहित्यकार 'ओहरान पामुक' को दिया गया। विन्दा करंदीकर को '39वाँ ज्ञानपीठ पुरस्कार' दिया गया। मनोहर श्याम जोशी को 2005 का 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' दिया गया। ज्ञानेन्द्र पति को 2006 का 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' व 'पहल सम्मान' मिला। शम्भू प्रसाद बहुगुणा व विष्णु प्रभाकर को साहित्य अकादमी की 'महत्तर सदस्यता' प्रदान की गई। पवन करण को 'पुश्किन पुरस्कार' मिला। कुँवर नारायण को हिंदी अकादमी का 'श्लाका सम्मान' व इटली का 'प्रीमियो फेरोनियो' सम्मान मिला। 10 जनवरी 2006 को विश्व हिंदी दिवस के रूप में मनाया गया। मृदुला गर्ग और चन्द्रकान्ता को क्रमश: वर्ष 2004 व 2005 का 'व्यास-सम्मान' दिया गया। किरन देसाई को 'बुकर पुरस्कार' मिला। प्रो. के. अय्यप्पा पणिक्कर को 'सरस्वती सम्मान' मिला। परमानंद श्रीवास्तव को वर्ष 2006 का 'व्यास-सम्मान' दिया गया। विमलादेवी न्यास फैजाबाद का 'द्विज देव सम्मान' भी परमानन्द श्रीवास्तव को मिला। कमलेश्वर व दिनेश नंदिनी डालमियां को 'पद्मभूषण' व मृणाल पाण्डेय को 'पदमश्री' अलंकरण मिले। कैंब्रिज विश्वविद्यालय ने हिंदी की पढ़ाई बन्द की। महाश्वेता देवी व हबीब तनबीर को राष्ट्रीय शोध अध्येता वृत्ति मिली। 1645 ई. से प्रकाशित विश्व का सबसे पुराना अखबार 'द पोस्ट आफ इनराइकस तिडनि नगर' 31-12-06 को बंद हो गया। महाभारत का चीनी भाषा में अनुवाद हुआ। नागालैड के प्राथमिक विद्यालयों में इसी सत्र से हिंदी अनिवार्य की गई। इलाहाबाद विश्व विद्यालय ने स्नातक पाठ्यक्रम में अंग्रेजी अनिवार्य की। 22 वाँ अन्तर्राष्ट्रीय रामायण सम्मेलन इंगलैण्ड में हुआ। डॉ. भास्कराचार्य (मैनपुरी) को 'वाचस्पति सम्मान' अल्का सरावगी को 'बिहारी पुरस्कार' डॉ. शान्ति जैन को 'शंकर पुरस्कार' दिया गया। इंदौर से 1927 से प्रकाशित देश की वर्तमान प्राचीनतम मासिक पत्रिका 'बीणा' के सम्पादक डॉ. श्याम सुन्दर ब्यास को 'पं. बृजलाल द्विवेदी स्मृति अखिल भारतीय साहित्यिक पत्रकारिता सम्मान-2006 रायपुर (छत्तीसगढ़) में दिया गया। जिला जगत सिंह (उड़ीसा)' के गाँव पकानपुर से 40 भाषाओं में प्रकाशित पत्रिका 'प्यारी भैंड़' के सम्पादक विजय कुमार महापात्र का होशियारपुर (पंजाब) के महिलपुर गाँव की बाल पत्रिका 'निक्किकयाँ करूबलाँ' द्वारा सारस्वत सम्मान किया गया। नामवर सिंह को उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान का 'भारत-भारती' सम्मान मिला व महात्मा गांधी अन्तर्राट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय का कुलाधिपति बनाया गया। इस वर्ष का उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान का 'भारत-भारती' डॉ. रामदरश मिश्र को, 'लोहिया सम्मान' डॉ. कृष्णदत्त पालीवाल को, 'महात्मा गांधी सम्मान' कामतानाथ को 'हिंदी गौरव सम्मान' गोपाल चतुर्वेदी को, 'दीनदयाल उपाध्याय सम्मान' डॉ. अर्जुन दास केसरी को और साथ ही अन्य 25 साहित्यकारों व 5 हिंदीतर भाषियों को भी सम्मानित किया गया। रामशरण जोशी को केंद्रीय हिंदी संस्थान आगरा का उपाध्यक्ष बनाया गया। केंद्रीय हिंदी संस्थान ने 31 विद्वानों सहित सच्चिदानन्द सिन्हा व पत्रकार राजकिशोर को क्रमश: 'राहुल सांकृत्यायन' व 'गणेश शंकर विद्यार्थी' सम्मान दिया। सिने गीतकार आवेद अख्तर को 'इंदिरा गांधी राष्ट्रीय एकीकरण' पुरस्कार मिला। कवि गोपालदास 'नीरज' को उत्तर प्रदेश भाषा संस्थान का अध्यक्ष और मंगलायतन विश्व विद्यालय, अलीगढ़ का कुलाधिपति बनाया गया। डॉ. अरविन्द त्रिपाठी को, मध्य प्रदेश साहित्य अकादमी का 'रामचन्द्र पुरस्कार' उदयभानु 'हंस' को हरियाणा साहित्य अकादमी का 'सूर सम्मान' मिला। अशोक बाजपेयी को म.प्र. शासन का कबीर पुरस्कार मिला। म.प्र. साहित्य अकादमी ने, रविन्द्र कालिया, चित्रा मुदगल, पुन्नी सिंह, पवन करण का सारस्वत सम्मान किया। राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, भोपाल ने डॉ. वलभदास मेहता, अंजना 'सवि' सहित 7 हिंदीतर भाषी साहित्यकारों का सम्मान किया। म.प्र. हिंदी साहित्य सम्मेलन का 2005 का 'भवभूति अलंकरण' मन्नू भंडारी को दिया गया। कमलेश्वर को हिमाचल प्रदेश का शिखर सम्मान', गीतकार संतोष नंद

*ग्राम व डाक-थाना, जिला: उन्नाव-209801 (उ. प्र.)

2432 HA/07—4A

को 'निराला श्री सम्मान', इन्दु जैन को 'मैथिलीशरण गुप्त सम्मान' भगवानदास मोरवाल व उदयप्रकाश ने हिंदी साहित्य सम्मेलन प्रयाग ने, न्यायामूर्ति प्रेमशंकर गुप्त का सारस्वत सम्मान किया। डॉ. संतोष तिवारी व अंजलि भारती को 'राष्ट्र धर्म गौरव सम्मान' लखनऊ में दिया गया। अश्विनी कुमार दुबे (पन्ना), गम्भीर सिंह पालनी (नैनीताल), प्रेमशंकर रघुवंशी (हरदा), उर्मिल शिरीष (भोपाल) को 'अंबिका प्रसाद दिव्य पुरस्कार' सागर (म.प्र.) में दिए गए। अशोक चक्रधर को उन्नाव में 'निराला सम्मान' दिया गया। सत्य नारायण सत्तन (इंदौर) को जबलपुर में 'तुलसी सम्मान' दिया गया। आशुतोष दुबे को बाँदा में 'केदार सम्मान' ज्ञान चर्तुदी को 'शरद जोशी सम्मान' 'गोयनका व्यंग्य भूषण सम्मान' कथाकार चित्रा मुदगल को 'गोयनका वाग्देवी सम्मान' दिया गया। 12 पत्रकारों को दिल्ली के 'मातृश्री पुरस्कार' मिले। लखनऊ विश्वविद्यालय ने कवि नीरज को डी. लिट् की मानद उपाधि से समलंकृत किया। पत्रकार आलोक मेहता, अरविन्द मोहन, चन्द्रभूषण को वर्ष 2003 के 'भारतेन्दु हरिश्चन्द्र पुरस्कार' मिले। संगीतकार रवि को उज्जैन में कवि 'प्रदीप शिखर सम्मान' से समलंकृत किया गया।

गाजियाबाद में 7वाँ राष्ट्रभाषा विकास सम्मेलन हुआ। बंगलौर (कर्नाटक) में 'द्वितीय' हिंदी कुंभ' हुआ ।

भारत सरकार के विदेश मंत्रालय ने आस्ट्रेलिया एवं आबूधाबी में क्षेत्रीय हिंदी सम्मेलनों का आयोजन किया। प्रथम भारत-ब्रितानी साहित्य समारोह किताब घर दिल्ली में हुआ।

29वाँ अखिल भारतीय नागरी लिपि सम्मेलन हुआ। साहित्य अकादमी एवं भारतीय भाषा परिषद, कोलकाता के संयुक्त तत्वावधान में, कोलकाता में हिंदी-उर्दू कुंभ हुआ। शताब्दी समारोह लखनऊ में डॉ. कैलाश चन्द्र भाटिया का शासकीय कार्यों में, नागरी लिपि प्रयोग विषयक अवदान पर 'सारस्वत सम्मान' किया गया। राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा ने अपने सेवाग्राम के 19वें समारोह में डॉ. अशोक प्रभाकर कामत, डॉ. बालशौरि रेड्डी, डॉ. शौरिराजन, का सारस्वत सम्मान किया। नागरी लिपि परिषद दिल्ली ने अपने 23वें सम्मलेन में कर्नाटक महिला हिंदी सेवा समिति, बंगलौर तथा हिंदी-संथाली-अंग्रेजी साहित्यकार सुश्री निर्मला पुत्तुल (दुमका-बिहार) को विनोबा नागरी पुरस्कार दिए।

हिंदी साहित्य सम्मलेन प्रयाग ने, डॉ. डी. डी. ओझा को 'विग्यान-वागीश अलंकरण' प्रदान किया। जावेद अख्तर को 'परंपरा विशिष्ट सम्मान' और बाल स्वरूप को परंपरा ऋतुराज सम्मान दिल्ली में दिया गया। प्रतिवर्ष की भाँति राष्ट्रपति ने पालि, प्राकृत, अरबी, फारसी, संस्कृत विद्वानों का राष्ट्रपति भवन में सारस्वत-सम्मान किया । राष्ट्रकवि सोहनलाल द्विवेदी की जन्म शताब्दी-समारोह पर डॉ. हरि प्रसाद दूबे का सारस्वत सम्मान किया गया। हिंदी अकादमी दिल्ली ने, जापानी हिंदी-विद्वान प्रो. तोमिनी मिजोकामि का सारस्वत सम्मान किया। पंजाब सरकार ने, फूलचंद मानव को 'शिरोमणि पुरस्कार' दिया। हिंदी साहित्य सम्मेलन दिल्ली ने, दिलेश नंदिनी डालमिया, आचार्य निशांत केतु, प्रो. सच्चिदानन्द, डॉ. महीप सिंह, डॉ. के.के. अग्रवाल, व गीतकार संतोषानन्द को 'साहित्य श्री सम्मान' दिया। रजा फाउण्डेशन ने सविता सिंह को 'लखटकिया पुरस्कार' दिया। नवीन कुमार नैथाली को 'रमाकान्त स्मृति सम्मान' मिला। हरे प्रकाश उपाध्याय को 'अंकुर मिश्र स्मृति पुरस्कार' मिला। बिजनौर की संस्था 'इन्द्रधनुष' ने, नरवल कानपुर की संस्कृत आचार्य आकांक्षा यादव को 'साहित्य गौरव' सम्मान प्रदान किया। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कलाकेन्द्र ने भार में उपलब्ध 5 लाख से अधिक पाँडुलिपियों में से 2.50 लाख की माइक्रो फिल्म तैयार की। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद ने 25 साहित्यकारों सहित आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी पर वृत्त चित्र बनाए। काका हाथरसी, प्रेमचंद, राजकुमार वर्मा, महावीर प्रसाद द्विवेदी, सोहनलाल द्विवेदी की जन्म शताब्दी समारोहों का देश के 23 स्थानों पर आयोजन किया गया।

इंडिकेश नैट् लैब ने 'रफ्तार' नामक इंटरनेट सर्च इंजन बनाकर हिंदी के 10 लाख पृष्ठ प्रयोग के लिए तैयार किए। टैली इंडिया ने 'टैली 8.1' नामक ऐसा साफ्टेवयर तैयार किया है जो बही-खाता, बजट, एक्साइज, टी.डी.एस. वैट सर्विस टैक्स, फ्रिन्ज बेनीफिट, वित्तीय रिटर्न व लेखा प्रबंधन को हिंदी-अंग्रेजी सहित देश की बाएँ से दाएँ लिखी जाने वाली भाषाओं में अनुवाद, लिप्यंतरण, रूपांतरण स्वयं कर देता है। 'रोग चिप', 'अक्षर फार विंडोज', 'शब्द माला', 'श्री लिपि', 'देव बेस', 'डाटाबेस प्रबंधन प्रणाली'' आदि हिंदी के साफ्टवेयार बनाए गए। 'रिंस' प्रोग्राम मशीन द्वारा किसी भी भाषा के समाचार को किसी भी दूसरी भाषा में परिवर्तित करके प्रिंट लिया जाने वाला साफ्टवेयर आया। पुणे डेक द्वारा हिंदी श्रुतलेखन (वीटा संस्करण) का साफ्टवेयर तैयार किया गया। ■

2432 HA/07—4B

हिंदी : तब और अब

–मुकेश कुमार (अप्पू)*

शुरू से ही हिंदी भाषा को अनेक उत्थान-पतन का सामना करना पड़ा है। साथ ही युग-युग में इसका नाम भी परिवर्तित होता रहा है। कभी वैदिक, कभी संस्कृत, कभी पाली तो कभी प्राकृत, कभी अपभ्रंश तो अब हिंदी । हिंदी तो पहले बोलचाल का माध्यम थी जो काफी लोकप्रियता के कारण भाषा बन गई। आज जिसे हिंदी कहा जाता है, मूलतः वह खड़ी बोली का मानक रूप है और आज भारत की राष्ट्रभाषा तथा राजभाषा के रूप में पदस्थ है। इस खड़ी हिंदी को साहित्य की भाषा मुसलमानों ने ही बनाया है। मुगलों के शासन काल से ही अन्य भाषाओं की रचनाओं का अनुवाद हिंदी खड़ी बोली में ही होता आ रहा है । संपूर्ण राष्ट्र में एकता स्थापित करने हेतु टीपू सुलतान ने अपने ही शासन काल में हिंदी को राजभाषा के पद पर बैठाया था। इस तरह से शताधिक मुसलमान साहित्यकार जैसे- अकबर इलाहाबादी, रामप्रसाद विस्मिल, बहादुरशाह जफर, रसखान, कबीर, रहीम, मल्लिक मुहम्मद जायसी आदि ने निरंतर क्रियाशील रहकर हिंदी भाषा की फुलवारी को न केवल सिंचने तथा संवारने का काम किया है, बल्कि इसे सरल तथा सबल बनाकर इसके सुगंध को दूर-दूर तक बिखेरने का काम भी किया है। परंतु इन सभी में खड़ी बोली को प्रचलित करने का श्रेय विशेषरूप से सर्वप्रथम निजामुद्दीन औलिया के प्रिय शिष्य अमीर खुसरों का है- खुसरो अरबी, फारसी तुर्की तथा संस्कृत का प्रकाण्ड विद्वान होते हुए भी स्वंय लिखा है-" न लफ्ज हिंदी अस्त अज फारसी कम।" अर्थात् हिंदी भाषा का महत्व फारसी से तनिक भी कम नहीं है। डॉ. अशोक कुमार भट्टाचार्या ने भी लिखा है। तेरहवीं सदी में भारत का सामाजिक तथा राजनैतिक रूप इतना विकसित तथा व्यवस्थित नहीं था और न अखण्ड भारत राष्ट्र के लिए हिंदी को राष्ट्रभाषा होने का निश्चित था। फिर भी खुसरों की लोकोत्तर प्रतिभा ने लगभग साढ़े सात सौ वर्षों के बाद की राष्ट्रीय आवश्यकता का अनुमान कर लिया था। तभी तो उन्होंने सोचा कि रागात्मक तथा भावात्मक एकता से ही राष्ट्र की नींव सुदृढ़ हो सकती है। फारसी-अरबी-तुर्की से नहीं। खुसरों की रचनाओं की कुछ पंक्तियाँ द्रष्टव्य है–

"खीर पकाया जतन से, चरखा दिया चलाए।
आया कुत्ता खा गया, तू बैठी ढोल बजाए।।"
'ला पानी पीला।'

"कोयल ने की है पुंकार"
"हम तो चले परदेश"
"बीसों का सिर काट लिया"
"घोड़ा अड़ा क्यों, पान सड़ा क्यों, रोटी जली क्यों?

आचार्य श्यामसुंदर दास, डॉ. रामकुमार वर्मा, परमानंद पांचाल, डॉ. भोलानाथ तिवारी, राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' सरीखें हिंदी के विद्वानों ने भी इस क्षेत्र में खुसरों के श्रेय को स्वीकारा है।

मुगलों के शासनोपरांत भारत में अंग्रेजों का शासन धीरे-धीरे कायम होने लगा और एक समय ऐसा हुआ कि भारत पर पूर्णरूपेण अंग्रेजों का आधिपत्य जम गया। राष्ट्रभाषा तथा राजभाषा के रूप में फारसी की जगह अंग्रेजी को बैठाया गया। तब से विद्यालयों, महाविद्यालयों तथा सरकार के विभिन्न कार्यालयों में अंग्रेजी भाषा ही पूजनीया बन गई। परंतु 19वीं शताब्दी के उतरार्द्ध में ही अंग्रेजों द्वारा की जानेवाली राष्ट्र की हानि के विरोध में आवाज उठाई गई। इस शताब्दी के सांस्कृतिक पुनर्जागरण काल का राजाराम मोहन राय, आचार्य केशवचन्द्र सेन, स्वामी दयानंद सरस्वती, महात्मा गाँधी, राजर्षि पुरूषोत्तम दास टंडन, डॉ. राममनोहर लोहिया आदि नेताओं ने हिंदी को राष्ट्रभाषा की संज्ञा दी । महात्मा गाँधी कहा करते थे "मैं अंग्रेजी को प्यार करता हूँ लेकिन अंग्रेजी अगर उस जगह को पकड़ना चाहती है जिसकी वह हकदार नहीं है तो मैं उससे सख्त नफरत करूँगा।"

*शोधप्रज्ञ, हिंदी विभाग, ल. ना. मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र जैसे साहित्यकार ने भी अपनी भाषा की उन्नति के लिए लिखा है–

"निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान के मिटत न हिए को सूल।।
अंग्रेजी पढ़िकै जदपि, सब गुण होत प्रवीन।
पैनिज भाषा ज्ञान बिन, रहत हीन के हीन।।"

पुन: 20 वीं शताब्दी के स्वतंत्रता संग्राम के नेताओं ने भी हिंदी के अखिल भारतीय महत्व को समझते हुए पूरे भारत में इसका खूब जोर-शोर से प्रचार-प्रसार किया। तरह-तरह की साहित्यिक संस्थाओं की स्थापना भी की गई। हिंदी के अनेक पत्र-पत्रिकाओं का विमोचन भी किया गया। अंत में एक समय ऐसा आया कि हमारा देश भारत आजाद हो गया। उसके बाद 14 सितम्बर 1949 को संविधान सभा ने हिंदी को संघ की राजभाषा घोषित कर दी और सम्पूर्ण देश में केंद्र तथा राज्य सरकार के सभी कार्यालयों, विद्यालयों, महाविद्यालयों में हिंदी भाषा अनिवार्य कर दी गई। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में जिस तरह अंग्रेजी विभिन्न भाषाओं से शब्द लेकर सशक्त तथा समृद्ध बनी हुई है, ठीक उसी तरह आज हिंदी भी अनेक भाषाओं से शब्द लेकर गौरवशाली बनी है। इसमें अरबी, फारसी, अंग्रेजी, चीनी, मैथिली, पुर्तगाली, तुर्की इत्यादि के शब्द पाए जाते हैं। आज यह हिंदी भाषा न केवल भारत के कोने-कोने में बल्कि लगभग 100 से ज्यादा देशों में भी अपनी पहुँच बनाई हुई है और वहाँ इसकी पढ़ाई खूब जोर-शोर से हो रही है। भारत में लगभग 80% लोग हिंदी बोलते तथा समझते हैं।

अत: आज भाषा की सशक्तता तथा व्यापकता को देखते हुए भारत के हर सम्प्रदाय के लोग यह कहने के अधिकारी हैं –

"लहू से इस चमन को हमने भी सँवारा है।
हक जितना तुम्हारा है, उतना ही हक हमारा है।।

अत: इस भाषा में बहुत सारे साहित्यकारों ने भी साहित्यिक पुस्तकों की रचना की है जिसमें कहानी, उपन्यास, कविता, निबंध इत्यादि की पुस्तकें आती हैं। धीरे-धीरे हमारी हिंदी भाषा इतनी सहज तथा लोकप्रिय बन गई कि बहुत ऐसे लोग हैं जिन्होंने अन्य भाषाओं में विशिष्टता रखने तथा अन्य संप्रदायों के होने के बावजूद हिंदी में ही अपनी कतिपय रचनाएं प्रस्तुत की है। इतना ही नहीं संसार के विभिन्न देशों के विद्वानों ने भी कतिपय बहुमूल्य, वैचारिक और सृजनात्मक साहित्य द्वारा हिंदी की श्रीवृद्धि की है। जिनमें फादर कामिल बुल्के (बेल्जियम), डॉ. तोमिया मिजोकामी (जापान), डॉ. आदोलेन स्मेकल (चेकोस्लोवाकिया), डॉ. रूपर्ट स्नेल (इंगलैड), प्रो. क्यूया ढ़ोई (जापान), प्रो. जोर्जो मिलानेत (इटली), डॉ. लोठार लुसत्से (जर्मनी), डॉ. कैथरिन जी हैन्सन (कनाडा), प्रो. मारिया क्षेष्टोफ बृस्की (पोलैंड) इत्यादि अग्रगण्य हैं। वर्तमान में हिंदी भाषा रोजगार तथा बाजार की भाषा भी बन गई है । प्रिंट तथा इलेक्ट्रानिक मीडिया ने तो प्रयोजन मूलक हिंदी के क्षेत्र को काफी व्यापक तथा व्यावहारिक भी बना दिया है । अब हिंदी भाषा में हर स्तर की पढ़ाई के साथ-साथ हर विभाग में उच्च शिक्षा प्राप्त लोगों के लिए विभिन्न पदों पर नियुक्तियाँ भी होने लगी हैं । ये पद हैं–हिंदी अधिकारी, हिंदी सहायक, हिंदी अनुवादक, हिंदी व्याख्यता तथा शिक्षक इत्यादि । ये पद प्राय: पत्र-पत्रिकाओं के कार्यालयों, आकाशवाणी तथा दूरदर्शन केंद्रों, डाक विभाग, रेल विभाग, बैंकों, सचिवालय विधानों सभाओं, न्यायालयों, विभिन्न, दूतावासों, अंतर्राष्ट्रीय शैक्षणिक संस्थानों, साहित्य तथा संगीत के क्षेत्रों, विद्यालयों, महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों, व्यावसायिक प्रतिष्ठानों, विज्ञापन कार्यालयों, अभिनय तथा सिनेमा इत्यादि के क्षेत्रों में उपलब्ध रहते हैं ।

हिंदी का इतना व्यापक क्षेत्र होने के बावजूद हमारे देश का कुछ क्षेत्र-विभाग तथा पाठ्यक्रम अभी भी अंग्रेजी भाषा को ही तरजीह दे रहे हैं । वह क्षेत्र है दक्षिणी, उत्तर-पूर्वी तथा कुछ हद तक पश्चिमी भारत । वहाँ हिंदी की उपेक्षा होती है जबकि दिनानुदिन इसकी अपेक्षा बढ़ती जा रही है । वहाँ के लोग विशेष रूप से क्षेत्रीय भाषा को ही प्राथमिकता देते है । या फिर अंग्रेजी भाषा में धाराप्रवाह बोलने या लिखने में अपनी श्रेष्ठता समझते हैं । यही पर जिस पत्ते में खाना उसी में छेद करने वाली कहावत चरितार्थ होती है । सरकार के कुछ विभाग जैसे–उच्चतम न्यायालय, उच्च न्यायालय, जहाँ अंगेजी में ही काम होता है । कुछ ऐसे पाठ्यक्रम भी हैं जो पूर्ण रूपेण अंग्रेजी में जैसे–चिकित्सा, वाणिज्य, अभियांत्रिकी तथा कम्प्यूटर पाठ्यक्रम इत्यादि । इन सभी स्थानों पर अंग्रेजी के बदले हिंदी भाषा का प्रयोग किया जाना चाहिए । तभी हमारा देश एकता तथा अखण्डता का द्योतक हो सकता है । नहीं तो हमारा यह भारत एक बार फिर विदेशियों के हाथ का कठपुतला बन जाएगा ।

अत: राष्ट्रभाषा तथा राजभाषा की महता को बरकरार रखने के लिए हम सभी को एक संकल्प लेकर इस नारे को बुलंद करना होगा–

"एक राष्ट्र हो भारत जननी, एक हृदय हो हिंदी ।
जनमानस की भाषा हिंदी विश्वभाल की बिंदी ।।"

प्रशासनिक

एक सच्चा एवं आदर्श सभ्य लोक-सेवक

–प्रशांत कुमार मिश्र*

"लोक-सेवक" आज के समाज का केंद्र बिंदु है जिसके चारों ओर विभिन्न कक्षाओं में जन-साधारण इस उद्देश्य के साथ परिक्रमा करता रहता है कि कदाचित् कभी तो उसे केंद्र बिंदु का सम्पर्क प्राप्त होगा और यह उससे अपना कार्य साधित कर सकेगा। "लोक-सेवक" वर्तमान परिप्रेक्ष्य में एक विचित्र प्राणी है। प्राय: लोक-सेवक अर्थात् सभ्य सेवक एक असभ्य स्वामी के रूप में सामने आता है। कितना विरोधाभास है कि जिसे सभ्य सेवक होना चाहिए वह न तो सभ्य ही रहा और न ही सेवक। यह विकृतियां कैसे और क्यों इस वर्ग में घर कर गई, कह पाना कुछ कठिन है। लोक-सेवक की एक और विडम्बना यह है कि जहाँ वह अनेकानेक शक्तियों व अधिकारों का भंडार है, वहीं वह प्राय: अकशेरूकी जन्तु की भाँति भी आचरण करने को विवश हो जाता है प्राय: देखा गया है कि कोई लोक-सेवक जितने अधिक वर्षों की सेवा पूरी कर लेता है उतनी ही अधिक उसकी मेरूदण्ड निर्बल होती जाती है।

"सिविल" शब्द का उद्गम "सिविलाइजेशन" शब्द से हुआ है। अत: एक सिविल सरवेन्ट को सभ्य तो होना ही चाहिए। उसे सभ्यता, संस्कृति, पर्यावरण, समाज व व्यक्तियों के संबंध में सुस्पष्ट अवबोध् होना चाहिए। दुख: का विषय है कि आज "लोक-सेवक" में अपेक्षित मूल गुणों का तीव्रता से ह्रास हो रहा है। सभ्यता को पाश्चात्य का पर्याय माना जा रहा है और "पाइप" या "चुरूट" को सभ्य समाज का प्रतीक माना जा रहा है। इसी प्रकार मातृ भाषा को छोड़कर अंग्रेजी भाषा का प्रयोग करने वाला समाज भी सभ्य समाज की संज्ञा से विभुषित किया जा रहा है। हमें स्मरण रखना होगा कि हमारी भारतीय संस्कृति, संस्कार व परम्पराएं विश्व में श्रेष्ठतम् हैं और इनकी जड़ें हमारे मानव पटल पर जितनी गहरी अंकित होंगी उतनी ही हम सभ्य कहलाने के अधिकारी होंगे। इस संबंध में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने अपने विचारों की अभिव्यक्ति इस प्रकार की थी–

> "I will open all windows of my house, but I refuse to be blown off my feet"

पं. नेहरू के शब्दों में–

> "A person who cuts himself off from the cultural genius of the country he lives in creates a barrier which makes it difficult for him to function effectively".

आज की विड़म्बना यह है कि नीम-वृक्ष के औषधीय प्रयोग पर शोध कार्य अमेरिका में हो रहा है तथा संस्कृत भाषा पर शोध अनेक संस्थाओं द्वारा किया जा रहा है।

सामान्यत: किसी राज्य में एक शक्तिशाली सम्राट था। धन, सम्पदा, वैभव व अधिकारों से युक्त वह राजा अहंकार से युक्त हो गया। वह स्वयं को प्रजा का स्वामी मानने लगा। एक बार उसके बुद्धिमान प्रधानमंत्री ने राजा से कहा कि यद्यपि वह सबका स्वामी है तथापि उसमें भी दूसरों की सेवा करने का भाव कहीं न कहीं अस्तित्व में अवश्य है। राजा ने प्रधानमंत्री के इस कथन को कठोरता से नकार दिया। एक दिन राजा अपने राज्य में विचरण कर रहा था। उसी मार्ग में एक अत्यन्त वृद्ध व कृशकाय व्यक्ति एक छड़ी के सहारे धीरे-धीरे जा रहा था। तभी अचानक उस वृद्ध की छड़ी गिर पड़ी और वह उसे उठाने का कठिन प्रयास करने लगा। उस घमण्डी राजा से रहा न गया और उसने आगे बढ़कर छड़ी उठाई और उस वृद्ध के हाथ में प्यार से थमा दी। प्रधानमंत्री ने राजा से कहा कि देखिए आपके अन्दर भी परसेवा, परहित व परोपकार के गुण पूर्ण मात्रा में मौजूद हैं। राजा ने स्वीकारोक्ति में अपना सिर हिला दिया। इस कहानी

* सचिव, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार, लोक नायक भवन, नई दिल्ली

2432 HA/07—5A

का तात्पर्य यह है कि सेवा मनोभाव मानव प्रकृति का एक अभिन्न अंग है। इसकी अभिव्यक्ति के लिए अच्छा वातावरण चाहिए।

संक्षेप में हम यह कह सकते हैं कि "लोक-सेवक" को भारतीय परिवेश पर गर्व करते हुए शिष्टता, सभ्यता, सौम्यता, सदाशयता व विनम्रता के गुणों से परिपूर्ण होना चाहिए।

"लोक सेवक" किसका सेवक है यह एक स्वाभाविक सा प्रश्न है ? क्या मात्र अपने सगे सम्बन्धियों अथवा प्रियजनों की सेवा करने वाला ही सेवक है ? नहीं, लोक-सेवक जनता का सेवक है। सत्य तो यह है कि इस विश्व में प्रत्येक व्यक्ति समय देश व काल के अनुसार एक दूसरे का सेवक है। व्यावहारिक दार्शनिक बेन्थम इसी सिद्धान्त के अनुयायी हैं। इनके अनुसार –

Greatest number of the greatest good—जीवन का लक्ष्य होना चाहिए।

परन्तु मात्रा ही जीवन में सब कुछ नहीं है। इस संबंध में विख्यात दार्शनिक जे.एस. मिल गुणात्मकता के सिद्धान्त का प्रतिपादन करते हैं। जीवन को केवल संख्यात्मक व मात्रात्मक दृष्टिकोणों से सफल नहीं माना जा सकता है। जीवन में गुणवत्ता परम आवश्यक है। जे. एस. मिल के अनुसार –

"A man dissatisfied is better than a pig satisfied and a Socrates dissatisfied is better than a man satisfied".

तथा

In our anxiety to achieve number or targets, we must not miss the quality. In counting trees, we must not miss the beauties of the forest".

मेरी मान्यता है कि –

What is more important in life is not how long you have stayed on the crease but how fast you have scored in life".

यदि हम शंकराचार्य, स्वामी विवेकानन्द तथा रामानुजम की ओर दृष्टि डालें तो पायेंगे कि यद्यपि उनका जीवन काल स्वल्प था तथापि उन्होंने अपने जीवन से समाज पर जो प्रभाव डाला, वह अविस्मरणीय तथा युगान्तरकारी परिवर्तन लाने में सक्षम था।

मानव-जीवन अमूल्य गुणों का सागर है। इसका पूर्ण सदुपयोग किया जाना नितान्त आवश्यक है। "रामचरितमानस" में गोस्वामी तुलसीदास जी ने कहा है–

"बड़े भाग मानुष तन पावा। सुरदुर्लभ सब ग्रंथहिं गावा॥

साधान धाम मोच्छ कर द्वारा। पाइय न जेहि परलोक संवारा॥

सो परत्र दुःख पावई, सिर धुनि धुनि पछिताई।

कालहि, कर्महि, ईस्वरहि, मिथ्या दीसु लगाई॥"

हम "सभ्य लोक-सेवक" के रूप में जीवन के उद्देश्य को पहचानकर उसे उसी दिशा में अग्रसित कर सकते हैं।

श्रीमद्भागवत्गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने कर्मयोग का उपदेश दिया –

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन्

मा कर्मफलहेतु र्भुमाते संगोऽस्तविकर्मणि।"

अर्थात् तुम्हें अपना कर्म करने का अधिकार है किन्तु कर्म के फलों पर तुम्हारा अधिकार नहीं है। तुम न तो अपने आपको कर्मों के फलों का कारण मानों और न ही कर्म करने में कभी आसक्त हो, तथा स्थितप्रज्ञ होकर कार्य करना है।

जब मनुष्य मनोरथ से उत्पन्न होने वाली इन्द्रियां तृप्ति की समस्त कामनाओं का परित्याग कर देता है और जब इस तरह से विशुद्ध हुआ उसका मन आत्म में सन्तोष प्राप्त करता है तो वह मनुष्य स्थितप्रज्ञ कहा जाता है।

इन्द्रिय विषयों का चिन्तन करते हुए मनुष्य को उसमें आसक्ति हो जाती है और ऐसी आसक्ति से काम उत्पन्न होता है फिर काम से क्रोध प्रकट होता है। क्रोध से पूर्ण मोह उत्पन्न होता है और मोह से स्मरण शक्ति का विभ्रम हो जाता है। जब स्मरण शक्ति भ्रमित हो जाती है तो बुद्धि नष्ट हो जाती है और बुद्धि नष्ट होने पर मनुष्य भयकूप में गिर जाता है।

इस प्रकार इन्द्रिय निग्रह करके हम "सभ्य लोक-सेवक" निःस्वार्थ सेवा के पथ का अनुसरण कर सकते हैं। "नीति-शतक" में कहा गया है –

"सेवा रूपी धर्म श्रेष्ठतम् आभूषण है जो योगियों की बुद्धि से भी परे है।"

2432 HA/07—5B

सेवा से अनेक लाभ प्रात होते हैं–श्रद्धा का विकास होता है, तुच्छ उपद्रव मिट जाते हैं एवं शिष्टजनों से उसे मान्यता प्राप्त होती है । सेवा हृदय और आत्मा को पवित्र करती है ।

पंडित जवाहर लाल नेहरू ने कहा था –

"They call me the Prime Minister of India, but it would be more appropriate if I were called the first servant of India. In this age, it is not titles and position that matter but service".

मेरी अवधारणा है –

"What matters is one's life is the quantum of work done in the service of humanity and not ourself".

हमें यह नहीं सोचना है कि किसी सत्तायुक्त व लाभयुक्त पद पर ही कितनी अवधि तक बने रह सकते हैं अपितु यह सोचना है कि कितना शीघ्र हम मानवता की सेवा में तल्लीन हो सकें । हम राजकीय सेवा में रहे अधिकारियों व कर्मचारियों को सभ्य, शिष्ट व स्वार्थ रहित सेवा की भावना से परिपूर्ण होना चाहिए । एक सच्चे व आदर्श "लोक-सेवक" में इन गुणों के अतिरिक्त कुछ और मूलभूत गुण होना आवश्यक है, जिनकी चर्चा मैं संक्षेप में करना चाहूंगा ।

(1) अध्यात्म यथार्थ विज्ञापन (Anonymity Vs Publicity)

राजकीय सेवकों की स्वस्थ परम्परा अनामित्व की है । हमें निष्ठापूर्वक कर्त्तव्य पालन करना है, कृत कार्यों का ढिढ़ोरा पीटना हमारा कर्त्तव्य नहीं है । हम में कार्य करने की ललक व तीव्र उत्सुकता होनी चाहिए । भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पं. नेहरू ने अपनी पुस्तक, "दि डिस्कवरी ऑफ इंडिया" में लिखा है –

"The passion and the urge to action are the very stuff of life without that passion and urge, there is a gradual oozing out of hope and vitality, a slow merging into non-existence."

प्रख्यात विचारक पं. श्रीराम शर्मा आचार्य के अनुसार– "जिस प्रकार पुष्प अपनी सुगंध, जो वायु के माध्यम से स्वयं बिखेरती है, पहचाना जाता है, उसी प्रकार गुणवान व्यक्ति अपने कार्यों व गुणों से पहचाना जाता है" ।

महात्मा गांधी के कार्यकाल में प्रचार-प्रसार के साधन नगण्य थे, न तो दूरदर्शन का ही आधार था और न ही आकाशवाणी का क्षेत्र व्यापक था । किन्तु उनका व्यक्तित्व व चरित्र इतना देदीप्यमान व प्रखर था कि कोटि-कोटि जनता उसके सामने नतमस्तक थी । विख्यात दार्शनिक एलेक्जेण्डर पोप ने अनामत्व के सिद्धान्त का प्रबल समर्थन किया है ।

"Let me live unseen unknown;
unlamented let me die."

परन्तु दुर्भाग्य का विषय है कि आज का लोक सेवक कार्य में कम तथा प्रचार में अधिक विश्वास करता है । हमें ध्यानस्थ रखना होगा कि एक अच्छे व कर्मठ अधिकारी को प्रचार की आवश्यकता नहीं है क्योंकि "Actions speak louder than words." हमें उद्देश्य प्राप्ति के प्रति गंभीर, समर्पित, व्यक्तिगत तथा हेतु तत्पर तथा निष्ठा के गुणों से युक्त होकर अपने शाश्वत स्वरूप को पहचानना होगा ।

(2) तटस्थता बनाम प्रतिबद्धता (Neutrality v. Commitment)

"लोक-सेवक" को अपने दायित्वों का निर्वहन करते समय तटस्थ होना चाहिए । उसे अपने सहयोगियों तथा अधीनस्थों के प्रति समदर्शी होना चाहिए । तटस्थता का अर्थ निष्क्रियता (Passivity), असंबद्धता (indifference), अथवा नपुंसकता (Sterility) नहीं है । वस्तुत: वस्तुनिष्ठ (Objective) होना भी तटस्थता है। हमारे कार्य आसक्ति रहित होने चाहिए । साथ ही साथ हमें भारत के संविधान में निहित मूल्यों के प्रति जनकल्याण के प्रति तथा समान सेवा के आदर्शों के प्रति प्रतिबद्ध भी होना चाहिए ।

मेरी मान्यता है कि तटस्थता व प्रतिबद्धता एक ही सिक्के के दो पहलू हैं । कोई व्यक्ति तटस्थ रहते हुए भी प्रतिबद्ध हो सकता है ।

राजनैतिकता तथा बाह्य सिफारिशों के मायाजाल में न फंसकर अपनी तटस्थता को अपनी शक्ति बनाना है । यदि कोई लोक सेवक अपने निजी स्वार्थों की पूर्ति हेतु राजनैतिक

पैंतरेबाजी का सहारा लेगा तो वह तटस्थ कैसे रह सकेगा?

(3) निष्पक्षता (Impartiality)

''लोक-सेवक'' में निष्पक्षता का गुण प्रचुर मात्रा में होना चाहिए । ''लोक-सेवक'' को निर्भीक तथा पक्षपात रहित होकर कार्यों का निष्पादन करना चाहिए । इंग्लैण्ड के प्रख्यात दार्शनिकी लास्की ने कहा था :-

"In a conflict between the individual and the state, I will be true to my own conscience."

हमें अपने विवेक का श्रेष्ठतम उपयोग करना है किन्तु यह उपयोग ऐसा होना चाहिए कि इसमें निष्पक्षता व न्यायप्रियता स्पष्ट परिलक्षित भी होनी चाहिए । हम जब भी कोई निर्णय लें अथवा कोई आदेश पारित करें तो ठोस साक्ष्यों पर ही उसे आधारित करें तथा राय या पक्षपात से निर्णय न लिया जाए ।

पंडित नेहरू के अनुसार,

"Be brave and all the rest follows."

तथा

"Cowardice is worse than violence."

उन्होंने जीवन के आदर्शों पर साहस तथा सम्मान के साथ अडिग रहने का आह्वान करते हुए लिखा है–

"There is only one thing that remains to us that can not be taken away : to act with courage and dignity and to stick to the ideals that have given meaning to life."

(4) ईमानदारी, सत्यनिष्ठा तथा चरित्र (Honesty, Integrity and Character)

ईमानदारी व सत्यनिष्ठा स्वयं में अत्यन्त व्यापक विचार है । इनका क्षेत्र भौतिकवाद से लेकर अध्यात्मवाद तक विस्तृत हैं । भौतिक ईमानदारी प्रत्येक लोक-सेवक की आधारभूत अर्हता है किन्तु दुर्भाग्य है कि आज की सामाजिक संरचना में यह भी लुप्तप्राय हो गयी है । मानसिक, बौद्धिक व आत्मिक ईमानदारी तो बिरलों के ही पास हो सकती है । हम परिचित हैं कि–

HONESTY IS THE BEST POLICY

पंडित नेहरू ने लिखा था–

"The most important thing about an administration is the belief in its fairplay and integrity."

महात्मा गांधी के अनुसार–

''चरित्र की शुद्धि ही सारे ज्ञान का ध्येय होनी चाहिए ।''

स्वामी विवेकानंद ने कहा था–

''यह चरित्र ही है जो विपत्तियों की अभेद्य दीवारों में से भी मार्ग बना लेता है ।''

गुरुदेव रविन्द्रनाथ टैगोर का मत है–

''चरित्र का परिवर्तन या उत्कर्ष दर्शन से नहीं होता, योग से होता है ।''

हमें मन, वचन व कर्म में भी स्थिति लानी होगी तथा हम चरित्रवान हो सकेंगे । स्मरण रखें कि हमें अपनी वाणी, अपने विचारों तथा अपने कार्यों को एक सूत्र में पिरोकर रखना है तभी इनमें एकरूपता परिलक्षित भी होगी । मन, वचन व कर्म की समानता आने पर हम अन्तर्मन में असीम ऊर्जा की अनुभूति कर सकेंगे । मैकियावली के सिद्धान्त के अनुसार यह महत्वपूर्ण नहीं है कि किस प्रकार के साधनों से हर उद्देश्य की प्राप्ति करते हैं अपितु येन केन प्रकारेण लक्ष्य प्राप्त कर लेना ही हमारी सफलता का मापदण्ड है । इस सिद्धान्त के अनुसार–

End justified the means"

तथा "Nothing succeeds like success."

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी इन विचारों के घोर विरोधी थे। उनकी अवधारणा थी कि यदि हम ईमानदार हैं तो अपने कार्य व अचारण से इमानदारी दिखाई भी पड़नी चाहिए । उनकी दृढ़ मान्यता थी कि–

"Noble ends can be achieved only by noble means".

ज्ञातव्य है कि हमारे कार्य विचारों की परिणति है, हमारे विचार हमारे व्यक्तित्व की परिणति है और हमारा व्यक्तित्व हमारे चरित्र और हमारी सत्यनिष्ठा की परिणति है ।

(5) सृजनात्मकता (Creativity)

मानव जन्मजात स्वभाव से सृजनात्मक प्रवृत्ति का होता है किन्तु इस प्रवृत्ति के समुचित विकास को उपयुक्त व अनुकूल वातावरण की आवश्यकता होती है । क्या हम अपने अधीनस्थ अधिकारियों व कर्मचारियों को यह माहौल उपलब्ध करा पा रहे हैं? यदि हम एक तानाशाह अधिकारी के रूप में कार्य करेंगे तो हमारे अधीनस्थों की रचनात्मक प्रवृत्तियां असमय ही हम तोड़ देंगे ।

''लोक-सेवक'' की कार्य पद्धति सृजनात्मक होनी चाहिए । उसमें मौलिकता का अंश होना चाहिए तथा दिखावा लेशमात्र भी नहीं होना चाहिए । यह हमारा दुर्भाग्य है कि इस वांछित सिद्धान्त के प्रतिकूल हमारा आचरण निम्न अवांछनीय सिद्धान्तों पर आधारित होता जा रहा है–

"Pose busy and take it easy." "Boss is always right."

रचनात्मक प्रवृत्तियों की आवश्यकता पर बल देते हुए महान विचारक पण्डित नेहरू ने लिखा था–

"If creative imagination is lacking : our growth becomes more and more stunted, which is a sign of decay."

तथा

"A nation cannot progress if it merely imitates its ancestors : what builds a nation is creative, inventive and vital activity."

किन्तु कदाचित् हम इन विचारों से प्रेरणा ग्रहण नहीं कर पा रहे हैं । एक प्रसिद्ध पर्वतारोही ब्रिगेडियर ज्ञान सिंह ने आज की स्थिति का चित्रण इस प्रकार किया है–

"It has been my belief for a long time that in any organisation, society, country or government ; there is a very small percentage of men or women who really work. It is this minuscule body of doers who make things hum with purposeful activities. The majority are content to be passengers busy in doing nothing or in using such talent and ingenuity in feathering their own nest while appearing to make sacrifices."

हमें अपने कार्य व आचरण में इस अवधारणा को मिथ्या प्रमाणित करना होगा अन्यथा हम ''सभ्य-लोक-सेवक'' कहलाने के पात्र नहीं रहेंगे ।

हमारे दायित्व है कि हमारे संगठन में जो 5-10 प्रतिशत सृजनात्मक प्रवृत्ति के तथा मौन कार्यकर्ता हैं, उन्हें पहचानें, प्रोत्साहित करें तथा उन्हें उचित वातावरण उपलब्ध कराएं तथा इस वर्ग को और बढ़ाएं ।

(6) अभिगम्यता (Accessibility)

"Be accessible without being approachable."

''लोक-सेवक'' को अभिगम्य अर्थात् सम्बन्धित व्यक्तियों की पहुँच में होना चाहिए किन्तु सुगम्य (Approachable) अर्थात् उनके प्रभाव में नहीं होना चाहिए । अभिगम्यता का अर्थ सस्ती उपलब्धता या सस्ती लोकप्रियता कदापि नहीं हैं किन्तु हमें संवेदनशील भी होना चाहिए ।

पंडित नेहरू की मान्यता थी –

"A sensitive person will suffer continually on behalf of other, An insentive person may escape that but at the cost of much that is fine in life".

यदि हम अपने सहयोगियों तथा अधीनस्थों को उपलब्ध ही नहीं होंगे तो संगठन की आधारभूत इकाइयों से पुनर्निवेश Feedback ही उपलब्ध नहीं हो पाएगा जो संगठन पर हमारे नियंत्रण को कुप्रभावित करेगा । हमें अभिव्यक्ति व सम्प्रेषण के सभी मार्ग खुले रखने चाहिए । हमें दृढ़ किन्तु विनम्र होना चाहिए ।

(7) खुलापन (Openness, Transparency)

प्रत्येक ''लोक-सेवक'' का चरित्र व उसकी कार्य प्रणाली पारदर्शी होनी चाहिए । यह स्वस्थ प्रशासन का प्रतीक है । विख्यात विचारक गोलियर ने कहा था –

''हृदय की ऐसी कोई गुप्त बात नहीं हैं जिसे हमारे काम प्रकट न कर देते हों''

हमारे निर्णय लेने की प्रक्रिया, व्यवहार तथा कार्य पद्धति पारदर्शिता के सिद्धांत पर आधारित होने चाहिए । इससे सम्प्रेषण शून्यता (Communication gap) की स्थिति नहीं आने पाती तथा हमारी विश्वसनीयता में वृद्धि होती है ।

(8) निष्कपटता, मानवीयता तथा उत्तरदायित्वपूर्णता (Sincerity, Humane and responsiveness)

"लोक-सेवक" को अपने व्यवहार व आचरण में निष्कपट, मानवीय तथा समाज के प्रति उत्तरदायी होना चाहिए । मानवीय दृष्टिकोण रखने के संबंध में पंडित नेहरू ने लिखा था-

"There should always be the human touch, but behind the human touch should give the feeling of firm decision"

हमें "अहं" (EGO) की भावना को शरण नहीं देनी चाहिए । अपने अधीनस्थों के प्रति संवेदनशील होना चाहिए व उनके दु:खों को बाँटने का प्रयास करना चाहिए । यदि संगठन को कोई उल्लेखनीय उपलब्धि प्राप्त होती हैं तो उसका श्रेय अधीनस्थों को देना चाहिए किन्तु यदि कोई बड़ी विफलता का मुंह देखना पड़े तो इसका उत्तरदायित्व अपने ऊपर लेना चाहिए । यदि आप किसी को लाभ पहुँचाने की स्थिति में है तो स्वयं को कोई लाभ हस्तान्तरित न करें, दूसरों को लाभ पहुँचाएं ।

(9) टीम भावना (Team Spirit-Espirit de corpse)

"लोक-सेवक" को एकात्मक प्रवृत्ति से दूर रहना चाहिए । उसे यह भली प्रकार हृदयंगम कर लेना चाहिए कि टीम भावना से कार्य करके ही किसी संगठन या संस्था को शिखर सफलता दिलाई जा सकती है । हमें स्मरण रखना है कि मानव जीवन संग्रहणशील (Acquisitive) नहीं है अपितु हमें अपने सामाजिक दायित्वों का निर्वाह करते हुए जीवन के लक्ष्य को प्राप्त करना है । हमें हृदय व मस्तिष्क के मध्य एकात्मकता स्थापित करके पूर्ण समर्पण की भावना से कार्य करना है । हमें यह भी स्मरण रखना है कि व्यक्तिपरक निर्णय की तुलना में सामूहिक निर्णय अधिक उचित व उपादेय होते हैं । अत: टीम भावना को प्रोत्साहित करना चाहिए । इसके लिए हमें अधिकारी (Boss) के स्थान पर नेता (Leader) बनने का प्रयास करना चाहिए । दोनों के व्यक्तियों का तुलनात्मक चित्रण निम्न पंक्तियों में देखा जा सकता है -

1. The boss drives his men, the leader inspires them.
2. The boss depends on authority the leader gets their goodwill.
3. The boss evokes fear, the leader radiates love.
4. The boss keeps them guessing, the leader arouses their enthusiasm.
5. The boss says 'I' the leader says WE.
6. The boss shows who is wrong, the leader shows what is Wrong.
7. The boss finds blame for breakdown, the leader fixes the breakdown.
8. The boss knows how it is done, the leader shows how it is done.
9. The boss says Go, the leader says, 'Let us go'.
10. The boss abuses men, the leader uses them.
11. The boss demands respect, the leader commands respect.
12. The boss talks pompously, the leader talks modestly.
13. The boss makes work drudgery, the leader makes it gay.

(10) उचित परिप्रेक्ष्य (Right perspective)

"लोक-सेवक" को प्राय: विविध विषम व सम परिस्थितियों का सामना करना होता है । अत: यह आवश्यक है कि वह प्रत्येक टिप्पणी व प्रत्येक घटना को उचित परिप्रेक्ष्य में ले । इसी प्रकार विभिन्न नियमों, कानूनों, शासनादेशों का सम्यक् व उचित विख्यापन किया जाना चाहिए । ऐसे विख्यापन में या लोक-सेवक द्वारा किए जा रहे नियोजन में दूरदृष्टि का उपयोग होना चाहिए ।

"Greatness comes from vision, the tolerance of the spirit, compassion and an even temper which is not ruffled by ill fortune or good fortune.

"लोक-सेवक" के निर्णय व कार्य संकीर्ण परिप्रेक्ष्य में नहीं होने चाहिए अपितु वह दूरदृष्टि पर आधारित होने चाहिए । उसे अपनी कल्पना शक्ति का विकास करना चाहिए । इससे यथार्थ, तर्कपूर्ण तथा उच्च विचारों से युक्त निर्णय लेने की क्षमता आती है । हमें अपने कार्यों में पूर्णता (perfection) लाने का प्रयास करना चाहिए ।

2432 HA/07—6B

(11) व्यावसायिकता (Professionalism)

भारतीय प्रशासनिक सेवा का उद्देश्य (MOTTO) है– "योग: कर्मसु कौशलम्" अर्थात् "perfection in action is yoga".

हमें अपने कार्य में सम्पूर्णता व दक्षता लाने का प्रयास करना चाहिए। हमारी निपुणता ही हमारे कार्यों को गौरवान्वित कर सकती है। अत: कार्यक्षमता को व्यावसायिकता (Professionalism) के स्तर तक विकसित करना चाहिए।

(12) कार्य-सम्बन्धी न्याय (Functional Justice)

प्रत्येक लोक-सेवक को अपनी कार्यप्रणाली न्याय के आधारभूत सिद्धान्तों पर आधारित रखनी चाहिए। सुप्रसिद्ध दार्शनिक प्लेटो ने कहा था–

> "Justice doesn't merely consist in speaking the truth. It doesn't merely consist in following a policy of tooth for a tooth and eye for an eye. Justice in fact consists in performing one's own responsibility in whatever station of life he is, in a most efficient, sincere and honest manner".

(13) भद्र पुरूष (Thorough Gentleman)

"सभ्य लोक-सेवक" को अव्यवसायी, श्रमसाधक व सम्पूर्ण होने के साथ-साथ सज्जनता व भद्रता के गुणों से भी युक्त होना चाहिए। "भद्रपुरूष" किसे कहेंगे? CARDINAL NEW MAN के अनुसार–

> "A gentleman is not known by the quality of the dresses he puts on. He is not known by the richness he possesses. He is known by the qualities of his head and heart."

हमें एक विचारवान मानव बनना होगा। एक अच्छा व नेक इन्सान बनना होगा।

(14) अतिमानव की परिकल्पना (Super Human Consciousness)

महान् सन्त व विचारक धनविन्द ने अति मानव की परिकल्पना की है। यदि काल के साथ उन्नयन करते हुए वानर से मानव बना जा सकता है तो निश्चय ही मानव से अतिमानव भी बना जा सकता है। हमें समग्र मानव-जाति के कल्याण के संबंध में चिन्तन व मनन करना होगा तथा अपने आपको मानवता से ऊपर "अति मानवता" की ओर ले जाना होगा। यही ईश्वर के अनुदान का, हमारी ओर से प्रतिदान हो सकेगा। प्रसिद्ध विद्वान ई. एस. फार्स्टन ने जीवन का कटु सत्य इन शब्दों में व्यक्त किया है–

"We are all born naked,

We will pass away from this world, naked....

And we are naked beneath our dresses...

गीता का सार हमें कर्त्तव्यपरायण होने की प्रेरणा प्रदान करता है–

> "जो हुआ, वह अच्छा। जो हो रहा है, वह अच्छा हो रहा है। जो होगा, वह भी अच्छा होगा। तुम्हारा क्या गया जो तुम रोते हो? तुम क्या लाये थे जो तुमने खो दिया? तुमने क्या पैदा किया था, जो नष्ट हो गया? तुमने जो लिया, यहीं से लिया, जो दिया यहीं पर दिया। जो आज तुम्हारा है, कल किसी और का था। परसों किसी और का हो जायेगा। परिवर्तन संसार का नियम है।"

तात्पर्य यह है कि हमें निर्लिप्त, निर्विकार एवं निष्काम भाव से जनता के प्रति अपने दायित्वों को पूर्ण करना है तभी हम सच्चे अर्थों में मानव कहलाने के योग्य होंगे और "सच्चा मानव" बनकर ही हम "अति मानव" बनने की दिशा में सार्थक प्रयास करने की स्थिति में होंगे। आज के युग में प्रत्येक मानव के ऊपर अनेक प्रकार की जिम्मेदारियां हैं। इनमें प्रमुख हैं–

(क) परिवार के प्रति–इसमें देश के भावी कर्णधारों के समुचित विकास तथा उनमें उच्चनैतिक मूल्यों के प्रति आस्था व विश्वास उत्पन्न करना भी सम्मिलित है।

(ख) व्यवसाय के प्रति

(ग) समाज के प्रति

(घ) मानवता के प्रति

मेरी धारणा है कि परिवार तथा शिक्षण संस्थाएं समाज के आधारभूत स्तम्भ हैं। अत: हमें इन पर सर्वोच्च प्राथमिकता पर ध्यान देना होगा। जब हम इन संस्थाओं को सुदृढ़ कर सकेंगे तभी अच्छे नागरिक बनाने की दिशा में ठोस कार्यवाही सम्पादित कर पायेंगे। अच्छे नागरिक ही राष्ट्र व समाज को सही दिशा में विकसित कर पाने में सक्षम हो सकते हैं।

वह हा मानवता को अति मानवता की दिशा दिखा सकते हैं।

(15) बुद्धिमत्ता (Wisdom)

"He is said to be wise who is unaffected by anger, joy, arrogance, shame, oppoisition, approbation, or riches. He grasps swiftly what is said. He listens patiently. Having understood the purport, he acts and is not influenced by desire. He does not give unsolicited advice. These are the primary requisites for the wise man. He is pleasant to all beings, skillful in all undertakings and highly resourceful among men. Such a person is said to be a wise man. These eight qualities make the man shine: intelligence, pedigree, self control, erudition, valour, restraint in speech, generosity according to one's means and gratitude".

(16) अध्यात्मवाद (Spiritualism)

प्रत्येक मानव की संजीवनी, उसकी ऊर्जा का स्रोत एवं उसका अस्तित्व मानव की आस्था में है। यह आत्मा अजर, अमर अविनाशी अशोष्य अदाह्य व अक्लेद्य है। आत्मा की शक्ति असीमित है। इसका पूर्ण उपयोग करने के लिए अध्यात्म का आश्रय लेना पड़ता है।

हमारा जीवन दीर्घ किन्तु किन्तु अमर्ष युक्त हो, इससे श्रेष्ठतर होगा कि हमारा जीवन स्वल्प किन्तु हर्षयुक्त हो। यह तभी सम्भव है जब हम अपना आध्यात्मिक विकास कर सकेंगे। इस कार्य में धर्म का विशेष महत्व है। पं. नेहरू ने धर्म का व्यापक अर्थ बताते हुए लिखा था।

"Dharma really means something more than religion. It is from a root word which means to hold together it is the inner most constitution of a thing, the law of its inner being. It is an ethical concept which includes the moral code, righteousness, and the whole range of man's duties and responsibilities".

स्वामी विवेकानन्द ने आत्मा की शक्ति के संबंध में लिखा है–

"Never think there is anything impossible for the soul....All power is within you. You can do anything and everything....This infinite power of the spirit, brought to bear upon matter evolves material development; made to act upon thought, evolves intellectually; and made to act upon itself makes man a God".

धर्म के संबंध में उनकी मान्यता थी–

"A religion that does not infuse strength into it's believe's is no religion to me. Strength is religion and religion is strength. Be not afraid of anything, you will do marvellous work....what power is higher than the power of purity? Love and purity govern the word...."

चरित्र निर्माण के संबंध में स्वामी विवेकानन्द ने कहा था–

"Build up your character and manifest your real nature, the Effulgent, the Respondent, the Ever Pure and call it up in everyone you see.....Neither money pays, nor name, for learning; it is character that can cleave through admantine walls of difficulties the character of any man is but the aggregate of his tendencies; the sum total of the bent of his mind...."

संक्षेप में कहा जा सकता है कि एक ''सभ्य लोक-सेवक'' जो उपरिवर्णित गुणों व विशेषताओं का स्वामी है "भारत" को प्राणमय रखने में महत्वपूर्ण योगदान कर सकता है। जवाहर लाल नेहरू ने सत्य ही कहा था–

"Who lives if India dies? Who dies if India lives?"

आइए, हम सभी राज्य कर्मचारी शुद्ध मन से ''सभ्य लोक-सेवक'' बनने का संकल्प लें तथा अपनी प्राण शक्ति को जागृत करके भारत को विश्व का "प्राण" बनाएं। ■

साहित्यिकी

काव्य का रसास्वादन

–डॉ. राम दास नादार*

संस्कृत में काव्यास्वाद का विवेचन निरपेक्ष रूप से न होकर रस के संदर्भ में हुआ है। रस एक विशिष्ट संदर्भ में सौन्दर्यनिभूति का आस्वाद है तथा दूसरे संदर्भ में उसे आस्वाद न मानकर सौन्दर्यनिभूति के आस्वाद का विषय माना गया है। पाठक अथवा सहृदय उसका आस्वादन करता है। भरत ने रस को एक प्रकार की सौन्दर्यनिभूति ही माना है, जो कवि निबद्ध विभाव, अनुभाव और संचारी भावों के माध्यम से रंगमंच पर उपस्थिति हो जाती है। डॉ. नगेन्द्र के अनुसार यह रमणीय भावमूलक स्थिति ही भरत के अनुसार रस है। सहृदय की अनुभूति इस से भिन्न है। यह स्थित नाट्य-सौन्दर्य मात्र भी नहीं है। अर्थात् केवल नाट्य, अलंकार और वस्तु का सौन्दर्य रस नहीं हो सकता। नाट्य-सौन्दर्य और काव्य-सौन्दर्य के माध्यम से स्थायी भाव की उपस्थिति ही रस है। यह रस के विषय का स्वरूप है। इसके अनुसार रस आस्वाद नहीं है, आस्वाद का विषय अर्थात् अस्वाद्य है। अभिनवगुप्त ने रस की विषयगत सात्वा का लोप करके उसके विषयीगत पक्ष पर बल दिया। उनके अनुसार रस नाट्यगत नहीं हो सकता । नाट्य रस का माध्यम मात्र है, जिसके द्वारा दर्शक आत्मास्वाद ग्रहण करता है। यह आत्मास्वाद ही संबद्ध विश्रन्ति रूप आनन्द है। सामान्य अर्थ में अभिव्यक्ति के चमत्कार तथा काव्य-सौन्दर्य के पर्याय रूप में भी रस का प्रयोग होता है। इस प्रकार काव्य-सौन्दर्य की भावमूलक स्थिति, सहृदय का आत्मास्वाद तथा सामान्य काव्य- सौन्दर्य के रूप में रस का विवेचन प्रारम्भ हुआ, जिसमें अभिनव-गुप्त पादाचर्य द्वारा प्रतिपादित रस का आस्वाद परक रूप अधिक मान्य हुआ। आचार्य अभिनव-गुप्त ने लोक में आनन्दभूत रति आदि भावों को काव्य नाटक में विभाव, अनुभाव और व्यभिचारी भावों का रूप ग्रहण कर लेने पर उनके अलौकिक तत्व का प्रतिपादन किया। रस न कार्य है, न ज्ञाप्य है, न सविकल्प काम है और न निर्विकल्पक। देश और काल की सीमाओं से युक्त होकर सहृदय का चित आत्म विश्रान्ति रूप आनन्द चेतना का अनुभव करता है। इस अर्थ में यह आस्वाद रूप है। आस्वाद्य रूप नहीं है। रस के इस अलौकिकतत्व की प्रतिष्ठा में विश्वनाथ तथा पंडितराज जगन्नाथ ने विशेष योग दिया। आचार्य विश्वनाथ के अनुसार सत्व गुण के उद्रेक से रस का आस्वादन आत्मास्वाद की भांति अभिन्न रूप में होता है। जिस प्रकार आत्मा आस्वाद और आस्वाद्य होनों हैं, उसी प्रकार आन्न और योग तत्वत: एक ही हैं। रस अखण्ड है, अन्य ज्ञान से रहित स्वयं प्रकाशानन्द और चिन्मय है अर्थात् विषय सुख या ऐन्द्रिय कोटि के आनन्द से यह भिन्न है। विषयानन्द से भिन्न होने के कारण यह लोकत्तर चमत्कारमय तथा ब्रह्मास्वाद के समान है। पंडितराज काव्यानन्द और ब्राह्मानन्द में अंतर मानते हैं यद्यपि दोनों आत्मानन्द हैं किन्तु काव्यानन्द में साधारणीकृत भूमिका रहती है जो सोपाधिक है।

रस का यह अद्वैतपरक व्याख्यान भारतीय काव्यशास्त्र के दार्शनिक चिन्तन का प्रतिफलन है जो क्रमश: स्थूल से सूक्षम की ओर अन्त: प्रायाण करता गया है । भरत के विषयगत स्वरूप का विषयीगत अन्त: प्रयाण भारतीय काव्यशास्त्र की मूल चेतना का अन्त:प्रयाण है। भरत के "विभावानुभवव्यभिचारि संयोगाद्रसनिष्पति" सूत्र के "संयोग" तथा निष्पति शब्दों को लेकर परवर्ती आचार्यों लोल्लट, शंकुक, भट्टनायक और अभिनवगुप्त में पर्याप्त विवाद रहा। भरत के अनुसार रस स्थायी से अभिन्न है जिस प्रकार द्रव्य व्यंजन, औषधि आदि से संयुक्त होकर षडवादि भोज्य रसो का कारण बनते हैं, उसी प्रकार विभावन, अनुभाव और व्यभिचारी भावों का स्थायी भाव से संयोग होने पर वे नाट्य-रस सिद्ध होते हैं अर्थात् स्थायी भाव विभावादि

*20/30, मोती नगर, नई दिल्ली-110015

2432 HA/07–7A

संयुक्त होकर रस रूप में सिद्ध होते हैं। लोल्लट में रस को अनुकार्यगत माना तथा मूल रस के आस्वाद की स्थिति ऐतिहासिक राम आदि में भी मानी। अनुकर्ता भाव के परिपाक का प्रत्यक्ष अनुभव नहीं करता अपितु कल्पनात्मक समानुभूति के रूप में उसे ग्रहण करता है तथा सामाजिक नट पर राम आदि का आरोप कर रस की प्रतीति कर लेता है। इस प्रकार लोल्लट के अनुसार राम आदि अनुकार्यों के स्वरूप के अनुसंधान से नट में प्रतीयमान स्थायी भाव ही रस हो जाता है। लोल्लट ने अनुकार्यगत स्थायी भाव को विशेष महत्व दिया। यह स्थिति सहृदय की रसानुभूति की उपेक्षा करती है। शंकुक ने लोल्लट की अवधारणा को स्वीकार न करते हुए अनेक आक्षेप किए हैं। उनके अनुसार उपचित स्थायी भाव को रस नाम से पुकारने में यह बता पाना संभव नहीं है कि रति, हास्य आदि के मंद, मन्दतर, मन्दतम कितने अनन्त भेद हो सकते हैं और कितनी मात्र तक उपचित होकर रस कहलाते हैं। कारण के नष्ट होने पर कार्य की स्थिति बनी रहती है। साथ ही कारण कार्य में पूर्वापर संबंध भी होता है किन्तु रस विभाव आदि जीवितावधि होता है। अत: स्थायी और रस में उतपाद्य उत्पादक तथा कारण कार्य संबंध की स्थापना उचित नहीं है। इसी प्रकार सामाजिक मूल नायक के भावों से आनन्द किस प्रकार प्राप्त करता है, यह भी विवादास्पद है, क्योंकि यदि रति आदि स्थाई भावों की मूल कल्पना ऐतिहासिक अनुकार्यों में की जाएगी तो रस भी उन्हीं में होगा, अत: सामाजिक के आस्वादन का पक्ष दुर्बल पड़ जाएगा। इन सीमाओं के बावजूद लोल्लट में काव्य-सौंदर्य का मूल संबंध उसके विषय वस्तुगत सौंदर्य से जोड़ा तथा अनुसंधान शब्द के प्रयोग द्वारा नाट्य कला तथा सौंदर्य-शास्त्र की कलात्मक स्थितियों की व्यक्तिपरक व्याख्या का सूत्रपात किया।

नाटक का प्रमुख तत्व रस है और साथ ही नाटक लोकानुकृति है। शंकुक ने स्थायी भाव की नाट्यानुकृति को ही रस स्वीकार किया। स्थायी भाव का उपस्थापन अभिनय द्वारा होता है। विभाग, अनुभव तथा व्याभिचारी भावों का अनुकरण लोकानुभव के आधार पर नट इस कौशल के साथ करता है कि वे कृत्रिम होने पर भी वास्तविक प्रतीत होते हैं। अनुकार्य से शंकुक का तात्पर्य ऐतिहासिक राम आदि से नहीं, काव्य-निबद्ध राम आदि से है। प्रक्षक नट में राम की प्रतिति सन्देह, यथार्थ, ज्ञान और भ्रांति से भिन्न "चित्रतुरंग न्याय" के आधार पर एक विलक्षण कलानुभूति के रूप में ग्रहण करता है, अत: शंकुक के अनुसार रस का आधार नट है, जिसमें अभिनय तत्व मुख्य है। प्रेक्षक नाट्यशाला में अपनी वासना के बल पर अनुमान के माध्यम से इस कलात्मक स्थिति का आस्वादन करता है। इस प्रकार शंकुक की दृष्टि में अनुकृति प्रधान है।

शंकुक के इस मत पर मट्टतोत ने अनेक आक्षेप किए हैं, जिनका निष्कर्ष यह है कि "स्थायी भाव" का अनुकरण किसी भी दृष्टि-प्रक्षेक, नट तत्व-विवेचक-सिद्ध नहीं किया जा सकता। शंकुक ने रस के अनुमान की जो बात कही, उसे भी स्वीकार नहीं किया जा सकता, क्योंकि यह कथन अनुभव के विरुद्ध है। रसानुभूति होती है, रसानुमान नहीं। इसके अतिरिक्त यदि शंकुक के उक्त मत को स्वीकार कर लिया जाए तो इससे रस में काव्य-तत्व गौण और अभिनय-तत्व प्रधान हो जाएगा।

शंकुक के बाद रसास्वाद की प्रक्रिया का विवेचन करते हुए भट्टनायक ने यह बताया कि काव्य और नाट्य में अभिधा के तुरन्त बाद में होने वाले विभाव आदि के साधारणीकरण रूप भावकत्व नामक द्वितीय व्यापार से भाव्यमान स्थायीभाव सत्व के उद्रेक से ब्रह्मास्वाद के सामान भोजकत्व नामक द्वितीय व्यापार से आस्वादित किया जाता है। रसास्वाद (काव्यास्वाद) के स्वरूप विश्लेषण का भट्टनायक ने सफल प्रयास किया। रसास्वाद को ब्रह्मास्वाद के समान बताकर उन्होंने उसकी आनन्द रूपता की भी प्रतिष्ठा की और इससे भी बड़ी बात यह है कि उन्होंने भावकतव व्यापार रूप साधारणीकरण का उल्लेख किया जो परवर्ती काव्य-शास्त्र में प्रयोप्त चर्चित, विश्लेषित हुआ और अन्तत: इस सुखमय प्रतीत के विषय साधारणीकृत भाव को ही रस कहा गया। रसास्वाद के विवेचन संदर्भ में जिन तीन व्यापारों की चर्चा भट्टनायक नें की थी, वे स्वीकृत न हुए। अभीनवगुप्त ने उनके मत का खण्डन करते हुए अभिव्यक्तिवाद की स्थापना की किन्तु इसमें संदेह नहीं कि भट्टनायक के प्रभाव से वे मुक्त न हो सके। उन्होंने भी रस को अनिवार्यत: आनन्दमयी चेतना मानकर साधारणीकरण सिद्धांत को स्वीकृति दी। उनके अनुसार भी रस ब्रह्मास्वाद संविद् है। अन्तर इतना ही है कि रसास्वादन की प्रक्रिया, अभिनव के अनुसार व्यंजनावृत्ति पर आधारित है, और अभिनव के मत में रस व्यंग्य है।

संस्कृत काव्य-शास्त्र में धनंजय, विश्वनाथ, पणितराज जगन्नाथ इत्यादि ने रस संबंधी अवधारणाओं का पर्याप्त

2432 HA/07—7B

विकास किया। पण्डितराज के अनुसार अज्ञान रूप आवरण से मुक्त शुद्ध चैतन्य का विषय बना हुआ रति आदि स्थायी भाव रस है। जब स्थायी भाव शुद्ध चैतन्य का विषय बन जाता है तो रस निष्पति होती है, अत: निष्पत्ति का अर्थ हुआ आवरण-मुक्त शुद्ध चैतन्य का विषय होना। रसवादी धारा के समान्तर अलंकारवादी विचारधारा भी प्रवाहित हुई, जिसके प्रतिष्ठापक भामह, दण्डी और उद्भट थे, जिन्होंने रस का रसवादि अलंकारों में समावेश किया। डॉ. कथूरिया के अनुसार 'रस, भाव तथा रसाभास, भावाभास को क्रमश: रसवत् प्रेयस् तथा उर्जस्विन् नामक अलंकारों के नाम से अभीहित किया है .....समाहित नामक एक नवीन अलंकार की कल्पना की है'। 'भाव-शान्ति' को वे समाहित अलंकार के नाम से पुकारते हैं'। इस तरह समाहित को भाव-शान्ति का पर्याय माना है अर्थात् इतनी शान्ति कि जिसमें अन्य किसी रस, रसादि अनुभावों की प्रतीति न हो। इस प्रकार अंलकारवादियों ने रस को अलंकार्य की सीमा से हटाकर, अलंकरण मात्र में सीमित कर दिया। हिंदी काव्य-शास्त्र को ध्वनि पूर्व युग, ध्वनियुग तथा ध्वन्युत्तर युग की परम्परा को पार कर एक विशेष प्रौढ़ि पर पहुँचे हुए रस-सिद्धांत का दाय प्राप्त हुआ, साथ ही गौड़ीय सम्प्रदाय का पुष्टिमार्गी आधार भी इसके विवेचन को प्रभावित करने में समर्थ हुआ। रीति-काल से पूर्वभक्त कवियों ने भाव, रस इत्यादि का आख्यान तो किया है किन्तु उसका संबद्ध काव्य-शास्त्रीय विवेचन रीतिकाल से ही प्रारम्भ होता है।

केशव ने रासक प्रिया में शृंगार की रस-राजता तथा शृंगार में अन्य रसों की अन्तर्भुक्ति का प्रतिपादन किया है। शृंगार के रस राजत्व की परिकल्पना कोई नवीन नहीं है। शृंगार का रस राजत्व केशव की कोई अपनी नवीन कल्पना नहीं थी। डॉ. नगेन्द्र का कथन है कि 'भोज ने शृंगार को ही एक मात्र रस मानते हुए उसकी पूर्ण प्रतिष्ठा की है। हिंदी के लगभग सभी आचार्यों ने एक स्वर से उसे रस राज माना हैं'। शताब्दियों पूर्व 'अग्नि-पुराण', 'शृंगार-तिलक' तथा शृंगार-प्रकाश' में उसकी घोषणा हो चुकी थी। अग्नि पुराण, में शृंगार रस की प्रकृति 'भूत' रस के रूप में निरूपित है जो अक्षय, पर ब्रहामा, सनातन, अज और विभु है। उसका सहज आनन्द कभी-कभी प्रकट हो जाता है। यह अभिव्यक्ति चैतन्य चमत्कार और रसमय होती है-अहंकारजन्य अभिमान से रति की उत्पत्ति हुई। यह रति शृंगार रस की जननी है। अग्निपुराणकार केवल चार स्वाधीन रसों की परिकल्पना करते हैं। उनके विचार में शृंगार, रौद्र, वीर, वीभत्स ये चार रस स्वाधीन हैं और शेष परजन्य। भोज का मत है कि विद्वान केवल गतानुगतिकता के कारण ही शृंगार, वीर, रस आदि का वर्णन करते हैं। वास्तव में रस तो केवल एक ही है-शृंगार। शृंगारमेव रसनाद् रस मामनाम:। हमारा अहंकार ही प्रतिकूल परिस्थितियों के अभाव में विभाव, अनुभाव व्यभिचारी आदि के द्वारा आनन्द रूप में सम्वेद्य होकर रसत्व को प्राप्त हो जाता है किन्तु केशव की अवधारणा भोज के समान किसी दार्शनिक आधार पर प्रतिष्ठित नहीं है। सभी रसों के आश्रय आलम्बन तथा विषय आलम्बन 'हरि' और 'राधा' मानकर उन्होंने गौड़ीय वैष्णव परम्परा के मधुर रस से प्रभावित होकर नव रस का शृंगार के साथ तादात्म्य स्थापित किया।

आधुनिक युग में काव्यास्वादन का विवेचन करने वालों में प्रमुख हैं-आचार्य रामचन्द्र शुल्क, डॉ. आनन्द प्रकाश दीक्षित, डॉ. निर्मला जैन, डॉ. प्रेम स्वरूप गुप्त, डॉ. हरद्वारी लाल शर्मा आदि। आचार्य शुक्ल रस को सामाजिक चेतना और लोक मंगल की भावना से अन्वित कर परिवर्तित युग-संदर्भ तथा जीवन के नये आयामों की भूमिका पर विश्लेषित करते हैं। आचार्य शुक्ल रस को परम्परागत आध्यात्मिक अवधारणा से मुक्त कर रस की लोकोत्तरता को मात्र उदात मनोभूमि के धरातल पर मान्यता देते हैं। रस, उनकी दृष्टि में, जीवनानुभव की सात्विक प्रतिति से भिन्न कोई लोकोत्तर पदार्थ नहीं है। उन्होंने रस को मनोवैज्ञानिक सामाजिक धरातल पर प्रतिष्ठित किया। डॉ. तारकनाथ बाली के अनुसार, 'शुक्लजी ने मनोविज्ञान को उसके सीमित अर्थ मानसिक वृत्तियां और उनके संघटन-भावों के अर्थ में ही ग्रहण नहीं किया वरन् यह भी दिखाने का प्रयास किया कि ये वृत्तियाँ और भाव किस प्रकार मनुष्य के आचरण को प्रभावित करते हुए लो-चेतना को प्रेरित करते हैं'। शुक्लजी रसानुभूति में प्रत्यक्ष रूप-विधान को महत्व देते हैं। उनका कथन है कि 'रसानुभूति प्रत्यक्ष या वास्तविक अनुभूति से सर्वथा पृथक कोई अन्तर्वृति नहीं हैं', बल्कि उसी का एक उदात्त और अवदात्त स्वरूप है'। (रस मीमांसा-पृष्ठ 224)

डॉ. नगेन्द्र का विशेष योगदान साधारणीकरण के संदर्भ में है। आपकी मान्यता है कि 'काव्य के अनुचिन्तन से प्राप्त रागात्मक अनुभूति के सभी रूप और प्रकार-सूक्ष्म और प्रबल, सरल और जटिल, क्षणिक और स्थाई: संवेदन,

स्पर्श चित्त विकार, भाव-बिम्ब, संस्कार, मनोदशा, शील-सभी रस की परिधि में आ जाते हैं'(रस-सिद्धांत पृ-318) । इस प्रकार डॉ. नगेन्द्र रस को केवल स्थाई भाव की परिपाकावस्था नहीं मानते अपितु उसे उसकी सम्पूर्ण व्याप्ति में, सम्पूर्ण काव्यगत भाव सम्पदा के अर्थ में ग्रहण करते हैं । साधारणीकरण के संदर्भ में उनकी मान्यता है कि साधारणीकरण कवि-भावना के तादात्मीकरण में घटित होता है । ''कवि संवेद्य - कवि की अनुभूति: सामान्य भावानुभूति नहीं, सर्जनात्मक अनुभूति, भाव की कल्पनात्मक पुन: सर्जना की अनुभूति-भारतीय काव्य-शास्त्र की शब्दावली में, 'भावना' । इसी का शास्त्रीय मान 'ध्वन्यर्थ' है , जो एक ओर कवि के अर्थ को व्यक्त करता है और दूसरी ओर प्रमाता के चित्त में समान अर्थ को उद्‌बुद्‌ध करता है'' (रस सिद्‌धांत पृ. 207) । इस प्रकार डॉ. नगेन्द्र का मन्तव्य यही है कि प्रमाता के अंतर में वही अनुभूति जगती है, जिसे कवि अपने काव्य द्‌वारा संवेद्य बनाता है ।

रस के परवर्ती समीक्षकों ने रस के संदर्भ में कोई मौलिक उद्‌भावना नहीं की । डॉ. नामवर सिंह, 'अज्ञेय' इत्यादि ने रस के समाजिक आधार को स्पष्ट करते हुए डॉ. नगेन्द्र के सिद्‌धांत पर प्रतिपत्तियाँ प्रस्तुत की हैं । डॉ. नामवर सिंह रस की आत्मपरक व्याख्या से हटकर अर्थ-मीमांसा-पद्‌धति पर बल देते हैं । आत्मपरक व्याख्या उनकी दृष्टि में रस-सिद्‌धांत को रोमांटिक सिद्‌धांत का रूप देने के लिए उत्तरदायी है । अर्थ-मीमांसा की पद्‌धति से रस की व्याख्या उसे वस्तुवादी आधार पर प्रवर्तित कर सकती है । उनका कथन है कि ''प्रतिमान के रूप में रस के पुन: उद्‌धार अथवा पुन: व्याख्या का प्रश्न ही अप्रासंगिक हो जाता है । प्रासंगिक रहती है, तो आस्वाद की प्रक्रिया, जिसका आधार अर्थ-मीमांसा है' (कविता के नए प्रतिमान पृ. 56) । अज्ञेय भी पुरातन अर्थ में साधारणीकरण अथवा रस-मीमांसा को अस्वीकार करते हुए अर्थ-मीमांसा के धरातल पर ही उसकी व्याख्या करते हैं । जब चमत्कारिक अर्थ मर जाता है और अभिधय बन जाता है, तब उस शब्द की रागोत्तेजक शक्ति भी क्षीण हो जाती है । उस अर्थ से रागात्मक संबंध नहीं स्थापित होता, कवि तब उस अर्थ की प्रतिपत्ति करता है, जिससे पुन: राग का संचार हो, पुन: रागात्मक संबंध स्थापित हो । साधारणीकरण का अर्थ यही है । नहीं तो, अगर भाव भी वही जाने-पुराने हैं, रस भी और संचारी-व्यभिचारी सबकी तालिकाएं बन चुकी हैं, तो कवि के लिए नया करने का क्या रह गया है (दूसरा स्पतक भूमिका पृ. 11) ।

इस प्रकार आज का कवि आलोचक रस-सिद्‌धांत अथवा काव्य की आस्वादन-प्रक्रिया को वस्तुवादी धरातल पर व्याख्यायित करने के लिए उन्मुख है । वह रस को रूढ़, जड़ प्रतिमान न मानकर वस्तुस्थिति के साथ रागात्मक संबंध जोड़ने की निरंतर प्रक्रिया के रूप में ग्रहण करता है । जो कविता मात्र भावात्मक उद्दीप्ति जगाकर काव्यानुभव को जड़, मार्यादित करती है, वह रस-सिद्‌धांत की कसौटी पर पूरी उतर कर भी आधुनिकता के संवेदन संस्कार से, जीवन के ठोस संदर्भों से पीछे छूट जाती है । डॉ. नगेन्द्र मोहन का इस संदर्भ में विचार बहुत स्पष्ट है ''काव्यानुभव में भावना का योग अब उतना नहीं रहा है, जिनता विचार का । कविता की भावना-मूलक प्रकृति संवेदना को रोमांटिक भाववेश में बदल देने और ठोस संदर्भों को धुंधला देने के कारण अनावश्यक और अप्रासंगिक लगने लगी है और इसी से कविता का भावमूलक आधार भी भोंथरा और अतिरंजित लगने लगा है'' [संचेतना (विचार कविता अंक पृ. 3)] । यह दृष्टि आज के परिवर्तित परिवेश और युग-संदर्भ में वैचारिकता के बढ़ते हुए अभाव की सहज परिणति है । आज की कविता परम्परित राग-मूल्यों, आस्थाओं, निर्विकल्प अवधारणाओं तथा रूढ़भावनात्मक प्रतिक्रियाओं का निषेध करती है और इस दृष्टि से कविता केवल राग का आस्वादन मात्र न रहकर विचार की भूमिका से काफी दृढ़ता के साथ जुड़ी हुई है । विचार और चिंतन की प्रकृति ने उसे जीवन के यथार्थ के प्रति आकृष्ट कर दिया है । ■

हिंदी सीखे बिना भारतीयों के दिल तक नहीं पहुंचा जा सकता ।

(डॉ. लूथर, जर्मन विद्‌वान)

पुरानी यादें-नए प्रिप्रेक्ष्य

राष्ट्रभाषा हिंदी-हिंदुस्तानी और आचार्य काका कालेलकर साहब

-बालशौरि रेड्डी*

आचार्य काका कालेलकर गांधीवादी चिंतक, भारतीय संस्कृति के प्रबल पक्षधर तथा बिनोवा भावे के सिद्धांतों के भाव्यकार होने के साथ सर्वोदय तथा सर्वधर्म समन्वय के सूत्रधार भी हैं ।

वे एक राष्ट्रवादी थे । हिंदी प्रचार आंदोलन के उन्नायकों में से थे । परंतु वे राष्ट्रभाषा का नाम हिंदी मानने की अपेक्षा "हिंदुस्तानी" शब्द को राष्ट्र के लिए अधिक ग्राह्य मानते थे । ऐसे गांधीवादी व राष्ट्रवादी मनीषी से मेरी भेट विजयवाड़ा के डाक बंगले में 1948 में हुई थी । उन दिनों में मैं विशारद विद्यालय का छात्र था । डाक बंगले में आचार्य काका साहब के साथ आन्ध्र राज्य के राजस्व मंत्री बार-एट-लॉ श्री कडपा कोटि रेड्डी भी ठहरे हुए थे । वे दोनों विजयवाड़ा में आयोजित हिंदी प्रचारक सम्मेलन में अध्यक्ष एवं मुख्य अतिथि का दायित्व निभाने आए थे । और यह कार्यक्रम स्थानीय म्युनिसिपल हाई स्कूल के प्रांगण में आयोजित था । गांधी जी ने दक्षिण भारत की हिंदी प्रचार संस्था का नामकरण दक्षिण भारत हिंदुस्तानी प्रचार सभा किया था । हमको विशारद के पाठ्यक्रम में हिंदी के साथ उर्दू साहित्य के साथ अरबी-फारसी लिपि का ज्ञान भी अनिवार्य था । हमारें पाठ्यक्रम में अकबर इलाहाबादी, हाली आदि की रचनाएं सम्मिलित थी ।

गांधी जी ने दक्षिण के चारों प्रांतों में हिंदी प्रचार के हेतु मद्रास में हिंदुस्तानी प्रचार सभा की स्थापना कराई तो शेष हिंदीतर क्षेत्रों में तथा विश्व के भारतीय मूल निवासियों के रह रहे देशों में हिंदी प्रचार हेतु 1936 में राष्ट्रभाषा प्रचार समिति की स्थापना की जो आज समर्पित भाव से वह संस्था श्री मधुकर राव चौधरी तथा प्रो. अनंतराम त्रिपाठी के मार्ग दर्शन में कार्यरत हैं ।

राजधानी दिल्ली नगर में भी हिंदी प्रचार के लिए गांधी जी ने एक संस्था की स्थापना की जिसमें भाषा के साथ साहित्य सृजन को भी उन्होंने महत्व दिया । इस संस्था के निर्वाह का दायित्व गांधी जी ने आचार्य काका साहब को सौंपा । काका साहब ने अपने जीवनकाल में इस संस्था को भाषा व साहित्य के साथ गांधी जी के अन्य रचनात्मक कार्यक्रमों का केंद्र बनाया । इस समय इस संस्था के अध्यक्ष हिंदी के वरेण्य गांधीवादी विचार-धारा के प्रबल पक्षधर श्री विष्णु प्रभाकर जी हैं और उसकी मंत्री कुमारी कुसुम साहू हैं जो बड़ी निष्ठापूर्वक इसका संचालन कर रही हैं । मैं जब 1990 से 1994 तक भारतीय भाषा परिषद् कलकत्ता का निदेशक रहा । उस काल खंड में गांधी हिंदुस्तानी साहित्य सभा जो सन्निध राजघाट, जवाहरलाल मार्ग पर अवस्थित है, उपरोक्त संस्था के कार्यक्रम परिषद् में आयोजित होते रहे । परिणाम स्वरूप कु. कुसुम कुमारी एवं डॉ. रमेश भारद्वाज के साथ मेरा आत्मिक नैकट्य स्थापित हुआ । वैसे मैं अनेक वर्षों से गांधी शांति प्रतिष्ठान दीनदयाल मार्ग, दिल्ली का सदस्य हूं । दिल्ली के प्रवास में मैं वहीं ठहरता था, अब गांधी हिंदुस्तानी सभा के संचालकों के स्नेह-सौजन्य के कारण काका साहब के स्मृति भवन में ही ठहरा करता हूं ।

इस संस्था की ओर से काका साहब का संपूर्ण वाङ्मय 12 खंडों में प्रकाशित है । साथ ही उनके विचारों तथा सिद्धांतों पर केंद्रित छोटी-मोटी पुस्तिकाएं भी प्रकाशित हैं जो सामान्य पाठक के लिए पठनीय एवं मनन करने योग्य हैं । उनकी शताब्दी पर संस्था के प्रांगण में काका साहब की भव्य प्रतिभा स्थापित है तो दूसरी ओर उनके विचारों का फलक भी जिसमें स्वर्णाक्षरों में उनकी उक्ति अंकित है ।

*26, वडिवेलुपुरम, वेस्ट मावलम, चैन्ने-600033

2432-HA/07 8A

आचार्य काका साहब का भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद, पंडित नेहरू, सरदार बल्लभ भाई पटेल इत्यादि के साथ निकट का संबंध था और उनकी अनुपम सेवाओं के लिए भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने उनको पद्मविभूषण की उपाधि से विभूषित किया था ।

काका साहब ने विश्व के अनेक देशों का भ्रमण किया और वहां पर गांधी दर्शन का प्रकाश फैलाया । जापान में बौद्ध धर्म के सिद्धांतों के साथ गांधी के सत्य, अहिंसा इत्यादि सिद्धांतों में समन्वय दर्शित कराकर दोनों देशों के मध्य संबंध स्थापित करने की दिशा में अनुपम योगदान दिया । ऐसी महान आत्मा के प्रति सविनय श्रद्धांजलि अर्पित करना आज की पीढ़ी का कर्तव्य बन जाता है । ■

(पृष्ठ 4 का शेष)

अत: स्पष्ट है कि देवनागरी में ह्रस्व और स्वरों की पृथक्-लेखन-व्यवस्था के कारण शब्दों को नितांत स्पष्ट और निर्भान्त रूप में लिख पाना संभव है । देवनागरी लिपि के प्रत्येक चिह्न में प्राय: एकरूपता होती है, उदाहरण के लिए 'प' लिपि-संकेत का शिरोरेखायुक्त रूप में लिखें अथवा शिरोरेखाविहीन रूप में, दोनों ही अवस्थाओं में एकरूपता दिखाई देती है । रोमन लिपि में प्रत्येक चिह्न के Capital और Small दो रूप (यथा-A-a, B-b, D-d) होने के कारण पर्याप्त विविधता पाई जाती है । अरबी लिपि में भी शब्द के आदि, मध्य तथा अंत में लिपि-चिह्न के रूप में परिवर्तन हो जाता है । अत: एकरूपता के आधार पर देवनागरी लिपि अन्य लिपियों की तुलना में निश्चित रूप से कहीं अधिक वैज्ञानिक है ।

देवनागरी लिपि का पठन अन्य लिपियों की तुलना में अधिक सरल, सुगम और संदेहरहित है । एक संकेत में दूसरे संकेत का भ्रम हो जाने के कारण लिपि की पठनीयता प्रभावित होती है । उर्दू की बिंदियों के कारण या ज़ोर ज़बर आदि स्वर की मात्राओं का प्रयोग न होने से अरबी लिपि को पढ़ने में प्राय: उलझन होती है । इसी प्रकार रोमन में अनुच्चरित ध्वनियों के लिये भी लिपि-संकेत के प्रयोग से पढ़ने में असुविधा का अनुभव होता है । देवनागरी में अनुच्चरित अक्षरों का प्रयोग नहीं होता है । यह भी सुपाठ्यता का एक महत्त्वपूर्ण आधार है ।

देवनागरी लिपि प्राय: विविध निष्कर्षों पर वैज्ञानिक लिपि सिद्ध होती है । इसके व्यवहार में कहीं कोई समस्या या बदलाव के सूत्र दिखाई भी दे रहे हैं, तो उसके पीछे इस लिपि का दोष कम, हमारे प्रयोग का अधिक है । तर्क-सम्मत विश्लेषण, पूर्ण आंतरिक-व्यवस्था, पर्याप्त लिपि-चिह्न एवं ध्वनि की अनुरूपता, सुस्पष्ट एवं सरल लिपि-चिह्न-ये सब मिलकर देवनागरी को एक सुसम्पन्न और वैज्ञानिक लिपि सिद्ध करते हैं ।

सारांश

देवनागरी लिपि के संदर्भ में डॉ. देवेन्द्रनाथ शर्मा लिखते हैं "आदर्श लिपि की सभी शर्तों को देवनागरी लिपि पूर्ण करती है । अन्य लिपि की तुलना में वह नि:संदेह अधिक वैज्ञानिक तथा निर्दोष है" ।

देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता पर प्राय: सभी यूरोपीय विद्वान् मुग्ध रहे हैं । इस लिपि की प्रशंसा करते हुए विलियम जोम्स कहते हैं "देवनागरी की पूर्णता के समक्ष अंग्रेजी लिपि उपहासास्पद है" ।

सत्य यह है कि देवनागरी लिपि रोमन लिपि से श्रेष्ठ है । कदाचित इसमें कुछ दोष हों किन्तु आधुनिक काल में देवनागरी लिपि को पूर्ण रूप से वैज्ञानिक बनाने के लिये कुछ सुधार भी किए गए हैं और यह सुधार राष्ट्रलिपि के दृष्टि से आवश्यक माने जाते हैं । इसलिए रोमन लिपि में श्रेष्ठ देवनागरी लिपि है ।

उपयुक्त विवेचन से स्पष्ट हो जाता है कि देवनागरी लिपि सहज, सरल और पूर्ण वैज्ञानिक लिपि है । ■

2432 HA/07—8B

हिंदी साहित्य के संत कवियों की प्रेम साधना

–डॉ. एन.एस. शर्मा*

जब से मानव ने इस संसार की नियामक शक्ति से प्रेम करना सीखा है तभी से उसमें भक्तिभाव का बीजारोपण शुरू हो गया था जो कि निरन्तर फलता-फूलता चला गया। वैदिक ऋषियों ने उस सत्ता को ईश, परिभू एवं स्वयम्भू आदि के नाम से अभिहित किया जबकि परवर्ती भक्तों ने उसे माता-पिता व सखा आदि पुकार कर उससे अपना प्रेममय संबंध भी जोड़ा है। इस भगवत्प्रेम की भावना प्राचीन काल से ही मानव-मन को आप्लावित करती रही है। प्रभु भक्ति को इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि उससे भक्ति करने वाला हिंदू, मुसलमान या ईसाई है या कोई रूसी, जापानी या वह कोई अमेरिकी है। प्रभु से जुड़ने का आग्रह करने वाला हर व्यक्ति भक्त हो सकता है और ऐसी प्रत्येक क्रिया भक्ति का अंग हो सकती है जो प्रभु के लिये की जाए या उसे समर्पित हो।

हिंदी साहित्य के पन्ने साक्षी हैं कि यहाँ के सभी संत कवियों की लेखनी या वाणी ने मानव जीवन को भगवत्प्रेम की ओर आकृष्ट किया है। उनके भावों से प्रभावित होकर आज भी हम प्रभु की प्रेम भक्ति का रसास्वादन करते हैं। क्योंकि प्रेम तो अनन्त और अखण्ड है, अस्तु उसकी गहराई की थाह पाना आसान नहीं है। मानव को चाहिए कि वह निःस्वार्थ प्रेम बाँटता ही चले। यद्यपि हिंदी साहित्य के संत कवियों की सूची बेहद लम्बी है फिर भी, उनमें से कुछ जाने-माने एवं प्रतिष्ठित संत कवियों का भगवत्प्रेम निम्नानुसार मुखर हुआ है :–

संत सूरदास

वैसे तो हिंदी के काव्योद्यान में कितने ही रंगों के रंग-बिरंगे और सुगन्धित फूल खिले हैं किन्तु जैसा सौरभ सूरदास की रचनाओं का है वैसा तुलसीदास और जायसी को छोड़कर शायद ही किसी अन्य कवि की रचना का हो। इसीलिये किसी सहृदय, आलोचक ने सूर-सूर तुलसी-शशि कहकर उन्हें हिंदी काव्य के आकाश का सूर्य कहा है। उनका ऐसा सम्मान उचित ही है क्योंकि इन तीनों कवि-शिरोमणियों के काव्य क्षेत्र भले ही भिन्न-भिन्न रहे हों पर सूरदास ने तो दृष्टि खोकर भी अन्तदृष्टि पा ली है। ब्रजभाषा में लिखा गया उनका सूरसागर जो कि श्रीमद् भागवत के दशम् स्कन्ध के आधार पर है, उसमें प्रेम के संयोग और वियोग दोनों पक्षों को ही उन्होंने बड़े ही कौशल के साथ निखारा है। ब्रजभाषा में सबसे पहली काव्य रचना उन्हीं की मिलती है और वही इतनी परिपक्व है कि उनके बाद के सभी कवियों की रचनाएं हल्की जान पड़ती हैं। निर्गुणवादी संतों के ज्ञान और साधना के उपदेशों से घबराई हुई जनता को उन्होंने सगुण भक्ति का सरस क्षेत्र दिखाया। सूरसागर की रचना करके उन्होंने रस का जो महान सागर तैयार किया है उसमें सहृदय लोग चिरकाल तक स्नान करके आनन्द पाते रहेंगे। उनके पदों में जहाँ एक ओर प्रेम, भक्ति तथा विनय के भाव हैं वहीं दूसरी ओर भगवान की बाल लीलाओं का भी उन्होंने जी खोलकर वर्णन किया है। अपने मधुर पदों द्वारा उन्होंने लोक जीवन के अन्दर प्रेममयी संगीत-लहरी घोल दी है। उनके अनुसार भक्त को तो भगवान का ही सहारा होता है उन्हें छोड़कर वह औरों का सहारा क्यों माँगे। भगवत्प्रेम सम्बन्धी उनके कुछ पद नीचे दर्शाये गये हैं :–

(क) प्रभु तेरो बचन भरोसो साँचो।
(ख) जो सुख होत गुपालाहि गाएँ।
(ग) रे मन गोविन्द के हो रहिये।
(घ) करि गोपाल की सब होई।
(ङ) बूझत स्याम कोन तू गोरी।
(च) सुनहु हरि मुरली मधुर बजाई।
(छ) तजो मन हरि विमुखनि को संग।

*द्वारा श्री आर.डी. गुप्ता, ब्लाक-198, फ्लैट-2296, टाइप-III, सैक्टर-6, सी.जी.एस. कालोनी, (अन्टाम हिल) मुंबई-400037

(ज) है कोऊ-कोऊ ब्रज में हेतु हमारो सचलत गोपालहिं राखे ।

(झ) मेरो गोपाल तनक सो, कहा करि जाने दधि की चोरी ।

भक्ति मती मीराबाई

हिंदी काव्य साक्षी है कि हमारे भक्त कवियों की भक्ति एकाँगी नहीं थी । तुलसीदास ने भी कृष्ण पदावली का प्रणयन किया था और सूरदास ने भी सूरसागर तथा सूर पदावली में राम भक्ति गीत ही नहीं लिखे बल्कि मुक्तक राम कथा प्रस्तुत की है । प्राय: यह बतलाया जाता रहा है कि मुगलशासक बाबर से लोहा लेने वाले राणा संग्राम सिंह की पुत्रवधू मीराबाई जो कि महाराणा कुमार बोधराज की पत्नी थीं, उन्होंने कृष्ण को छोड़कर किसी भी अन्य इष्ट देव को नहीं ध्याया । किन्तु यह सरासर झूठ है क्योंकि उन्होंने तो कृष्ण और राम दोनों का समान आदर किया और उनको सुमरा है । मीरा को बारीकीपूर्वक पढ़ने वाले यह अच्छी तरह जानते हैं कि उनकी भक्ति दौड़ में राम यदि कृष्ण से आगे नहीं थे तो पीछे भी नहीं रहे । कहा जाता है कि वह अपने समकालीन कवि तुलसीदास से बहुत प्रभावित थीं और व्यथित होने पर वह उन्हें मार्गदर्शन प्राप्त करने हेतु प्राय: पत्र लिखती रहती थी और तुलसीदास ने भी उन्हें बराबर पत्रोत्तर दिए थे । सुनने में आया है कि वे रैदास की शिष्या थीं । विरह उनके जीवन और काव्य का सबसे बड़ा यथार्थ है इसलिये वेदना और व्याकुलता उनके गैय पदों में खूब खुलकर झलकती है । उनके मधुर पदों में भगवत्प्रेम प्रवाहित होता है जो कि सुनने या गाने वाले को भक्ति भाव से भर देता है । उनके पद गागर में सागर के समान हैं, इसलिये उनके द्वारा रचा गया प्रत्येक पद हर किसी को प्रभु भक्ति रस में सम्प्रवाहित करने में पूर्णरूपेण सक्षम है । निम्न पदों में उनका भगवत्प्रेम सहज ही आँका जा सकता है :–

मीरा का कृष्ण प्रेम

(क) मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरो न कोई ।

(ख) मन रे परसि हरि के चरण ।

(ग) माई री मैं तो लियो गोविन्दा मोल ।

(घ) एजी । म्हाँने लागे वृंदावन नीको ।

(च) हे री मैं तो स्याम दिवानी, मेरो दरद न जाणे कोय ।

मीरा बाई का राम प्रेम

(क) राम नाम रस पीजे मनुआं राम नाम रस पीजे ।

(ख) मेरे मन राम बसे ।

(ग) मेरे प्रियतम राम कूँ भेजूं रे पाती ।

(घ) पायो जी मैं तो राम रतन धन पायो ।

(ङ) मेरे तो राम नाम दूसरा न कोई ।

(च) राम की दिवानी मीरा मेरा दर्द क्या जाने, कोई ।

(छ) परम स्नेही राम की नीति आलूँ री आवे ।

(झ) म्हारे घर भी आओ न राम रसिया ।

(ज) वारी-वारी हो राम हूँ वारी ।

(ट) राम नाम बिन मुक्ति न पावों ।

संत तुलसी दास

अपने काव्य के चमत्कार समन्वय-बुद्धि और आदर्शों की स्थापना के कारण तुलसीदास हिंदी के सर्वश्रेष्ठ कवि माने जाते हैं । काव्य सौंदर्य की दृष्टि से सूरदास और मलिक मुहेम्मद जायसी जरूर कुछ उनकी टक्कर के हैं किन्तु धार्मिक आर्दशों के सुदृढ़ आधार न होने के कारण वे जनता के हृदय पर उतनी अमिट छाप नहीं जमा पाएं जितनी कि तुलसीदास ने जमा रखी हैं । इसीलिये राजा से लेकर रक तक सभी लोग उनके काव्य को श्रद्धा और आनन्द के साथ पढ़ते हैं । उनकी श्री राम मयी कविता तो दिव्यप्रेम का मूर्तरूप है । जी खोलकर उन्होंने अपनी प्रेममय रामभक्ति को उजागर किया है । इस आशय संबंधी उनके कुछ पद इस प्रकार है :–

(क) जाऊँ कहाँ तजि चरन तुम्हारे ।

(ख) देव तू दयालु, दीन हों, तू दानि हों भिखारी ।

(ग) ऐसो को उदार जग माहीं ।

(घ) भज मन राम चरन सुखदायी ।

(ङ) रघुवर तुम को मेरी जाल ।

(च) जाके प्रिय राम वैदेही ।

संत कबीर

आरंभ में कबीर भी अपने गुरू रामानंद की तरह दशरथ पुत्र राम के उपासक थे । बाद में सूफियों और सिद्धों के प्रभाव में आकर जब उन पर वेदांतों का रंग चढ़ गया तब उन्होंने

सगुण राम को छोड़कर निर्गुण और निराकार राम की उपासना शुरू कर दी । उस समय कर्मकाण्ड के नाम पर बहुत से मिथ्या पाखंड जिनका संबंध मन की शुद्धि से न होकर बाहरी प्रदर्शन से था, समाज में प्रचलित थे । तीर्थयात्रा, मूर्ति पूजा, श्राद्ध, आदि हिंदुओं में जबकि रोजा और नमाज जैसी विधियां मुसलमानों में प्रचलित थीं । इस्लाम से उन्होंने एकेश्वरवाद लिया, वेदांत से उन्होंने जीव और ब्रह्म की एकता तथा मायावाद लिया, सूफियों से प्रेम प्रधान साधन और वैष्णवों से जीव, दया और भक्ति ली । उन्होंने अनेक सिद्धान्तों का अच्छा-खासा भानुमती का पिटारा इकट्ठा कर लिया था । निःसन्देह इनमें उच्च कोटि की प्रतिभा थी, इस बात से उनके विरोधी भी इन्कार नहीं कर सकते । उनके दोहे और पदों में एक ओर तो समाज में प्रचलित कुरीतियों का खण्डन हुआ है जबकि दूसरी ओर परमात्मा को न पाने की दशा में अपार वेदना ध्वनित हुई है । यद्यपि मध्य युग में इस महान क्रान्ति दर्शी के महत्व को पूरी तरह नहीं समझा गया तथापि इस युग में उनकी महानता तब स्पष्ट हुई जब विश्व कवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर और महात्मा गांधी आदि ने उनको अपना गुरू स्वीकार किया । अशिक्षित होने से उनकी भाषा सधुक्कड़ी थी और साहित्य शास्त्र के नियमों से भी वे पूर्णतया अनभिज्ञ थे फिर भी अनुभूतियों की तीव्रता और अभिव्यक्ति की अकृत्रिमता के कारण उनकी कविता, जिसका उद्देश्य भक्ति का प्रचार और कुरीतियों का निराकरण था आज भी हमारे हृदय को छू जाती है । कबीर उस निर्गुण ब्रह्म के उपासक थे जिसका साक्षात्कार ज्ञान-सूर्य से प्रकाशित अर्न्तहृदय में ही संभव है । उन्होंने सभी प्रकार की सीमाओं से परे होकर ब्रह्म को अपनी अन्तरात्मा में अनुभव करते हुए अपनी आत्मा को महान भक्त और संत माना गया है । उनके रचे भक्ति-पद, नीति के दोहे सूक्तियाँ एवं उलटवासियाँ बहुत प्रसिद्ध हैं । निर्गुणोपासक कबीरदास जी ने प्रेम प्रसंग में बहुत कुछ वर्णित किया है । ईश प्रेम से सराबोर तथा आध्यात्मिकता का पुट लिए उनके कुछ पद/दोहे यहाँ उद्धत किए जा रहे हैं :-

(क) भजो रे भइया राम गोविन्द हरि ।

(ख) माला तेरी काठ की धागा दिया पिरोय
मन में गति पाप की राम जपै क्या होय ।

(ग) राम नाम की लूट है लूटी जाये तो लूट
फिर पाछे पछतायेगा जब प्राण जायेंगे छूट ।

(घ) राम नाम सबसे बड़ा इससे बड़ा न कोय
जो इसका सुमिरन करे तो दुख काहे को होय ।

(ङ) गुरू-गोविन्द दोऊ खड़े काके लागू पॉय
बलिहारी गुरू आपने जिन गोविन्द दिये मिलाय ।

गुरू नानक देव जी

सिख पंथ के आदिगुरू नानक देव ने प्रत्येक मानव के लिए भगवत और आध्यात्मिक भक्ति तथा शिक्षा पर पर्याप्त बल दिया है । उन्होंने तो यहाँ तक कह दिया है कि उक्त वर्णित शिक्षा के अतिरिक्त और कुछ जानना या पढ़ना निरर्थक है । कहने का तात्पर्य है कि उन्होंने ब्रह्म ज्ञान को बहुत महत्व दिया है । क्योंकि ऐसी शिक्षा में ही मानवमंगल का प्रमुख स्थान है । उनकी शिक्षा के नैतिक सिद्धान्त मानव कल्याण हेतु हर प्रकार से लाभप्रद हैं । उनके अनुसार वही व्यक्ति पढ़ा-लिखा और समझदार है जिसके गले में राम-नाम का हार है । उनके कुछ प्रवचन निम्नानुसार हैं ।

(क) ब्रह्म ज्ञान बूझे जो कोई पढ़िया पंडित सोई ।

(ख) नानक पढ़िया सो पंडित, बिना राम नाम गति हारन ।

(ग) अब तो मुख दिखराय के हरि, गिर हरो मम तात ।

संत कृष्ण दास

उनके भाव कृष्ण की प्रियता संबंधी हैं (इनमें साधक की निजी भोगवृत्ति नहीं है । उनकी मान्यता थी कि गृह-प्रेम, समाज प्रेम से राष्ट्र प्रेम और राष्ट्र प्रेम से भगवत्प्रेम बड़ा है । उनके अनुसार विभीषण, भरत, प्रहलाद, राजा बलि, गीध जटायु, त्रिसरा, केवट, शबरी, हनुमान और वनिताओं ने पारिवारिक प्रेम को ठुकराकर श्री राम या श्री कृष्ण के प्रति अनुराग प्रकट किया है । इसलिए उन्होंने कहा है :-

(क) मूर्तिमान श्रृंगार हरि, सब रस आधार
रस पोषक बस कृष्ण है, ब्रज में करत विहार ।

(ख) कृष्ण सुख हेतु करो सब जन व्यवहार
आत्म सुख-दुख गोपी न करि तनिक विचार ।

(ग) कृष्ण बिना और सब देऊ करि परित्याग
कृष्ण सुख हेतु करें सभी शुद्ध अनुराग ।

2432 HA/07—9A

श्री कृष्ण प्रेमी रसखान

आज साम्प्रदायिकता ने मानव जीवन को झकझोर कर रख दिया है। एक समय ऐसा भी था जबकि मुस्लिम संतों/कवियों ने भी राम-कृष्ण की भक्ति के गीत गाए। रसखान भगवत्प्रेम के ऐसे दीवाने थे कि विश्वास करना कठिन हो जाता है। उनके भाव भरे पदों में कृष्ण प्रेम व्याप्त करने की कैसी मधुर अभिलाषा है :-

(क) मानुष हों तो वही रसखान बसो ब्रज गोकुल गाँव के ग्वारन।

(ख) धूरि भरे शोभित अति श्यामजु तैसी बनी सिर सुन्दर चोटी।

(ग) सेस, महेश, गणेश, सुरेसहु जाहि निरन्तर गावे।

(घ) कृष्ण नाम अमृत जीवन का मधुर नाम है भक्त हृदय का।

(ङ) शंकर के मन का रंजन भज मन कृष्ण नाम रसखान।

(च) हरि हाथ से ले गयो रोटी

(छ) धूर भरे अति शोभित श्याम।

रहीम

ये अकबर के दरबारी कवि थे। भगवत्प्रेम में गहन अभिरूचि होने के कारण हिंदी काव्य में इनका नाम मणि के समान जगमगता है। भाव गाम्भीर्ययुक्त इनके छोट-छोटे दोहे देश में आज भी बच्चे-बच्चे की जुबाँ पर हैं। इनके भगत्प्रेम संबंधी दोहे निम्नानुसार हैं :-

(क) अब रहीम मुश्किल पड़ी, झुठे मिलै न राम।

(ख) राम नाम जान्यो नहीं, जन्म गँवायो बादि।

(ग) राम नाम जपया नहीं, जग के किंकर धाम।

(घ) अनुचित बचन न मानिये, रहीम रघुनाथ ते भरत को बाढ़ि।

(ङ) राम न जाते हरि संग, जो रहीम भावी कतहु अपने हाथ।

(च) गहि सरनागति राम की और न कुछ उपाय।

कवयित्री ताज

भगवत्प्रेम के प्रति इनकी निष्ठा और आस्था भी विलक्षण है :-

(क) सुनो दिल जानी मेरे दिल की कहानी तुम।
नंद के दुलारे तेरी सूरत पे कुर्बान रहूँगी मैं।

(ख) जग की सभी चीजों में है पावन हरि का नाम।
सुखिया केवल भक्त जन के जाके राम आधार।

श्री परशुराम देवाचार्य जी

इन्होंने अपने परशुराम-सागर के दोहावली भाग में जो प्रचुर वर्णन किया है वह निसंदेह सराहनीय है। उनके कतिपय उद्धरण यहाँ प्रस्तुत हैं :-

(क) बन्धो प्रेम की डोरि हरि, परशुराम प्रभु आप

(ख) जंन्म मरण ये परशुराम हरि विमुखन के होय

(ग) पीजे अमृत रस प्रेम, रहिये हरि सुख माहिं।

(घ) हरि सनमुख नाईये जपिये हरि का नाम

(ङ) नर औतार सुफल बमे भजे प्रेम सॉं स्याम

(च) हरि अमृत रस प्रेम सो पीजे जो इकतार

श्री गोविन्द शरण देवाचार्य

इन्होंने अपने रसमय "गोविन्द वाणी" ग्रंथ में भक्तिरूप का जो वर्णन किया है सचमुच ही वह काबिल-ए-तारीफ़ है :-

(क) जग में हरि के जन बड़ भागी

(ख) गोविन्द सरन प्रभुता तजि भये अति आधीन

(ग) नीके बिहारी-बिहारिनी प्यारे

(घ) देहु प्रेम हरि परम उदार

(ङ) दिजे प्रेम निधि स्याम।

चैतन्य महाप्रभु "गौरांग"

बंगाल में जन्म होने के बावजूद भी ये कृष्ण भक्ति में पूरी तरह से रमे हुए थे। इनकी रचनाएं बांग्ला-हिंदी मिश्रित

(शेष पृष्ठ 90 पर)

2432 HA/07—9B

आर्थिक

निवेश का एक बेहतर विकल्प–म्यूचुअल फंड

–राकेश कुमार उज्ज्वल*

काफी प्राचीन काल से मनुष्य को बचत करने की आदत रही है। वह जो कुछ भी कमाता था या इकट्ठा करता था उसका कुछ भाग भविष्य के लिए बचत कर लेता था। यह प्रवृत्ति अभी तक चली आ रही है। मनुष्य इसके बाद सिर्फ बचत तक ही नहीं सीमित रहा। एक तरफ उसने अर्जन के साधनों को बढ़ाकर बचत में वृद्धि करने का प्रयास किया तो दूसरी ओर बचत की गई राशि से ही धनार्जन करने के उद्देश्य से बचत राशि को निवेश करने की ओर ध्यान देना शुरू किया। बैंकों के आगमन से मनुष्य की बचत और निवेश की प्रवृति को काफी मदद मिली और बड़ी आसानी से सुरक्षित रूप से अपना धन बैंकों में रखकर ब्याज के रूप में निवेश का प्रतिफल भी उसे मिलता रहा।

मनुष्य की प्रारंभ से इच्छा कुछ बेहतर करने की रही है अतएव वह निवेश के क्षेत्र में भी बेहतर विकल्पों की तलाश में रहा हैं। उसके समक्ष निवेश के कई-कई विकल्प सामने आए जैसे जमीन, स्वर्ण, भवन, बांड, ऋणपत्र, शेयर्स आदि। हर निवेश की अपनी विशेषताएं और जोखिम रहे हैं। जहाँ तक जमीन एवं भवन संबंधी निवेश है, उनमें तरलता की सख्त कमी है, अर्थात् जब भी आपको पैसों की जरूरत हो तो जमीन एवं भवन की बिक्री कर तुरंत धन की प्राप्ति संभव नहीं होती और यदि होती भी है तो बड़े नीचे मूल्य पर उन्हें बेचने को विवश होना पड़ता है। स्वर्ण भी तरलता के दृष्टिकोण से अच्छा निवेश नहीं कहा जा सकता है। ऋण पत्र में भी ब्याज की राशि कम रहती है और तरलता भी अधिक नहीं होती है। जहाँ तक शेयर्स का प्रश्न है इसमें प्रतिलाभ (रिटर्न) तो अच्छा मिलने की संभावना होती है, परंतु जोखिम काफी अधिक होता है। शेयर्स के कारोबार में अत्यधिक, सावधानी, चौकन्नापन, बाजार विश्लेषण एवं उसके उतार चढ़ाव की अच्छी समझ की आवश्यकता होती है। कई कम अनुभवी व्यक्ति अधिक लाभ पाने की आशा में शेयर्स में निवेश कर हाथ जला बैठे हैं। उन्हें मालदार से कंगाल बनने में ज्यादा वक्त नहीं लगा है। अतएव यद्यपि इसमें लाभ की संभावना अधिक हैं यथापि जोखिम की मात्रा भी काफी अधिक है। अतएव सामान्य जनहेतु इसे निवेश का बेहतर विकल्प नहीं कहा जा सकता।

अच्छा निवेश हम उसे कह सकते हैं जिसमें न्यूनतम जोखिम पर अधिकतम लाभ प्राप्त हो। इस दृष्टिकोण से हम चुनाव करें तो वर्तमान में बाजार में उपलब्ध निवेश के विकल्पों में से सबसे अच्छा विकल्प है म्यूचुअल फंड। म्यूचुअल फंड न्यूनतम जोखिम पर अधिकतम लाभ की परिभाषा पर खरा उतरता है।

म्यूचुअल फंड है क्या? म्यूचुअल फंड निवेशकों के एक समूह से धन एकत्र कर बड़ी कंपनियों में निवेश का एक सरल माध्यम है। शेयर्स के माध्यम से भी बड़ी कंपनियों में निवेश किया जाता है। इसे हम कंपनियों में प्रत्यक्ष निवेश मान सकते हैं। म्यूचुअल फंड के अंतर्गत कंपनियों में निवेशकों द्वारा सीधे निवेश न कर अप्रत्यक्ष रूप से निवेश किया जाता है अर्थात् म्यूचुअल फंड कंपनी द्वारा निर्धारित एक व्यक्ति निवेशकों के समूह के लिए निवेश करता है।

कंपनियों में सीधे निवेश करना कई दृष्टियों से कठिन होता है। कंपनियों के शेयरों के मूल्य काफी ज्यादा होते हैं, अतएव किसी एक व्यक्ति के लिए पर्याप्त संख्या शेयरों की खरीद संभव नहीं हो पाती है। सामान्य व्यक्तियों की

*101 चित्रशिला अपार्टमेंट, शेखर हास्पीटल के पास, सी-ब्लाक, इंदिरा नगर, लखनऊ

कंपनियों के बारे में व्यावसायिक समझ सीमित होती है और सामान्यत: वे सुनी-सुनाई बातों को आधार बनाकर निवेश कर देते हैं, जोकि जोखिम भरा निर्णय होता है। कंपनियों के शेयर के मूल्य अधिक होने से एक व्यक्ति कई कंपनियों के शेयर खरीदने की स्थिति में नहीं होता और एक ही कंपनी के शेयर खरीदने से जोखिम काफी बढ़ जाता है क्योंकि अगर उस एक कंपनी की स्थिति खराब हुई तो एक निवेशक का सारा पैसा डूब सकता है। शेयर निवेश के शेयर ब्रोकर आदि बिचौलियों के माध्यम से खरीद फरोख्त की जाती है जोकि लाभ का काफी हिस्सा अपने पास रख लेते हैं साथ ही कार्य-व्यवहार में पर्याप्त ईमानदारी भी नहीं बरतते हैं। इन कठिनाईयों को देखते हुए म्यूचुअल फंड में निवेश ज्यादा सुरक्षित और फायदेमंद तथा कठिनाई रहित होता।

जैसाकि पहले ही बताया जा चुका है कि म्यूचुअल फंड में निवेश किसी कंपनी में निवेश का अप्रत्यक्ष तरीका है म्यूचुअल फंड के अंतर्गत कई निवेशकों की निवेश राशि को एक बिचौलिये जिसे एसेट मैनजमेंट कंपनी कहते हैं, के पास जमा किया जाता है। उस संयुक्त राशि से शेयर में एसेट मैनेजमेंट कंपनी के प्रतिनिधि द्वारा निवेश किया जाता है। निवेशकों की ओर से शेयरों की खरीद फरोख्त उसी एसेट मैनेजमेंट कंपनी के प्रतिनिधि द्वारा की जाती है। ऐसी एसेट मैनेजमेंट कंपनी अपने पास वित्तीय विश्लेषक रखती है जो कि अनुसंधान कर अच्छी कंपनियों में निवेश कराते हैं जिससे अधिक से अधिक प्रतिफल मिलने की संभावना होती है तथा इस क्षेत्र में एक्सपर्ट होने के कारण जोखिम की संभावना भी कम होती है। एसेट मैनेजमेंट कंपनी इस विशेषज्ञ सेवा के लिए एक मामूली सी राशि निवेशकों से लेती है। इस तरह म्यूचुअल फंड में निवेश एक अच्छे विकल्प के रूप में सामने आता है। म्यूचुअल फंड में निवेश अच्छे निवेश की श्रेणी में कैसे आता है इसे निम्नलिखित निकर्षों पर देखने से और स्पष्ट हो जाता है:-

निवेश हेतु अत्यल्प राशि की आवश्यकता

म्यूचुअल फंड में अत्यंत कम राशि से भी निवेश कर सकते हैं। किसी बड़ी कंपनी के शेयरों में निवेश करना छोटे निवेशकों के लिए संभव नहीं होता। परंतु म्यूचुअल फंड के माध्यम से छोटे से छोटा निवेशक भी बड़ी कंपनियों में निवेश कर सकता है। म्यूचुअल फंड में निवेश करने की न्यूनतम सीमा 1000 रुपए या इससे भी कम है।

विविधिकृत निवेश

एसेट मैनेजमेंट कंपनियाँ किसी एक कंपनी में निवेश करने की बजाय कई कंपनियों में निवेश करती हैं क्योंकि समूह राशि का फंड उपलब्ध होने के कारण उनके पास निधि की कमी नहीं होती। अत: जबकि निवेशक का अत्यंत थोड़ा पैसा लगता है। परंतु उसे विविध कंपनियों के शेयर का लाभ प्राप्त हो जाता है। इसके अतिरिक्त विविधिकृत निवेश होने के कारण म्यूचुअल फंड के निवेश में जोखिम भी कम हो जाता है। क्योंकि निवेश का एक सर्वमान्य सिद्धान्त है कि सभी अंडे एक ही बास्केट में नहीं रखने चाहिएं (All eggs should not be kept in one basket) अर्थात् धन को विविध जगह निवेश किया जाना चाहिए न कि एक ही जगह ।

व्यावसायिक प्रबंधन

किसी सामान्य निवेशक के लिए यह निर्णय लेना एक अत्यंत दुष्कर कार्य है कि किस प्रतिभूति को खरीदा जाएं और कितनी मात्रा में खरीदा जाए तथा कब बेचा जाए। जब म्यूचुअल फंड में निवेश किया जाता है तो निवेशक को एक व्यावसायिक प्रबंधक की सेवा प्राप्त हो जाती है जो निवेश के संबंध में उपयुक्त निर्णय लेता है। ऐसा निर्णय लेने के पूर्ण प्रबंधक, अर्थव्यवस्था उद्योग एवं कंपनियों पर पर्याप्त शोध करता है और तभी कोई स्टॉक खरीदता या बेचता है। ऐसे व्यावसायिक प्रबंधन का लाभ सीधे निवेशकों को मिलता है।

तरलता

किसी भी अन्य प्रकार के निवेश की तुलना में म्यूचुअल फंड में निवेशित पैसे की तुरंत वापसी की जा सकती है। अन्य प्रकार के निवेश जैसे भूमि, मकान, सोना, एनएससी, फिक्स्ड डिपोजिट आदि इतनी तरलता नहीं रखते। म्यूचुअल फंड में किए निवेश की राशि आवश्यकता पड़ने पर एक दिन से सात दिनों के अंदर प्राप्त हो सकती है।

टैक्स पर छूट

म्यूचुअल फंड के टैक्स सेविंग फंड में किया गया एक लाख रुपये तक का निवेश आयकर छूट प्राप्त होता है। इसके

अतिरिक्त ऋण संबंधी म्यूचुअल फंड में मात्र 12.5 प्रतिशत लाभांश वितरण टैक्स लगता है जबकि अन्य निवेशों में 20 प्रतिशत लाभांश वितरण टैक्स लगता है। ईक्विटी म्यूचुअल फंड के लाभांश पर साधारण निवेशक को कोई लाभांश टैक्स नहीं देना पड़ता है। इस प्रकार इन विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए आज के दौर में म्यूचुअल फंड निवेश का एक बेहतर विकल्प है।

आज कई प्रकार की एसेट मैनेजमेंट कंपनियाँ विभिन्न प्रकार के म्यूचुअल फंड बाजार में उतार रही हैं। सामान्यतः इन्हें कुछ श्रेणियों में विभाजित कर सकते हैं।

1. ईक्विटि म्यूचुअल फंड–इसके अंतर्गत निवेश ईक्विटि शेयरों में किया जाता है, इसमें जोखिम की मात्रा अन्य फंडों के मुकाबले सबसे ज्यादा होती है।
2. डेट (ऋण) फंड–ईक्विटि म्यूचुअल फंड के विपरीत इसमें जोखिम की मात्रा सबसे कम होती है। इसमें निवेश ऋण पत्रों में किया जाता है।
3. बैलेन्स फंड– इस फंड में ईक्विटि एवं डेट का बराबर अनुपात में मिश्रण होता है । इससे जोखिम की मात्रा भी संतुलित रहती है।
4. टैक्स सेविंग फंड–यह फंड भी एक प्रकार की ईक्विटि फंड ही होता है परंतु इस फंड में निवेश करने पर तीन वर्ष का लॉक–इन रहता है अर्थात् तीन वर्षों तक निवेशित राशि निकाली नहीं जा सकती है। इस फंड में निवेश करने पर एक लाख रुपए की सीमा तक आयकर में छूट प्रदान की जाती है ।

इसके अतिरिक्त सभी प्रकार के फंड हाउस आजकल एस आई पी (सिस्टमेटिक इनवेस्टमेंट प्लान) पर जोर देते हैं। यह म्यूचुअल फंड में निवेश का बेहतर तरीका है। इसके द्वारा प्रतिमाह एक निश्चित छोटी राशि का निवेश कर बाजार के उतार–चढ़ाव के जोखिम से बचते हुए लाभ प्राप्त किया जा सकता है ।

इस प्रकार आज के दौर में निवेशकों को चाहिए कि फंड की सामान्य जानकारी लेकर अपनी आवश्यकता, उपयोग तथा जोखिम वहन क्षमता के अनुसार उपयुक्त फंड का चयन करें और छोटी राशि से निवेश कर अधिकतम लाभ सृजन करने की संभावना तलाशें । ■

(पृष्ठ 8 का शेष)

वे पहले से ही अंग्रेजी में काम करने में अभ्यस्त रहे हैं, कुछ हिंदी में काम करने या बोलने में संकोच का अनुभव करते हैं, वे अपना प्रभाव दिखलाने के लिए बोलचाल में अंग्रेजी का प्रयोग करते हैं; यह मानसिकता हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने में बाधक सिद्ध हुई । यद्यपि केंद्र सरकार के कार्यालयों में कार्यशालाओं के आयोजन के माध्यम से हिंदी में काम करने के लिए अनुकूल वातावरण बनाने में सहायता मिल रही है, किंतु कार्यशालाओं की नियमित एवं सुविचारित व्यवस्था हेतु इन्हें प्रोत्साहन देने की आवश्यकता बनी हुई है ।

तनिक न्यायालयों में हिंदी के प्रयोग की स्थिति का अवलोकन करें । आज उच्चतम न्यायालय की सभी कार्यवाहियां अंग्रेजी भाषा में होती हैं । आज तक केवल उ.प्र., मध्य प्रदेश, राजस्थान और बिहार के राज्यपालों ने अपने प्रदेश के उच्च न्यायालयों में उच्च न्यायालय द्वारा दिए गए अथवा पारित किसी निर्णय, डिक्री अथवा आदेश के लिए अंग्रेजी भाषा के अतिरिक्त हिंदी के प्रयोग की महामहिम राष्ट्रपति से अनुमति ली है। यदि कोई निर्णय, डिक्री या आदेश अंग्रेजी से भिन्न किसी भाषा में दिया या पारित किया जाता है तो उसके साथ–साथ संबंधित उच्च न्यायालय के प्राधिकार से अंग्रेजी भाषा में उसका अनुवाद भी किया जाएगा । न्यायालयों में हिंदी के प्रयोग को प्रोत्साहन देने की आवश्यकता है ।

जहां हिंदी का विकासशील स्वरूप–हिंदी साहित्य का विभिन्न विधाओं में गुणात्मक एवं संख्यात्मक दृष्टि से समृद्ध होना उसके उज्ज्वल भविष्य को दर्शाता है, वहां व्यवहार्य भाषा के रूप में जनपदीय शब्दावली का समावेश और शब्द–संपत्ति में बढ़ौत्तरी राष्ट्रभाषा के व्यापक स्वरूप का परिचय कराती है । जहां हिंदी ने अभिव्यक्ति की पर्याप्त क्षमता अर्जित की है, वहां आवश्यकता इस बात की भी है कि विविध विषयों से संबंधित पारिभाषिक शब्दावली को प्रयोग किया जाए, शब्दावली का प्रयोग किए बिना उस पर किए गए श्रम एवं व्यय की उपयोगिता सिद्ध नहीं हो सकेगी। कितना अच्छा होगा यदि हम हिंदी का प्रयोग व्यवहार –भाषा के धरातल पर करें, हिंदी की प्रकृति के अनुकूल उसके स्वरूप की रक्षा करते हुए हिंदी में अपने विचार प्रकट कर गौरव का अनुभव करें । ■

2432 HA/07—10A

भूगोलिक

भारत में सभ्यता के विकास और यमुना घाटी

—डॉ. विजय कुमार उपाध्याय*

कुछ वर्ष पूर्व भारतीय आर्किंयोलोजिकल सर्वेक्षण विभाग के एक अधीक्षण आर्किंयोलोजिस्ट, श्री ए.के. शर्मा दिल्ली से थोड़ी दूर अरावली पर्वत-श्रृंखला में बदरपुर नामक स्थान के निकट किसी काम के सिलसिले में घूम-घाम रहे थे। वहाँ उन्होंने देखा कि कुछ लोग बदरपुर के लाल बालू को एक ट्रक में लाद रहे थे। इस बालू में तीक्ष्ण धार वाले कुछ पत्थर के टुकड़े दिखायी पड़े जो प्रागैतिहासिक मानवों द्वारा उपयोग में लाए जाने वाले औजारों से मिलते-जुलते थे। उत्सुक्तावश उन्होंने ट्रक पर लदे बालू में से कुछ पत्थरों को चुन लिया। उन्होंने गहन छान-बीन शुरू की। जाँच पड़ताल से पता चला कि यह बालू सूरज कुंड से आया है। ये पर्वत श्रृंखलायें काफी प्राचीन है। जब श्री शर्मा उपर्युक्त खदानों का भ्रमण करने गए तो पता चला कि उन चटट्नों में उपर्युक्त किस्म के अनेक औजार मौजूद हैं। इन औजारों की आयु लगभग दो लाख वर्ष थी।

यह एक संयोग की ही बात थी कि इसी समय के आस-पास इन क्षेत्रों का उपग्रह द्वारा लिया गया चित्र भी उपलब्ध हो गया। इन चित्रों के अध्ययन से पता चला कि यमुना नदी की वर्त्तमान घाटी इसके द्वारा धारित छठी घाटी है। अत: यह स्पष्ट है कि इस नदी ने भूवैज्ञानिक काल के दौरान पाँच बार अपनी धारा की दिशा बदली। उपग्रह द्वारा लिए गए चित्रों से यमुना नदी की पुरातन घाटियों की दिशा का भी ज्ञान हो जाता हैं। ये पुरातन घाटियाँ अरावली पर्वत श्रृंखला के आर-पार जाती दिखाई देती हैं।

उपर्युक्त उपग्रह चित्रों से प्राप्त जानकारी के आधार पर अरावली पर्वत श्रृंखला का गहन अध्ययन प्रारम्भ किया गया। इस अध्ययन का उद्देश्य यमुना की पुरातन घाटियों के सही स्थान को ढूँढना था। शीघ्र ही यमुना की पांचवी घाटी का स्थान ढूँढ लिया गया। उस क्षेत्र में फैले हुए गाद (सिल्ट) के निक्षेप पांचवी घाटी के स्थान का संकेत दे रहे थे। परन्तु इसकी पुष्टि के लिये यह आवश्यक था कि यहाँ पर खुदाई की जाए। परन्तु खुदाई करने में कुछ कठिनाइयाँ थी। क्योंकि इस क्षेत्र में भवनों का निर्माण चल रहा था।

इन अध्ययनों से इतना निश्चित हो गया कि लगभग दो लाख वर्षों के बाद आज पुन: मानव उसी क्षेत्र को आबाद करने लगा है, जहाँ उसके पूर्वज कभी नंगे घूमा करते थे। यमुना की पांचवी घाटी की खोज के बाद उसकी चौथी घाटी का भी खाका खींचा गया। चौथी तथा पांचवी घाटी के बीच पहाड़ी क्षेत्र है जो पत्थरों से भरा हुआ है। इसी स्थान पर खुदाई की गई। खुदाई करने में अधिक परिश्रम की आवश्यकता नहीं थी, क्योंकि पत्थर काटनेवालों ने पहले ही वहां काफी खुदाई कर डाली थी। खुदाई से जो बातें सामने आईं वे काफी रोचक थीं। यमुना की पांचवीं घाटी के किनारे कुछ ही मीटर की खुदाई करने पर पत्थरों की एक लम्बी कतार थी जिसमें सैकड़ों की संख्या में पत्थर से बने औजार मौजूद थे। ये औजार प्रागैतिहासिक काल में बनाए गए थे। इन औजारों के किनारे मजबूत लकड़ी के टुकड़ों से काट कर धारदार एवं तीक्ष्ण बनाएं गए थे। ये भिन्न-भिन्न आकारों एवं आकृतियों के थे। इनमें से कुछ आकृति कुल्हाड़ी के समान तो अन्य कुछ देखने में पसुली (स्क्रैपर) जैसे लगते थे। पसुली के समान इन औजारों से पशुओं की खाल उतारने का काम लिया जाता था। प्रागैतिहासिक काल के मानव जानवरों की इन खालों से अपने तन ढकते थे। कुछ औजारों की आकृति भाले (स्पीयर) से मिलती जुलती थी। इन भालों से

*कृष्णा इनक्लेव, राजेन्द्र नगर हाउसिंग कॉलोनी, पो.-जमगढ़िया, भाया-जोधाडीह, चास जिला-बोकारो, झारखण्ड-827013

प्रागैतिहासिक मानव जानवरों का शिकार किया करता था। इसी प्रकार यमुना की चौथी घाटी के किनारे की गई खुदाई से भी पत्थर निर्मित कुछ औजार मिले।

यमुना की चौथी घाटी के किनारे खुदाई से प्राप्त औजारों तथा पांचवी घाटी के किनारे प्राप्त औजारों में एक स्पष्ट अन्तर है। पांचवी घाटी के किनारे प्राप्त औजार चौथी घाटी के किनारे प्राप्त औजारों की तुलना में अधिक विकसित किस्म के हैं। इन साक्ष्यों के आधार पर यह अनुमान लगाया जाता है कि जैसे-जैसे हम पांचवी घाटी से पहली घाटी की ओर बढ़ेंगे उनमें मिलनेवाले औजार अधिक से अधिक आदिम एवं अविकसित किस्म के होंगे। उपग्रह से प्राप्त चित्रों से पता चलता है कि पहली घाटी हरियाणा में भिवानी तक फैली हुई है। इससे स्पष्ट है कि उस काल में यमुना नदी भिवानी के बगल से गुजरती थी। यदि यमुना की सभी पुरातन घाटियों की खुदाई की जाए तो भारत में मानव सभ्यता के विकास के विभिन्न सोपान हमारी नजरों के सामने निश्चित रूप से आएंगे।

अनुमान लगाया गया है कि प्रागैतिहासिक मानव का इस क्षेत्र में निवास तीन कारणों से था। पहला कारण तो यह था कि उसे यहां जीवन यापन के लिये पर्याप्त जल की आपूर्ति हो जाती थी। दूसरा कारण था कि यह क्षेत्र हरे-भरे जंगलों से भरपूर था जिससे उसे आहार के लिये पर्याप्त फल-मूल मिल जाया करता था। इसके अलावा आस-पास के जंगलों में हिरण इत्यादि जंगली जानवर काफी संख्या में थे जिनका शिकार कर वह अपने आहार के लिए मांस प्राप्त करता था। साथ ही साथ इन जानवरों से प्राप्त खाल का उपयोग वह अपना तन ढकने के लिए करता था। इस क्षेत्र में प्रागैतिहासिक मानव की घनी आबादी का तीसरा कारण था पत्थरों की भारी मात्रा में उपलब्धि जिनसे वह अपने औजार बनाया करता था तथा इन्हीं पहाड़ियों की कन्दराओं में वर्षा शीतलू तथा खतरनाक जंगली पशुओं से वह सुरक्षा प्राप्त करता था।

इस क्षेत्र के अध्ययन के दौरान पहाड़ियों की चोटियों पर ऐसे स्थान पाए गए जहां बड़े-बड़े चट्टानों को प्रागैतिहासिक मानवों द्वारा काट कर सपाट बनाया गया था। ये सपाट पत्थर एक गोल घेरे में पाए जाते हैं। इससे अनुमान लगाया जाता है कि शीत ऋतु में प्रागैतिहासिक मानव अपने परिवार एवं कुटुम्बियों के साथ इन पत्थरों पर घेरा बनाकर बैठता था तथा बीच में आग जलाई जाती थी जिसे सब लोग तापते थे। इसी स्थान पर पत्थर के औजार भी बनाए जाते थे। यह एक प्रकार से उस काल का सामूहिक मनोरंजन स्थल था।

इस क्षेत्र का पता लगाने वाले पुरातत्वाविद श्री ए. के. शर्मा का विचार है कि यहाँ जीवाश्म भी प्राप्त होने की काफी संभावनाएं हैं। चौथी घाटी में कैल्शियम कार्बोनेट के टुकड़ों की एक विशाल परत है। यह परत उस शैल स्तर के ठीक ऊपर स्थित है जिसमें प्रागैतिहासिक मानव रहा करता था। इस प्रकार की संरचना प्रायः स्थिर जल में विकसित होती है। इस क्षेत्र में प्राप्त चट्टान भ्रंशों के अध्ययन से पता चलता है कि एक भीषण भूकंप के कारण चट्टानों में भ्रंश विकसित होने से यमुना नदी की धारा सैकड़ों वर्षों तक अवरुद्ध हो गई थी। इस कारणवश आस-पास का क्षेत्र जल-प्लावित हो गया था तथा वहां के निवासियों को उस क्षेत्र से हट कर ऊँचे तथा सुरक्षित क्षेत्र में शरण लेनी पड़ी होगी। अभी तक विभिन्न क्षेत्रों में किए गए अध्ययनों से पता चला है कि कैल्शियम कार्बोनेट की उपस्थिति जीवाश्म के निर्माण एवं परिक्षण हेतु काफी अनुकूल है। चूँकि इस क्षेत्र में कैल्शियम कार्बोनेट मौजूद है, अतः यह लगभग निश्चित है कि यहां पर जीवाश्म भी मौजूद होंगे जिनके अध्ययन में मानव के विकास के संबंध में उपयोगी जानकारी मिल सकती है तथा इस क्षेत्र की सभ्यता एवं संस्कृति के बारे में महत्वपूर्ण संकेत मिल सकते हैं।

हिंदी के बिना भारत की राष्ट्रीयता की बात करना व्यर्थ है।

(वी.वी. गिरि)

राजभाषा संबंधी गतिविधियां

(क) विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समितियों की बैठकें

केंद्रीय भूमि जल बोर्ड एन. एच. 4, फरीदाबाद

श्री बी. एम. झा, सदस्य (ई डी एम एम) एवं अध्यक्ष विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति, केंद्रीय भूमि जल बोर्ड की अध्यक्षता में दिनांक 15-01-2007 को अपराह्न 3.00 बजे सम्मेलन कक्ष में विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक आयोजित की गई ।

अनुभागवार समीक्षा के दौरान निदेशक (प्रशासन) ने कहा कि स्थानीय प्रशासन अनुभाग द्वारा अधिसूचनाएं, कार्यालय ज्ञापन आदि केवल हिंदी में निकाले जाएं । उन्होंने पुस्तकालय एवं सूचना अधिकारी से कहा कि पुस्तकों की खरीद के 50 प्रतिशत लक्ष्य को पूरा किया जाए । पुस्तकों की खरीद करते समय उपनिदेशक (रा.भा.) की भी राय ली जाए । समीक्षा के दौरान धारा 3(3) तथा नियम 5 के बारे में विस्तार से बताते हुए इसका अनुपालन करने के लिए कहा गया । उपनिदेशक (रा.भा.) ने बताया कि राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय के निदेशानुसार 'क' व 'ख' क्षेत्रों को शत-प्रतिशत तथा 'ग' क्षेत्रों को 65 प्रतिशत पत्राचार हिंदी में किया जाना चाहिए । श्री एम. के. गर्ग, सहायक भूजलविज्ञानी ने अनुरोध किया कि अधिकारियों/कर्मचारियों को हिंदी टाइपिंग का प्रशिक्षण दिया जाए ताकि अधिक से अधिक कार्य हिंदी में किया जा सके । इस पर निदेशक (प्रशासन) ने उपनिदेशक (रा.भा.) से कहा कि वे एक प्रशिक्षण कार्यक्रम तैयार करके इच्छुक अधिकारियों/कर्मचारियों को हिंदी टाइपिंग का प्रशिक्षण दिलाएं । उपनिदेशक (रा.भा.) ने कहा कि शीघ्र ही इसकी व्यवस्था की जाएगी ।

स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय सरकारी चिकित्सा सामग्री भंडार 9, क्लाइड रो, हेस्टिंग्स, कोलकाता-22

इस कार्यालय की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक दिनांक 15-12-2006 की अपराह्न 2.00 बजे माननीय डा. असित चौधरी, मुख्य चिकित्सा पदाधिकारी (एन एफ एस जी), प्रभारी अधिकारी, सरकारी चिकित्सा सामग्री भंडार, कोलकाता की अध्यक्षता में आयोजित की गई है ।

पिछली सभा के कार्यवृत्त की समीक्षा की गई । श्री कैलाश नाथ साव, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक एवं सदस्य सचिव ने माननीय अध्यक्ष महोदय एवं बैठक में उपस्थित सभी माननीय सदस्यों को यह जानकारी दी कि हिंदी में भेजे जाने वाले पत्रों का प्रतिशत और अधिक बढ़ सकता है अगर विभिन्न अनुभागों से व्यवहार किए जाने वाले साइक्लो-स्टाइल पत्रों को द्विभाषी किया जाए एवं इन पत्रों को हिंदी में भेजा जाए । माननीय अध्यक्ष महोदय ने संबंधित सहायक डिपो प्रबंधकों को यह परामर्श दिया कि सभी उपयुक्त पत्रों को द्विभाषी किया जाय एवं इन पत्रों का हिन्दी में प्रयोग सुनिश्चित करें ताकि हिंदी पत्राचारों की प्रतिशता में आवश्यक वृद्धि हों। राजभाषा से संबंधित कार्यों के लिए द्विभाषी कम्प्यूटर की आवश्यकता महसूस की गई। स्थापना अनुभाग के अधीक्षक ने यह आश्वासन दिया कि जनवरी 2007 तक सभी अनुभागों में द्विभाषी रबर की मोहरें उपलब्ध करा दिए जाएगें ।

परमाणु खनिज अन्वेषण एवं अनुसंधान निदेशालय पश्चिमी क्षेत्र ए एम डी काम्प्लेक्स प्रताप नगर से. V विस्तार बम्बाला सांगोर, जयपुर

बैठक के प्रारंभ में पिछली बैठक में लिए गए निर्णयों पर की गई अनुवर्ती कार्रवाई पर चर्चा की गई तथा हिंदी सप्ताह वर्ष 2006 के आयोजन की समीक्षा की गई।

तत्पश्चात् बैठक में वर्ष 2006-2007 के लिए निर्धारित अन्य राजभाषा कार्यक्रमों की रूपरेखा तैयार की गई जिसमें निर्णय लिया गया कि दिसंबर माह में पखनि/पक्षेत्र में हिंदी कार्यशाला एवं हिंदी कंप्यूटर कार्यशाला का आयोजन

किया जाए। इसके साथ ही यह निर्णय भी लिया गया कि यदि संभव हो तो फील्ड क्षेत्रों में भी हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया जाए। इन आयोजनों के अतिरिक्त जन सामान्य में परमाणु ऊर्जा के संबंध में फैली हुई भ्रांतियों के निराकरण एवं परमाणु उर्जा के संबंध में जनजागृति फैलाने के उद्देश्य से किसी विद्यालय में जन संपर्क कार्यक्रम आयोजित करने का निर्णय भी लिया गया।

बैठक में राजभाषा विभाग द्वारा राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केंद्र, एन.पी.टी.आई. तथा सी-डेक के माध्यम से हिंदी में कंप्यूटर प्रशिक्षण कार्यक्रम वर्ष 2006-2007 पर भी विचार विमर्श किया गया। तथा निर्णय लिया गया कि इस प्रशिक्षण के लिए पखनि/क्षेत्र कार्यालय से तीन कार्मिकों को दिनांक 05-02-2007 से 09-02-2007 के बैच में प्रशिक्षण के लिए नामित किया जाए। इसके लिए सभी अनुभाग प्रमुखों से नामांकन हेतु कार्मिकों के नाम मांगे जाएंगे।

लेखा अनुभाग द्वारा जारी की जाने वाली वेतन स्लिप अभी तक अंग्रेजी में जारी की जा रही हैं । बैठक में इस संबंध में विचार विमर्श किया गया। इस संबंध में सहायक कार्मिक अधिकारी ने जानकारी दी कि वेतन स्लिप के साफ्टवेयर में हिंदी की सुविधा नहीं है अतः निर्णय लिया गया कि मुख्यालय हैदराबाद से वेतन स्लिप के द्विभाषिक साफ्टवेयर की मांग की जाएगी तथा शीघ्र ही वेतन स्लिप को द्विभाषिक रूप में उपलब्ध कराया जाएगा।

मुख्य आयकर आयुक्त, आयकर भवन, ऋषि नगर, लुधियाना

मुख्य आयकर आयुक्त लुधियाना प्रभार की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 16वीं बैठक दिनांक 23-11-2006 को मुख्य आयकर आयुक्त कार्यालय के सभागार में आयोजित की गई । इस बैठक की अध्यक्षता श्री आर. के. रॉय आयकर आयुक्त-II एवं नामित राजभाषा अधिकारी, लुधियाना ने की । श्री वी. पी. सिंह, उप निदेशक (राजभाषा) उत्तरी जोन, केंद्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड, नई दिल्ली ने इस बैठक में विशेष तौर पर भाग लिया ।

श्री वी. पी. सिंह, उप निदेशक (राजभाषा), उत्तरी जोन केंद्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड, नई दिल्ली ने बैठक में निम्नलिखित सुझाव प्रस्तुत किए :-

सभी कम्प्यूटरों में (लीप आफिस) साफ्टवेयर लोड करा जा सकता है ताकि हिंदी में टाइप आदि का कार्य सुचारू रूप से किया जा सके ।

कार्यालय के सभी साइन/नोटिस बोर्ड, नेमप्लेट और रबर स्टैम्प हिंदी और अंग्रेजी में साथ-साथ तैयार कराए जाने चाहिए जिसमें हिंदी उपर और अंग्रेजी नीचे हो ।

फाइल कवरों का मुद्रण हिंदी-अंग्रेजी में (दोनों भाषाओं में) साथ-साथ मुद्रित कराया जाना चाहिए और फाइलों पर नाम-पते, विषय आदि द्विभाषी रूप में लिखा जाना चाहिए।

सभी नोटिसों को द्विभाषी तैयार कराकर केवल हिंदी में भरकर जारी कराया जाना चाहिए ।

सभी अधिकारी/कर्मचारी अपने दैनिक कार्यों में अधिक से अधिक हिंदी में कार्य करें जैसे नोटिंग/आर्डरशीट हिंदी में लिखना, प्रोफार्मा प्रकार का पत्राचार हिंदी में करना आदि । इसके अतिरिक्त डिक्टेशन द्वारा यथासंभव हिंदी में कार्य करना ।

हिंदी में टाइप कार्य करने के लिए कम्प्यूटर का प्रशिक्षण दिलाना आवश्यक है ताकि पहले से कार्यरत कर्मचारियों से अंग्रेजी के साथ-साथ हिंदी में टाइप कराया जा सके ।

सरकारी बैठकों के लिए तैयार किए जाने वाले एजेंडे में 'हिंदी के प्रयोग की समीक्षा' एक विषय शामिल किया जा सकता है ताकि अन्य विषयों के साथ-साथ हिंदी की प्रगति एवं उपायों पर चर्चा की जा सके ।

मुख्य आयकर आयुक्त, हरियाणा क्षेत्र, आयकर भवन, सैक्टर-2, पंचकूला-134112

समिति की तिमाही बैठक दिनांक 14-12-2006 को दोपहर 12-30 बजे श्रीमती मंजु लखनपाल, मुख्य आयकर आयुक्त, पंचकूला की अध्यक्षता में उनके कमरे में आयोजित की गई । सदस्य सचिव ने बताया कि पिछली बैठक में लिए गए निर्णय के अनुसार अनुस्मारक पत्र, पृष्ठाँकन, पावती भेजने संबंधी पत्र हिंदी में जारी किए जा रहे हैं । कार्यालय आयकर, आयुक्त, पंचकूला की तकनीकी शाखा में 12ए तथा 80जी के अन्तर्गत पत्राचार हिंदी में किया जा रहा है । इसके अतिरिक्त रिपोर्ट आदि भेजने संबंधी पत्र हिंदी में जारी किए जा रहे हैं । अध्यक्ष महोदया ने कहा कि हिंदी के पत्राचार को और अधिक बढ़ाया जाए तथा निर्धारण क्षेत्र में

2432 HA/07—11A

भी 154 तथा 156 के नोटिस तथा अन्य नोटिस जो द्विभाषी हैं, हिंदी में जारी किए जाएं तथा जो नोटिस तथा निर्धारण आदेश तथा रिफण्ड आदेश आदि कम्प्यूटर से तैयार किए जाते हैं और जो अंग्रेजी में हैं उनके साथ अग्रेषण पत्र (Forwarding Letter) हिंदी में तैयार किया जाए ताकि हिंदी में पत्राचार की प्रतिशतता बढ़ाई जा सके । अध्यक्ष महोदया ने यह भी चाहा कि पेनेल्टी ड्राप करने संबंधी पत्र भी हिंदी में ही जारी किए जाएं ।

आयकर विवरणी की प्राप्ति सूचना संबंधी मोहर हिंदी में लगाई जाए तथा उन्हें हिंदी पत्राचार में शामिल किया जाए जिससे पत्राचार की प्रतिशतता में वृद्धि हो सके । हिंदी में प्राप्त पत्र का उत्तर हिंदी में ही देना अनिवार्य है । इस नियम का सख्ती से अनुपालन किया जाना चाहिए ।

फाइलों में अधिकतर टिप्पणियाँ हिंदी में लिखी जानी चाहिए । हिंदी में टिप्पणी लिखने संबंधी निर्धारित लक्ष्य 75% है ।

अंत में अध्यक्ष महोदया ने कार्यालय में हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने पर बल दिया । उन्होंने कहा कि हिंदी हमारी राजभाषा है, इसका जितना अधिक प्रयोग करेंगे उतना ही हम जनता के करीब होंगे । भाषा में कठिन शब्दों का प्रयोग न करके सरल एवं सुबोध शब्दों का प्रयोग करना चाहिए । उन्होंने वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों को भी यथासम्भव प्राप्त करने पर जोर दिया ।

कार्यालय महालेखाकार लेखा एवं हकदारी-द्वितीय म. प्र., ग्वालियर

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)-द्वितीय म. प्र. ग्वालियर की त्रैमासिक बैठक दिनांक 18-1-2007 को कार्यालय के सभा कक्ष में आयोजित की गई । बैठक की अध्यक्षता सुश्री एनी.जी. मैथ्यू महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)-II म. प्र. द्वारा की गई । समिति के समक्ष गत तिमाही की बैठक दिनांक 31-10-2006 के कार्यवृत्त का वाचन किया गया । यह कार्यवृत्त सर्व सम्मति से स्वीकार किया गया ।

इस तिमाही के दौरान कार्यालय में 20,598 पत्र हिंदी में प्राप्त हुए । सभी पत्रों में के उत्तर हिंदी में दिए गए । कार्यालय द्वारा जारी किए गए पत्रों की संख्या 40,639 रही । इस तिमाही में कुल 3327 फाइलें खोली गई । सभी फाइलों पर संदर्भ तथा शीर्षक हिंदी में लिखे गए । साथ ही इस तिमाही में 06 शीर्षस्थ प्रशासनिक बैठकें आयोजित की गई । राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3(3) के अन्तर्गत जारी किए गए कागजातों की संख्या 05 रही ।

समिति के समक्ष वीरांगना पत्रिका के प्रकाशित नवीन अंक की जानकारी प्रस्तुत की गई । तत्पश्चात् महालेखाकार महोदया सुश्री एनी. जी. मैथ्यू द्वारा वीरांगना 27-28वें संयुक्तांक का विमोचन किया गया । नई पत्रिका के इस विमोचन अवसर पर सभी सदस्यों ने करतल ध्वनि से अपना हर्ष प्रकट किया । पत्रिका के कलेबर व साज सज्जा की सभी ने प्रशंसा की । इस अवसर पर अध्यक्ष महोदया ने पत्रिका की प्रगति पर संतोष व्यक्त करते हुए कहा कि अगला अंक शीघ्र प्रकाशित किया जाए तथा 31 मार्च, 2007 तक चौथा अंक भी प्रकाशित कर दिया जावे ।

केंद्रीय उत्पाद शुल्क एवं सीमा शुल्क आयुक्त का कार्यालय, पो. बा. नं. 81, तेलगंखडी मार्ग, सिविल लाइन्स, नागपुर

केंद्रीय उत्पाद एवं सीमा शुल्क आयुक्त कार्यालय नागपुर की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक दिनांक 19-12-2006 को केंद्रीय उत्पाद एवं सीमा शुल्क आयुक्त श्री हरजिन्दर सिंह की अध्यक्षता में मुख्यालय कार्यालय के सम्मेलन कक्ष में सम्पन्न हुई ।

आयुक्त महोदय ने मुख्यालय के अनुभागों एवं प्रभागीय कार्यालयों के हिंदी पत्राचार के स्थिति की समीक्षा करते हुए कहा कि प्रभाग-अमरावती, सतर्कता शाखा, सांख्यिकी शाखा, सूचना अधिकार शाखा एवं विधि शाखाओं के पत्राचार असंतोषजनक है ।

उन्होंने मुख्यालय की स्थापना-I, स्थापना-II, शाखा, तकनीकी शाखा, एवं सांख्यिकी शाखा का राजभाषा निरीक्षण करने के लिए निर्देश दिए हैं एवं कहा कि देखें उनमें कैसे सुधार हो सकता है ।

आयुक्त कार्यालय में राजभाषा अधिनियम की धारा 3(3) का पूर्ण रूप से अनुपालन किया जा रहा है । 30-9-2006 को समाप्त तिमाही अवधि के दौरान कार्यालय

द्वारा कुल 96 कागजात जारी किए गए है । इनमें से कोई भी कागजात अंग्रेजी में जारी नहीं किए गए । अध्यक्ष महोदय ने निर्देश दिए कि स्थापना आदेश/सामान्य आदेश/व्यापार सूचनाएं आदि द्विभाषी में जारी किए जाए ।

अध्यक्ष महोदय ने निर्देश दिए कि फाइलों पर अधिक से अधिक हिंदी में नोटिंग की जाए ।

सीमा शुल्क एवं केंद्रीय उत्पाद शुल्क आयुक्तालय, आइस हाउस, ई.डी.सी. कॉम्प्लैक्स, पाटो, पणजी-गोवा

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही (अक्तूबर से दिसम्बर, 2006 तक) बैठक दिनांक 17-01-2007 को पूर्वाह्न 11.00 बजे श्री एस. के. विर्दी संयुक्त आयुक्त, सीमा शुल्क तथा केंद्रीय उत्पाद् शुल्क, गोवा की अध्यक्षता में पणजी स्थित मुख्यालय कार्यालय में आयोजित की गई ।

बैठक में समिक्षा के दौरान अध्यक्ष महोदय ने जिस अनुभाग में हिंदी का प्रयोग अपेक्षाकृत कम है उन अधिकारियों को निर्देश दिया, कि वे अपने हिंदी कामकाज बढ़ाने का प्रयास करें । हिंदी पत्राचार के आंकड़े जांच पड़ताल के बाद भेजें । कुछ अनुभाग से सिर्फ हिंदी पत्राचार के आंकड़े दिए गए, प्रतिशत के लिए अंग्रेजी पत्राचार के आंकड़े भी होना जरूरी है ।

अध्यक्ष महोदय ने सभी अनुभाग प्रमुखो को निर्देश, दिया कि हर अनुभाग के आंकड़े विभाग प्रमुख के हस्ताक्षर से हर महीने की 5 तारीख तक हिंदी अनुभाग में प्रस्तुत करें । ताकि हिंदी अनुभाग महीने की 10 तारीख से पहले ब्यौरा आयुक्त महोदय के अवलोकन हेतु प्रस्तुत कर सके ।

टाईपिंग किए हुए प्रोफार्मा/रिपोर्ट संगणक मशीन में डाले जा सकते हैं, आवश्यकता के अनुसार उसमें बदल कर सकते हैं । हिंदी में संबंधित महीने का आवश्यक रिपोर्ट के आंकड़े स्थानांतरित करके प्रस्तुत कर सकते हैं ।

सहा. लेखा मुख्यालय में वेतनपर्ची के अलावा बहुत सारे कामकाज हिंदी में किए जाते हैं, पत्राचार में बढ़ोतरी की जा सकतीं है । चर्चा के दौरान यह पाया गया कि दोनों मंडल का प्रशासन और मार्मागोवा प्रशासन भी तथा लेखा संबंधी कार्य हिंदी में नहीं हो रहा है । दोनों मंडल के और मार्मागोवा के उप आयुक्त इस विषय पर विशेष ध्यान दें ।

स्थापना आदेश, परिपत्र, सार्वजनिक सूचना, व्यापार सूचना स्थायी आदेश, व्यक्तिगत सुनवाई, प्रस्तावना (Adj. Preamble) मासिक स्टेटमेंट, सामयिक रिपोर्ट, अनुस्मरण, शून्य रिपोर्ट, ज्ञापन आदेश में हिंदी जारी करना आवश्यक है ।

फाईल पर टिप्पणियाँ (नोटिंग) हिंदी में लिखी जा सकती है । मुख्यालय के हर अनुभाग सभी मण्डल और परिक्षेत्र से भेजे जानेवाले सारे लिफाफे पर हिंदी में पते (Address) लिखने पर पत्राचार की प्रतिशत बढ़ सकता है ।

अध्यक्ष महोदय ने सभी उपस्थित अनुभाग प्रमुखों को निर्देश दिया कि हिंदी पत्राचार प्रतिशत बढ़ाने के हेतु सभी सामयिक (Periodical Report) विवरण/रिपोर्ट के अग्रेषण पत्र, (covering letter) मानक मसौदा (Standard Form)/अर्जित छुट्टी का फार्म (E/L) आकस्मिक छुट्टी फार्म (C/L) संबंधित अनुभाग में उपलब्ध कराए जाए । अग्रेषण पत्रों का हिंदी अनुभाग को अनुवाद के लिए भेजे। अनुभाग प्रमुख सभी संबंधी कर्मचारियो के छुट्टी के अर्जी हिंदी में भरकर प्रस्तुत करने का निर्देश दे। उसके बिना छुट्टी मंजूर न करें, जिससे अनुभाग का पत्राचार बढ़ सकता है ।

केंद्रीय उत्पाद एवं सीमा शुल्क आयुक्त का कार्यालय, वापी चौथी मंजिल, आदर्शधाम बिल्डिंग, वापी-दमण रोड, वापी

केंद्रीय उत्पाद एवं सीमा-शुल्क आयुक्तालय, वापी की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की दिनांक 25-01-07 को आयोजित बैठक में दिनांक 31-12-2006 को समाप्त अवधि की तिमाही हिंदी प्रगति रिपोर्ट की समीक्षा एवं तिमाही के दौरान राजभाषा कार्यान्वयन हेतु किए गए कार्यों की समीक्षा की गई ।

बैठक श्री कैलाशचन्द गुप्ता, आयुक्त केंद्रीय उत्पाद एवं सीमा शुल्क, वापी की अध्यक्षता में उन्हीं के कक्ष में आयोजित की गई ।

अध्यक्ष महोदय ने सभी मंडल एवं अनुभाग अधिकारियों को सख्त निर्देश दिए कि प्रत्येक तिमाही की समाप्ति के 10 दिनों के अंदर तिमाही रिपोर्ट मुख्यालय को भेज दें ताकि समेकित सूचना यथासमय निरीक्षण महानिदेशालय को प्रेषित की जा सके ।

केंद्रीय उत्पाद शुल्क तथा सीमा शुल्क के आयुक्त का कार्यालय, केंद्रीय राजस्व भवन, आर.जी. गडकरी चौक, नासिक-422002

केंद्रीय उत्पाद तथा सीमा शुल्क आयुक्तालय, नासिक की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की पंद्रहवीं बैठक दिनांक 28-12-06 को श्रीमती एफ. एम. जसवाल, आयुक्त की अध्यक्षता में कार्यालय के सम्मेलन कक्ष में संपन्न हुई । अध्यक्ष महोदय ने कहा कि राजभाषा अधिनियम उपबन्धों के तथा राजभाषा संबंधी आदेशों का अपने मंडल कार्यालयों एवं उसके अधीन रेंज कार्यालयों एवं मुख्यालय स्थित सभी अनुभागों आदि में यथोचित रूप से अनुपालन किया जाए। कार्यान्वयन संबंधी कार्य का विशेष महत्व है और समुचित स्तर के अधिकारियों द्वारा इस ओर पर्याप्त ध्यान दिया जाना चाहिए । आपको व्यक्तिगत रूप से देखना होगा कि कार्यालय द्वारा धारा 3 (3) के अंतर्गत जारी किए जाने वाले सभी कागजात मुख्यत: सामान्य आदेश, परिपत्र आदि द्विभाषिक रूप में जारी किए जाए ।

हिंदी पत्राचार की समीक्षा के दौरान अध्यक्ष महोदया ने यह निर्देश दिए कि हिंदी पत्राचार में दिखाए गए आँकड़े सही होने चाहिए । इसके हिंदी पत्राचार का आवक/जावक रजिस्टर अलग से रखा जाए एवं हिंदी पत्रों के रिकार्ड को अद्यतन रखा जाए जिससे हिंदी के पत्राचार की स्थिति स्पष्ट होगी । संबंधित मंडल प्रभारी/अनुभाग प्रभारी इसकी जाँच के बाद ही रिपोर्ट पर हस्ताक्षर करें ।

अध्यक्ष महोदया ने कहा कि प्रत्येक तिमाही में निर्धारित अवधि में हिंदी रिपोर्ट मुख्यालय में नहीं पहुँचती और यह देखा गया है कि कुछ मंडल एवं अनुभागों से रिपोर्ट में पूर्ण जानकारी नहीं दी जाती या कॉलम रिक्त छोड़ दिए जाते है । उन्होंने सभी अनुभाग प्रमुखों/मंडल प्रभारियों को निदेश दिया कि वे निर्धारित अवधि में हिंदी संबंधी विस्तृत रिपोर्ट मुख्यालय में भेजा करें तथा उक्त रिपोर्ट में दी गई जानकारी का रिकॉर्ड रखें । संसदीय राजभाषा समिति या अन्य कोई समिति यदि निरीक्षण के लिए आती है तो हमें प्रत्येक मंडल एवं अनुभाग में हो रहे हिंदी कामकाज की विस्तृत रिपोर्ट उन्हें दिखानी पड़ेगी । अत: जरूरी है कि हम अपने कार्यो का रिकॉर्ड रखें ।

केंद्रीय उत्पाद एवं सीमा शुल्क आयुक्तालय-द्वितीय, मेरठ

केंद्रीय उत्पाद एवं सीमा शुल्क आयुक्तालय मेरठ-II की 1 अप्रैल से 30 जून 2006 की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक दिनांक 17-10-2006 को आयुक्त महोदया श्रीमती अनन्या रे की अध्यक्षता में आयोजित की गई ।

मण्डल कार्यालयों एवं शाखाओं से संबन्धित सभी अधिकारियों को अध्यक्ष महोदया ने विशेष रूप से निर्देश दिया कि वे अधिक से अधिक कार्य हिंदी में करें तथा अपने अधीनस्थों को इस ओर अधिक से अधिक ध्यान देने हेतु अपने निर्देश जारी करें, जिससे कि निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त किया जा सके । चूंकि यह आयुक्तालय 'क' क्षेत्र के अन्तर्गत आता है, अत: सभी कार्यालयों को हिंदी में कार्य करने का शतप्रतिशत लक्ष्य प्राप्त करना है । इस संबंध में निम्नलिखित शाखाओं में हिंदी में कार्य की प्रगति अच्छी पाई गई ।

अध्यक्ष महोदया द्वारा यह भी निर्देश दिया गया कि हिंदी में प्राप्त पत्रों के उत्तर एवं उनसे संबंधित टिप्पण एवं आदेश आदि पूर्णतया हिंदी में ही किए जाए ।

कार्यालय आयुक्त, केंद्रीय उत्पाद एवं सीमा शुल्क, गाजियाबाद

केंद्रीय उत्पाद एवं सीमा शुल्क आयुक्तालय, गाजियाबाद की माह 1 जुलाई 2006 से 30 सितम्बर 2006 तक की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक दिनांक 21-11-2006 को श्री प्रशांत कुमार, आयुक्त (विभागाध्यक्ष पदेन) रा. भा. का. समिति के संरक्षक की मौजूदगी में श्री विजय कलसी, अपर आयुक्त (का. एवं सत.), महोदय की अध्यक्षता में आयोजित की गई ।

मण्डल कार्यालयों एवं शाखाओं से संबन्धित सभी अधिकारियों को अध्यक्ष महोदय ने विशेष रूप से निर्देश दिया कि वे अपने स्तर पर इस प्रतिशतता को अगली तिमाही में बढ़ाने का प्रयास करें, ऐसा न करने पर आपको इसका दोषी समझते हुए कार्यवाही की जाएगी ।

ऐसा प्रतीत होता है कि कुछ शाखाओं के प्रभारी इसलिए बैठक में उपस्थित नहीं होते क्योंकि उनके स्तर पर हिंदी की ओर से लापरवाई बरती जा रही है और उनके कार्यालय का प्रतिशत सबसे पीछे रहता है जिसका असर पूरे आयुक्तालय की प्रतिशतता पर पड़ता है । अध्यक्ष

*3/33, ग्रीन सिटी, ई-8, अरेरा कॉलोनी, भोपाल (म.प्र.)

महोदय ने कहा है कि ऐसे शाखा प्रभारी इसकी स्वयं जांच करें कि उनके स्तर पर ऐसा क्यों हो रहा है । आगे से उनकी प्रतिशतता नहीं बढ़ती है तो वह स्वयं इसके दोषी होंगे ।

मंडल रेल प्रबंधक पूर्व रेलवे, मालदा

मंडल राजभाषा कार्यान्वयन समिति, मालदा की तृतीय बैठक दिनांक 30-12-2006 को मंडल रेल प्रबंधक की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई । श्री अनूप साहू, मंडल रेल प्रबंधक, मालदा ने उपस्थित सभी सदस्यों को हार्दिक स्वागत किया । उन्होंने प्रसन्नता व्यक्त की कि इस बैठक में प्रधान कार्यालय के राजभाषा अधिकारी भी उपस्थित हैं । अध्यक्ष ने बैठक को संबोधित करते हुए बताया कि सरकारी कार्यो में हिंदी का प्रयोग-प्रसार बढ़ाना हमारा संवैधानिक दायित्व है । हम सभी रेलकर्मियों का कर्तव्य है कि अपने-अपने कार्यक्षेत्र में हम हिंदी का प्रयोग-प्रसार बढ़ाएं । उन्होंने सदस्यों को निदेश दिया कि प्रधान कार्यालय को भेजे जाने वाली रपटों के आवरण पत्र (Covering letter) हिंदी में भेजे जाने चाहिए । यदि कोई स्टैंडर्ड टाइप का पत्र हो तो उसका हिंदी रूपान्तर करवा लिया जाए तथा उसे बराबर हिंदी में जारी किया जाए । यह ध्यान रखा जाये कि फाइलों के शीर्ष निश्चित रूप से द्विभाषी हों । इस संबंध में राजभाषा विभाग भी बीच-बीच में जांच करे ।

बैठक के अन्त में हिंदी में सराहनीय कार्य करने के लिए मंडल एवं इसके अधिकार क्षेत्र के 05 अधिकारियों एवं 50 कर्मचारियों को व्यक्तिगत नकद पुरस्कार एवं प्रशस्ति पत्र से सम्मानित किया गया। ये पुरस्कार अध्यक्ष एवं मं.रे.प्र. द्वारा प्रदान किए गए ।

पूर्व रेलवे कार्यालय, महाप्रबंधक (राजभाषा), 17 नेताजी सुभाष रोड़, कोलकाता - 700001

क्षेरेराकास की वर्ष 2006 की तीसरी तिमाही बैठक महाप्रबंधक, पूर्व रेलवे, श्री सुरेन्द्र सिंह खुराना की अध्यक्षता में 25-9-2006 को सम्पन्न हुई । महाप्रबंधक महोदय ने हिंदी के प्रति जागरूकता लाने में किए जा रहे प्रयासों पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि हमें अनुशासन-बृद्ध मानसिकता के साथ हिंदी के अनिवार्य प्रावधानों का रेलवे के कार्यक्षेत्र में पूर्ण अनुपालन करना/करवाना है । महाप्रबंधक ने राजभाषा अधिनियम की धारा 3 (3) के प्रावधानों का विशेष जिक्र करते हुए कहा कि इस धारा में वर्णित 14 दस्तावेजों में से किसी को भी केवल एक भाषा में जारी करना निषिद्ध (Prohibited) है, किसी दस्तावेज पर Hindi Version will follow लिख देने से मौजूदा कानून का अनुपालन नहीं हो जाता । उन्होंने सारगर्मित स्वर में कहा कि इस संबंध में उल्लंघन होने पर संबंधित अधिकारी की जिम्मेदारी तय की जाए ।

अपने हिंदी दिवस संदेश में सरकार की राजभाषा नीति के व्यवस्थित अनुपालन विषयक निर्देशों का हवाला देते हुए महाप्रबंधक ने इन निर्देशों का हर स्तर पर अनुपालन की पक्का व्यवस्था करने का आदेश दिया ।

महाप्रबंधक महोदय ने कहा कि रेलवे के अधिकांश कर्मिक हिंदी जानते हैं, हिंदी टंकण व हिंदी आशुलिपि जानने वालों की संख्या भी बढ़ रही हैं । अत:, जैसाकि मुराधि ने कहा है, कार्मिकों के इन हिंदी कौशलों का भरपूर इस्तेमाल होना चाहिए । इससे हिंदी की पकड़ मजबूत होगी । उन्होंने काम-काज में सरल व सहज भाषा के इस्तेमाल पर बल दिया ।

महाप्रबंधक महोदय ने आशा व्यक्त की कि कंप्यूटरों में हिंदी सॉफ्टवेयर की उपलब्धता से हिंदी के काम की गुणवता बढ़ाने में वाकई मदद मिलेगी । इस सुविधा का पूरा इस्तेमाल किया जाए ।

दक्षिण पूर्व रेलवे, कार्यालय महाप्रबंधक (राजभाषा), गार्डनरीच, कोलकाता-43

क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 81वीं बैठक दिनांक 11-01-2007 को महाप्रबंधक, दक्षिण पूर्व रेलवे, श्री विजय कुमार रैना की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई । महाप्रबंधक महोदय ने हिंदी को बढ़ावा देने के लिए सभी विभागाध्यक्षों का आह्वान किया कि वे फाइलों पर नोटिंग लिखते समय सरल से सरल हिंदी अथवा मिली जुली भाषा का प्रयोग करें । यद्यपि सरकारी बैठकों में हिंदी बोलचाल की भाषा बन चुकी है, तथापि, अब फाइलों पर इसका अधिकाधिक प्रयोग करके इसे लाने का प्रयास करना है । उन्होंने कहा कि हमें हिंदी में लिखने में संकोच, अभ्यास की कमी के कारण होता है और यदि लगातार अभ्यास किया जाए तो हिंदी में लिखने का यह संकोच भी दूर हो जाएगा । उन्होंने सभी विभागाध्यक्षों से आग्रह किया कि वे उनके पास फाइलें हिंदी में अथवा मिश्रित हिंदी में लिखकर भेजें ।

अपर महाप्रबंधक, श्री एच. एस. पन्नू ने इस बात पर प्रसन्नता व्यक्त की कि राजभाषा विभाग ने परिचालन, भंडार

तथा प्रबंध विभागों की फाइलों में से नोटिंग के नमूने दविभाषी रूप से तैयार करके संबंधित विभागों को दे दिए हैं। उन्होंने संबंधित विभागाध्यक्षों से आग्रह किया कि वे इन नमूनों का नोटिंग लिखते समय अधिक से अधिक उपयोग करें। उन्होंने यह भी कहा कि प्रत्येक विभाग किसी एक फाइल में राजभाषा का अधिक से अधिक प्रयोग करने पर विचार करें।

मुख्य राजभाषा अधिकारी, श्री इंतजार अहमद खाँ ने सभी विभागाध्यक्षों से अनुरोध किया कि जिन कर्मचारियों को हिंदी भाषा, हिंदी टंकण एवं हिंदी आशुलिपि का प्रशिक्षण दिया जा चुका है, उनकी सेवाओं का पूरा-पूरा उपयोग किया जाए तथा जो कर्मचारी एवं अधिकारी हिंदी में कार्य करते हैं, उन्हें, और अधिक प्रोत्साहित किया जाए। हिंदी को बढ़ावा देने में राजभाषा विभाग के प्रयासों की भी मुराधि ने प्रशंसा की।

उप मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं सदस्य सचिव ने सूचित किया कि रेलवे बोर्ड ने अखिल रेल हिंदी नाटयोत्सव का जो आयोजन डीएलडब्ल्यू, वाराणसी में किया था, उसमें दक्षिण पूर्व रेलवे, के खड़गपुर कारखाना के नाटक को सर्वश्रेष्ठ नाटक घोषित किया गया तथा उसे 'शील्ड' प्रदान की गई। नाटक में भाग लेने वाले सभी तेलगुभाषी कर्मचारियों को उनके उत्कृष्ट उच्चारण के लिए 'सर्वोत्कृष्ट उच्चारण ट्राफी' एवं 500 रु. का नकद पुरस्कार भी प्रदान किया गया। यह पुरस्कार डीरेका के महाप्रबंधक, श्री रवीन्द्र शर्मा ने प्रदान किया। महाप्रबंधक महोदय एवं सभी विभागाध्यक्षों, अपर मंडल रेल प्रबंधकों का स्वागत करते हुए समिति के समक्ष दिनांक 26-9-2006 को हुई 80वीं बैठक में लिए गए निर्णयों/सुझावों पर अनुवर्ती कार्रवाई संबंधी रपट प्रस्तुत की गई।

पूर्व मध्य रेल कार्यालय, महाप्रबंधक (राजभाषा), हाजीपुर

क्षेत्रीय रेल राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 15वीं एवं 16वीं संयुक्त बैठक दिनांक 22-12-2006 को महाप्रबंधक, पूर्व मध्य रेल, हाजीपुर श्री सतीश कुमार विज की अध्यक्षता में संपन्न हुई।

महाप्रबंधक श्री सतीश कुमार विज ने प्रेक्षक सदस्य के रूप में बैठक में शामिल श्री माधव सिन्हा एवं बैठक में उपस्थित सभी सदस्यों का स्वागत करते हुए बताया कि मेरी अध्यक्षता में होने वाली यह राजभाषा की पहली बैठक है। यह रेल पूर्णतः हिंदी भाषा भाषी क्षेत्र है। यहाँ के अधिकारियों/कर्मचारियों में हिंदी के प्रति काफी उत्साह है। उन्होंने बताया कि सितंबर में हिंदी सप्ताह के अवसर पर आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों में अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने उत्साह से भाग लिया। यह राजभाषा के प्रति अधिकारियों एवं कर्मचारियों के रूझान को प्रदर्शित करता है। उन्होंने सरकारी कामकाज में आम बोल-चाल की सरल हिंदी के प्रयोग पर बल दिया। महाप्रबंधक महोदय ने बताया कि समीक्षा के दौरान उन्होंने पाया कि निर्माण विभाग में ध्यान देने की जरूरत है। उन्होंने राजभाषा के कार्यों में गति प्रदान करने के लिए वहाँ एक और राजभाषा कार्मिक की पदस्थापना का आदेश दिया। साथ ही उन्होंने अधिकारियों का आह्वान किया कि वे स्वयं हिंदी में अधिकाधिक कार्य करते हुए अपने अधीनस्थों के लिए प्रेरणा स्रोत्र बने।

मुख्यालय के विभागों के बीच हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग को और बढ़ावा देने के लिए चल रही योजना के अंतर्गत जुलाई से सितंबर, 2006 अवधि की तिमाही अंतर्विभागीय राजभाषा चल शील्ड महाप्रबंधक महोदय ने विद्युत विभाग को प्रदान की।

कार्यालय, महाप्रबंधक/राजभाषा, पूर्वोत्तर रेलवे, गोरखपुर

28 नवम्बर, 2006 को पूर्वोत्तर रेलवे के मुख्य राजभाषा अधिकारी श्री वी. के. जायसवाल की अध्यक्षता में रेलवे मुख्यालय एवं विभागेतर कार्यालयों में हिंदी प्रयोग-प्रसार की समीक्षा के लिए मुख्यालय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक संपन्न हुई।

बैठक में अपने अध्यक्षीय संबोधन में मुख्य राजभाषा अधिकारी श्री वी. के. जायसवाल ने कहा कि आज की इस बैठक में मैं दो कारणों से महत्वपूर्ण मानता हूँ। पहला तो यह, कि महाप्रबंधक के कुशल मार्गदर्शन में हमने उन बिंदुओं को भी चिन्हित करने की कोशिश की है, जहां अपेक्षाकृत हिंदी का कम प्रयोग पाया जा रहा था ओर दूसरा यह कि विभिन्न विभागों में उनके विभागाध्यक्षों की देखरेख में हिंदी के प्रयोग पर विशेष निगरानी की जा रही है। इस दिशा में मैं कार्मिक, इंजीनियरिंग, यांत्रिक, सिगनल, बी.जी.

2432 HA/07—12B

निर्माण एवं परिचालन विभागों की विशेष सराहना करना चाहूँगा, जहां भारत सरकार की राजभाषा नीति के अनुरूप राजभाषा संबंधी क्रियाकलापों को गति देने का प्रयास किया गया ।

आप सभी के सहयोग से मुख्यालय में हिंदी सप्ताह समारोह का भव्य कार्यक्रम आयोजित किया गया दिनांक 27-09-06 को आयोजित क्षेत्रीय रेलवे राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में रेलवे हिंदी सलाहकार समिति के माननीय सदस्य एवं प्रेक्षक कुंवर सर्वराज सिंह ने पूर्वोत्तर रेलवे के राजभाषा प्रयोग प्रसार में वृद्धि को रेखांकित करते हुए कहा कि विगत पांच माह में पूर्वोत्तर रेलवे पर गृह मंत्रालय द्वारा निर्धारित वार्षिक कार्यक्रम के विभिन्न मदों पर उल्लेखनीय प्रगति दर्ज की गई है ।

श्री जायसवाल ने रेलवे मुख्यालय के सभी अधिकारियों को निर्देश दिया कि हिंदी के शतप्रतिशत प्रयोग हेतु अनुभागों को नामित करने, रोमन टाइपराइटरों को सरेण्डर किए जाने तथा कार्यशालाओं के माध्यम से अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हिंदी प्रयोग के क्षेत्र में आने वाली कठिनाइयों के निराकरण के कार्य को उच्च प्राथमिकता दी जाए ।

दूरदर्शन केंद्र, आईजोल

दूरदर्शन केंद्र, आइज़ोल में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक अध्यक्ष एवं निदेशक श्री सी. ललरोउसाङा की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई ।

बैठक में निम्नलिखित महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए :-

निदेशक, केंद्र अभियंता, समाचार संपादक के पदधारी चार्ट शीघ्रातिशीघ्र द्विभाषी में बनवा लिए जाएं । केंद्र में अलग से हिंदी कक्ष का गठन किया जाएगा । लिफाफों पर कार्यालय का पता द्विभाषी में छपवाया जाएँ । केंद्र अभियंता और समाचार संपादक के लिए लेटर पैड द्विभाषी में बनवाएँ जाएँ । केंद्र की ओर से नगर में स्थित केन्द्रीय कार्यालयों के लिए फरवरी-2007 के तृतीय सप्ताह में पाँच दिवसीय हिंदी वार्तालाप कार्याशाला का आयोजन किया जाएगा । बजट की अन्तिम आवश्यकता में हिंदी के लिए अलग से प्रावधान के लिए लिखा जाएगा ।

शेष सरकारी वाहनों पर नामपट्ट द्विभाषा में लिखवाया जाएगा ।

आकाशवाणी, कटक

श्री देव कुमार मिश्र, केंद्र निदेशक, आकाशवाणी, कटक की अध्यक्षता में दिनांक 18-1-2007 को राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक सम्पन्न हुई । दिनांक 26-10-2006 को हुई बैठक के कार्यवृत्त को सर्व-सम्मति से पुष्टि के बाद हुए विचार विमर्श और निर्णय लिए गए अध्यक्ष महोदय ने सभी अधिकारी और कर्मचारियों से हिंदी में मूल पत्राचार को बढ़ाने के लिए आग्रह किया ।

भुवनेश्वर में चलाए जा रहे हिंदी टंकण के नियमित प्रशिक्षण में इस कार्यालय से एक अवर श्रेणी लिपिक को अगले सत्र में हिंदी टंकण प्रशिक्षण हेतु नामित किया जाएगा । धारा 3 (3) के अन्तर्गत आनेवाले कागजातों को जारी करने से पहले हिंदी अनुभाग को हिंदी अनुवाद के लिए अवश्य भेजा जाए ।

आकाशवाणी, कडपा

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक दिनांक 3-1-2007 को सुबह 11.30 बजे आकाशवाणी, कडपा केंद्र में श्री ए. मल्लेश्वर राव, केंद्र निदेशक प्रभारी की अध्यक्षता में संपन्न हुई ।

अध्यक्ष महोदय ने यह बताया कि साहित्य अकादमी से द्विभाषिक पत्रिका 'समकालीन भारतीय साहित्य' को उपलब्ध कराया जाए । इस पर सभी सदस्य हर्ष प्रकट किए हैं।

उपाध्यक्ष ने यह बताया कि जिन उम्मीदवारों को हिंदी अक्षर मालूम नहीं, माने, जिन्होंने अपने पढ़ाई में हिंदी न होने वालों को 'तीस दिन में हिंदी सीखो' पुस्तक खरीदा जाए । अध्यक्ष जी ने उस पर यह सुझाव दिया कि तुरंत 5 प्रतियां खरीद कर पुस्तकालय में रखा जाए ।

दूरदर्शन केंद्र, हैदराबाद

दिनांक 7-11-2006 को केंद्र के अधीक्षक अभियन्ता श्री डी. एस. आर. बी. एन. हेच. बाबा की अध्यक्षता में उनके ही कक्ष में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक हुई । हिंदी अधिकारी श्रीमती गायत्री देवी, सदस्य सचिव ने बताया कि कार्यालय में धारा 3 (3) का अनुपालन पूरी तरह से किया जा रहा है । अध्यक्ष महोदय ने कहा कि गृह मंत्रालय के आदेशों का पालन मजबूती से किया जाए । 'क'

क्षेत्र को भेजे जाने वाले पत्र हिंदी में भेजे जाएं । इससे हिंदी पत्राचार में बढ़ोतरी होगी । अध्यक्ष ने कहा कि कार्यालय में यदि 80 प्रतिशत से अधिक कर्मचारी हिंदी में प्रशिक्षित हैं तो महानिदेशालय से पत्राचार कर कार्यालय को अधिसूचित करने की कार्रवाई की जाए । उन्होंने सभी अधिकारियों को हिंदी में कार्य करने का निर्देश दिया ।

आकाशवाणी : अहमदाबाद

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक संयुक्त रूप से दिनांक 6-12-2006 को श्री बी.एम. पंड्या, केंद्र निदेशक आकाशवाणी, अहमदाबाद की अध्यक्षता में संपन्न हुई ।

अध्यक्ष महोदय ने उपस्थित सभी सदस्यों का स्वागत करते हुए कहा कि मुझे आशा ही नहीं परंतु पूरा विश्वास है कि आप सभी राजभाषा में अधिकाधिक कार्य करेंगे। राजभाषा में कार्य करने के लिए सबको प्रयास करना पड़ता है, जोर देना पड़ता है, ऐसा नहीं होना चाहिए, इसके लिए हमें अपनी मानसिकता को बदलना होगा । राजभाषा में कार्य करके हमें अधिक गौरव होना चाहिए । आगे उन्होंने अपील की कि सभी राजभाषा के प्रचार प्रसार में अपना यथा संभव सहयोग प्रदान करें ताकि हम लोग वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त कर सकें ।

कार्यालय से जारी होने वाले सामान्य आदेश, परिपत्र, ज्ञापन अनिवार्यत: द्विभाषी रूप से जारी किया जाना आवश्यक है । वैसे तो उपर्युक्त सभी कागजात द्विभाषी रूप से हिंदी एवं अंग्रेजी में जारी किए जाते हैं तथापि यदि किसी अनुभाग से इस प्रकार का कोई दस्तावेज केवल अंग्रेजी में हो तो उसे तुरन्त हिंदी अनुभाग में भेज कर द्विभाषी करवा लिया जाए । अध्यक्ष महोदय ने कहा कृप्या सभी अनुभाग धारा 3 (3) का अनुपालन सुनिश्चित करें ।

अध्यक्ष महोदय ने सुझाव दिया कि पूरे कार्यालय में बड़े-बड़े महानुभावों के सुविचार हिंदी में बड़े शब्दों में लिखवा कर कार्यालय की मुख्य दीवारों, लोबी, सीढ़ी इत्यादि पर लगवाए जाएं जिससे सबको हिंदी में काम करने की प्रेरणा मिलती रहे, एक वातावरण बना रहे ।

दूरदर्शन केंद्र : राजकोट

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 3-1-2007 को श्री बी.बी. परमार, केंद्र निदेशक, दूरदर्शन केंद्र, राजकोट की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई ।

पिछली बैठक के कार्यवृत्त की समीक्षा और लिए गए निर्णयों की कार्यवाही की समीक्षा की गई ।

केंद्र निदेशक ने बैठक में उपस्थित सभी सदस्यों से कहा कि वे अपने अनुभाग में हिंदी में कार्य करें । कार्यक्रम निष्पादक/वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि कार्यालय में प्रयुक्त रबर की सभी मोहरें द्विभाषी बनाई गई हैं तथा कार्यालय के मुख्य द्वार पे राइट टू अेकट का बोर्ड हिंदी में बनवाया जाए तथा फाईलों में टिप्पण तथा अन्य कार्य हिंदी में किया जा रहा है । अध्यक्षजी ने कहा कि सब कार्य शत् प्रतिशत हिंदी में ही करना होगा ।

हिंदी टंकण और हिंदी आशुलिपि को ट्रेनिंग देना अति आवश्यक है, उच्च श्रेणी लिपिकों को हिंदी टंकण की जानकारी हेतु हिंदी टंकण सीखने के लिए कार्यवाही की जाय । ग्रंथपालिका को आदेश दिया गया की कार्यालय में हिंदी के वर्तमानपत्र बढाया जाए ।

केंद्रीय सरकार के कार्यों की भाषा के रूप में हिंदी कटिबद्ध है विधान सभाओं तथा क्षेत्रीय सरकारों में आपसी व्यवहार व केंद्र सरकार से व्यवहार की भाषा के रूप में हिंदी आवश्यक है ।

(चक्रवर्ती राजगोपालचारी)

(ख) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों की बैठकें

आइज़ोल

आइज़ोल की बैठक दिनांक 10-11-2006 को श्री. सी. ललरोउसाडा, अध्यक्ष नराकास एवं निदेशक दूरदर्शन केंद्र, आइज़ोल की अध्यक्षता में महाप्रबंधक दूरसंचार निगम लिमिटेड के सम्मेलन कक्ष में अपराह्न 2.00 बजे सम्पन्न हुई ।

श्री ए. के. मिश्र, प्रभारी उप निदेशक एवं अनुसंधान अधिकारी क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, गुवाहाटी ने दिवस एवं पखवाड़ा भव्य रूप से मनाने के लिए प्रसन्नता प्रकट की। हिंदी में काम करने के लिए अपने आप को तैयारी करने की बात पर जोर देकर हिंदी में कामकाज करने की जरूरत के बारे में बताया। हिंदी को बढ़ावा देने के लिए यदि किसी भी सदस्यों को सहायता की जरूरत होने पर हमेशा सहायता प्रदान करने की अपनी ओर से सम्पूर्ण कोशिश करने की बात भी बताई ।

कार्यालय प्रधान की अध्यक्षता में राजभाषा कार्यान्वयन समिति का गठन होने की अनिवार्यता एवं नराकास की बैठक में कार्यालय प्रधान को ही उपस्थित होने की बात बताई, यदि किसी कारणवश कार्यालय प्रधान बैठक में उपस्थित नहीं हो पाएँगे तो उसके नीचे के वरिष्ठ अधिकारी को भेजने के लिए एक बार फिर सदस्यों से इस बात पर ध्यान देने के लिए अनुरोध किया, और तिमाही प्रगति रिपोर्ट नराकास और क्षेत्रीय कार्यालय को भेजने की बात पर भी जोर दिया ।

सचिव ने बैठक को बताया कि अगले साल दूरदर्शन केंद्र द्वारा पाँच दिन के लिए ऐसी कार्यशाला का आयोजन किया जाएगा, जिसमें केंद्रीय कार्यालयों में कार्यरत हिंदीतर भाषियों के लिए हिंदी को सरलतम ढंग से पढ़ना, लिखना एवं समझना सिखाया जाएगा । जिसके लिए प्रत्येक कार्यालय से नामांकन माँगा जाएगा ।

सुश्री आर, ललथ्ला, मुआनी जी, मिजोरम हिंदी प्रशिक्षण संस्थान ने बताया कि 50% से अधिक लोग अभी तक अप्रशिक्षित हैं, यदि कार्यालय प्रधान अपने अपने कर्मचारियों को प्रशिक्षण लेने के लिए बढ़ावा देंगे तो हम अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में सक्षम होंगे। उन्होंने यह बात भी बताई कि यदि हिंदी कार्यशाला का आयोजन प्रतिवर्ष किया जाएगा तो बहुत ही लाभदायक साबित होगा ।

शिलचर

हिंदुस्तान पेपर कॉरपोरेशन लि., कछाड़ पेपर मिल के मुख्य अधिशासी एवं नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति शिलचर के अध्यक्ष श्री कल्लोन आचार्य ने 18 दिसम्बर 2006 को समिति की 34वीं बैठक की अध्यक्षता करते हुए कहा कि :

"हिंदी हमारे देश की भावनात्मक एकता की परिचायक है । इसे भारत के प्रत्येक क्षेत्र के मनीषियों ने सजाया है, संवारा है । प्राचीन भारत के भक्त कवियों से लेकर आधुनिक भारत के मीडिया कर्मियों तक सभी ने इस भाषा को अपनाया है और अपने कामकाज का माध्यम बनाया है। वह इसलिए कि हिंदी राजभाषा के पहले जनभाषा है । लोकतंत्र में वैसे भी जनता का पहले ख्याल रखा जाता है और रखा जाना चाहिए । इसलिए आप सब भी इसे अपनाएं और अपने प्रतिदिन के कार्यालयीन उपयोग में लाये" ।

मुख्य अतिथि श्री अशोक कुमार मिश्र, प्रभारी उप निदेशक कार्यान्वयन राजभाषा विभाग, गुवाहाटी ने बैठक में उठाई गई समस्याओं का निराकरण किया और कहा कि आज की तारीख में हिंदी को विश्व भाषा के रूप में देखते हुए हिंदी में कार्य का प्रतिशत बढ़ाने की आवश्यकता है । इसके लिए मूल पत्राचार को अधिक से अधिक हिंदी में सृजित करने का प्रयास करें । अपने-अपने कार्यालयों में राजभाषा कार्यान्वयन समिति का गठन कर अनिवार्य रूप से तिमाही बैठकों का आयोजन करें और उसमें राजभाषा विभाग के दिशा-निर्देशों के अनुसार कार्यान्वयन हेतु चर्चा करें ।

श्री मोहन झा, महाप्रबंधक निर्माण ने अपने स्वागत भाषण में कहा कि हिंदी हमारे देश की संघ सरकार की

राजभाषा है । प्रेरणा प्रोत्साहन तथा पुरस्कार के माध्यम से इसके कार्यान्वयन का प्रयास चलाया जा रहा है । हालांकि गैरसरकारी स्तर पर भी इसे निरंतर विकसित करने का प्रयास चल रहा है । आज वैसे भी हमारे देश में संपर्क भाषा के रूप में हिंदी ने अपनी पहचान बना ली है तथा विश्व में भी एक संपर्क भाषा के रूप में हिंदी ने अपना स्थान बना लिया है ।

नाजिरा

दिनांक 19 फरवरी, 2007 को गेल परिसर, शिव सागर में श्री ब्रजमोहन सिंह, अध्यक्ष नराकास नाजिरा की अध्यक्षता में संपन्न हुई। बैठक में पिछली बैठक के कार्यवृत की पुष्टि की गई। सभी सदस्यों ने वार्षिक कार्यक्रम में दिए गए लक्ष्यों को यथासंभव पूरा करने तथा आवश्यकतानुसार यथा सहयोग का आश्वासन दिया ।

अध्यक्ष महोदय ने प्रसन्नता व्यक्त की कि पिछली बैठक में लिए गए सभी निर्णयों पर शत्-प्रतिशत कार्रवाई की गई ।

वर्ष 2006-07 के दौरान, टॉलिक नाजिरा द्वारा सरकारी कामकाज में राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए किए गए प्रयासों का संक्षिप्त विवरण

1. दिनांक 28 अगस्त, 2006 को अध्यक्ष, नराकास, नाजिरा की अध्यक्षता में नराकास-नाजिरा की बैठक आयोजित की गई जिसमें अधिकांश सदस्य कार्यालय के प्रमुखों ने स्वयं भाग लिया ।
2. बैठक के कार्यवृत, अध्यक्ष, नराकास-नाजिरा से अनुमोदित करवाकर, एक सप्ताह के भीतर, उपनिदेशक (कार्या.), पूर्वीक्षेत्र, राजभाषा विभाग, गुवाहाटी को उपलब्ध करवा दिए गए ।
3. 29 तथा 30 अगस्त, 06 को नराकास, ताजिरा द्वारा अपने सदस्य कार्यालयों के लिए एक दो दिवसीय (पूर्णकालिक) हिंदी कार्यशाला आयोजित की गई जिसमें कार्मिकों ने भाग लिया ।
4. दिनांक, 14 सितम्बर, 06 को टॉलिक-नाजिरा द्वारा "राजभाषा दिवस" का आयोजन कर निम्न कार्यक्रम आयोजित किये गए :-
   - राजभाषा शपथ;
   - हिंदी प्रश्नमंच; तथा
   - राजभाषा प्रयोग के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान करने वाले कार्मिकों को राजभाषा पुरस्कार दिए गए ।
   - पुरस्कार रूप में हिंदी की स्तरीय पुस्तकें प्रदान की गई ।
5. वर्ष के दौरान, कुल 4, दो दिवसीय हिंदी कार्यशालाएं आयोजित की गई ।
6. दिनांक 4 से 8 दिसम्बर 06 तक, नराकास-नाजिरा द्वारा अपने सदस्य कार्यालयों के लिए एक पाँच दिवसीय हिंदी कंप्यूटर प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें कुल 22 कार्मिकों ने हिस्सा लिया ।
7. एपीएस कारपोरेट 2000" हिंदी सॉफ्टवेयर की 25 लाइसेन्स प्रतियां खरीदी गयी और विभिन्न कार्यालयों को जारी की गई ।
8. टॉलिक-नाजिरा द्वारा, जोरहाट स्थित ओएनजीसी कार्यालय को प्रशासनिक शब्दावली की 15 प्रतियाँ उपलब्ध करवाई गई ।
9. वर्ष के दौरान 70 से भी अधिक प्रशासनिक शब्दावलियां वितरित की गई।
10. बैठक में लिए निर्णयानुसार, टॉलिक-नाजिरा द्वारा एक संस्थागत पत्रिका "राजभाषा दिग्दर्शिका का मुद्रण एवं प्रकाशन किया गया जिसका विमोचन दिनांक 19-02-2007 को आयोजित बैठक में अध्यक्ष महोदय द्वारा किया गया ।
11. राजभाषा प्रचार के लिए, रा.भा. विभाग द्वारा जारी पोस्टर्स वितरित किए गए ।
12. नराकास-नाजिरा द्वारा स्वयं भी राजभाषा संबंधी पोस्टर्स तैयार किए जा रहे हैं ।
13. समय-समय पर विभिन्न सदस्य कार्यालयों को उनकी आवश्यकतानुसार, परामर्श/सहयोग/जानकारी उपलब्ध करवाई गई ।

14. अभी हाल ही में, दिनांक 12-16 फरवरी, 07 तक, क्षेत्रीय प्रशिक्षण संस्थान, शिवसागर में, टॉलिक, नाजिरा द्वारा–अखिल भारतीय स्तर का–एक पूर्णकालिक पाँच दिवसीय "हिंदी अनुवाद प्रशिक्षण कार्यक्रम" का आयोजन किया गया जिसमें टॉलिक-नाजिरा के सदस्य कार्यालयों के अतिरिक्त, देश के विभिन्न शहरों से आए, राजभाषा संवर्ग के 25 कार्मिकों ने भाग लिया ।

यह कार्यक्रम, केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो, भारत सरकार, गृह मंत्रालय, नई दिल्ली के सहयोग एवं उनके संकाय-सदस्यों द्वारा सम्पन्न किया गया ।

15. टॉलिक के सदस्य कार्यालयों में, राजभाषा के प्रयोग हेतु, स्वस्थ प्रतिस्पर्धा उत्पन्न करने के लिए, टॉलिक-नाजिरा द्वारा "राजभाषा शील्ड" शुरू की गई जिसमें राजभाषा के प्रति बेहतर योगदान के लिए, दिनांक 19-2-2007 को आयोजित बैठक में प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय-तीन शील्ड प्रदान की गई ।

16. दिनांक 19 फरवरी, 07 को, नराकास, नाजिरा की अपनी दूसरी बैठक, निर्धारित समय पर, गेल परिसर, शिवसागर में आयोजित हुई जिसके कार्यवृत्त को अध्यक्ष महोदय से अनुमोदित करवाकर, एक सप्ताह के भीतर, रा.भा., विभाग को उपलब्ध करवा दिया जाएगा ।

17. अध्यक्ष, नराकास, नाजिरा के सत्प्रयासों से नाजिरा टाऊनशिप-ओएनजी सी में स्वास्थ्य, जनचेतना तथा राजभाषा संबंधी पोस्टर्स/साइनबोर्डस हिंदी में भी प्रचारित/प्रसारित किए गए ।

18. अध्यक्ष, नराकास, नाजिरा के सत्प्रयासों से सभी बैठकों में बातचीत ज्यादातर हिंदी में होती है ।

19. अध्यक्ष, नराकास, नाजिरा अपने सभी निमन्त्रणपत्र, बधाई संदेश-हिंदी और अंग्रेज़ी-दोनों ही भाषाओं में देते/भेजते हैं ।

20. अध्यक्ष, नराकास विभिन्न अवसरों पर अपने भाषण केवल हिंदी में ही देते हैं ।

21. अध्यक्ष महोदय की संदप्रेरणा एवं सुयोग्य निर्देशन में वैज्ञानिक अधिकारियों द्वारा अपनी तकनीकी रिपोर्टें-हिंदी और अंग्रेजी-दोनों भाषाओं में तैयार एवं जारी की जाती हैं ।

22. विभिन्न अधिकारियों द्वारा पत्राचार हिंदी में किया जाता है ।

तृश्शूर

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, तृश्शूर की 38वीं बैठक दिनांक 29-11-2006 के 3.00 बजे अपराह्न लघु उद्योग सेवा संस्थान, तृश्शुर के निदेशक महोदय व समिति के अध्यक्ष श्री लैंबर्ट जोसफ़ की अध्यक्षता में संस्थान के स्वर्ण जयंती कक्ष में सम्पन्न हुई ।

क्रार्यट कॉलेज, इरिंजालक्कुडा विभागाध्यक्ष डॉ के पी कुरियन बैठक के मुख्यातिथि थे। मुख्यातिथि महोदय ने हिंदी को राजभाषा के रूप में घोषित करने के पीछे निहित ऐतिहासिक धटनाओं का विस्तारपूर्वक वर्णन कर राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी के योगदान पर जोर दिया तथा दैनिक सरकारी कामकाज में उसके अधिकाधिक प्रयोग की अपेक्षा की ।

अपने संक्षिप्त संबोधन के उपरांत 7-1-06 से 9-11-06 तक के दौरान तृश्शूर नराकास के तत्वावधान में आयोजित संयुक्त हिंदी प्रतियोगिताओं के विजेताओं को मुख्यातिथि महोदय ने नकद पुरस्कार व प्रशस्ति पत्रों से सम्मानित किया ।

7-11-06 से 9-11-06 तक की अवधि के दौरान संपन्न संयुक्त हिंदी प्रतियोगिताओं में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने के लिए निम्नांकित कार्यालयों को मुख्यातिथि महोदय ने रोलिंग शील्ड से सम्मानित किया ।

भुवनेश्वर

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (केंद्रीय सरकारी कार्यालय व उपक्रम), भुवनेश्वर की सैंतालीसवीं अर्धवार्षिक बैठक दिनांक 22-2-2007 को राजस्व विहार, स्थित आयकर भवन के सम्मेलन कक्ष में समिति के अध्यक्ष एवं मुख्य आयकर आयुक्त, ओड़िशा श्री सुभाष चन्द्र सेन की अध्यक्षता में संपन्न हुई ।

अध्यक्ष महोदय ने अपने संबोधन में सभी कार्यालयाध्यक्षों से समर्पण के भाव से हिंदी में काम करते रहने का अनुरोध

किया और प्रतियोगिता में भाग लेने वाले सभी प्रतिभागियों को धन्यवाद दिया । उन्होंने कहा कि नराकास हमें एक दूसरे को जानने का अवसर प्रदान करता है तथा इसके माध्यम से हिंदी संबर्धन के साथ-साथ सांस्कृतिक आदान-प्रदान भी होता है। उन्होंने आशुलिपिकों के प्रशिक्षण पर हुई चर्चा की ओर ध्यान आकर्षित करते हुए कहा कि हमें अब उपलब्ध नई प्रौद्योगिकी का लाभ उठाते हुए आशुलिपिकों पर निर्भरता कम करनी चाहिए । इसके लिए हमें नए साफ्टवेयरों एवं कंप्यूटरों का अधिक से अधिक प्रयोग करना होगा तथा समय के साथ चलना होगा । उन्होंने नराकास की बैठक में उत्साह पूर्वक भाग लेने के लिए सभी सदस्यों को धन्यवाद दिया ।

अंत में, मुख्य पोस्टमास्टर जनरल कार्यालय के सहायक निदेशक(राजभाषा) श्री आर.पी. सिंह ने सभी सदस्यों को बैठक में उपिस्थत होकर इसे सफल बनाने के लिए धन्यवाद दिया और अध्यक्ष महोदय की अनुमति से सदस्य-सचिव ने बैठक समाप्ति की घोषणा की ।

हासन

डॉ. सी.जी.पाटिल, अध्यक्ष, नराकास एवं निदेशक, एम.सी.एफ. की अध्यक्षता में दिनांक 17 जनवरी 2007 को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, हासन की 24वीं बैठक मुख्य नियंत्रण सुविधा में संपन्न हुई । श्री विश्वनाथ झा (का), उपनिदेशक, रा.भा.वि., बेंगलूर इस अवसर पर आमंत्रित थे। श्री एम श्रीनिवास राव, प्रधान आं.वि.सं. तथा का.एवं.सा. प्र., एमसीएफ ने बैठक में उपस्थित सभी सदस्यों का स्वागत किया।

अध्यक्ष नराकास ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि सभी सदस्य कार्यालयों के सक्रिय सहयोग से यह समिति राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार की दिशा में निरंतर आगे बढ़ रही है । श्रीमती सरला, सदस्य सचिव ने कार्यसूची के सभी मदों का मूल्यांकन किया । इसके उपरांत अध्यक्ष नराकास/निदेशक, एमसीएफ द्‌वारा वर्ष 2005-06 के दौरान हिंदी में किए गए उत्कृष्ट कार्य के लिए सदस्य कार्यालयों को चल-वैजयंती (Rolling Shield) प्रदान की गई :-

नवी मुंबई

नवी मुंबई नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की चौथी बैठक 20 दिसंबर, 2006 को निगम के कपास भवन, सीबीडी बेलापुर स्थित कार्यालय में आयोजित हुई । इस बैठक की अध्यक्षता श्री सुभाष ग्रोवर, प्रबंध निदेशक, भारतीय कपास निगम ने की। राजभाषा विभाग की ओर से श्री राजेन्द्र रावत-सहायक निदेशक(कार्या), श्री दामोदर गौड़-सहायक निदेशक, हिंदी शिक्षण योजना, श्री दंगल झालटे संयुक्त निदेशक, केंद्रीय अनुवाद ब्यूरों ने इस बैठक में भाग लिया। नवी मुंबई नराकास के अंतर्गत 60 कार्यालयों (बैंक, उपक्रम और केंद्रीय सरकार के कार्यालय) सदस्य के रूप में शामिल हैं । इस बैठक में सभी कार्यालयों के विभाग प्रमुख अपने राजभाषा अधिकारियों के साथ उपस्थित हुए। बैठक में पिछली बैठक की अनुवर्ती कार्रवाई पर चर्चा की गयी, 30 सितंबर को समाप्त तिमाही प्रगति रिपोर्ट की समीक्षा की गई तथा राजभाषा विभाग के निदेशानुसार संसदीय समिति के प्रतिवेदन के सातवें खंड की मद सं. 16.5 (ढ़) पर चर्चा करते हुए राजभाषा समारोह/संगोष्ठी आयोजित करने के बारे में भी विचार-विमर्श किया गया । कार्यक्रम के अंत में सी-डेक, पुणे से उपस्थित अधिकारियों ने श्रुत लेखन का प्रेजेन्टेशन भी प्रस्तुत किया और उसके महत्व पर प्रकाश डाला । अध्यक्ष के प्रति धन्यवाद के साथ बैठक समाप्त हुई ।

अमृतसर

मुख्य आयकर आयुक्त, अमृतसर व अध्यक्ष नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के मार्गदर्शन में, समिति की वर्ष 2006-07 की द्‌वितीय बैठक 30 अक्तूबर, 2006 सोमवार 3.00 बजे बाद दोपहर, आयकर कार्यालय, अमृतसर के बार रूम में आयोजित की गई । इस बैठक की अध्यक्षता श्री जी. आर.सूफी आयकर आयुक्त, अमृतसर-I व राजभाषा अधिकारी, आयकर विभाग ने की । श्री बी.एस. रतन आयकर आयुक्त-II विशेष रूप से इस बैठक में उपस्थित हुए । अपर आयकर आयुक्त (मुख्य प्रशासनिक) श्री आर. के.चौबे सहित अमृतसर नगर के केंद्रीय सरकार के कार्यालयों, निगमों, उपक्रमों तथा राष्ट्रीयकृत बैंकों से काफी अधिक संख्या में प्रतिनिधियों में इस बैठक में भाग लिया ।

अपने अध्यक्षीय भाषण में उन्होंने टिप्पणी की कि सरकारी कामकाज में हिंदी का प्रयोग करते समय हमें कठिन और भारी भरकम शब्दों के प्रयोग से बचना चाहिए तथा स्थानीय भाषा तथा अन्य भारतीय भाषाओं के सरल शब्दों का प्रयोग करना चाहिए।

बैठक के अंत में आयकर आयुक्त-II, अमृतसर श्री बी.एस. रतन ने अपने समापन भाषण में कहा कि हम अपने आप को आंकड़ों तक ही सीमित न रखें बल्कि हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने हेतु मन की भावना से संकल्प लें । उन्होंने यह भी कहा कि हमें हिंदी के प्रयोग के बारे में बार-बार रिवायती बातें छोड़कर सच्चे मन से राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देना चाहिए ।

करनाल

करनाल की चवालीसवीं छमाही समीक्षा बैठक का आयोजन दिनांक 21-12-2006 को लघु उद्योग सेवा संस्थान, करनाल में किया गया । इस कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि श्री वी.एन.राय, अपर महानिदेशक हरियाणा पुलिस ने कहा कि व्यक्ति जो भाषा बोलता है उससे उसके संस्कार परिलक्षित होते हैं । हिंदी को संविधान में राजभाषा का दर्जा दिया गया है और यह संसदीय भाषा है। भाषा की शुरूआत घर से होती है । जब कोई व्यक्ति असंसदीय भाषा बोलता है तो उसका बनने वाला काम भी बिगड़ जाता है । उन्होंने सभी को अच्छा साहित्य पढ़ने के लिए प्रेरित किया और कहा कि साहित्य जीवन को दिशा प्रदान करता है । आजकल हमने पुस्तकें पढ़ना छोड़ दिया है जिससे बच्चे टेलीविजन से चिपके रहते हैं जिससे सही संस्कार, विकसित नहीं हो रहे हैं । जो बात हम बच्चों को समझाना चाहते हैं वह साहित्य के माध्यम से अच्छे ढंग से समझा सकते हैं । जिस भाषा में ज्यादा शब्द होते है उनमें ज्यादा संवेदना होती है । हम अपनी भाषा में अच्छे ढंग से विचार व्यक्त कर सकते हैं । प्रतिनिधि गृह मंत्रालय श्री जसवंत सिंह ने अपने संबोधन में कहा कि नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, करनाल देश की एक विशिष्ट समिति है जो राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय के निर्देशों का पूर्णतः अनुपालन कर रही है । उन्होंने समिति के कार्यकलाप और राजभाषा विभाग के लक्ष्यों से प्रभारी अधिकारियों को अवगत कराया और अधिकारियों से इसकी अनुपालना करने का आग्रह किया उन्होंने यह भी बताया कि संसदीय राजभाषा समिति के निर्देशानुसार कार्यालय प्रभारी को ही छमाही बैठक में अनिवार्य रूप से भाग लेना चाहिए ।

इस अवसर पर कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए श्री नरेन्द्र सिंह, आयकर आयुक्त (अपील) ने कहा कि जिस उद्देश्य से नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति का गठित किया गया है वह अपने उद्देश्य में सफल हो रही है क्योंकि हाल ही में माननीय गृह मंत्री भारत सरकार द्वारा इंदिरागांधी राजभाषा पुरस्कार प्रदान किया गया है । सभी कार्यालय प्रमुखों को बैठक में भाग लेना चाहिए । सभी को मिल कर बड़ा कार्यक्रम करना चाहिए, केवल आंकड़ें देने से काम नहीं चलेगा ।

इस दौरान में वर्ष 2005-2006 के दौरान राजभाषा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने वाले कार्यालयों को पुरस्कृत भी किया गया । साथ ही पंजाब नेशनल बैंक, एवं लघु उद्योग सेवा संस्थान, करनाल राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान, करनाल द्वारा नगर स्तर पर आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेताओं को मुख्य अतिथि द्वारा पुरस्कृत भी किया गया ।

देवास

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 38वीं बैठक दिनांक 15-12-2006 को अपरान्ह 3.00 बजे बैंक नोट मुद्रणालय, देवास के सभा कक्ष में बैंक नोट मुद्रणालय के महाप्रबंधक श्री दिलीप वि. गोंडनाले की अध्यक्षता में संपन्न हुई। श्री गोंडनाले ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि यह एक सुखद संयोग है कि हमारे क्षेत्र में राजभाषा नीति के कार्यान्वयन और हमें सतत मार्गदर्शन देने के लिए श्री सरवाही जैसे योग्य एवं कुशल अधिकारी मौजूद हैं जो समय-समय पर हमारे बीच उपस्थित होकर हमारे कार्यों का त्वरित मूल्यांकन कर हमें अपने बहुमूल्य सुझावों से अवगत कराते हैं।

आपके लिए एक सुखद समाचार यह भी है कि आपके निष्पादन, सहयोग एवं समर्थन के बल पर हमारी समिति ने मध्य क्षेत्र की लगभग 55 समितियों से प्रतिस्पर्धा लेकर वर्ष 2005-2006 के लिए मध्य क्षेत्र का दूसरा पुरस्कार प्राप्त किया है। जैसा कि श्री सरवाही ने बताया है कि पुरस्कारों का निर्णय लेते समय निष्पादन के अलावा सदस्य कार्यालयों की बैठक में उपस्थिति तथा वरिष्ठतम अधिकारियों की प्रतिभागिता का भी आकलन किया जाता है हम निष्पादन में भले ही शत प्रतिशत प्रदर्शन करें। लेकिन बैठकों में हम सदस्य कार्यालयों की उपस्थिति के मामले में पिछड़ जाते हैं। इसका एक कारण यह भी है कि हमारी समिति में मात्र 32 सदस्य हैं इनमें से यदि केवल तीन सदस्य

ही अनुपस्थित रहें तो हमारी उपस्थिति 10 प्रतिशत तक घट जाती है। इसलिए आप सभी से अनुरोध है कि जब आप निष्पादन में सबसे आगे हैं तो उपिस्थति में भी आगे रहें ताकि अगली बार हमारी समिति को प्रथम पुरस्कार प्राप्त हो ।

कानपुर

दिनांक 15 दिसम्बर 2006 को 14.30 बजे ओ.ई.एफ. निरीक्षण भवन के सम्मलेन कक्ष में कानपुर नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 17वीं बैठक का आयोजन किया गया । अध्यक्षीय भाषण में श्री रमेश चंद, अपर महानिदेशक, आयुध निर्माणियां ने कहा कि सदस्य-सचिव श्रीमती मिश्रा ने जो रिपोर्ट प्रस्तुत की, उससे थोड़ी चिन्ता होती है कि कानपुर नराकास के केवल 60 कार्यालयों से ही रिपोर्ट प्राप्त हुए हैं। शेष कार्यालयों से रिपोर्ट प्राप्त नहीं हुई है । यह एक कमी है । आपने सदस्य-सचिव को निदेश दिया कि आपकी ओर से एक अपील उन विभागाध्यक्षों को जारी किया जाए, जिनसे रिपोर्ट प्राप्त नहीं हुए हैं ताकि आगे और सक्रिय रूप से काम हो सके। आपने कहा कि यदि इस अवसर पर सभी विभागाध्यक्ष उपस्थित हों तो गरिमा और बढ़ती है। साथ ही प्रोत्साहन भी मिलता है। आपने कहा कि हिंदी हमारी मातृभाषा है । अत: अधिकांश काम हिंदी में ही करना चाहिए । जो अन्य भाषाओं में अधिक प्रचलित शब्द हैं, उनका हिंदी/देवनागरी में प्रयोग कर लेना चाहिए । कानूनी विषय में यदि कोई लंबा कोटेशन है तो उसके हिंदी रूपांतरण में कठिनाई आती है। अत: सर्वप्रथम हम इसके विषय विशेष को समझ कर अपनी भाषा में एक वाक्य के बजाय चार छोटे-छोटे वाक्यों में लिख सकते है। आपने कहा कि आज की बैठक में कुछ मत विरोध भी सामने आए । इस विषय में आपने कहा कि प्रत्येक संगठन का अपना एक उत्तरदायित्व निश्चित है । बाहर से उसमें हस्तक्षेप करना उचित नहीं होगा। गृह मंत्रालय ने नराकास के रूप में एक अनौपचारिक संस्था बनाई है । साथ ही यह भी अपेक्षा की कि एक ही नगर में यदि बहुत से कार्यालय काम कर रहे हैं तो वे एक दूसरे के अनुभव से सीख सकेंगे आपस में विचारों का आदान-प्रदान हो तथा एक ऐसा मंच बने जहां वे आपस में मिल सकें । इससे वे एक दूसरे को अधिक से अधिक प्रोत्साहन दे सकेंगे । जहां तक नराकास द्वारा निरीक्षण करके एक रिपोर्ट बनाने व टिप्पणी करने का प्रश्न है जब तक हम एक दूसरे के प्रति खुलेभाव से आदर करते हैं एक दूसरे के साथ मिलने में कोई ऐतराज नहीं होना चाहिए।

रायपुर

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, रायपुर की 56 वीं बैठक दिनांक 5-12-2006 को 16.00 बजे आदरणीय श्री विनोद कुमार गोयल, आयुक्त, केंद्रीय उत्पाद शुल्क एवं सीमा शुल्क, रायपुर की अध्यक्षता में केंद्रीय उत्पाद शुल्क भवन, टिकरापारा, रायपुर के सम्मेलन कक्ष में सम्पन्न हुई।

अध्यक्ष महोदय ने सर्वप्रथम बैठक में सदस्य कार्यालयों के समुचित प्रतिनिधित्व पर अपना संतोष व्यक्त किया एवं कहा कि राजभाषा कार्यान्वयन की दिशा में वरिष्ठ अधिकारियों की भूमिका अपना एक अलग ही महत्व रखती है क्योंकि वरिष्ठ अधिकारी यदि अपने स्तर पर कार्य प्रारम्भ करते हैं तो इसका एक बहुत अच्छा संदेश उनके अधीनस्थ अधिकारियों तक पहुंचता है उन्होंने अपने स्वयं का उदाहरण देते हुए कहा कि पिछली बैठक के बाद उन्होंने जो पहला कार्य किया वह है फाइलों पर हिंदी में हस्ताक्षर करने का। इसके अलावा उन्होंने कहा कि जो रूटिन प्रकार के कार्य हैं उन्हें आसानी से हिंदी में किया जा सकता है जैसे, छुट्टियों की मंजूरी, विभिन्न प्रकार की अग्रिमों की मंजूरी आदि ऐसे कार्य हैं जिन्हें आसानी से हिंदी में किया जा सकता है।

समिति की यह 56 वीं बैठक थी और समिति के सभी कार्यालय केंद्रीय सरकार के कार्यालय हैं अत: शब्द "छप्पन" एंव "केंद्रीय" के महत्व पर उन्होंने विशेष रूप से प्रकाश डाला जिसने जहां एक तरफ सदस्यों को तो प्रभावित किया ही वहीं दूसरी तरफ अध्यक्षीय उदबोधन को एक अलग गरिमा भी प्रदान की । अपने उद्बोधन के अंत में उन्होंने सदस्यों का आभार मानते हुए उनसे यह अपेक्षा भी की कि बैठक में लिए गए निर्णयों पर वे समुचित ध्यान देंगे एवं राजभाषा कार्यान्वयन की दिशा में समिति द्वारा किए जा रहे प्रयासों में अपना सार्थक सहयोग प्रदान करेंगे ।

गुड़गांव

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, गुड़गाँव की वर्ष 2006-07 की दूसरी अर्द्धवार्षिक बैठक श्री पीयूष पटनायक, माननीय आयुक्त, केंद्रीय उत्पाद शुल्क, आयुक्तालय दिल्ली -III, राजस्व विभाग, वित्त मंत्रालय की अध्यक्षता में

दिनांक 15-12-2006 को पूर्वाह्न 11.00 बजे आयुक्तालय के सभागार, गुडगांव में सम्पन्न हुई थी ।

अध्यक्ष महोदय ने समिति को अवगत कराया कि हाल ही में दिनांक 7-9-2006 को नराकास राजभाषा समिति की साक्ष्य उपस्थिति द्वारा नराकास, गुड़गाँव एवं इसके 15 कार्यालयों के काम-काज की प्रगति के बारे में एक विचार-विमर्श के लिए दौरा किया गया था। जिस दौरान माननीय संसदीय समिति ने सभी कार्यालयों से राजभाषा नीति के शत-प्रतिशत अनुपालन किए जाने के बारे में सुझाव दिए थे । इसे ध्यान में रखते हुए अध्यक्ष महोदय ने सभी सदस्य कार्यालयों के प्रतिनिधियों से निम्नलिखित मुद्दों पर कार्रवाई सुनिश्चित करने के अनुदेश दिए:-

1. राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3(3) का 100% अनुपालन ।
2. हिंदी के मूल पत्राचार, 'क' एवं 'ख' क्षेत्र के साथ 100% तथा 'ग' क्षेत्र के साथ 65% हिंदी द्विभाषी रूप में ।
3. प्रत्येक कार्यालय में राजभाषा कार्यान्वयन समिति का गठन तथा वर्ष में कम से कम चार बैठक (हर एक तिमाही में एक)।
4. तिमाही बैठक की कार्यसूची व कार्यवृत्त नराकास, गुड़गांव को भेजी जाए ।
5. हिंदी संबंधी तिमाही/वार्षिक प्रगति रिपोर्ट की प्रतियाँ भी नराकास, गुड़गांव को भेजी जाएं ।
6. हिंदी पखवाड़ा/माह आदि के आयोजन तथा किसी सदस्य कार्यालय में हुए हिंदी संबंधी निरीक्षण आदि से संबंधित रिपोर्ट भी नराकास कार्यालय को भेजी जाए ।
7. सभी सदस्य कार्यालय के प्रमुख/उनके प्रतिनिधि नराकास की बैठकों में जरूर भाग लें ।

माननीय अध्यक्ष महोदय ने इस बात पर प्रसन्नता व्यक्त की कि कुछ सदस्य कार्यालयों द्वारा तिमाही प्रगति रिपोर्ट, नराकास कार्यालय के नियतिम रूप से तथा समय से भेजी जाती है और इनमें से कुछ कार्यालयों जैसे, सी.आर.पी. एफ, गुड़गांव, ऑरिएन्टल बैंक, गुड़गांव तथा राष्ट्रीय तिलहन एवं वनस्पति तेल विकास बोर्ड, गुड़गांव द्वारा किए जा रहे हिंदी पत्राचार की स्थिति उत्यन्त ही सराहनीय है । अतः उन्होंने अन्य सभी कार्यालयों से भी इस ओर ध्यान देने का विशेष रूप से आग्रह किया।

इलाहाबाद

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, इलाहाबाद की वर्ष 2006-07 की दूसरी बैठक दिनांक 22-2-2007 को अपराह्न 03.00 बजे माननीय आयकर आयुक्त श्री असीम कुमार की अध्यक्षता में आयोजित की गई। इस बैठक में 64 कार्यालयों 131 अधिकारियों सहित केंद्रीय विद्यालयों के प्रधानाचार्य आदि उपस्थित थे।

अपने अध्यक्षीय संबोधन में माननीय आयकर आयुक्त महोदय ने कहा कि राजभाषा की प्रगति एवं राजभाषा विभाग के वार्षिक कार्यक्रम के लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए सरकारी कार्यों में अधिक से अधिक हिंदी का प्रयोग करने की आवश्यकता है। यही इन बैठकों का औचित्य भी है। यहां पर लिए गए निर्णयों का कार्यान्वयन विभागाध्यक्षों के द्वारा ही संभव है और इसीलिए मूलरूप से विभागाध्यक्ष ही राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के लिए उत्तरदायी बनाए गए है। संसदीय राजभाषा समिति ने भी नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों में लिए गए निर्णयों पर अनुवर्त्ती कार्रवाई का उच्च स्तर पर पूर्ण निष्ठा से निगरानी और समीक्षा का निदेश दिया है । उन्होंने सदस्य कार्यालयों के उच्चाधिकारियों से अनुरोध किया कि वे राजभाषा की प्रगति के लिए नियमित रूप से राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक का आयोजन करें तथा अपने कार्यालय में हो रही राजभाषा की प्रगति की समीक्षा करें । तभी वे वार्षिक कार्यक्रम के लक्ष्य को प्राप्त कर सकेंगे ।

कोलकाता (बैंक)

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक), कोलकाता की 42वीं बैठक दिनांक 22-2-2007 को अपराह्न 4.00 बजे यूनाइटेड बैंक ऑफ इंडिया के कर्मचारी प्रशिक्षण महाविद्यालय, कोलकाता के सम्मलेन कक्ष में संपन्न हुई।

क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, राजभाषा विभाग, कोलकाता की अनुसंधान अधिकारी श्रीमती सुस्मिता भट्टाचार्य ने कहा कि समिति द्वारा आयोजित राजभाषा चल वैजयंती प्रतियोगिता के लिए मूल्यांकन के मानदंड में परिवर्तन होना चाहिए । उन्होंने यह भी कहा कि सभी संबंधित नियंत्रक

कार्यालयों से तिमाही प्रगति रिपोर्ट समय पर क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय को भेजी जाए ।

उप निदेशक (पूर्व), हिंदी शिक्षण योजना, कोलकाता ने वर्तमान समय में कोलकाता में चल रहे 22 प्रशिक्षण केंद्रों की सूचना देते हुए कहा कि उक्त प्रशिक्षण केंद्रों में विभिन्न कार्यालय हिंदी प्रशिक्षण के लिए नामांकन कर सकते हैं ।

अध्यक्ष महोदया ने अपने वक्तव्य में कहा कि बैंक के कामकाज में हिंदी का प्रयोग बढ़ाना अत्यंत जरूरी है। बैंक में ग्राहकों को सेवा प्रदान करने के लिए हिंदी जानना जरूरी है । उन्होंने यह भी कहा कि भारत की अधिकांश जनता द्वारा हिंदी बोली एवं समझी जाती है, इसलिए हिंदी में अधिकाधिक कार्य करते हुए हम देशवासियों की मदद कर सकते हैं।

अंत में धन्यवाद ज्ञापन करते हुए इलाहाबाद बैंक के महाप्रबंधक (राजभाषा) डॉ. दीपक पालित ने बैठक की अध्यक्ष महोदया तथा उपस्थित सभी अधिकारियों को धन्यवाद देते हुए कहा कि युनाइटेड बैंक ऑफ इंडिया के महाप्रबंधक (योजना एवं विकास) श्री मृणाल वैश्य इस महीने में बैंक से सेवानिवृत्त हो रहे हैं। उन्होंने इस समिति के कार्यकलापों को आगे बढ़ाने के लिए सक्रिय भूमिका निभाई है । इसलिए उनके द्वारा दिया गया मार्गदर्शन समिति के लिए हमेशा अविस्मरणीय रहेगा ।

पुणे

पुणे स्थित सभी सरकारी बैंकों/वित्तीय संस्थाओं की नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 34वीं बैठक बुधवार दि. 21 फरवरी, 2007 को बैंक ऑफ महाराष्ट्र के उप महाप्रबंधक श्री बी.आर. कुलकर्णी जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई ।

हिंदी शिक्षण योजना के सहायक निदेशक श्री राजेंद प्रसाद वर्मा ने सदस्य कार्यालयों को सूचित किया कि उनके कार्यालय द्वारा हिंदी प्रबोध, प्रवीण व प्राज्ञ तथा हिंदी आशुलिपि व टंकण के वर्ग चलाए जा रहे हैं व सदस्य कार्यालय अपने संबंधित कर्मचारियों को प्रशिक्षण हेतु प्रतिनियुक्त कर सकते हैं ।

अध्यक्षीय भाषण प्रस्तुत करते हुए श्री बी.आर. कुलकर्णी जी ने समिति को प्राप्त पुरस्कार सदस्यों को समर्पित करते हुए यह अपेक्षा व्यक्त की कि हिंदी के प्रगामी प्रयोग हेतु लक्ष्योन्मुख काम के अलावा भी प्रयास करने चाहिए । उन्होंने समिति की वेबसाइट बनाने हेतु उचित कार्रवाई करने का आश्वासन दिया।

अहमदाबाद (बैंक)

राज्य स्तरीय बैंकर्स समिति (हिंदी) गुजरात एवं नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक)-अहमदाबाद की संयुक्त समीक्षा बैठक की अध्यक्षता करते हुए समिति के अध्यक्ष एवं देना बैंक के महाप्रबंधक श्री पुरूषोत्तम कुमार ने दिनांक 22-1-2007 को देना लक्ष्मी भवन में आयोजित बैठक को संबोधित करते हुए कहा कि आप देखते होंगे कि टी.वी. आदि माध्यमों से प्रसारित विज्ञापनों में हिंदी का लगभग 95% प्रयोग किया जा रहा है और प्राइवेट सेक्टर इसका अधिकतम उपयोग कर रहा है । गुजरात में बैंकिंग क्षेत्र में हम हिंदी के माध्यम से अपने उत्पादों को अधिकतम प्रचार कर सकते हैं और अब तक बैंकिग सेवाओं से वंचित रहे क्षेत्रों को भी बैंकिग सेवाएं प्रदान कर सकते हैं । इससे हमें दोहरी सफलता मिलेगी । बैठक में समीक्षा के लिए भारत सरकार, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, मुंबई के प्रभारी उपनिदेशक श्री आर.एस. रावत जी उपस्थित थे । उन्होंने गुजरात राज्य में सरकारी क्षेत्र के बैंकों में राजभाषा हिंदी के प्रयोग पर संतोष व्यक्त किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि राजभाषा हिंदी का कार्यान्वयन कोई समस्या नहीं है वह हमारे कारोबार में सहायक भूमिका निभाती है।

इस अवसर पर नाबार्ड के मुख्य महाप्रबंधक श्री भवरपुरी ने कहा कि हमारी राज्य स्तरीय बैंकर्स समिति की सभी बैठकों की कारवाई हिंदी में ही होती है जोकि गुजरात में कार्यरत रहते हुए एक महत्वपूर्ण बात है। सैन्ट्रल बैंक के आंचलिक प्रबंधक श्री पी. श्रीधरन ने भी अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि 60 वर्षों में राजभाषा हिंदी हमारी मातृभाषा के रूप में प्रचलित हो जानी चाहिए थी।

इस बैठक में गुजरात में राजभाषा के कार्यान्वयन के लिए वर्ष 2005-06 के दौरान उत्कृष्ट कार्य करने वाले बैंकों को राज्य स्तरीय बैंकर्स समिति (हिंदी), गुजरात के तत्वावधान में देना बैंक द्वारा प्रतियोजित गुजरात राजभाषा शील्ड प्रदान की गई । विजेता रहे प्रथम बैंक ऑफ बड़ौदा, द्वितीय -सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया, तृतीय-यूनियन बैंक

ऑफ इंडिया। वित्तीय संस्थाओं में प्रथम पुरस्कार की शील्ड राष्ट्रीय कृषि एवं ग्रामीण विकास बैंक को प्रदान की गई।

इस अवसर पर नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक) के तत्वावधान में भारतीय लघु उद्योग विकास बैंक द्वारा आयोजित बैंकिंग अनुवाद प्रतियोगिता के पुरस्कार विजेताओं को प्रदान किए गए ।

डलहौजी

एनएचपीसी क्षेत्र-II कार्यालय में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, डलहौजी की दूसरी छमाही बैठक दिनांक 28 दिसंबर, 2006 को श्री एम.के.रैना, कार्यपालक निदेशक क्षेत्र-II की अध्यक्षता में आयोजित की गई। इस बैठक में चंबा, डलहौजी, खैरी व बनीखेत स्थित केंद्र सरकार के कार्यालयों जैसे बैंक, केंद्रीय विद्यालय, केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल, डाक व तार विभाग, आयकर विभाग व एनएचपीसी की सभी परियोजनाओं/पावर स्टेशनों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

सर्वप्रथम प्रमुख (भू-विज्ञान एवं पर्या.) श्री दिनेश त्रिपाठी ने अध्यक्ष महोदय एवं नराकास के सदस्य कार्यालयों के प्रतिनिधियों का स्वागत किया। सदस्य सचिव, नराकास एवं प्रबंधक (राजभाषा) श्री नानक चंद ने पिछली बैठक के कार्यवृत पर हुई अनुवर्ती कार्रवाई से सभी सदस्यों को अवगत कराया। बैठक में सदस्य कार्यालयों ने अपने-अपने विभाग से संबंधित राजभाषा प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत की। अध्यक्ष महोदय ने सदस्य कार्यालयों में राजभाषा के प्रति किए जा रहे कार्यों एवं पत्राचार में हुई प्रगति पर संतोष व्यक्त किया। बैठक में नराकास को और अधिक कारगर एवं प्रभावी बनाने के उपायों पर भी चर्चा की गई। सदस्य सचिव ने कहा कि सभी कार्यालय तिमाही प्रगति रिपोर्ट, राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3(3) व राजभाषा नियम 1976 का अनुपालन सुनिश्चित करें।

अध्यक्षीय संबोधन में कार्यपालक निदेशक श्री रैना ने कहा कि "अब हमें इस बात की आवश्यकता नहीं होनी चाहिए कि हम हिंदी की राजभाषा, राष्ट्रभाषा व संपर्क भाषा के रूप में चर्चा करें बल्कि आवश्यकता इस बात की है इस पर अधिकाधिक कार्य हो" उन्होंने कहा कि राजभाषा के विकास के लिए एनएचपीसी कृतसंकल्पित है और इस क्षेत्र में भी राजभाषा के विकास के लिए वे कार्य करती रहेगी हालांकि उनका स्थानांतरण इस क्षेत्र से हो गया है परंतु वे यह चाहते हैं कि जिस प्रकार हिंदी के लिए कार्य किए जा रहे है। वे जारी रहने चाहिए।

अनुगुल

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, अनुगुल की अठारहवीं बैठक का आयोजन दिनांक 20-12-2006 नालकों के प्रशिक्षण संस्थान स्थित सम्मेलन कक्ष में किया गया। बैठक की अध्यक्षता केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल, नालकों नगर इकाई के वरिष्ठ कमान्डेंट श्री एस.के. सिन्हा ने की। श्री एस. एस. पट्टनायक महाप्रबंधक/कार्मिक व प्रशासन/प्रभारी, नालको सम्मानित अतिथि के रूप में उपस्थित थे।

बैठक का उद्घाटन करते हुए अध्यक्ष श्री सिन्हा जी ने राजभाषा-हिंदी की महत्ता एवं कार्यालय में इसके प्रयोग के बारे में बताया। उन्होंने नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के गठन और राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में इसकी भूमिका के बारे में अवगत कराया। हिंदी टंकण और कम्प्यूटर पर काम करने के लिए किसी भी तरह मदद के लिए उनके कार्यालय सर्वदा सहयोग करने का आश्वासन दिया।

सम्मानित अतिथि श्री पट्टनायक जी ने नगर में इसी तरह की बैठक की आवश्यकता को समझाते हुए विभिन्न बैठकों में लिए गए निर्णयों पर अमल करने को जोर दिया। हिंदी के प्रचार और प्रसार के लिए समस्त सदस्य कार्यालय सहयोग करने के लिए उन्होंने कहा । नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, अनुगुल की ओर से आयोजित अन्तर कार्यालय पत्र-लेखन प्रतियोगिता में सफल प्रतिभागियों को पुरस्कार प्रदान किया गया। इसमें केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल से एक, नालकों से तीन और भारी पानी संयंत्र, तालचेर से दो प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया।

दिल्ली उपक्रम

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम), दिल्ली की 24वीं बैठक व पुरस्कार वितरण समारोह दिनांक 27-12-2006 को स्कोप ऑडिटोरियम, नई दिल्ली में आयोजित किया गया। इस समारोह में सुश्री पी.वी. वल्सला जी. कुट्टी संयुक्त सचिव (राजभाषा) भारत सरकार मुख्य अतिथि के रूप में पधारी थीं । बैठक की अध्यक्षता नराकास (उपक्रम), दिल्ली के अध्यक्ष श्री टी.शंकरलिंगम, अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक, एनटीपीसी लिमिटेड ने की।

समारोह में सुप्रसिद्ध लेखक श्री विनोद कुमार मिश्र द्वारा मूल हिंदी में लिखी पुस्तक "व्हीलचेयर पर राष्ट्रपति" का लोकार्पण भी किया गया।

नराकास (उपक्रम), दिल्ली के सदस्य सचिव डॉ. राजेंद्र प्रसाद मिश्र ने आमंत्रित अतिथियों, वरिष्ठ अधिकारियों, पुरस्कृत विजेताओं तथा सभी सदस्यों का अभिनंदन करते हुए कहा कि राजभाषा हिंदी को गौरव प्रदान करने के लिए नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति सही मायनों में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। यह सभी सदस्य उपक्रमों के अथक परिश्रम से ही संभव हो पाया है।

एनटीपीसी लिमिटेड के कार्यकारी निदेशक (मानव संसाधन) श्री गोपाल कृष्ण अग्रवाल जी ने सबका स्वागत करते हुए कहा कि सभी सदस्य उपक्रमों के सहयोग से राजभाषा विभाग के मार्गदर्शन में हम सब राजभाषा के प्रचार-प्रसार में पूरी निष्ठा से लगे हुए हैं।

राजभाषा विभाग के उप निदेशक (कार्यान्वयन) श्री प्रेम सिंह जी ने सदस्य उपक्रमों से प्राप्त छमाई रिपोर्टों के आधार पर राजभाषा कार्यान्वयन की समीक्षा करते हुए निम्नलिखित मदों पर विशेष ध्यान देने को कहा । साथ ही उन्होंने राजभाषा प्रगति संबंधी छमाही-रिपोर्ट यथासमय समिति सचिवालय भिजवाने का अनुरोध भी किया।

(1) राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3(3) व राजभाषा नियम, 1976 के नियम 8(4) का पूर्ण अनुपालन सुनिश्चित किया जाए।

(2) किसी भी भाषा में प्राप्त पत्र को पावती हिंदी में दें।

(3) संदर्भ ग्रंथों व जर्नल आदि पर खर्च की गई राशि को छोड़कर पुस्तकालय के बजट की 50% या इससे अधिक राशि हिंदी पुस्तकों की खरीद पर खर्च करें।

(4) कंप्यूटर में हिंदी में कार्य को विशेष महत्व दिया जाए साथ ही हिंदी कंप्यूटर प्रचालन के प्रशिक्षण पर भी विशेष ध्यान दिया जाए।

एनटीपीसी लिमिटेड के निदेशक (मानव संसाधन) श्री रमेश चंद्र श्रीवास्तव जी ने पुरस्कार विजेताओं को बधाई देते हुए कहा कि नराकास की बैठकों में आपकी उपस्थिति ने हमेशा हमारा उत्साह बढ़ाया है। आशा है राजभाषा के प्रति आपकी यह निष्ठा हमेशा बनी रहेगी और हम सब एक साथ मिलकर राजभाषा के लक्ष्यों को पा सकेंगे। यदि हम सब मिलजुल कर सच्चे मन से प्रयास करें तो कोई भी काम असंभव नहीं होता, फिर यह तो हमारे देश की राजभाषा का प्रश्न है। हम हिंदी को जितना अधिक इस्तेमाल करेंगे वह उतनी ही सशक्त होगी। हिंदी का निरंतर प्रयोग करके हम इसे सभी क्षेत्रों में प्रतिष्ठित कर सकते हैं ।

अपने अध्यक्षीय भाषण में नराकास (उपक्रम), दिल्ली के अध्यक्ष तथा एनटीपीसी लिमिटेड के अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक श्री टी.शंकरलिंगम जी ने अतिथियों का अभिनंदन करते हुए सबसे पहले विभिन्न उपक्रमों के नगर स्तरीय प्रतियोगिताओं के विजेताओं को हार्दिक बधाई दी। उन्होंने कहा कि राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में प्रतियोगिताओं की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। इसके माध्यम से कर्मचारियों की प्रतिभा उभरती है और कार्यालय में हिंदी का वातावरण भी बनता है। किसी भी देश को जोड़ने में वहा। की भाषा और संस्कृति का बहुत बड़ा योगदान होता है मुझे पूरा भरोसा है कि आप कार्यालय के कामकाज में हिंदी को बढ़ावा देकर इसे और अधिक शक्ति प्रदान करेंगे। राजभाषा हिंदी के अधिक से अधिक प्रचार-प्रसार के लिए राजभाषा विभाग के मार्गदर्शन में पूरे देश की नराकास बहुत महत्वपूर्ण काम कर रही है।

समारोह की मुख्य अतिथि सुश्री पी.वी. वल्सला जी. कुट्टी, संयुक्त सचिव (राजभाषा), भारत सरकार ने पुरस्कार विजेताओं को बधाई दी और सभी उपक्रमों को अगले वर्ष प्रतियोगिताओं में और अधिक उत्साह से भाग लेने को कहा। उन्होंने कहा कि हिंदी को मन से अपनाना चाहिए किसी दबाव में आकर नहीं। दरअसल भाषा तो मन की बात को दूसरों तक पहुँचाने का माध्यम है। हमें अपनी भाषा को बढ़ावा देना ही चाहिए। हमें अपनी मानसिकता बदलनी होगी। देश का गौरव बढ़ाने के लिए हमें सच्चे भारतवासी बनकर देश की भाषा में काम करना चाहिए। उन्होंने एनटीपीसी लिमिटेड द्वारा विद्युत उत्पादन के क्षेत्र में एक अग्रणी कंपनी का दायित्व बखूबी निभाने और साथ ही साथ राजभाषा हिंदी को नए-नए कार्यों से बढ़ावा देने के लिए बधाई दी। उन्होंने बताया कि राजभाषा विभाग द्वारा भी हिंदी सॉफ्टवेयर के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए कार्य किया जा रहा है। एक ऐसा सॉफ्टवेयर विकसित किया जा रहा है जिससे अनुवाद कार्य और सहज हो पाएगा। साथ ही उन्होंने इस बात पर भी बल दिया कि जब भारत सभी क्षेत्रों में उन्नति कर रहा है तो राजभाषा के क्षेत्र में भी वहीं तेजी क्यों नहीं दिखाई देती, इसके लिए हम कोशिश नहीं करेंगे तो कौन करेगा? क्या हमें विदेशियों की मदद से हिंदी को बढ़ावा देना होगा।

(ग) कार्यशालाएं

गुवाहाटी रिफाइनरी, नूनमाटी, गुवाहाटी-781 020

एक दिवसीय हिंदी कंप्यूटर प्रशिक्षण कार्यशाला

गुवाहाटी रिफाइनरी के प्रशिक्षण केंद्र में आईओसीएल अधीन जी.एस.पी.एल., विपणन तथा गुवाहाटी रिफाइनरी के कर्मचारियों हेतु 17 नवंबर, 06 को एक दिवसीय हिंदी कंप्यूटर प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया गया। यह कार्यशाला इस उद्देश्य से आयोजित की गई कि हिंदी में कार्यालयीन काम काज कम्प्यूटर पर अधिक से अधिक किया जा सके और राजभाषा कार्यान्वयन को बढ़ावा मिल सके। कार्यशाला के उद्घाटन सत्र में गुवाहाटी रिफाइनरी के वरिष्ठ प्रबंधक (नि सं. व रा का) श्रीमती अंजना बी. शर्मा तथा वरिष्ठ प्रबंधक (सूचना प्रणाली) श्री डी.के. ग्रोवर के अलावा विशिष्ट अतिथि के रूप में राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय के अनुसंधान अधिकारी श्री अशोक कुमार मिश्र उपस्थित थे। श्री मिश्र ने इस मौके पर अपनी व्याख्यान में ऐसी हिंदी कम्प्यूटर कार्यशाला राजभाषा कार्यान्वयन में मददगार साबित होने की बात कही। उन्होंने, नई दिल्ली में 14 सितंबर, 06 को उद्घाटन किए मंत्र नामक अनुवाद सॉफटवेयर के बारे में बताते हुए कहा कि यह सॉफ्टवेयर एक पन्ना का अनुवाद डेढ़ मिनट में करने की क्षमता रखते हैं। श्री मिश्र ने इस तरह के कार्यशाला का आयोजन करने के लिए रिफाइनरी की प्रशंसा की। इस अवसर पर संकाय सदस्य के रूप में हिंदी शिक्षण योजना, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय के सहायक निदेशक श्री ए.के. चौहान पधारे थे। उन्होंने सीडेक विकसित आई एस एम सॉफ्टवेयर द्वारा कम्प्यूटर पर हिंदी में कार्यालयीन काम काज करने की जानकारी दी। कार्यशाला के अंत में हिंदी कम्प्यूटर टाइपिंग की गति परीक्षा ली गई और सफल प्रतिभागियों को पुरस्कार प्रदान किए गए।

आकाशवाणी, चेन्नई-4

संयुक्त हिंदी कार्यशाला

आकाशवाणी, चेन्नई में दि. 28-11-2006 से 29-11-2006 तक संयुक्त कार्यशाला एवं राजभाषा संगोष्ठी आयोजित हुई। दि. 28-11-2006 को हुई संयुक्त कार्यशाला में केंद्र के कर्मचारियों के साथ तमिलनाडु अंचल के विभिन्न कार्यालयों से 18 कर्मचारी प्रतिभागी के रूप में उपस्थित थे।

कार्यशाला के प्रथम सत्र में भारतीय मानक ब्यूरो के सहायक निदेशक (रा.भा.) श्री रमेश चन्द्र ने "प्रशासनिक एवं पारिभाषिक शब्दावली और राजभाषा के कार्यान्वयन से संबंधित प्रोत्साहन पर व्याख्यान दिया। उन्होंने कर्मचारियों को प्रशासनिक एवं पारिभाषिक शब्दावलियों के निर्माण के बारे में समझाया तथा राजभाषा में काम करने पर दिए जाने वाले प्रोत्साहनों की जानकारी प्रदान की।

द्वितीय सत्र में, डॉ एम.जी.आर. जानकी कॉलेज, चेन्नई के हिंदी विभागाध्यक्ष श्रीमती वत्सला किरण ने प्रतिभागियों को सामान्य हिंदी व्याकरण के प्रयोग में आनेवाली कठिनाइयों को उदाहरणों द्वारा समझाया तथा वाक्य बनाने का अभ्यास करवाया।

आकाशवाणी, कडपा

हिंदी कार्यशाला का प्रथम सत्र दिनांक 10-01-2007 को सुबह 10.00 बजे को आमंत्रित अतिथि वक्ता, सहायक भविष्य निधि कार्यालय में कार्यरत श्री एस.के. महबूब, बाशा, हिंदी अनुवादक ने हिंदी राजभाषा नीति संबंधित अधिनियम, नियम और धारा के बारे में पूर्ण रूप से विश्लेषण से बताया। बाद में आकाशवाणी, कडपा केंद्र में कार्यरत हिंदी अनुवादक श्री एम. सुब्बशेखर ने हिंदी प्रयोग में आनने वाली कठिनाईयों के बारे में बताते हुए हिंदी प्राज्ञ से संबंधित प्रश्न पत्र का अभ्यास कराया गया।

दूसरे सत्र में श्री ए. मल्लेश्वर राव कार्यक्रम निष्पादक ने हिंदी भाषा के संबंध में अनुवाद की भूलें और हिंदी को शुद्ध रूप से लिखने के तरीके के बारे में बताया ।

सत्र के अंतिम भाग में कार्यालयाध्यक्ष श्री ए. मल्लेश्वर राव ने यह बताया कि हिंदी भाषा समझने बोलने और लिखनेवालों की संख्या हर दिन बढ़ती जा रही है । हमारी केंद्र सरकार हिंदी की श्रीवृद्धि के लिए और विकास के लिए हर क्षण प्रयास कर रही है । इस को हम ध्यान में रखकर हमारी दैनंदित कार्यालयीन कार्य में हिंदी का प्रयोग पूर्ण रूप से करने से हमारे केंद्र सरकार का जो लक्ष्य है, वह पूर्ण रूप से सफल बन जाएगा ।

महानिदेशालय असम राइफल्स, शिलांग

राजभाषा हिंदी को प्रभावी ढंग से लागू करने के उद्देश्य से दिनांक 18 एवं 19 जनवरी 2007 को महानिदेशालय असम राइफल्स में दो दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें महानिदेशालय असम राइफल्स की विभिन्न शाखाओं तथा स्थानीय यूनिटों से लगभग 65 कार्मिकों ने भाग लिया ।

उक्त कार्यशाला का शुभारंभ दिनांक 18 जनवरी 2007 को श्री बदरी यादव, हिंदी अधिकारी के "विभिन्न वाक्यांशों के हिंदी में अनुवाद" विषय पर व्याख्यान से हुआ । इसके बाद श्री बृजेश कुमार पाण्डेय, हिंदी अनुवादक ग्रेड-1 ने "कार्यालय में हिंदी टिप्पण एवं आलेखन" तैयार करने हेतु जानकारी दी ।

कार्यशाला का द्वितीय सत्र दिनांक 19 जनवरी 2007 को 10.30 बजे श्री बदरी यादव, हिंदी अधिकारी द्वारा प्रशासनिक शब्दावली पर चर्चा के साथ शुरू हुआ । इसके बाद सत्र के अंतिम चरण में श्री नबारूण देब, हिंदी अनुवादक ने कंप्यूटर पर विभिन्न फोन्टों के उपयोग के बारे में विस्तृत जानकारी दी । उन्होंने इसके विभिन्न पक्षों को बड़े ही सरल अंदाज में प्रस्तुत किया । सभी प्रतिभागियों ने वक्ताओं को बड़े ही ध्यान से सुना तथा उनके अनुभवों का भरपूर लाभ उठाया ।

दिनांक 19 जनवरी 2007 को 1500 बजे उक्त कार्यशाला का समापन समारोह ले. कर्नल के. आर. राजकुमार, कार्यवाहक जीएसओ 1 (एजूकेशन) द्वारा प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र वितरित किए जाने के साथ संपन्न हुआ । उन्होंने अपने अध्यक्षीय संबोधन में सभी प्रतिभागियों से अनुरोध किया कि वे हिंदी कार्यशाला को सार्थक बनाने के लिए कार्यालय में अधिक से अधिक काम हिंदी में ही करें और राजभाषा नीति को कार्यान्वित करने में अपना भरपूर योगदान दें ।

मुख्य आयकर आयुक्त कार्यालय (सं.नि.प्रा.), गुवाहाटी

मुख्य आयकर आयुक्त कार्यालय (सं. नि.प्रा.), सैकिया कॉमर्शियल कॉम्पलेक्स, गुवाहाटी में 7 से 13 दिसम्बर, 2006 तक पाँच कार्य दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया ।

दिनांक 7 दिसम्बर, 2006 को हिंदी कार्यशाला का उद्घाटन श्री के.के. सिन्हा, भा.रा.से., आयकर आयुक्त (अपील-2), एवं नामित राजभाषा अधिकारी, मुख्य आयकर आयुक्त (सं.नि.प्रा.) कार्यालय, गुवाहाटी ने दीप प्रज्जवलित कर के किया । इस अवसर पर श्री शेष मणि शुक्ल, सहायक निदेशक (राजभाषा) ने अध्यक्ष सहित वहाँ उपस्थित सभी अधिकारियों तथा कर्मचारियों का स्वागत किया । तत्पश्चात् उन्होंने हिंदी कार्यशाला आयोजन के उद्देश्य पर संक्षिप्त प्रकाश डालते हुए इस दौरान आयोजित किए जाने वाले प्रशिक्षण/अभ्यास सत्रों की घोषणा की । अपने अध्यक्षीय भाषण में श्री के.के. सिन्हा, भा.रा.से., आयकर आयुक्त (अपील-2) एवं नामित राजभाषा अधिकारी, गुवाहाटी ने समस्त अधिकारियों तथा कर्मचारियों से अपील की कि वे इस कार्यशाला में सक्रिय रूप से भाग लें तथा कार्यशाला का भरपूर लाभ उठाएं ।

कार्यशाला के दौरान वक्ताओं द्वारा विभिन्न विषयों पर व्याख्यान दिया गया तथा अभ्यास कराया गया ।

क्षेत्रीय कार्यालय, भारतीय मात्स्यिकी सर्वेक्षण, पोर्ट ब्लेयर बेस, पो. बा. 46 पोर्ट ब्लेयर-744101

भारतीय मत्स्यिकी सर्वेक्षण, पोर्ट ब्लेयर कार्यालय में राजभाषा कार्यान्वयन को सुदृढ़ करने तथा कार्यान्वयन में सामूहिक भागीदारी सुनिश्चित करने के उद्देश्य से दिनांक 27-02-2007 को "राजभाषा कार्यान्वयन में सामूहिक भागीदारी (Office Language Implementation-A Collective Effort)" विषय पर एक दिवसीय हिंदी कार्याशाला का आयोजन किया गया।

क्षेत्रीय निदेशक श्री ए. एनरोज ने उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों से कार्यशाला का भरपुर लाभ उठाते हुए राजभाषा कार्यान्वयन को अधिक से अधिक बढ़ाने का आग्रह किया।

कार्यशाला में अपने वक्तव्य की शुरूआत करते हुए आमंत्रित वक्ता श्री किशन सिंह ने राजभाषा अधिनियम 1963, संसदीय राजभाषा समिति एवं निरीक्षण प्रश्नावली, राजभाषा विभाग द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम 2006–07, तिमाही/वार्षिक रिपोर्ट, धारा 3 (3) का समुचित अनुपालन, हिंदी में प्राप्त पत्रों का जवाब हिंदी में देने, कार्यालय प्रधान का उत्तर दायित्व आदि बिंदुओं पर विस्तार से उपस्थिति को अवगत कराया तथा कहा कि राजभाषा कार्यान्वयन का कार्य सामूहिक जिम्मेदारी का कार्य है जिसे सभी को मिलकर करना होता है तथा कार्यालय प्रधान को प्रेरणा एवं प्रोत्साहन के माध्यम से इस कार्य को करवाना चाहिए।

इस अवसर पर उपस्थित अन्य वक्ता श्रीमती सुलोचना ने कहा कि कार्यान्वयन का कोई शॉर्टकट नहीं होता है तथा निरन्तर अभ्यास के जरिए ही इस कार्य को आगे बढ़ाया जा सकता है। छोटी–छोटी टिप्पणियों के माध्यम से शुरूआत की जानी चाहिए। उन्होंने बताया कि कार्यालय की महत्वपूर्ण गतिविधियों को हिंदी समाचार बुलेटिन के माध्यम से आम तथा जरूरतमंद लोगों तक पहुंचाए जाने का कार्य किया जाना चाहिए। प्रकाशनों की भाषा सरल, सहज एवं आसानी से समझ में आने वाली होनी चाहिए ताकि निहित उद्देश्य की पूर्ति हो सके। कार्यशाला के अंत में उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने अपनी जिज्ञासाएं आमंत्रित वक्तओं के समक्ष रखी जिनका संतोषपूर्ण ढंग से समाधान किया गया।

लघु उद्योग सेवा संस्थान, III बी. टी. रोड, कोलकाता–700108

सरकारी कामकाज मूल रूप से हिंदी में करने में अधिकारियों और कर्मचारियों की झिझक को दूर करने एवं टिप्पणी, प्रारूप/मसौदा लेखन, पत्र–लेखन का अभ्यास कराने के संबंध में दिनांक 11 से 13 सितंबर, 2006 की अवधि में हिंदी कार्याशाला का आयोजन किया जिसमें कुल 16 (सोलह) अधिकारियों और कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। इस अवसर पर हिंदी शिक्षण योजना, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, कोलकाता के हिंदी प्राध्यापक श्री अदालत प्रसाद को अतिथि वक्ता के रूप में आमंत्रित किया गया।

मुख्य नियंत्रण सुविधा, पी. बी. नं. 66, हासन–573201

मुख्य नियंत्रण सुविधा, अंतरिक्ष विभाग, हासन में वर्ष 2007 के दौरान आयोजित की जानेवाली कार्यशालाओं में से प्रथम कार्यशाला दिनांक 24 फरवरी 2007 को प्रशासनिक क्षेत्र के सभी कर्मचारियों के लिए आयोजित की गई।

डॉ. सी. जी. पाटिल, निदेशक, एमसीएफ ने कार्यशाला की अध्यक्षता करते हुए कहा कि एमसीएफ में प्रत्येक तिमाही में राजभाषा कार्यशाला का आयोजन किया जा रहा है जिसमें अधिकारियों एवं कर्मचारियों को बारी–बारी से प्रशिक्षण दिलवाया जा रहा है। आपने आगे कहा कि एमसीएफ में हाल ही में प्रशिक्षण कार्यक्रम पूर्ण कर लिया गया है और विभाग के निदेशानुसार हिंदी प्रशिक्षण कार्यक्रम पूर्ण करने वाले कार्यालयों में सभी कर्मचारी/अधिकारियों को अपना सरकारी कामकाज अधिक–से–अधिक हिंदी में करने के लिए प्रयास करना होगा।

डॉ. जी. आर. श्रीनाथ जी ने सत्र संचालन करते हुए सर्वप्रथम राजभाषा कार्यान्वयन से संबंधित नीति–नियमों के बारे में संक्षेप में जानकारी दी। तदनंतर आपने दैनंदिन कार्यालयीन कार्यों के प्रयोगार्थ छोटे–छोटे वाक्यों तथा टिप्पण एवं प्रारूपण का अभ्यास करवाया।

परमाणु ऊर्जा विभाग, भारी पानी संयंत्र, तूतीकोरिन, तमिलनाडु–628007

भारी पानी संयंत्र, तूतीकोरिन में भारी पानी संयंत्र एवं नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्य कार्यालयों के अधिकारियों हेतु एक पूर्ण दिवसीय हिंदी कार्याशाला का आयोजन दिनांक 02 फरवरी 2007 को भारी पानी संयंत्र, तूतीकोरिन के अतिथि गृह स्थित सभागृह में किया गया।

जिसमें भारी पानी संयंत्र, एवं नराकास सदस्य कार्यालयों के 25 अधिकारी उपस्थित थे। कार्यशाला का उद्घाटन भारी पानी संयंत्र के महाप्रबंधक श्री वी. वी. एस. रामाराव ने किया। इस अवसर पर उन्होंने अपने उद्बोधन में कहा कि अधिकारी जिसमें राजभाषा का प्रयोग कर सकते हैं, मसलन हिंदी में निदेश देने, छोटी छोटी टिप्पणियाँ हिंदी में लिखना इत्यादि शामिल हैं। इससे उनके अधीन कार्यरत कर्मचारियों को भी राजभाषा में काम करने का प्रोत्साहन मिलेगा। भारी पानी संयंत्र, की पुनर्गठित राभाकास के अध्यक्ष एवं उप महाप्रबंधक श्री जी कल्याणकृष्णन ने कहा कि हर तिमाही में ये हिंदी कार्यशालाएँ आयोजित तो की जा रही हैं परंतु सबसे बडी चुनौती यह है कि इसमें प्रशिक्षण प्राप्त अधिकारी एवं कर्मचारी अपने दैनिक कार्य में इनका उपयोग करें। केवल प्रशिक्षण लेना या जानकारी प्राप्त करना उतना महत्वपूर्ण नहीं है जितना उनको कार्यान्वित करना।

इसके पूर्व नराकास, तूतीकोरिन एवं राभाकास, भारी पानी संयंत्र के सचिव श्री मनोज शर्मा ने बताया कि हिंदी कार्यशाला के आयोजन का उद्देश्य हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान रखनेवाले पहले से है । उन कर्मचारियों/अधिकारियों को राजभाषा नीति, नियमों एवं राजभाषा में, कार्यालय में टिप्पण आलेखन पत्राचार के बारे में जानकारी देना है। जिनको हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान नहीं है, उनके लिए प्रबोध, प्रवीण, प्राज्ञ पाठ्यक्रम है। अतः कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य हिंदी की जानकारी रखानेवाले कर्मचारियों/अधिकारियों को कार्यालयों में हिंदी में कैसे कार्य किया जाए यह जानकारी देना है।

कार्यशालों में एम. एम. डी, सीएमएफआरआई, नमक विभाग, सीआईएसएफ, डाक विभाग, सीईसीआईआरआई, इण्डियन ओवरसीज बैंक, नाभिकीय ईंधन सम्मिश्रण के अधिकारियों के साथ-साथ भारी पानी संयंत्र के अधिकारियों को भी प्रशाशित किया गया। व्याख्यानों में राजभाषा संविधान में 1963 नीति एवं 1976 नियमों के साथ-साथ, हिंदी व्याकरण, अनुवाद, कार्यालयीन टिप्पणी के साथ-साथ कुछ नए विषय जैसे ज्ञान प्रबंधन को शामिल किया जिसमें आज के युग में ज्ञान के बढ़ते प्रभाव, उनके परिणाम समृद्धि एवं केपीओ कारोबार पर चर्चा की गई । कार्यशाला का संचालन श्री मनोज शर्मा एवं श्रीमती श्यामलता कुमारी ने किया।

अभिलेख कार्यालय 'ग्रेफ', दिघी कैम्प, पुणे-411015

ग्रेफ सेंटर एवं अभिलेख में दिनांक 15 जनवरी 07 से 19 जनवरी 07 तक 5 दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में ग्रेप केंद्र तथा अभिलेख के कर्मचारियों ने बढ़चढ़कर भाग लिया।

कार्यशाला का शुभारम्भ करते हुए कमांडेन्ट कर्नल जयराम कुमार ने बताया कि हिंदी राजभाषा होने के साथ-साथ हमारी मातृभाषा है। यह जनमानस की भावना हैं अतः इसका जितना ज्यादा विकास होगा, देश का विकास होगा। उन्होंने बताया कि हमारी मानसिकता सदा से नकल करने की रही है। पीछे देखो आगे बढ़ो। चूँकि हिंदी में पूर्ववृत्त नहीं है, यह हमें कठिन लगती है। परन्तु यदि हम व्यवहारिकता के आधार पर देखें तो देश की 90% जनता हिंदी लिखती, बोलती एवं समझती है। अतः यदि हम अपने रोजमर्रा के काम में हिंदी का प्रयोग करते है तो पाऐंगे कि हिंदी अंग्रेजी से ज्यादा सरल, सहज एवं सुदृढ़ भाषा है, जिसमें व्यक्ति अपने भावों को बेहतर तरीके से व्यक्त कर सकता है। हिंदी लिखने में एक चीज का जरूर ख्याल रखना चाहिए कि भाषा अंलकृत न होकर आम हिंदुस्तानी होनी चाहिए। दूसरी बड़ी बात है हम जिस प्रकार से सोचते है, लिखने में भी उसी शैली को अपनाए; भाषा सरल, सशक्त तथा सुन्दर लगेगी। उन्होंने कार्यशाला में भाग लेने वाले कर्मचारियों को कार्यशाला के बाद भी अपने रोजमर्रा काम में इसी तारतम्य से हिंदी के प्रयोग हेतु आह्वान किया ताकि कार्यशालाओं के आयोजन की सार्थकता चरितार्थ हो सके।

कार्यशालाएं ग्रेफ केंद्र एवं अभिलेख के विभिन्न अधिकारियों/कर्मचारियों ने व्याख्यान दिए तथा रोजमर्रा के प्रयोग में आने वाले पत्रों/टिप्पणियों/नोटिंग तथा विविध पत्राचारों का अभ्यास कराया।

मुख्यालय, मुख्य अभियंता, सेवक परियोजना, पिन-931714, द्वारा 99 सेना डाकघर

दिनांक 16 से 18 जनवरी 2007 तक एक तीन दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया । कार्यशाला

की अवधि प्रतिदिन 1130 बजे से दोपहर 1330 बजे तक दो घंटे की थी ।

इस कार्यशाला में सेवक मुख्यालय तथा स्थानीय यूनिटों के 17 कर्मचारियों ने भाग लिया। कार्यशाला में कार्यशाला, आयोजित करने के उद्देश्य, हिंदी लिपि, वर्तनी, पत्र, परिपत्र, नोटिंग, अन्तर-कार्यालय-टिप्पणी आदि के अभ्यास के साथ पत्र व्यवहार तथा दैनिक कार्य में प्रयुक्त होने वाले वाक्यांशों का भी अभ्यास कराया गया तथा हिंदी में प्रोत्साहन योजनाओं के बारे में भी कर्मचारियों को जानकारी दी गई।

कार्यशाला के समापन समारोह की अध्यक्षता श्री आर. एस. घेरा, संयुक्त निदेशक (प्रशा), परियोजना के हिंदी अधिकारी ने की। इस अवसर पर बोलते हुए, उन्होंने कहा कि आप लोग अपने दैनिक सरकारी कार्य में सरल हिंदी का प्रयोग करें जिससे कि आपकी बात दूसरों की समझ में आसानी से आ सके। इस कार्यशाला में बताई गई बातों का उपयोग अपने दैनिक सरकारी काम-काज में करे और आप अपने अंदर हिंदी में कार्य करने की इच्छा जगाएं तभी इस प्रकार के आयोजनों को सफल माना जा सकेगा।

परमाणु ऊर्जा विभाग, परमाणु खनिज अन्वेषण एवं अनुसंधान निदेशालय, पश्चिमी क्षेत्र, प्रताप नगर, सैक्टर-V विस्तार, बंवाला, सांगानेर, जयपुर-302030

प.ख.नि.प. क्षेत्र में हिंदी में कंप्यूटर के प्रयोग को बढ़ावा देने के उद्देश्य से दिनांक 18 व 19 दिसंबर 2006 को पखनि, पक्षेत्र कंप्यूटर प्रयोगशाला में दो दिवसीय हिंदी कंप्यूटर कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में प्रशिक्षण हेतु अनुभाग प्रभारियों की अनुशंसा के आधार पर कुल 15 कार्मिकों को कनिष्ठ हिंदी अनुवादक श्री अभिषेक जैन ने हिंदी साफ्टवेयर ISM 2000 के संचालन का प्रशिक्षण दिया। कार्यशाला का शुभारंभ उप-क्षेत्रीय निदेशक श्री विनोद ज. कट्टी ने किया। कार्यशाला दो सत्रों में संपन्न की गई। कार्यशाला का प्रथम सत्र दिनांक 18 दिसंबर 2006 को आयोजित हुआ इसमें कनिष्ठ हिंदी अनुवादक ने सभी प्रशिक्षुओं को हिंदी साफ्टवेयर ISM 2000 के संचालन का व्यावहारिक ज्ञान दिया। जिसमें हिंदी साफ्टवेयर को लोड करने, उसे प्रयोग में लाने तथा साफ्टवेयर की विशेष उपयोगिताओं से प्रशिक्षुओं को परिचित कराया गया। कार्यशाला में उपस्थित प्रशिक्षुओं को ISM 2000 साफ्टवेयर Phonetic Keyboard का प्रयोग करने का विशेष प्रशिक्षण दिया। कंप्यूटर कार्यशाला का द्वितीय सत्र दिनांक 19 दिसंबर 2006 को आयोजित किया गया । इस सत्र में साफ्टवेयर के संचालन का व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया गया तथा Phonetic Keyboard पर टाईपिंग का अभ्यास कराया गया।

कार्यशाला आयोजन की इस शृंखला में दिनांक 20वां 21दिसंबर 2006 को दो दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। हिंदी कार्यशाला में विभिन्न अनुभाग प्रभारियों की अनुशंसा के आधार पर 41 कार्मिकों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। प्रशिक्षुओं के प्रयोजन मूलक हिंदी, कार्यालयीन हिंदी, मानक हिंदी वर्णमाला तथा राजभाषा नीति विषयों पर जानकारी दी।

मुख्यालय 760 सीमा सड़क कृतिक बल द्वारा 56 सेना डाकघर

मुख्यालय 760 सीमा सड़क कृतिक बल में दिनांक 28 नवम्बर, 2006 से 30 नवम्बर, 2006 तक तीन दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता कर्नल राजीव कुमार कमांडर 760 सीमा सड़क कृतिक बल ने की । उन्होंने अपने अभिवादन भाषण में कहा कि जिस प्रकार कोई भी कार्यशाला में किसी भी वस्तु का जीर्णोधार कर उसे नया रूप दिया जाता है, उसी प्रकार इस हिंदी कार्यशाला का उद्देश्य हमारी हिंदी रूपी गाड़ी को नया जीवन देना है । उन्होंने कहा कि इस कार्यशाला में सरकारी काम-काज के हिंदी में करने में होने वाली दिक्कतों, मुश्किलों और झिझक को दूर करने का प्रयास किया जाएगा, ताकि भविष्य में प्रशिक्षण प्राप्त कर्मचारी अधिक से अधिक कार्य हिंदी में करके राष्ट्रभाषा का उत्थान करेंगे । इस कार्यशाला में पत्रलेखन एवं हिंदी पत्राचार में प्रयोग होने वाले अंग्रेजी व हिंदी शब्दों का अभ्यास कराया जाएगा । हिंदी हम सभी को एक सूत्र में पिरोने का कार्य करती हैं, एवं यह एक लड़ी के समान भी कार्य करती है । हम लोग वैसी हिंदी का प्रयोग करें, जो दूसरे को समझने में आसानी हो । उन्होंने उपस्थित सभी कर्मचारियों से अनुरोध किया कि वे कार्यालय में टिप्पणियाँ, आवरण पत्र एवं

छोटे-छोटे पत्रों का जबाब हिंदी में ही दें। इससे राजभाषा विभागद्वारा निर्धारित लक्ष्य अवश्य ही प्राप्त हो जाएगा। उन्होंने कार्यशाला में प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे 35 प्रतिभागियों से 55 प्रतिशत कार्य हिंदी में करने हेतु आशा व्यक्त की और कार्यालय में सरल हिंदी भाषा के प्रयोग पर बल दिया।

इस अवसर पर श्री एस बी शर्मा, वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी ने कहा कि इस कार्यशाला का उद्देश्य हिंदी को बढ़ावा देना है एवं हिंदी में कार्य करने में हो रही त्रुटि को दूर करना है। उन्होंने कहा कि हमलोग हिंदी बोल सकते हैं, तो हिंदी क्यों नहीं लिख सकते हैं। उन्होंने कहा कि आज से हम लोग अपना अधिक से अधिक कार्य हिंदी में करेंगे।

कार्मिक और प्रशिक्षण विभाग

कार्मिक और प्रशिक्षण विभाग में हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान रखने वाले अधिकारियों/कर्मचारियों को अपना सरकारी काम-काज मूल रूप से हिंदी में करने हेतु प्रेरित और प्रोत्साहित करने के प्रयोजन से दिनांक 4 सितम्बर, 2006 से 8 सितम्बर, 2006 तक प्रतिदिन दो-दो घंटे की एक पांच दिवसीय हिंदी कार्यशाला आयोजित की गई।

इस कार्यशाला में राजभाषा संबंधी आदेशों के कार्यान्वयन को सुचारू बनाने के लिए राजभाषा नीति की जानकारी भी दी गई। इसके अतिरिक्त, रोजमर्रा के काम-काज में हिंदी के प्रयोग में आने वाली व्यावहारिक कठिनाइयों को दूर करने के लिए हिंदी में टिप्पण एवं आलेखन की जानकारी भी दी गई। आयोजन की दृष्टि से यह कार्यशाला अत्यंत सफल साबित हुई और प्रतिभागियों ने काफी उत्साह से इस कार्यशाला में भाग लिया।

महानिदेशालय, भा.ति.सी.पु. बल सी.जी.ओ. कंप्लेक्स, लोधी रोड, दिल्ली-3

महानिदेशालय, भारत-तिब्बत सीमा पुलिस द्वारा भारत सरकार की राजभाषा नीति के अनुपालन एवं सरकारी काम को हिंदी में करने में कर्मचारियों की झिझक दूर करने के लिए केंद्रीय अभिलेख कार्यालय के लिपिकीय प्रशिक्षण स्कूल, तिगडी में 24 है.कां./ सी.एम. के लिए 26 से 29 दिसम्बर, 2006 तक "चार कार्य दिवसीय हिंदी कार्यशाला" आयोजित की गई।

महानिदेशालय, भा.ति.सी. पुलिस के कांफ्रेंस हॉल में आयोजित एक सादे समारोह में मुख्य अतिथि श्री सत्य व्रत त्यागी, उप महानिरीक्षक (अभियंता) ने कार्यशाला के प्रशिक्षणार्थियों को "कार्यशाला में भाग लेने संबंधी प्रमाणपत्र" एवं "सहायक साहित्य" भेंट किया।

श्री नन्द लाल, अपर उप महानिरीक्षक (प्रशासन) ने अपने स्वागत संबोधन में अवगत कराया कि महानिदेशालय द्वारा नियमित रूप से हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन किया जा रहा है। इस कार्यशाला में प्रशिक्षणार्थियों को राजभाषा नीति से अवगत कराने के साथ-साथ राजभाषा समितियों, हिंदी प्रशिक्षण, विभिन्न प्रोत्साहन योजनाओं, रिपोर्ट, पत्राचार, टिप्पण लेखन आदि की जानकारी दी गई और अभ्यास भी करवाया गया। उन्होंने आशा प्रकट की कि इस प्रकार की कार्यशालाओं के आयोजन से हिंदी में काम-काज करने का वातावरण विकसित होगा तथा हर स्तर पर सरकारी कामकाज में हिंदी का प्रयोग बढ़ेगा और कार्मिकों की हिंदी में काम करने में आने वाली कठिनाइयां भी कम होंगी। तत्पश्चात, उन्होंने हिंदी कार्यशाला की परीक्षा का परिणाम घोषित किया और प्रथम एवं द्वितीय स्थान प्राप्त प्रशिक्षणार्थियों को बधाई दी।

मुख्य अतिथि श्री सत्य व्रत त्यागी, उप महानिरीक्षक (अभियंता) ने हिंदी में कार्य करने की झिझक दूर करने के लिए चलाई जा रही हिंदी कार्यशालाा में प्रशिक्षणार्थियों के भाग लेने पर प्रसन्नता प्रकट की। उन्होंने कहा कि सरकारी काम-काज में सरल भाषा एवं शब्दों का प्रयोग करें ताकि उसे समझना आसान हो। उन्होंने आशा प्रकट की कि प्रशिक्षणार्थियों ने कार्यशाला में जो कुछ सीखा है उसे अपने साथियों को भी बताएंगे, इससे सरकारी काम में हिंदी का प्रयोग बढ़ सकेगा।

आकाशवाणी : अहमदाबाद

दिनांक 6-2-2007 को आकाशवाणी, अहमदाबाद के एचपीटी बारेजा में तकनीकी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए हिंदी की एक विशेष कार्यशाला आयोजित की गई। एचपीटी के इतिहास में उपरोक्त कार्यशाला आयोजित करने का यह पहला प्रयास था।

कार्यशाला का उद्घाटन श्री भगीरथ पंड्या, केंद्र निदेशक आकाशवाणी अहमदाबाद द्वारा किया गया । कार्यशाला का उद्घाटन करते हुए केंद्र निदेशक महोदय ने खुशी व्यक्त करते हुए सभी तकनीकी अधिकारियों एवं हिंदी अनुभाग को शुभकामनाएँ देते हुए कहा कि राजभाषा की प्रगति में यह प्रयास सार्थक सिद्ध हो सकता है । उन्होंने सभी उपस्थित अधिकारियों/कर्मचारियों का हिंदी के प्रति उत्साह देखकर सचमुच प्रसन्नता जताई । कार्यशाला में कुल 15 तकनीकी अधिकारियों/कर्मचारियों ने उत्साह से हिस्सा लिया ।

कार्यशाला में वक्ता के रूप में श्रीमती साधना भट्ट, केंद्र निदेशक, विप्रसे ने कहा कि तकनीकी सदस्यों को कार्यालय का काम राजभाषा में करते हुए सरल बोल-चाल की हिंदी का प्रयोग करना चाहिए । यदि कुछ शब्द अंग्रेजी के प्रचलित शब्द हैं तो उसको हिंदी में उसी तरह भी लिखा जा सकता है । जैसे Transmitter को यदि प्रेषित्र शब्द याद न आए तो ट्रांसमीटर लिख सकते हैं । इस तरह उन्होंने चर्चा करते हुए कई राजभाषा नियमों एवं प्रोत्साहन योजना इत्यादि की सविस्तार जानकारी दी । आगे उन्होंने कहा आप सभी को हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान है तो आप लोग सरल हिंदी में कार्य करने के प्रयास अवश्य जारी रखें और कोई भी कठिनाई आने पर हमारे हिंदी अनुभाग से संपर्क करके अपनी समस्या का निवारण अवश्य कर लें ।

आकाशवाणी : पणजी (गोवा)

18 दिसंबर, 2006 को आकाशवाणी पणजी में त्रिदिवसीय हिंदी कार्यशाला का उद्घाटन केंद्र निदेशक श्री के. राजन ने किया । अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में श्री राजन ने कहा कि दक्षिण से लेकर उत्तर और उत्तर-पूर्व तथा पूर्व से लेकर पश्चिम तक हिंदी संपूर्ण भारत की भाषा है । हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं में काफी समानता है क्योंकि हमारी सांस्कृतिक विरासत में समानता है । हमारी संस्कृति में 'विद्वान सर्वत्र पूज्यते' की विचारधारा है । हमारी हिंदी जहां विचार के क्षेत्र में समृद्ध है वही अपने भाषा वैज्ञानिक गुणों के कारण विश्वभाषा बन रही है । भारत सरकार की राजभाषा हिंदी का क्रियान्वयन और राष्ट्रभाषा हिंदी का प्रसार आकाशवाणी जैसे माध्यम से हम उत्कृष्ट ढंग से कर रहे हैं । श्री खगेश्वर प्रसाद यादव हिंदी अधिकारी ने स्वागत भाषण कर कार्यशाला की भूमिका में कहा कि स्वतंत्रता के साठवें वर्ष को आकाशवाणी पणजी राजभाषा समिति द्वारा भारती भाषाओं में समन्वय और उनके विकास के वर्ष के रूप में मनाया जा रहा है । इस हेतु प्रत्येक तिमाही में हिंदी कार्यशाला के साथ भारतीय भाषाओं में 'विविधा' आयोजित की जाती है । संसदीय राजभाषा समिति की प्रश्नावली में उल्लिखित निर्देशों के अनुरूप हम राजभाषा हिंदी के क्रियान्वयन के लिए कृत संकल्प हैं । इस अवसर पर प्रशासनिक अधिकारी श्री पीटर एम. जे. ने कहा कि सभी भारतीय भाषाओं का महत्व है लेकिन हिंदी तो हमारी राजभाषा और राष्टभाषा है । हिंदी कश्मीर से कन्याकुमारी, अंडमान-निकोबार तक हैं ।

दूरदर्शन केंद्र : नागपुर

दूरदर्शन केन्द्र, नागपुर में दि. 20-12-2006 को कार्यक्रम स्टाफ के लिए हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन केंद्र के निदेशक श्री लक्ष्मेन्द्र चोपड़ा ने किया । उपस्थित अधिकारियों को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि मीडिया के कर्मचारी जनता के लिए काम करते हैं और जनता की भाषा हिंदी है । मीडिया के लिए हिंदी कितनी आवश्यक है यह इस बात से स्पष्ट हो जाता है कि आज सारे चैनल हिंदी में काम कर रहें हैं । इसी प्रकार कार्यशाला के विषय में उन्होंने कहा कि यह कक्षा नहीं बल्कि विचारों के आदान प्रदान का माध्मय है ।

आरंभ में श्री रवीन्द्र कुमार मिश्रा, हिंदी अनुवादक ने कार्यक्रम की प्रस्तावना रखी । श्री सी.एल. नंदनपवार, सहा. केंद्र निदेशक ने 'कार्यक्रम अनुभाग में प्रशासन एवं कमर्शीयल से संबंधित कार्य' विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया जिसमें उन्होंने कार्यक्रम अनुभाग के सदस्यों को हिंदी में टिप्पण एवं प्रारूप आलेखन पर भी प्रशिक्षण दिया । कार्यशाला का संचालन श्री रवीन्द्र कुमार मिश्रा द्वारा किया गया ।

केंद्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान बहरमपुर

दिनांक 19-01-2007 को संस्थान के अधिकारी संवर्ग के पदधारियों के लिए एक पूर्ण-दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया । इस कार्यशाला में कुल 15 पदधारी प्रशिक्षित किए गए । कार्यशाला में कुल 06 कक्षाएं संचालित की गई ।

कार्यशाला के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता संस्थान के निदेशक प्रभारी, डॉ. एस.के. दास महोदय ने किया । उन्होंने अपने अध्यक्षीय अभिभाषण में कार्यशाला की आवश्यकता व महत्ता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि कार्यशाला पुनश्चर्या पाठ्यक्रम के तरह ही लाभकारी होता है और इससे अधिकारियों/कर्मचारियों को सरकारी कार्य राजभाषा हिंदी में निष्पादित करने में प्रेरणा व प्रोत्साहन के साथ-साथ एक नई दिशा प्राप्त होती है । इस अवसर पर उन्होंने प्रतिभागियों से यह भी अनुरोध किया कि वे अपना अधिकाधिक कार्य हिंदी में निष्पादित करें ।

श्री वेद प्रकाश गौड', उप निदेशक (कार्या.), राजभाषा विभाग, कोलकाता ने कहा कि हिंदी एक सरल एवं सहज भाषा है और सतत अभ्यास के जरिये इसे सहजतापूर्वक अपनाया जा सकता है । उन्होंने यह भी कहा कि कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य पदधारियों को हिंदी के प्रति व्याप्त झिझक को दूर करता है । तत्पश्चात, उनके द्वारा कार्यशाला में राजभाषा नियम एवं अधिनियम तथा ''टिप्पण-लेखन व आवतियों के निष्पादन की प्रक्रिया'' ''पत्राचार के विविध स्वरूप एवं तत्संबंधी कार्रवाई'', ''तकनीकी शब्दावली एवं उनके प्रर्याय तथा राजभाषा नीति एवं इसके अनुपालन जैसे विविध विषयों पर व्याख्यान के साथ-साथ उन विषयों को सहजतापूर्वक हिंदी में प्रस्तुत करने की सरल पद्धति पर प्रकाश डाला गया । सर्वशेष में उन्होंने उक्त विषयों से जुड़े विविध पहलुओं पर एक जांच परीक्षा का भी आयोजन किया जिसमें सभी प्रतिभागीगण उत्सुकता के साथ भाग लिए ।''

बुनियादी तसर रेशमकीट बीज संगठन बुनियादी बीज प्रगुणन एवं प्रशिक्षण केंद्र, केंद्रीय रेशम बोर्ड मेन रोड, मोती नगर, बालाघाट (म.प्र.)

23-12-2006 को केंद्रीय रेशम बोर्ड की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बालाघाट इकाई द्वारा केंद्र के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए श्री देबाशीष दास, उप निदेशक एवं अध्यक्ष, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की अध्यक्षता में चालू वर्ष की तृतीय तिमाही की हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया । इस अवसर पर अपने अध्यक्षीय भाषण में श्री देबाशीष दास द्वारा मुख्यत: राजभाषा हिंदी में कार्य करने में आने वाली छोटी-छोटी कठिनाइयों पर प्रकाश डालते हुए केंद्र के अधिकारियों द्वारा शासकीय कार्य में हिंदी देवनागरी अपनाए जानें पर उनकी भूरि-भूरि प्रसंशा की गई तथा आग्रह किया कि भविष्य में भी हम राजभाषा हिंदी में ही कार्य करते रहें । उस अवसर पर मुख्य रूप से हिंदी के प्रशिक्षक के रूप में आमंत्रित श्री टी.सी. बिसेन, हिंदी व्याख्यता, महर्षि विद्यालय, बालाघाट ने अधिकारियों एवं कर्मचारियों को व्याकरण संबंधी नियमों, वाक्यों में शब्दों का चयन एवं प्रयोग तथा संधि के रूपों आदि से अवगत कराया ।

भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण, क्षेत्रीय कार्यालय, चैन्नई-600027

कार्यालय में राजभाषा हिंदी कार्यान्वयन के लिए अनुकूल वातावरण तैयार करने तथा हिंदी में कार्य करने की झिझक को दूर करने के उद्देश्य से क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नई में दिनांक 13-02-2007 को 72वीं एक दिवसीय हिंदी कार्यालय का आयोजन किया गया ।

13 फरवरी, 2007 को प्रात: 10.00 बजे उद्घाटन समारोह का आयोजन किया गया जिसमें डॉ. के. रामलिंगम, क्षेत्रीय कार्यपालक निदेशक (दक्षिणी क्षेत्र), ने अध्यक्षीय भाषण में बताया कि इस कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य राजभाषा अधिनियम, 1963 का शतप्रतिशत अनुपालन, रबड़ मोहर, सूचना पट्ट, नाम पट्ट आदि द्विभाषी में मुद्रण करना और कार्यशाला से प्राप्त ज्ञान का अधिकाधिक उपयोग करना है । उन्होंने कार्यशाला से अर्जित जानकारी से छोटी-छोटी टिप्पणियाँ लिखने, आवरण पत्र और परिपत्र तैयार करने का आह्वान किया ।

सुश्री सुगंधी हरिराम दास, सहायक निदेशक, भारत संचार निगम लिमिटेड, चेन्नई द्वारा ''राजभाषा कार्यान्वयन'' के विषय पर व्याख्यान दिया गया । दूसरे सत्र में अतिथि वक्ता के रूप में श्रीमती प्रतिभा मल्लिक, हिंदी प्राध्यापिका, हिंदी शिक्षण योजना, चेन्नई द्वारा ''प्रशासनिक प्रत्राचार'' के विषय पर व्याख्यान दिया और कुछ प्रशासनिक पत्राचार

के नमूने को लेकर प्रतिभागियों से अभ्यास करवाया । इन दोनों सत्रों के प्रभावपूर्ण व्याख्यानों से प्रशिक्षणार्थियों को राजभाषा हिंदी की काफी प्रेरणा मिली । प्रबंधक (रा.भा.) ने 'हवाई अड्डा प्रबंधन के लिए विभिन्न क्षेत्रों में हिंदी का प्रयोग' और 'संसदीय राजभाषा समिति निरीक्षण' संबंधी विषय पर जानकारी दी ।

भारतीय खाद्य निगम, जिला कार्यालय, अलीगढ़

दिनांक 16-10-06 दिवस सोमवार को पूर्वाह्न 10 बजे से हिंदी कार्यशाला का आयोजन, बैठक सभागार, कृषि प्रसार केंद्र, क्वार्सी फार्म, रामघाट रोड, अलीगढ़ पर किया गया । इस कार्यशाला के माध्यम से जिला कार्यालय, अलीगढ़ में कार्यरत सभी अधिकारियों व कर्मचारियों को अपना अधिक से अधिक कार्यालय कार्य राजभाषा में करने के लिए प्रेरित व प्रशिक्षित किया गया ।

श्री सुरेन्द्र मोहन सिंह, हिंदी प्रभारी, निगम जिला कार्यालय, इलाहाबाद ने कार्यशाला व्यख्याता के रूप में हिंदी भाषा व नागरी लिपि का परिचय प्रस्तुत किया । प्रसिद्ध व्याकरणाचार्य व भाषाविद् डा. अशोक शर्मा, प्रोफेसर हिंदी विभाग, धर्म समाज स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अलीगढ़ ने हिंदी वर्तनी व कार्यालय व्यवहार में आने वाली व्याकरणीय अशुद्धियों को रोचक ढंग से स्पष्ट किया । उन्होंने हिंदी भाषा व नागरी लिपि को संसार की सबसे सरलतम, सुबोध गम्य व व्यवहारिक भाषा बताया ।

कार्यशाला का उद्घाटन मुख्य अतिथि श्री भंवर सिंह, उप महाप्रबन्धक, भारतीय खाद्य निगम, क्षेत्रीय कार्यालय, लखनऊ द्वारा मां सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण व मंगलदीप प्रज्जवलन किया । अपने संबोधन में उन्होंने जिला कार्यालय, अलीगढ़ के "क" क्षेत्र में स्थित होने के कारण अपना कार्यालय कार्य शत-प्रतिशत हिंदी में करने का आह्वान किया । प्रबन्धक (हिंदी), श्री भूपेन्द्र कुमार ने बताया कि इस प्रकार की कार्यशालाओं का आयोजन, भारत सरकार राजभाषा विभाग व निगम प्रधान कार्यालय, नई दिल्ली के दिशा-निदेशों के तहत किया जाता है ।

क्षेत्र प्रबंधक श्री बी.पी. पालीवाल ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में जिला कार्यालय के हिंदी पत्राचार के शत-प्रतिशत लक्ष्य को शीघ्र प्राप्त करने पर जोर दिया । कार्यालय के हिंदी प्रभारी श्री अजेय दत्त ने हिंदी अनुभाग की उपलब्धियों को स्पष्ट करते हुए बताया कि हिंदी अनुभाग के तत्वावधान में अधिकारियों/कर्मचारियों के विभिन्न प्रतियोगताओं/कार्यशालाओं/संगोष्ठियों का आयोजन इसलिए किया जाता है कि ताकि कर्मचारियों को हिंदी में शत-प्रतिशत कार्यालय कार्य करने के लिए अभिप्रेरित कर प्रशिक्षित किया जा सके ।

भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण, मंगलूर हवाई अड्डा, मंगलूर

मंगलूर हवाई अड्डे में हिंदी ज्ञात कर्मचारियों हेतु दिनांक 17-10-2006 को एक दिवसीय उन्नत हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया ।

विमानपत्तन निदेशक श्री एम. आर. वासुदेव ने, अपने अध्यक्षीय भाषण में, कार्यशाला के महत्व के बारे में अवगत कराया और हिंदी में काम करने वाले सभी पदाधिकारियों की सराहना की । श्रीमती जयलक्ष्मी, सहायक निदेशक (रा.भा.), भारतीय संचार निगम लिमिटेड, मंगलूर ने कार्यालय में राजभाषा कार्यान्वयन के बारे में नामांकित पदाधिकारियों को अवगत कराया । उन्होंने राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी नियमों विनियमों के अनुपालन की मुख्यता के ऊपर बल दिया एवं धारा 3(3) के अंतर्गत जारी किए जाने वाले कागजातों के विशेषता एवं धारा 3(3) के उल्लंघन पर अधिकारियों के ऊपर ली जाने वाली कार्रवाई के बारे में सभी को अवगत कराया ।

श्री संतोष कुमार, हिंदी प्राध्यापक, हिंदी शिक्षण योजना, गृह मंत्रालय द्वारा "कार्यालयीन अनुवाद" पर व्याख्यान दिया गया । उन्होंने नामांकित पदाधिकारियों को अवगत कराया कि अनुवाद एक कला है और सार्थक अनुवाद के लिए अभ्यास की जरूरत है ।

अपराह्न सत्र में, डॉ. शोभा, हिंदी प्राध्यापिका, सेईट एग्नेस पी.यू. काले, बेन्दुर, मंगलूर द्वारा "सामान्य हिंदी

व्याकरण'' पर व्याख्यान दिया गया । लिंग की समस्या, वर्तनी का सही प्रयोग आदि पर चर्चा हुई । प्रतिभागियों द्वारा व्याकरण सम्मिलित चार प्रश्नपत्रों का उत्तर दिया गया । इस सत्र के दौरान प्रतिभागियों ने लिंग की समस्या, का, के, की, का सही प्रयोग आदि पर अपने कई शंकाओं के बारे में सुवक्ता से विस्तृत चर्चा की ।

नैशनल हाइड्रोइलैक्ट्रिक पावर कारपोरेशन लिमिटेड एन.एच.पी.सी. कार्यालय परिसर, सैक्टर-33, फरीदाबाद-121003 (हरियाणा)

दिनांक 23-01-2007 को विभिन्न विभागों में कार्यरत सहायक प्रबंधक/उप प्रबंधक स्तर के कार्मिकों के लिए एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया । इस कार्यशाला में विभिन्न विभागों के 19 प्रतिभागियों ने भाग लिया । इस कार्यशाला का उद्‌घाटन श्री एस.डी. त्रिपाठी कार्यपालक निदेशक (वाणिज्यिक) एवं श्री उपेन्द्र राय, महाप्रबंधक (मा.स.वि. कारपोरेट संचार व राजभाषा) ने अपने संबोधन भाषण में राजभाषा हिंदी के महत्व पर प्रकाश डाला और कहा कि हमारे निगम में यद्‌यपि राजभाषा नियमों का अनुपालन सुनिश्चित करने के अनेक प्रयास किए जा रहे हैं और राजभाषा कार्यान्वयन की दिशा में सराहनीय प्रयासों के लिए हमारे निगम को समय-समय पर पुरस्कार और राजभाषा शील्ड भी प्रदान की गई तथापि वार्षिक कार्यक्रम के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए अभी और प्रयास करने की जरूरत है । राजभाषा हिंदी के प्रति हमें अपनी मानसिकता बदलनी होगी । उन्होंने कहा कि हमें लिखते समय बोलचाल की भाषा का प्रयोग करना चाहिए । कार्यशाला के प्रथम सत्र का संचालन श्री माणिक मृगेश, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) इंडियन ऑयल कारपोरेशन ने किया । डॉ. मृगेश ने उपस्थित प्रतिभागियों को **''राजभाषा नीति तथा हिंदी के प्रगामी प्रयोग''** विषय पर विस्तृत जानकारी दी । साथ ही उन्होंने भाषा के महत्व पर प्रकाश डालते हुए मातृभाषा, राष्ट्रभाषा तथा राजभाषा का अंतर स्पष्ट किया । उन्होंने बहुत ही रोचक तरीके से प्रतिभागियों को कार्यालयीन कार्यों में शब्दों के सही प्रयोग की जानकारी दी । कार्यशाला के दूसरे सत्र में श्री विपुल रस्तोगी, प्रमुख, लिंग्वा सॉल्युशन्स ने उपस्थित प्रतिभागियों को ''कम्प्यूटर पर हिंदी प्रयोग की सुविधाएं और संभावनाएं'' विषय पर महत्वपूर्ण जानकारी दी तथा कंप्यूटर पर हिंदी में कार्य करने का अभ्यास कराया ।

बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जबलपुर, म.प्र. भारतीय स्टेट बैंक, आंचलिक कार्यालय, विजय नगर, जबलपुर

बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति जबलपुर के तत्वावधान में भारतीय स्टेट बैंक आंचलिक कार्यालय विजय नगर के चतुर्थ तल स्थित सभाकक्ष में संयुक्त हिंदी कार्यशाला एवं साहित्यकार सम्मान कार्यक्रम दिनांक 19 जनवरी, 2007 को सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ ।

नगर स्थित बैंकों के स्टाफ सदस्यों के लिए संयुक्त हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया । आयोजन का शुभारंभ भारतीय स्टेट बैंक भोपाल मंडल के महाप्रबंधक नेटवर्क-1 श्री एस. एम. जोशी तथा बैंक न रा का स अध्यक्ष एवं भारतीय स्टेट बैंक के उप महाप्रबंधक श्री सी. पी. सिंह ने मां सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्ज्वलित कर किया । इस अवसर पर भारतीय स्टेट बैंक के क्षेत्रीय प्रबंधक श्री आर. एम. विरमानी एवं सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया के क्षेत्रीय प्रबंधक श्री जी. एस. चाहर सहित नगर स्थित समस्त बैंकों के कार्यपालक एवं अन्य अधिकारी एवं कर्मचारी सहित 10 बैंकों के कुल 40 सदस्य भी उपस्थित थे । कार्यक्रम में उपस्थित सभी सहभागियों को अतिथि वक्ताओं द्वारा राजभाषा नियम अधिनियम, प्रयोजनमूलक हिंदी की आवश्यकता, हिंदी पत्राचार/शब्दावली/कार्यालयीन टिप्पण वाणिज्यिक हिंदी आदि विषयों की जानकारी दी गई । कार्यशाला के दौरान सभी सहभागियों की परिचर्चा में सक्रिय भागीदारी रही । कार्यशाला समाप्ति के उपरांत विभिन्न सत्रों के दौरान दी गई जानकारी पर आधारित एक प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया तथा प्रतियोगिता में सर्वोत्तम स्थान पाने वाले प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया ।

(घ) हिंदी दिवस

लघु उद्योग सेवा संस्थान, कोलकाता

दिनांक 1 से 14 सितंबर, 2006 की अवधि में हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया और बृहस्पतिवार, दिनांक 14 सितंबर, 2006 को हिंदी दिवस का पालन किया गया। हिंदी पखवाड़ा के दौरान विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

दिनांक 1 सितंबर, 2006 को अपराह्न 2.30 बजे संस्थान के संगोष्ठी सभागार में हिंदी पखवाड़ा का विधिवत उद्घाटन संस्थान के निदेशक महोदय श्री एन.एन. देबनाथ द्वारा किया गया। अपने उद्घाटन भाषण में श्री देबनाथ जी ने कहा कि हिंदी हमारे देश की राजभाषा है और संपर्क भाषा है। देश में हिंदी बोलने और समझने वालों की संख्या सर्वाधिक है। उन्होंने सभी अधिकारियों और कर्मचारियों से आग्रह किया कि वे हिंदी पखवाड़ा के दौरान अधिक से अधिक अपना सरकारी काम-काज हिंदी में ही करके इसे सफल बनाएं। इस अवसर पर स्वागत भाषण प्रस्तुत करते हुए संस्थान के सहायक निदेशक (इलेक्ट्रानिकी) एवं नामित राजभाषा अधिकारी श्री ए.के. वर्मा ने कहा कि देवनागरी लिपि में लिखी जाने वाली हिंदी हमारी राजभाषा है। हिंदी में सरकारी कामकाज करना आसान है। आज से शुरू हो रहे हिंदी पखवाड़ा के दौरान विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया है। उन्होंने सभी पदधारियों से अनुरोध किया कि इन हिंदी प्रतियोगिताओं में उत्साहपूर्वक भाग लेकर हिंदी पखवाड़ा को सफल बनाएं।

तत्पश्चात श्री कन्हैयालाल वर्मा, वरिष्ठ हिंदी अनुवादक ने हिंदी पखवाड़ा के दौरान आयोजित किए जाने वाले विभिन्न कार्यक्रमों जैसे--हिंदी प्रतियोगिताएं, हिंदी कार्यशाला, भारत सरकार, सूचना और प्रसारण मंत्रालय के गीत एवं नाटक प्रभाग के द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुति आदि के संबंध में विस्तार से बताया।

दिनांक 14 सितंबर, 2006 को पूर्वाह्न 11.30 बजे संस्थान के संगोष्ठी सभागार में हिंदी दिवस का हर्षोल्लास के साथ पालन किया गया और दिनांक 01 से 14 सितंबर, 2006 की अवधि में मनाए गए हिंदी पखवाड़ा का समापन समारोह भी आयोजित किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में कलकत्ता विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग की डॉ. राजश्री शुक्ला को आमंत्रित किया गया। डॉ. शुक्ला ने अपने भाषण में हिंदी के महत्व एवं प्रचार-प्रसार पर प्रकाश डालते हुए कहा कि हिंदी एक दूसरे को आपस में जोड़ने वाली भाषा है। उन्होंने सशक्त माध्यम के रूप में हिंदी के अनेक तथ्यों को प्रस्तुत किया। डॉ. शुक्ला ने बताया कि हिंदी एक सहज और सरल भाषा है जिसके शब्दों का प्रयोग अनेक भाषाओं में मिलता है। उन्होंने यह भी बताया कि जब भारत देश अंग्रेजों के अधीन था तब अंग्रेजी हुकमत को यह मानना पड़ा था कि यदि भारत देश पर अधिक समय तक शासन करना है तो हिंदी भाषा को अपनाना पड़ेगा क्योंकि यह भाषा देश के अधिकांश भागों में बोली और समझी जाती थी। इसीलिए हिंदी भाषा के ज्ञान के लिए सर्वप्रथम कलकत्ता के फोर्ट विलियम कालेज में हिंदी का अध्ययन शुरू किया गया। उन्होंने विभिन्न प्रान्तीय भाषाओं में हिंदी भाषा के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि विभिन्न प्रान्तों में रहने वाले कई महान व्यक्तियों ने हिंदी में अनेक प्रेरणादायक साहित्य एवं कविताएं लिखी हैं जिससे यह प्रतीत होता है कि हिंदी ही एक ऐसी भाषा है जो आज भी देश के एक कोने से दूसरे कोने तक किसी न किसी रूप में विद्यमान है।

तत्पश्चात् अध्यक्षीय भाषण प्रस्तुत करते हुए संस्थान के निदेशक श्री एन.एन. देबनाथ ने कहा कि राजभाषा हिंदी देश की एकता का प्रतीक है जो सभी को एक सूत्र में पिरोए हुए है। उन्होंने सभी अधिकारियों और कर्मचारियों से आग्रह किया कि वे केवल हिंदी पखवाड़ा ही नही बल्कि प्रतिदिन अपना सरकारी कामकाज अधिक से अधिक हिंदी में ही करने का प्रसास करें।

मुख्य आयकर आयुक्त कार्यालय (सं.नि.प्रा.), गुवाहाटी

सैकिया कमर्शियल कांम्प्लेक्स, श्री नगर, जी. एस. रोड, गुवाहाटी-781005

मुख्य आयकर आयुक्त कार्यालय, सैकिया कमर्शियल कांम्प्लेक्स, गुवाहाटी में दिनांक 07-09-2006 से 14-09-2006 तक हिंदी सप्ताह मनाया गया जिसकी रिपोर्ट निम्नलिखित प्रकार से है ।

दिनांक 07-09-2006 को हिंदी सप्ताह का उद्‌घाटन श्री एन. एल. माओ, भा.रा.से., आयकर आयुक्त गुवाहाटी-II, गुवाहाटी ने दीप प्रज्ज्वलित करके किया । इस अवसर पर श्री शेष मणि शुक्ल, सहायक निदेशक (राजभाषा) ने अध्यक्ष सहित वहां उपस्थित सभी अधिकारियों तथा कर्मचारियों का स्वागत किया । तत्पश्चात उन्होंने राजभाषा हिंदी का संवैधानिक स्थिति पर संक्षिप्त प्रकाश डाला और सप्ताह के दौरान आयोजित की जाने वाला प्रतियोगिताओं की घोषणा की । अपने अध्यक्षीय भाषण में श्री एन.एल. माओं भ.रा.से., आयकर आयुक्त, गुवाहाटी ने समस्त अधिकारियों तथा कर्मचारियों से अपील की, कि वे सप्ताह के दौरान अपना समस्त सरकारी कार्य राजभाषा हिंदी में निष्पादित करें । अंत में श्री के.के. सिन्हा, भ.रा.से., आयकर आयुक्त (अपील)-II, गुवाहाटी एवं नामित राजभाषा अधिकारी ने सभी का धन्यवाद ज्ञापन किया ।

सप्ताह के दौरान कार्यालय के अधिकारियों के बीच मूल रूप से हिंदी में काम करने की भावना विकसित करने तथा उन्हें प्रोत्साहित करने के उद्‌देश्य से निम्नलिखित प्रतियोगिताएं आयोजित की गई तथा प्रत्येक प्रतियोगिता के लिए प्रथम, द्‌वितीय, तृतीय पुरस्कार तथा एक विशेष पुरस्कार क्रमशः रुपये 1500, 1200, 1000, रु. की राशि नकद रूप में वितरित की गई :

महालेखाकार (ले.प.) का कार्यालय, मणिपुर, इम्फाल-795001

दिनांक 14-9-2006 से 28-9-2006 तक लेखा परीक्षा और लेखा व हकदारी कार्यालयों में संयुक्त रूप से हिंदी पखवाड़ा मनाया गया । हिंदी पखवाड़ा के दौरान हिंदी गीत, हिंदी निबंध, अनुवाद, कविता, टिप्पण लेखन, पत्राचार, हिंदी में भाषण, श्रुतलेख आदि प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया । इसमें अनेक प्रतिभागियों ने भाग लिया । इन प्रतियोगिताओं में प्रथम, द्‌वितीय तथा तृतीय स्थान प्राप्त करने वालों को समापन समारोह के मुख्य अतिथि श्रीमती अ.रिना के कर कमलों से नकद पुरस्कार व प्रमाण-पत्र प्रदान किए । श्रीमती रेना ने इस अवसर पर हिंदी में अधिक से अधिक काम करने पर जोर दिया । उन्होंने कहा कि हिंदी हमारी राष्ट्रभाषा है उसका सम्मान करने में हमें गर्व है ।

राष्ट्रीय क्षय रोग संस्थान, स्वास्थ्य सेवा महानिदेशालय, नं.-8, बेल्लारी रोड, बेंगलूर-560003

संस्थान में दिनांक 7-9-2006 से 14-9-2006 तक हिंदी सप्ताह और दिनांक 14-9-2006 को हिंदी दिवस बड़ी धूम-धाम से मनाया गया, जिसमें हिंदी कार्यान्वयन की दिशा में कर्मचारियों को प्रोत्साहित करने के लिए हिंदी सप्ताह में विभिन्न प्रतियोगिताओं को आयोजित किया गया । प्रतियोगिताओं में कर्मचारियों ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया । हिंदी सप्ताह के शुभारंभ के लिए कर्मचारी एवं अधिकारीगण काफी संख्या में इकट्‌ठे हुए । इस समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. काशीकांत झा, अध्यक्ष, क्षय रोग केंद्र एवं श्री संजीवैय्या जी सेवानिवृत्त रक्षा मंत्रालय ने अपने-अपने भाषण में राजभाषा हिंदी की प्रगति के लिए विचार प्रस्तुत किए ।

हिंदी सप्ताह के समापन समारोह की मुख्य अतिथि डॉ. टी.जी. प्रभा शंकर प्रमी ने अपने भाषण में उपस्थित सभी कर्मचारियों को संबोधित करते हुए कहा कि भारत में विभिन्न भाषाएं बोलने वालों को एक करने के लिए राजभाषा हिंदी को प्रयोग में लाना आवश्यक है । उन्होंने हिंदी भाषा की सरलता एवं प्रयोग की आवश्यकता पर जोर दिया । जिस तरह दूसरे कार्यों में हिंदी का प्रयोग किया जा रहा है, उसी तरह कार्यालय के काम में भी हिंदी के प्रयोग को प्राथमिकता तथा प्रधानता देने की आवश्यकता है ।

हिंदी के विकास के बारे में चर्चा करते हुए मुख्य अतिथि ने कहा कि राजभाषा हिंदी जानने वाले तो किसी भी स्थान पर हिंदी का प्रयोग आसानी से कर सकते हैं । उन्होंने

जोर दिया कि हमें दैनिक कामकाज में भी हिंदी का उपयोग करना बहुत आवश्यक है । सभी अधिकारियों/कर्मचारियों से अपेक्षा की जाती है कि वे यथासंभव पत्रों तथा दस्तावेजों को हिंदी में तैयार करने का प्रयत्न करना चाहिए । संस्थान के हिंदी प्रशिक्षण के महत्व के बारे में कहा कि हिंदी के प्रशिक्षण को भी आयोजित करने के लिए प्रयास करने चाहिए । हिंदी सप्ताह के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाले बच्चों एवं कार्यालय के कर्मचारियों को प्रोत्साहन भत्ता तथा मुख्य अतिथि एवं निदेशक ने पुरस्कार एवं प्रमाणपत्र वितरित किए गए ।

प्रशासन संघ प्रदेश दादरा एवं नगर हवेली, सिलवासा

संघ शासित प्रदेश दादरा एवं नगर हवेली प्रशासन के राजभाषा विभाग तथा नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के संयुक्त तत्वावधान में हिंदी के प्रचार व प्रसार को बढ़ावा देने के उद्देश्य से दिनांक 01-09-2006 से 13-09-2006 तक 'संयुक्त हिंदी पखवाड़ा' के अंतर्गत 16 हिंदी प्रतियोगिताएं आयोजित की गई और उन प्रतियोगिताओं के 206 विजेता कर्मचारी/अधिकारी/गैर सरकारी व्यक्तियों को दिनांक 14-09-2006 को 'हिंदी दिवस' के दिन श्री एस.एल. बंसल, माननीय सचिव (वित्त राजभाषा) के कर-कमलों द्वारा पुरस्कार वितरित किए गए । इसके साथ-साथ 'हिंदी की कार्यशालाएँ तथा हिंदी विकास सम्मेलन और 'हिंदी काव्य-संगोष्ठी' इत्यादि का भी समय-समय पर आयोजन किया जा रहा है ।

प्रधान निदेशक लेखा परीक्षा का कार्यालय, मध्य रेल, नवीन प्रशासनिक भवन, दा. नै. मार्ग, सी.एस.टी. मुंबई-400001

राजभाषा के रूप में हिंदी के प्रति जागरूकता तथा उसके उत्तरोत्तर प्रयोग में गति लाने के उद्देश्य से श्रीमती माला हिंदी प्रधान निदेशक लेखा परीक्षा, मध्य रेल, मुंबई की अध्यक्षता में दिनांक 15-09-2006 को मुख्यालय में हिंदी पखवाड़े के मुख्य समारोह का आयोजन किया गया । प्रधान निदेशक लेखा परीक्षा ने सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से अपील की, कि वे राजभाषा हिंदी को अपने कामकाज और व्यवहार में अधिक से अधिक प्रयोग करें, तथा इसे संपर्क भाषा और राजभाषा के रूप में आगे बढ़ाएं । प्रधान निदेशक लेखा परीक्षा, ने यह भी कहा कि सभी अधिकारी एवं कर्मचारी हिंदी दिवस के अवसर पर संकल्प लें कि राजभाषा द्वारा निर्धारित लक्ष्य को शीघ्र प्राप्त कर लेगें । कार्यालय द्वारा हिंदी में निबन्ध और कविता की खुली प्रतियोगिता का आयोजन हिंदी पखवाड़े के अवसर पर किया गया । प्रतियोगिता में भाग लेने वाले कर्मचारियों को प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार से तथा सभी भाग लेने वाले कर्मचारियों को प्रोत्साहन पुरस्कार से प्रधान निदेशक लेखा परीक्षा द्वारा सम्मानित किया गया ।

पश्चिमी बेस कर्मशाला (ग्रेफ) पठानकोट

01 सितम्बर 2006 से 14 सितम्बर 2006 तक हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया गया । हिंदी पखवाड़ा का उदघाटन 01 सितम्बर 2006 को प्रात: 09.00 बजे कार्यवाहक कमांडर श्री आर के श्रीवास्तव, कार्यापालक अभियंता (वि/यॉ), महोदय द्वारा द्वीप प्रज्ज्वलित कर किया गया । कमांडर महोदय ने अपने उद्घाटन भाषण में कर्मशाला के सभी अधिकारियों एवं कार्मिकों को अपना अधिक से अधिक कार्य राजभाषा हिंदी में करने तथा सभी अधिकारियों एवं कार्मिकों की राजभाषा हिंदी की संवैधानिक स्थिति की जानकारी देते हुए हिंदी के महत्व पर प्रकाश डाला । उन्होंने सरकारी काम में सरल व काम चलाऊ हिंदी का प्रयोग करने पर बल दिया ताकि हिंदी का विकास हो सके । राजभाषा अधिकारी श्री बी डी जोशी, कार्य प्रशासनिक प्रबंधक महोदय ने हिंदी के उत्तरोतर विकास पर अपने विचार व्यक्त करते हुए पश्चिमी बेस कर्मशाला के सभी कार्मिकों को हिंदी में काम करने के लिए प्रेरित करते हुए सरकार द्वारा केंद्र सरकार के कार्मिकों को हिंदी में काम करने से सरकार द्वारा दी जा रही प्रोत्साहन योजनाओं के विषय में अवगत कराया ।

हिंदी अनुवादक द्वारा हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित होने वाले कार्यक्रमों एवं प्रतियोगिताओं की विस्तृत जानकारी दी गई ।

दिनांक 14 सितम्बर 2006 हिंदी दिवस के दिन विशेष ग्रेफ सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें कमांडर

महोदय ने कर्मशाला में 16 अगस्त 2006 से 26 अगस्त 2006 के दौरान आयोजित हिंदी कार्यशाला में भाग लेने एवं हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित हिंदी प्रतियोगिताओं में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान पर आने वाले कार्मिकों को नगद एवं प्रशसति पत्र प्रदान किए ।

आकाशवाणी : डिब्रूगढ़

केंद्र में दिनांक 8 से 14 सितंबर, 2006 तक हिंदी सप्ताह का आयोजन बड़े धूम-धाम से किया गया । इस दौरान विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया ।

पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन दिनांक 14 सितंबर को आकाशवाणी, डिब्रूगढ़ के सभा कक्ष में किया गया । समारोह की अध्यक्षता केंद्र के अधीक्षण अभियंता श्री विष्णुदत्त शर्मा ने किया । कार्यक्रम का प्रारंभ श्री राम मूर्ति मिश्र, सहायक केंद्र अभियंता ने स्वागत भाषण से किया । असम की परंपरा के अनुसार केंद्र के कार्यालय प्रधान तथा समारोह के अध्यक्ष श्री विष्णु दत्त शर्मा द्वारा समारोह के मुख्य अतिथि भारत संचार निगम लिमिटेड के उप-महा प्रबंधक श्री फणी धर कुमार को सम्मानित किया गया ।

इसके बाद मुख्य अतिथि ने अपने भाषण में राजभाषा हिंदी के महत्व को व्यापक रूप से स्पष्ट किया और संपर्क भाषा के रूप में पूरे भारत में हिंदी की महत्वपूर्ण भूमिका के बारे में भी बताया । उन्होंने यह भी कहा कि केंद्र में इस प्रकार की हिंदी प्रतियोगिताओं के आयोजन से निश्चित तौर पर कार्यालय में हिंदी में काम करने का वातावरण पैदा होता है । राजभाषा हिंदी को उसका समुचित स्थान दिलाने के लिए हम सबको और अधिक प्रयास करने की आवश्यकता है ।

अध्यक्ष महोदय ने अपने भाषण में विचार प्रकट करते हुए कहा कि हम सबको हिंदी में अधिक से अधिक कार्य करने का प्रयास करना चाहिए । उन्होंने सभी कर्मचारियों को विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग लेकर हिंदी सप्ताह एवं समारोह को सफल बनाने के लिये हार्दिक धन्यवाद ज्ञापन किया ।

सहकारी केंद्र निर्देशक श्री दिलीप कुमार दास ने अपने भाषण में कहा कि अपने कार्यालय संबंधी कार्यों में हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करना चाहिए । हिंदी सप्ताह के अवसर पर विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग लेकर सभी ने जो उत्साह दिखाया है, वह उत्साह हमें अपने कार्यालय के दैनिक क्रिया कलापों में भी शामिल करना चाहिए ।

आकाशवाणी, कटक

केंद्र में दिनांक 14 सितम्बर से 28 सितम्बर, 2006 तक हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया । 14 सितंबर को अपराह्न 3.00 बजे सम्मेलन कक्ष में आयोजित उद्घाटन सभा में केंद्र अभियन्ता तथा कार्यालयाध्यक्ष श्री बसन्त कुमार बेहेरा ने अध्यक्षता की । केंद्र अभियंता ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि राष्ट्रीय महत्व के इस कार्य में सबको सहयोग देना चाहिए । भारत वर्ष में अनेक भाषाऐं बोली जाती है और सभी भाषाओं का साहित्य अति उच्चमान का है । परन्तु अगर हमें हिंदी आती है तो भारत के किसी भी प्रान्त में जाने पर हमे कोई परेशानी नहीं होगी ।

इस दौरान विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं का आयोजन आकाशवाणी, कटक के हिंदीतर-भाषी अधिकारी एवं कर्मचारियों के लिए किया गया । पखवाड़े का पुरस्कार वितरण समारोह 28 सितंबर, 2006 को अपराह्न 3.00 बजे आकाशवाणी, कटक के सम्मेलन कक्ष में आयोजित किया गया ।

दूरदर्शन केंद्र, मुम्बई-30

केंद्र में दिनांक 14 सितंबर, 2006 से 27 सितंबर, 2006 तक हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया । इस दौरान निदेशक महोदय का कर्मचारी सदस्यों के नाम संदेश, अधिकारियों एवं कर्मचारियों को राजभाषा नियमों, वार्षिक कार्यक्रमों इत्यादि से अवगत कराया जाना, सभी अनुभागों/अधिकारियों द्वारा अपना संपूर्ण कार्यालयीय कार्य हिंदी में करना, अधिकारियों के लिए हिंदी कार्यालय का आयोजन इत्यादि कार्यक्रम किए गए । इसके अतिरिक्त कर्मचारी सदस्यों में हिंदी के प्रति उत्साहवर्धन के लिए हिंदी की विभिन्न प्रतियोगिताओं यथा-हिंदी निबंध, राजभाषा प्रश्नोत्तरी, टिप्पण, एवं आलेखन, आप की भाषा आप के विचार, हिंदी कविता लेखन इत्यादि का भी आयोजन किया गया । काफी बड़ी संख्या में अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने इसमें भाग लिया । प्रतियोगिताओं में भाग लेकर पुरस्कार जीतने वाले

अधिकारियों एवं कर्मचारियों को पुरस्कार प्रदान करने के लिए केंद्र के सभागार में दिनांक 6-11-2006 को अपराह्न 3.00 बजे पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया ।

आकाशवाणी : चूरू

आकाशवाणी, चूरू में दिनांक 14 सितंबर, 2006 को 'हिंदी दिवस' मनाया गया एवं उसी दिन से दिनांक 28 सितंबर, 2006 तक राजभाषा पखवाड़ा राजभाषा पर्व के रूप में मनाया गया ।

दिनांक 14 सितंबर, 2006 को हिंद्री दिवस एवं पखवाड़े का उद्घाटन श्री आर. एल. असवाल, केंद्र अभियंता ने किया । उन्होंने महानिदेशालय से प्राप्त महानिदेशक महोदय की अपील को पढ़ कर सुनाया ।

हिंदी अधिकारी ने सभी का स्वागत करते हुए हिंदी दिवस और पखवाड़े के दौरान आयोजित होने वाली प्रतियोगिताओं की चर्चा की । केंद्र के सभी कर्मचारियों को बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेने के लिए प्रेरित किया ।

पखवाड़े के दौरान श्रुतलेख एवं हिंदी निबंध की प्रतियोगिता आयोजित की गई जिसमें कार्यालय के कई सदस्यों ने हिस्सा लिया ।

आकाशवाणी जोधपुर (राजस्थान)

दिनांक 14-9-2005 से दिनांक 28-9-2006 तक हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया गया । इस पखवाड़े में केंद्र पर हिंदी भाषा को बढ़ावा देने हेतु विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिसमें समस्त कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया ।

पखवाड़े के दौरान कर्मचारियों के हिंदी में कार्य करने के उत्साहवर्द्धन हेतु विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन केंद्राध्यक्ष महोदय, हिंदी अधिकारी एवं तकनीकी अनुभाग के सहयोग से संपन्न हुआ । हिंदी पखवाड़े का समापन एवं पुस्कार विवरण समारोह दिनांक 28-9-06 को केंद्र निदेशक श्री बी. सी. पवार एवं श्री एस.पी. चावला केंद्र अभियंता द्वारा विजेताओं को वितरित करके किया गया ।

दूरदर्शन केंद्र, राजकोट

दिनांक 14 सितंबर 2006 से 28 सितंबर 2006 तक हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया गया । इस दौरान कार्यालय में विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन भी किया गया । जिसमें निबंध लेखन/अधूरी कहानी/सुलेखन/सामान्य ज्ञान आदि । इन सभी प्रतियोगिताओं में कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। इस बार ग्रुप 'डी' के कर्मचारियों ने बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया, यह इस वर्ष की विशेषता कही जा सकती है ।

केंद्र में आयोजित विभिन्न गतिविधियों के साथ-साथ हिंदी पखवाड़ा समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन दिनांक 16 अक्तूबर, 2006 को स्टुडियो-परिसर में किया गया । कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में श्री विजय कोठारी, अकाउटैंट जनरल ऑफिस, राजकोट के डी. ऐ.जी. मुख्य वक्ता के रूप में आमंत्रित किया गया था । कार्यक्रम की अध्यक्षता केंद्र अभियंता श्री एम.एच. रोहित ने की।

नेशनल टैक्सटाइल कॉर्पोरेशन लि., नई दिल्ली का सहायक निगम, पोस्ट बॉक्स नं. 2713, तीसरी मंजिल, नंजप्पा मैंशन, 29/2, के.एच. रोड, शान्तिनगर, बेंगलूर-560027

दिनांक 1 सितंबर, 2006 से 14 सितंबर, 2006 तक हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया गया था । हिंदी पखवाड़े के दौरान प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं । समस्त प्रतियोगिताओं के लिए अलग-अलग पुरस्कार दिए गए । मिलों एवं विपणन प्रभागों ने अपने-अपने स्तर पर प्रतियोगिताएं आयोजित करके पुरस्कार प्रदान किए ।

दिनांक 7 सितंबर, 2006 को मुख्यालय में हिंदी में प्रवीणता प्राप्त/हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान रखने वाले अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए विशेष हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें 33 अधिकारियों/कर्मचारियों ने भाग लिया । इस कार्यशाला में मूल रूप से सरकार की राजभाषा नीति एवं हिंदी कार्य करने में आने वाली कठिनाइयों के समाधान के बारे में विस्तृत रूप से चर्चा की गई । इस

कार्यशाला का संचालन श्री मानसिंह, सहायक निदेशक, हिंदी शिक्षण योजना, बेंगलूर ने किया।

भारत इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड के कारपोरेट कार्यालय, बेंगलूर

कारपोरेट में हिंदी माह के दौरान चार प्रतियोगिताएं नामतः सरल अनुवाद एवं शब्दावली, लिखित प्रश्नोत्तरी (रा भा प्रावधानों सहित), अंताक्षरी तथा सही शब्द क्या है? प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं जिसमें कार्यालय के 54 अधिकारियों/कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। 26 सितंबर को हिंदी दिवस का आयोजन किया गया जिसका शुभारंभ श्री वाई. गोपाल राव, अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक तथा अध्यक्ष, भा. इ. राजभाषा शिखर समिति ने दीप प्रज्ज्वलित कर किया। श्री एस. के. मेहता, निदेशक (अनु.व.वि.) ने इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि हमारे देश में अंग्रेजी जाननें वालों की संख्या 10% से भी कम हैं यानि 90% से भी अधिक लोग हिंदी या अन्य भारतीय भाषाएं बोलते और समझते हैं। ऐसी स्थिति में संपर्क भाषा के रूप में हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करने की आवश्यकता है।

भारतीय खाद्य निगम, जिला कार्यालय, वलियतुरा, तिरुवनन्तपुरम-695008

14 सितम्बर 2006 को हिंदी माह समारोह का उद्घाटन किया गया। उस दिन इस कार्यालय के सभी सदस्य कर्मचारियों व अधिकारियों ने रेक्रियशन क्लब में एकत्रित हुए। क्षेत्र प्रबंधक श्री वी.के. फिलिप ने दिया जला कर हिंदी दिवस का उद्घाटन किया। उन्होंने सभी सदस्य कर्मचारियों को यह सलाह दी कि हिंदी पत्राचार की श्रीवृद्धि के लिए अधिकाधिक प्रयत्न करें एवं कार्यालयीन पत्राचार हिंदी में करके हिंदी की प्रोन्नति के लिए कोशिश करें। कार्यालयीन काम हिंदी में करने के लिए अपील जारी की एवं हिंदी माह समारोह को धन्य बनाने के लिए शुभकामनाएं दीं।

तारीख 13 अक्तूबर 2006 को समापन सत्र का शुभारंभ हुआ। इस कार्यालय के सहायक श्रेणी-। (हिंदी) ने क्षेत्र प्रबंधक और सभी सदस्य/कर्मचारियों का स्वागत किया। क्षेत्र प्रबंधक ने प्रतियोगिताओं में विजयी कर्मचारियों एवं उनके बच्चों को पुरस्कार प्रदान किया एवं समारोह को धन्य बनाने के लिए सहयोग देने वाले कर्मचारियों को धन्यवाद अदा किया।

कछाड़ पेपर मिल, डा. पंचग्राम, जिला हैलाकंडी, असम-788802

कछाड़ पेपर मिल में पूरा सितंबर माह "हिंदी माह पालन समारोह" के रूप में मनाया गया। माह के पूर्वाद्ध में मिल के हिंदी एवं हिंदीतर दोनों भाषी वर्गों के कार्मिकों के लिए हिंदी निबंध, टिप्पण व प्रारूप लेखन तथा पारिभाषिक शब्द व्यवहार एवं अनुवाद की प्रतियोगिताएं आयोजित की गई। जबकि प्रबंधक एवं ऊपर स्तर के अधिकारियों के लिए "टिप्पणी सह सुलेख" प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। महिलाओं के लिए हिंदी भाषण प्रतियोगिता साथ ही शिशु स्तर से बारहवीं स्तर तक के बच्चों के आठ वर्ग समूहों के लिए हिंदी कविता पाठ, भाषण एवं निबंध प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, जिसमें 252 बच्चों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। जबकि अन्य प्रतियोगिताओं में भागीदारी 76 रही।

14 सितंबर, 2006 को हिंदी दिवस समारोह का भव्य आयोजन प्रशासनिक भवन के प्रशिक्षण हॉल में किया गया। इस अवसर पर महाप्रबंधक (निर्माण) एवं प्रभारी मुख्य अधिशासी श्री मोहन झा ने कहा कि भारत के संविधान में हिंदी को राजभाषा का दर्जा दिया गया है। भारत की सभी भाषाएं हमारे लिए आदरणीय हैं। लेकिन देश को एक सूत्र में पिरोने के लिए राजभाषा हिंदी को बढ़ावा देने और इसका अधिक से अधिक प्रचार करने की आवश्यकता है। इसी संदर्भ में "हिंदी दिवस" का विशेष महत्त्व है, जो आज 14 सितंबर के दिन पूरे देश में पूरे उत्साह के साथ मनाया जा रहा है।

आगे उन्होंने कहा कि हम पूरा सितंबर हिंदी अनुपालन माह के रूप में मना रहे हैं। हमारा लक्ष्य है-हिंदी सरकारी उपयोग के साथ-साथ जन-जन के व्यवहार की भाषा बने। इसके लिए आवश्यक है कि हम-आप अपने समस्त पत्राचार, औपचारिक-अनौपचारिक आमंत्रण, निमंत्रण, आवेदन-प्रतिवेदन, सूचना-प्रपत्र, पत्र, परिपत्र, नामपट्ट आदि में सर्वत्र हिंदी और देवनागरी लिपि के प्रयोग पर बल दें। हमें हिंदी में सोचने, समझने और लिखने-पढ़ने की आदत डालनी है।

केंद्रीय मत्स्य नौचालन एवं इंजीनियरी प्रशिक्षण संस्थान (सिफनेट) फाइन आर्टस एवन्यू, कोच्चिन-682016

राजभाषा के सफल कार्यान्वयन तथा इसके उत्तरोत्तर प्रयोग के प्रति जागरूकता पैदा करने तथा इसके लिए सहायक माहौल बनाने के उद्देश्य से सिफनेट मुख्यालय तथा चेन्नई एवं विशाखापट्टनम इकाइयों में हर साल की तरह 14 सितंबर, 2006 को हिंदी दिवस मनाया गया।

हिंदी दिवस पर राजभाषा के सफल कार्यान्वयन में भागीदारी होने के लिए संस्थान में कार्यरत प्रत्येक अधिकारी/कर्मचारी को निदेशक की अपील की प्रतियां परिचालित की गई। अधिकारियों, कर्मचारियों, उनके बच्चों तथा प्रशिक्षणार्थियों के लिए हिंदी में प्रतियोगिताएं चलाई गई। सिफनेट इकाइयों में हमेशा की तरह हिंदी सप्ताह का आयोजन हुआ जिसमें कर्मचारियों ने सक्रियता से भाग लिया। समापन समारोह में विजेताओं को पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र प्रदान किए गए।

भारतीय खाद्य निगम, आंचलिक कार्यालय (पूर्व) 10ए, मिडिलटन रो, कोलकाता-71

दिनांक 14 सितम्बर 2006 से 28 सितम्बर 2006 की अवधि में आंचलिक कार्यालय (पूर्व), कोलकाता में अधिकारियों तथा कर्मचारियों में हिंदी के प्रति रूचि जागृत करने के उद्देश्य से हिंदी पखवाड़ा मनाया गया। इसका शुभारंभ दिनांक 14 सितम्बर 2006 को महाप्रबंधक (पूर्व अंचल), श्री सुदीप सिंह के कर कमलों द्वारा मंगलदीप प्रज्ज्वलित कर किया गया। उन्होंने सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को पखवाड़े के दौरान अपना काम अधिक से अधिक हिंदी में करने का अनुरोध किया। साथ ही उन्होंने सभी अधिकारियों तथा कर्मचारियों को हिंदी पखवाड़ा मनाने पर अपनी हार्दिक शुभकामनाएं भी दी। उक्त समारोह में उप महाप्रबंधक (कार्मिक), श्री मनोज कुमार गोगोई द्वारा देशभक्ति से परिपूर्ण रंगारंग संगीत कार्यक्रम का आयोजन किया जिसने वहां उपस्थित लोगों को मंत्र-मुग्ध कर दिया। दिनांक 15 सितम्बर 2006 से 21 सितम्बर 2006 तक विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं--वाद-विवाद प्रतियोगिता, आशु भाषण प्रतियोगिता, श्रुत लेखन प्रतियोगिता, टिप्पण एवं मसौदा लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इन प्रतियोगिताओं में विजेता प्रतिभागियों को प्रथम, दुवितीय तथा तृतीय पुरस्कारों से नवाजा गया।

राष्ट्रीय व्यावसायिक स्वास्थ्य संस्थान पो. बा. नं. 02031, मेधानी नगर, अहमदाबाद-380016

राष्ट्रीय व्यावसायकि स्वास्थ्य संस्थान की ओर से हिंदी को बढ़ावा देने के लिए हिंदी पखवाड़ा मनाया गया। इस दौरान निबंध स्पर्द्धा, रंगीन पोस्टर, कविता एवं प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता आयोजित की गईं। समापन समारोह शुक्रवार को संस्थान के सभागृह में आयोजित हुआ, जिसमें डॉ. किशोर काबरा, प्रो. भगवानदास जैन, डॉ. ऋषिपाल धीमान, हरिवदन भट्ट, विजयकुमार तिवारी एवं संस्था के पदाधिकारी डॉ. एल.जे. भागिया ने कविताएं पेश की। कवि सम्मेलन का संचालन हिंदी के कवि एवं गजलकार प्रो. भगवानदास ने किया। संस्थान की ओर से आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में अतुल पंड्या, श्रीमती कमलेश अग्रवाल, जयेश पटेल तथा अनुराधा देरासरी ने प्रथम स्थान हासिल किया। वहीं श्रीमती पद्मा एच. वोरा, डॉ. राजेश बेनीवाल, श्रीमती सिंधु आचार्य, एम.आर. धीर, डॉ. रंजना चौधरी ने दुवितीय स्थान प्राप्त किया। श्रीमती भारती शाह, महत्तम मिश्रा, डॉ. एन.जी. सथवारा तृतीय स्थान पर रहे। श्रीमती सिंधु आचार्य, जयेश बी. व्यास, श्रीमती मल्लिका करांथा तथा अतुल पंड्या को सांत्वना पुरस्कार प्रदान किया गया। कार्यक्रम का संचालन कनिष्ठ हिंदी अनुवादक आर.एम. पोरवाल ने किया। डॉ. सुनील कुमार, एस. के. जैन, डी.वी. राव, अतुल पंड्या, आर.एम. पोरवाल एवं रुकसाना घांची ने विधिवत व्यवस्था की। संस्थान के निदेशक डॉ. एच.एन. सैयद ने उपस्थित लोगों का आभार जताया।

भारतीय मात्स्यिकी सर्वेक्षण पोर्ट ब्लेयर-744101

दिनांक 14-28 सितंबर 2006 तक हिंदी पखवाड़ा मनाया गया जिसका उद्घाटन 14 सितंबर, 2006 को हिंदी

दिवस के मौके पर नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति पोर्ट ब्लेयर के अध्यक्ष श्री राममिलन मुराव ने दीप प्रज्ज्वलित कर किया। नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति पोर्ट ब्लेयर के सचिव श्री एच.डी. चट्टोपाध्याय इस अवसर पर विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित थे। कार्यक्रम के आरंभ में मुख्य अतिथि एवं उपस्थिति का स्वागत करते हुए संस्थान के क्षेत्रीय निदेशक श्री ए. एनरोज ने सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से निष्ठा एवं लगन से हिंदी कार्यान्वयन के कार्य को वर्ष भर जारी रखने की अपील की। पखवाड़े के दौरान संस्थान द्वारा 16-9-2006 को काव्य संध्या का भी आयोजन किया गया जिसमें द्वीपों के जाने माने कविगणों ने शिरकत की। डॉ. गोविन्द सिंह पंवार, वरिष्ठ प्रवक्ता, जवाहरलाल नेहरू राजकीय महाविद्यालय, पोर्ट ब्लेयर इस अवसर पर कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे। हिंदी पखवाड़े का समापन 28 सितंबर, 2006 को पुरस्कार वितरण के साथ संपन्न हुआ। श्री ओ.एन. जायसवाल, सूचना अधिकारी, पत्र सूचना कार्यालय हिंदी पखवाड़े के समापन अवसर पर मुख्य अतिथि थे। मुख्य अतिथि श्री जायसवाल ने हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार वितरित किए तथा अपने संबोधन में श्री जायसवाल ने विजेताओं को बधाई दी तथा हिंदी कार्यान्वयन के सफल निष्पादन हेतु संस्थान के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों की सराहना की।

इंडस्ट्रियल डेवलपमेंट बैंक ऑफ इंडिया लिमिटेड शाखा कार्यालय : जनपथ शाखा, आई.डी.बी.आई. हाउस, जनपथ, भुवनेश्वर-751022 (ओडिशा)

इंडस्ट्रियल डेवलपमेंट बैंक ऑफ इंडिया लिमिटेड के भुवनेश्वर कार्यालय में विगत दिनों सप्ताह व्यापी हिंदी समारोह का आयोजन किया गया। 14 सितंबर, 2006 को हिंदी समारोह के उद्घाटन अवसर पर महाप्रबंधक श्री अनिल रतनपाल ने सप्ताह के विभिन्न कार्यक्रमों का शुभारंभ करते हुए अपना अध्यक्षीय भाषण दिया। अपने अध्यक्षीय भाषण में श्री रतनपाल ने कहा कि आज के दिन राजभाषा हिंदी को प्रतिष्ठित किया गया जो इसका महत्त्व है। हिंदी आज भावनात्मक संपर्क भाषा है जिसे जन-मानस की स्वीकृति मिल रही है। इस अवसर पर केंद्रीय विद्यालय संगठन (क्षे का) के सहायक आयुक्त श्री डी टी सुदर्शन राव मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे जिन्होंने हिंदी सप्ताह समारोह का उद्घाटन किया। उन्होंने अपने उद्घाटन भाषण में भारतेन्दु की कविता-पंक्ति-'निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल' का जिक्र करते हुए कहा कि 'हिंदी राजभाषा के साथ-साथ राष्ट्रभाषा भी है। यह संपर्क भाषा भी है और संपर्क भाषा एकता बनाने के लिए आवश्यक है। यदि यह भाषा नहीं होती तो शायद हम बिखर जाते।' इस अवसर पर उप महाप्रबंधक श्री जे. के. बास्कर ने अपने हिंदी सप्ताह विशेष कार्य प्रारंभन उद्बोधन-भाषण में इसे सफल बनाने का अनुरोध किया तथा सभी को अपनी शुभकामनाएं दीं। सहायक महाप्रबंधक श्रीमती पुष्पिता सोरेन ने भाषा के संदर्भ में चिड़िया की तरह सोचने व विकसित होने की बात रखी तथा अपने अंडे की दुनिया व घोसले की दुनिया से आगे बढ़ते हुए पूरे खुले गगन तक जाने की बात कही। श्री पी.के. नन्दा, सहायक महाप्रबंधक ने भी हिंदी की महत्ता व अनुभव पर प्रकाश डाला।

पंजाब एवं चंडीगढ़ भू-स्थानिक आंकड़ा केंद्र भारतीय सर्वेक्षण विभाग, सेक्टर 32-ए, चंडीगढ़-160030

श्री इकबाल सिंह, प्रशासनिक अधिकारी, पंजाब एवं चंडीगढ़ भू-स्थानिक आंकड़ा केंद्र, भारतीय सर्वेक्षण विभाग की अध्यक्षता में दिनांक 14-9-2006 को अपने कार्यालय परिसर में हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया गया। केंद्र में दिनांक 8-9-2006 से 14-9-2006 तक हिंदी सप्ताह भी मनाया गया, जिसमें सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने अधिकाधिक कार्य हिंदी में किया।

हिंदी सप्ताह के दौरान विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताएं जैसे कि ग्रुप "डी" कर्मचारियों के लिए सुलेख प्रतियोगिता और अन्यों के लिए निबंध लेखन प्रतियोगिताएं भी आयोजित की गई। इन प्रतियोगिताओं के अतिरिक्त समापन समारोह के दौरान कविता पाठ, युवा वर्ग में राजनीति विषय पर वाद-विवाद प्रतियोगिता और शब्द ज्ञान एवं सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी का आयोजन किया गया, जिसमें सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया। प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कृत किया गया।

पुरस्कार वितरण के उपरांत श्री इकबाल सिंह ने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि हिंदी दिवस हमें राजभाषा के प्रति अपने संकल्प और प्रतिबद्धता का स्मरण कराता है वास्तव में 14 सितंबर, 1949 को हिंदी राष्ट्रीय स्तर पर राजभाषा स्वीकृत हुई, साथ ही राज्यस्तर पर क्षेत्रीय भाषाएं, राजभाषाएं बनी । अब तक 22 क्षेत्रीय भाषाओं को हमारे संविधान की अष्टम अनुसूची (अनुच्छेद 344(1) और 351) मान्यता दी गई है । राजभाषा हिंदी को अधिनियम और नियमों की सीमाओं से मुक्त कर हम सबको अपना अधिक से अधिक काम मूल रूप में हिंदी में करना चाहिए क्योंकि हम सब सोचते तो अपनी मातृभाषा में ही है केवल भाषा के अधिकाधिक प्रयोग से हम उस भाषा में निपुण हो जाते हैं । राजभाषा हिंदी तो हमारी अपनी भाषा है जिसमें हमारी राष्ट्रीयता भी निहित है अतः इसे अपनाना और विश्व भर में सम्मान दिलाना प्रत्येक भारतीय का नैतिक कर्त्तव्य है ।

क्षेत्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान केंद्र, केंद्रीय रेशम बोर्ड, सहसपुर, देहरादून

हिंदी पखवाड़ा 1-9-2006 से 12-9-2006 तक मनाया गया । दिनांक 1-9-2006 को कार्यालय के संयुक्त निदेशक डॉ. एस. चक्रवर्ती ने हिंदी पखवाड़े का विधिवत् उद्घाटन किया । उन्होंने इस अवसर पर कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों से अनुरोध किया कि इस हिंदी पखवाड़े को एक संकल्प लेने की अवधि के रूप में लें । हम अपना सरकारी कामकाज हिंदी में ही करने का संकल्प लें तथा राजभाषा कार्यान्वियन की दशा में अपना सहयोग दें तभी हम वास्तव में हिंदी पखवाड़ा मनाने की सार्थकता सिदध कर सकते हैं । उन्होंने विशेष रूप से केंद्र के वैज्ञानिकों से अनुरोध किया कि अनुसंधानों के निष्कर्ष जन साधारण की भाषा में प्रचारित-प्रसारित करने का प्रयत्न करें ।

14 सितंबरे, 2006 को कार्यालय में हिंदी दिवस समारोह तथा पखवाड़े का समापन समारोह आयोजित किया गया । समारोह में डॉ. (श्रीमती) अल्पना मिश्रा, हिंदी प्रवक्ता, एम.के.पी. (पी.जी.) कालेज, देहरादून मुख्य अतिथि ने कहा कि भाषा सतत् प्रवाहमान वस्तु है । विज्ञान व तकनीकी शब्दावली के लिए क्षेत्रीय भाषाओं के शब्द लेना उचित होगा । भाषा की प्रकृति सरल से सरलतम की ओर जाना है । अनुवाद में आम बोलचाल के शब्दों का प्रयोग करें । तत्सम शब्दों के अधिक प्रयोग से हमें बचना चाहिए ।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कार्यालय के संयुक्त निदेशक डॉ. एस. चक्रवर्ती ने कहा कि भाषा न केवल व्यक्ति की, बल्कि समूचे राष्ट्र की पहचान होती है । किसी भी देश में एक राष्ट्र, एक राष्ट्रीय ध्वज और एक राष्ट्रीय भाषा की भावना होती है । हिंदी भारत की राजभाषा है । 14 सितंबर, 1949 को संविधान निर्माताओं ने हिंदी को राजभाषा का दर्जा प्रदान किया । आज राजभाषा में कार्य करने के लिए एक सच्चे संकल्प की आवश्यकता है । मुझे पूर्ण विश्वास है कि हमारे केंद्र के वैज्ञानिक अनुसंधान के क्षेत्र में राजभाषा को अपनाकर विकसित तकनीकियों को कृषकों तक राजभाषा के माध्यम से प्रसारित करेंगे ।

हिंदुस्तान फोटो फिल्म्स मैन्युफैक्चरिंग कंपनी लि. इन्दु नगर, उटकमंड, तमिलनाडु-643005

कंपनी के प्रधान कार्यालय, उटकमंड में दिनांक 14 सितंबर, 2006 से हिंदी सप्ताह के सिलसिले में विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गई ।

दिनांक 16-10-2006 को श्री पी जगदीश्वरन, निदेशक वित्त की अध्यक्षता में हिंदी भाषण प्रतियोगिता, गीत प्रतियोगिता व पुरस्कार वितरण संपन्न हुआ । मुख्य अतिथि के रूप में कंपनी के अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक की पत्नी श्रीमती महेंद्र कुमार ने भाग लिया । श्री पी. माणिक्कम, हिंदी सहायक ने सबका स्वागत किया डॉ. अजीत वॉलिया, उप महाप्रबंधक, मानव संसाधन विकास ने हिंदी का महत्व पर विशेष ध्यान दिया । श्री पी जगदीश्वरन, निदेशक वित्त ने हिंदी के कार्यान्वियन एवं उसके प्रयोग में होने वाली समस्याओं को स्पष्ट किया । हमारी मुख्य अतिथि ने अपने भाषण में कहा कि राजभाषा हिंदी को अपनाना चाहिए एवं उसे दिलचस्पी से सीखना चाहिए । श्री पी जगदीश्वरन, निदेशक वित्त एवं मुख्य अतिथि के कर कमलों से प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कार वितरित किए गए ।

सम्मेलन/संगोष्ठी

कोच्ची में दक्षिण व दक्षिण-पश्चिम क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन एवं पुरस्कार वितरण समारोह

कोच्ची में 12 व 13 जनवरी को आयोजित किए गए क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन में दक्षिण व दक्षिण-पश्चिम क्षेत्रों में स्थित केंद्र सरकारी कार्यालय, राष्ट्रीकृत बैंक, उद्यम, उपक्रम आदि द्वारा राजभाषा कार्यनिष्पादन के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य किए गए कार्यालयों को पुरस्कारों से सम्मानित किया गया।

12 जनवरी 2007 के प्रथम सत्र का शुभारंभ हुआ। इस समारोह के अध्यक्ष श्री प्रशांत कुमार मिश्र, सचिव भारत सरकार राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय और मुख्य अतिथि, माननीय गृह राज्य मंत्री, श्री माणिकराव एच. गावीत द्वारा द्वीप प्रदीपन और केंद्रीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की स्वस्ति वाचन के साथ कार्यक्रम शुरू हुआ। इस अवसर पर राजभाषा विभाग के सचिव ने सबका स्वागत किया। निदेशक राजभाषा विभाग श्री बी. एम. एस.नेगी ने संघ की राजभाषा नीति तथा नियमों के बारे में प्रोजक्टर में स्लाइड शो की सहायता से विवरण दिया। बाद में माननीय मंत्री महोदय के करकमलों से राजभाषा के कार्यनिष्पादन में सबसे आगे आए कार्यालयों के मुख्यों के लिए ट्रॉफी तथा संबंधित राजभाषा कर्मियों को प्रमाणपत्र भी प्रदान किया गया। मुख्यातिथि भाषण देते हुए मंत्री महोदय ने बताया कि भारत जैसे विशाल देश में ऊपर से दिखाने वाली विविधता के भीतर गहरी एकता जो है, इसको कायम रखने में राजभाषा का कार्यान्वयन महत्वपूर्ण है। उन्होंने बताया कि विभिन्नता केवल बाहरी रूप है लेकिन एकता इसकी अंतरात्मा है। उन्होंने कार्यान्वयन के विशिष्ट कार्यों में पुरस्कृत तथा इस अवसर पर उपस्थित होकर कार्यक्रम के लक्ष्यों को सार्थक बनाए गए सभी भागीदारों की सराहना की। धन्यवाद ज्ञापित करके राजभाषा विभाग के संयुक्त सचिव श्रीमती पी.वी. वल्सला जी कुट्टी ने बताया कि हिंदी बहुत आसान भाषा है, समझना तथा समझाना आसान है, लेकिन राजभाषा नीति का पालन व नियमों का कार्यान्वयन करवाना उतना आसान नहीं है। इस क्षेत्र में कार्यरत कर्मियों भाषापरक तथा तथ्यपरक दृष्टि में कुशल होना चाहिए, साथ-साथ इनको अपने क्षेत्र में काम करने के लिए क्षमता और सहिष्णुता रखना अवश्यक है। उन्होंने यह भी कहा कि आज केवल योजनाबद्ध रूप से नहीं बल्कि युद्ध स्तर पर कार्य करने की जरूरत है।

द्वितीय सत्र में कालिकट विश्वविद्यालय के सेवानिवृत्ति हिंदी विभागाध्यक्ष एवं सचिव केरल साहित्य मंडल प्रोफसर डॉ. टी.एन. विश्वंभरन ने राष्ट्रभाषा हिंदी के विकास के बारे में उल्लेख करके इस क्षेत्र में राजभाषा के योगदान पर समर्थन किया। फिर कोच्ची विश्वविद्यालय के डॉ. शण्मुखन ने राजभाषा हिंदी की दक्षता एवं क्षमता के बारे में विस्तृत विवरण दिया और बताया कि सारी भाषाओं में अभिव्यक्ति करने की जो क्षमता है हिंदी में भी उसमें क्षमता मौजूद है और उसको बाहर लाना कर्मियों का कर्तव्य है।

उन्होंने यह भी कहा कि विभिन्नता में अभिन्नता और अनेकता में एकता हमारी राष्ट्र की मूल पहचान है, विभिन्नता भले ही होती हो परंतु हमारी संस्कृति एक है, भारतीय संस्कृति। भारतीय संस्कृति सबको समान, नीरोग और सुखी देखना चाहती है, वैसे हम वसुधा को ही अपना परिवार मानकर चलते हैं। उन्होंने यह स्थापित करने का प्रयास किया कि पुराने जमाने से सक्षम हिंदी भाषा की वैज्ञानिकता आधुनिक संदर्भो में भी विषय अभिव्यक्त करने के लिए पर्याप्त है। उन्होंने 'सपना देखना मना है' नामक अपनी कविता भी प्रस्तुत की। प्रो., डॉ. वेलायुधन ने कंप्यूटरीकरण और हिंदीकरण के बारे में बताया।

उन्होंने बताया कि कार्यालयों में आज सारे कार्य कंप्यूटरों की सहायता से कर रहे हैं इसी कारण हिंदीकरण के कार्य में पहले पहल कम्प्यूटरों को द्विभाषी काम करने की सुविधा से सुसज्जित करना है । उन्होंने यह भी कहा कि इस कार्य को सफल बनाने हेतु कर्मियों को प्रशिक्षण देना अनिवार्य है । फिर भी श्री श्रीनारायण सिंह, संयुक्त निदेशक केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो ने कार्यालय अनुवाद के विभिन्न आयामों पर जोर देकर भाषण दिया । मुख्य अतिथि श्री सी. राजेंद्रन, मुख्य आयकर आयुक्त एवं अध्यक्ष कोचीं नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति ने कोचीं नराकास के विभिन्न और विविध कार्यकलापों के बारे में उल्लेख किया । श्री सर्चीद्र शर्मा निदेशक (कार्यान्वयन), राजभाषा विभाग के कृतज्ञता ज्ञापन के साथ प्रथम दिवस का कार्यक्रम समाप्त हो गया ।

13 जनवरी के प्रथम सत्र में श्री केवल कृष्ण निदेशक एन.आई.सी. ने राजभाषा के क्षेत्र में आधुनिक प्रौद्योगिकी का परिचय देकर बताया कि राजभाषा विभाग का तकनीकी कक्ष प्रकाशनों, संगोष्ठियों, प्रदर्शनियों, वीडियो फिल्मों आदि के माध्यम से तत्संबंधी संगत सूचना उपलब्ध कराता है । फिर विभिन्न सॉफ्टवेयर निर्माताओं ने हिंदी साफ्टवेयरों का निदर्शन किया । मुख्य अतिथि श्री प्रशांत कुमार मिश्र, सचिव, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय ने अपने अध्यक्षीय भाषण में आधुनिक संदर्भ में कार्यालयों में कंप्यूटरों का स्थान और राजभाषा के कार्यान्वयन में हिंदी सॉफ्टवेयरों की भूमिका पर जोर दिया । उन्होंने यह भी बताया कि कंप्यूटर कार्यालयों में कागज व कलम का स्थान ले गया है । श्री बी.एन. झा उप निदेशक कार्यान्वयन, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय बैंगलूर के कृतज्ञता ज्ञापन के साथ प्रथम सत्र समाप्त हो गया । दोपहर के द्वितीय सत्र में मुख्य अतिथि के रूप में श्री एम.पी. वर्गीस, अध्यक्ष नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक)कोच्ची एवं सहायक महाप्रबंधक यूनियन बैंक ऑफ इंडिया मौजूद थे । कोच्ची रिफाइनरी के वरिष्ठ प्रबंधक (प्रशिक्षण) श्रीमती बी. श्रीदेवी ने भारत पेट्रोलियम कोच्ची रिफाइनरी में राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के विभिन्न मदों का उल्लेख किया । फिर श्री विश्वनाथ झा उप निदेशक कार्यान्वय क्षेत्र का बैंगलूर तथा श्री अजय मल्लिक क्षेत्र का कोच्ची द्वारा सामान्य तौर पर राजभाषा नीति के कार्यान्वयन की समीक्षा की । मुख्य अतिथि के संबोधन के बाद कोच्ची कल्चरल सेंटर द्वारा प्रस्तुत कलरिपयट्ट और मोहिनीयाट्टम बहुत मनोरम तथा मनोरंजक था । श्री अजय मल्लिक उप निदेशक क्षेत्रीय कार्यालय कोच्ची ने सभी भागीदारों को धन्यवाद दिया ।

जयपुर में मध्य तथा पश्चिम क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन एवं पुरस्कार वितरण समारोह

गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा इंदिरा गांधी पंचायती राज एवं ग्रामीण विकास संस्थान ऑडिटोरियम जयपुर में मध्य एवं पश्चिम क्षेत्र के लिए राजभाषा सम्मेलन एवं पुरस्कार वितरण दो दिवसीय समारोह (12-13 फरवरी) का शुभारम्भ प्रथम सत्र में, भारत सरकार की संयुक्त सचिव श्रीमती पी.वी. वल्सला जी कुट्टी की अध्यक्षता एवं श्रीमती मीनाक्षी मिश्रा, महालेखाकार एवं अध्यक्ष नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति जयपुर, मुख्य अतिथि के कर कमलों द्वारा दीप प्रदीपन से हुआ ।

स्वागत भाषण में श्री शचीन्द्र शर्मा, निदेशक, राजभाषा विभाग ने समारोह का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत करते हुए कहा कि प्रति वर्ष संघ की राजभाषा नीति पर भारत सरकार द्वारा तैयार वार्षिक कार्यक्रम में दिए गए लक्ष्यों के अनुसार, भारत सरकार के कार्यालयों/उपक्रमों/बैंकों आदि द्वारा राजभाषा के अनुपालन में मूल्यांकन समिति द्वारा तय किए मापदंडों के आधार पर कार्यालयों को पुरस्कृत किया जाता है । इस समारोह में मध्य एवं पश्चिम क्षेत्र (मध्य प्रदेश, राजस्थान, गुजरात एवं महाराष्ट्र) में स्थित केंद्रीय कार्यालयों को पुरस्कृत किया जाएगा ।

श्री शर्मा ने आगे कहा कि दो दिवसीय कार्यक्रम को चार सत्रों में पूरा किया जाएगा जिसमें राजभाषा के विभिन्न बिंदुओं पर विद्वानों द्वारा चर्चा की जाएगी । साथ ही प्रौद्योगिकी के युग में वैज्ञानिकों द्वारा साफ्टवेयर की प्रदर्शनी एवं प्रस्तुती की जायेगी । हिंदी में प्रकाशित पुस्तक एवं पत्र पत्रिकाओं की प्रर्दशनी भी लगाई गई है ।

प्रथम सत्र में अलवर सरकारी कॉलेज के प्राचार्य (सेवा निवृत) डॉ. जीवन सिंह ने भारत की सामासिक संस्कृति के विकास में हिंदी की भूमिका पर अपना ओजपूर्ण वक्तव्य दिया ।

प्रो. कलानाथ शास्त्री ने "राजभाषा हिंदी का स्वरूप और विकास" विषय पर चर्चा की । श्री रामानन्द पाण्डे, उप निदेशक (मध्य) ने हिंदी प्रशिक्षण और सूचना प्रौद्योगिकी की आवश्यकता पर प्रकाश डाला । डॉ. कुसुम अग्रवाल सहायक निदेशक, केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो ने वर्तमान परिप्रेक्ष्य में कार्यालय अनुवाद के विभिन्न आयाम पर चर्चा की ।

प्रथम सत्र की मुख्य अतिथि श्रीमती मीनाक्षी मिश्रा ने अपने संबोधन में कहा कि सभी सरकारी काम-काज राजभाषा हिंदी में करने के लिए संविधान में प्रावधान है जिसका पालन करना हम सभी का कर्त्तव्य है । उन्होंने राजभाषा हिंदी में काम करने में आने वाली कठिनाइयों और उनके उपाय तथा अपने सुझाव भी दिए । उन्होंने कहा कि हिंदी अभी उस स्थान पर नहीं पहुंची है जहां उसे पहुंचना है यदि मन से चाहेंगे तो मंजिल तक पहुंचा जा सकता है । हिंदी एक समृद्ध भाषा है ।

भारत सरकार की संयुक्त सचिव सुश्री पी. वी. वल्सला जी कुट्टी ने सत्र की अध्यक्षता करते हुए अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि राजभाषा हिंदी में काम करने के लिए मन में इच्छा होनी चाहिए फिर किसी भी कठिनाई को आसानी से पार किया जा सकता है उन्होंने अपने हिंदीतर भाषी होने के नाते कहा कि वे भी राजभाषा हिंदी में काम चला रही हैं और हिंदी में काम करने का मजा ही कुछ और है । किसी भी देश के लिए अपनी भाषा का होना अति आवश्यक है ।

प्रथम सत्र के द्वितीय सत्र में सॉफ्टवेयर निर्माताओं सी-डेक, आकृति, अक्षर, सारांश द्वारा हिंदी सॉफ्टवेयर की प्रस्तुती की गई ।

समारोह के दूसरे दिन 13 फरवरी, 2007 को पुरस्कार वितरण समारोह में माननीय गृह राज्यमंत्री श्री माणिक राव एच. गावीत मुख्य अतिथि द्वारा भारत सरकार द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम में दिए गए लक्ष्यों की प्राप्ति में उत्कृष्ट उपलब्धियों के लिए मध्य एवं पश्चिम क्षेत्रों में स्थित केंद्र सरकार के कार्यालयों, उपक्रमों, बैंकों, वित्तीय संस्थानों व नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों को राजभाषा पुरस्कारों से सम्मानित किया गया ।

श्री गावीत ने अपने संबोधन में कहा कि भावों व विचारों को प्रकट करने तथा समाज में विभिन्न मानवीय संबंधों को बनाए रखने के लिए अपनी भाषा का होना ज़रूरी है । उन्होंने कहा कि हिंदी और भारतीय भाषाओं के विकास में मध्य एवं पश्चिम क्षेत्रों के संतों, विद्वानों, लेखकों आदि के कार्यों से भारतीय साहित्य तथा भाषाओं और कला का चहुंमुखी विकास हुआ है ।

गृह राज्यमंत्री ने कहा कि भारतीय संविधान के अनुसार संघ की राजभाषा हिंदी और लिपि देवनागरी है । राजकीय कार्य को राजभाषा हिंदी में करने की संवैधानिक जिम्मेदारी को हम सभी को मिलकर निभाना है । सभी सरकारी कार्यालयों में हिंदी में काम करने की ओर विशेष ध्यान दिए जाने की आवश्यकता है । उन्होंने सूचना तकनीकी के इस युग में नित नए आ रहे बदलाव पर हिंदी व भारत की अन्य भाषाओं तथा सूचना-तकनीकी के बीच ताल-मेल बढ़ाने पर जोर दिया ।

वाराणसी में उत्तर एवं दिल्ली क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन एवं पुरस्कार वितरण समारोह

वाराणसी में डीजल रेल इंजन कारखाना प्रेक्षागृह (सिनेमाहाल) में दिनांक 23 एवं 24 फरवरी 2007 को गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा उत्तर एवं दिल्ली क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन एवं पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया। प्रथम दिन के प्रथम सत्र के मुख्य अतिथि श्री वी. बी. विश्वेन, आयुक्त वाराणसी मंडल तथा समारोह की अध्यक्षता श्रीमती पी.वी. वल्सला जी कुट्टी, संयुक्त सचिव, राजभाषा विभाग द्वारा दीप प्रदीपन के साथ राजभाषा सम्मेलन का शुभारम्भ हुआ ।

मुख्य अतिथि ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि हिंदी के प्रयोग में अंग्रेजी से उबरकर मुश्किल शब्दों की जगह प्रचलित हिंदी शब्दों का प्रयोग करना चाहिए, ताकि मौलिक हिंदी मानसिकता का विकास संभव हो सके । इस सत्र के मुख्य वक्ताओं में डा. भृगुनाथ पाण्डेय ने जहां विधि के क्षेत्र में अंग्रेजी की जगह हिंदी के प्रयोग पर बल दिया वहीं प्रो. अवधेश नारायण मिश्र, काशी हिंदू विश्वविद्यालय ने कहा कि हिंदी भाषा का विकास अपनी भाषा में बोलने, सोचने एवं चिंतन करने से ही संभव है । श्री शचिन्द्र शर्मा, निदेशक, राजभाषा विभाग ने सम्मेलन के आयोजन तथा राजभाषा नीति के अंतर्गत भारत सरकार द्वारा निर्धारित किए गए लक्ष्यों के अनुरूप राजभाषा के अनुपालन पर प्रकाश डाला ।

द्वितीय दिवस के प्रथम सत्र के मुख्य अतिथि श्री सी. मनोहरन, कार्यकारी निदेशक, इंडियन ऑयल कारपोरेशन, पानीपत रिफाइनरी ने कहा कि भाषा पढ़ना और समझना दोनों जरूरी हैं । हिंदी भाषा सबसे समृद्ध भाषा है और अपनी भाषा में सोचना अच्छा होता है । उन्होंने आगे कहा कि भारत को आगे बढ़ना तथा शक्तिशाली बनना है तो एक भाषा का होना जरूरी है, जो केवल हिंदी भाषा ही हो सकती है । सम्मेलन के द्वितीय-सत्र के मुख्य अतिथि श्री एस. एस. कुशवाहा, कुलपति, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी ने कहा कि हिंदी की प्रगति के लिए कम से कम हिंदी भाषी प्रदेशों से तो हिंदी में ही प्रत्राचार होना चाहिए ।

अध्यक्षीय भाषण में, भारत सरकार की संयुक्त सचिव श्रीमती पी.वी. वल्सला जी. कुट्टी ने अपने संबोधन में कहा कि हम लोगों की लापरवाही की वजह से ही संस्कृति, संस्कार और भाषा को नुकसान हो रहा है । हिंदी में काम करने के लिए भावना होनी चाहिए । हमें ऐसी स्थिति में पहुंचना चाहिए, जहां हम सब अपनी भावनाओं से प्रेरित होकर हिंदी में ही काम करेंगे--चाहे कोई प्रोत्साहित करे या न करें । प्रो. चंद्रकला त्रिपाठी, महिला महाविद्यालय, काशी हिंदू विश्वविद्यालय ने कहा कि हिंदी रोजी-रोटी की भाषा हो । भाषा ही अपनी संस्कृति रचने का हथियार है, हिंदी में काम करने की भावना स्वाभाविक रूप से प्रत्येक व्यक्ति के मन में उठनी चाहिए ताकि उनके द्वारा किए गए कार्यों से सभी भारतवासी लाभान्वित हो सकें ।

द्वितीय सत्र में भारत सरकार द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम में दिए गए लक्ष्यों की प्राप्ति में उत्कृष्ट उपलब्धियों के लिए उत्तर एवं दिल्ली क्षेत्रों में स्थित केंद्रीय कार्यालयों, उपक्रमों, बैंकों, वित्तीय संस्थानों व नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों की राजभाषा पुरस्कारों से सम्मानित किया गया ।

धन्यवाद ज्ञापन में राजभाषा विभाग के निदेशक श्री शचींद्र शर्मा ने सभी के प्रति आभार व्यक्त किया । प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत श्री प्रेम सिंह, उपनिदेशक तथा सम्पूर्ण कार्यक्रम का सुरूचिपूर्ण संचालन डॉ. नरेश मोहन, राजभाषा समन्वयकर्त्ता, बी. एच. ई. एल. हरिद्वार ने किया ।

पूर्व एवं पूर्वोत्तर क्षेत्रों के लिए संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन

इंडियन म्यूजियम कोलकाता के प्रांगण में आशुतोष हाल में संघ के गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा पूर्व एवं पूर्वोत्तर क्षेत्र के लिए आयोजित 21-22 मार्च 2007 को दो दिवसीय संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन में पहले दिन 21 मार्च, 2007 को अपने विचार व्यक्त करते हुए प्रथम सत्र के मुख्य अतिथि श्री विजय कुमार मोंगा, निदेशक, भारतीय विमान पत्तन प्राधिकरण कोलकाता ने कहा कि राजभाषा सम्मेलन का आयोजन हमारे लिए गौरव की बात है । उन्होंने सभी से अपने-अपने कार्यालय में सरल और आम बोल-चाल की भाषा का प्रयोग करने की अपील की । उन्होंने कहा कि देश की प्रगति के लिए हिंदी में काम करना अति आवश्यक है । अब चारों ओर हिंदी का वर्चस्व बढ़ रहा है । चाहे वह विज्ञान, अध्यात्मक, योग-शिक्षा अथवा स्वास्थ्य संबंधी विषय हों सभी ओर हिंदी में प्रचार हो रहा है । हमारा भी कर्तव्य है कि कार्यालयों में हिंदी में काम करने को बढ़ावा दें ।

भारत सरकार की संयुक्त सचिव श्रीमती पी.वी. वल्सला जी कुट्टी द्वारा दीप प्रज्ज्वलन के साथ सम्मेलन का शुभारंभ हुआ । श्रीमती कुट्टी ने अपने अध्यक्षीय संबोधन में कहा कि अपनी भाषा और अपने संस्कारों का मान-सम्मान होना चाहिए । हिंदी में काम करने के लिए अपनी मनोभावना में परिवर्तन जरूरी है । आज दुनिया में हिंदी खूब सीखी जा रही है । सारी दुनिया की नजर आज भारत पर है । वे लोग हिंदी के सहारे ही भारत में प्रवेश कर अपना व्यवसाय बढ़ा रहे हैं और हम अभी भी हिंदी में काम करने के बारे में संकोच कर रहे हैं । हिंदी सीखने के लिए साफ्टवेयर तैयार हैं उसके माध्यम से हिंदी आसानी से सीखी जा सकती है । यदि हम ईमानदारी से तय कर लें तो हिंदी जैसी सरल भाषा में काम करने में सफलता अवश्यंभावी है ।

इस अवसर पर प्रमुख वक्ताओं में श्री अवधेश मोहन गुप्त, वरिष्ठ प्रबंधक, भारतीय नौवहन निगम लि. कोलकाता ने कहा कि जैसे-जैसे विश्व में व्यापार बढ़ रहा है उसी तरह हिंदी भी अपने कदम बढ़ा रही है । हिंदी के बिना बाजार अधूरा है । विदेशी कंपनियां अपना बाजार जमाने के लिए हिंदी का सहारा ले रही है । श्री दीपक पालित, महाप्रबंधक, इलाहाबाद बैंक कोलकाता ने कहा कि हिंदी जनता और बाजार की भाषा है । बहुराष्ट्रीय कंपनियां अपने उत्पादों की बिक्री के लिए हिंदी के स्लोगन का प्रयोग कर रहीं हैं । बैंकों की रोजी-रोटी हिंदी के बिना नहीं चल सकती । श्री निरूपम शर्मा, वरिष्ठ प्रबंधक, केनरा बैंक कोलकाता ने कंप्यूटर के माध्यम से क्रिकेट मैच का उदाहरण देते हुए राजभाषा के

कार्यान्वयन हेतु बदलते परिवेश की आवश्यकता पर बल दिया ।

दूसरे दिन 22 मार्च, 2007 को पुरस्कार वितरण करते हुए समारोह के मुख्य अतिथि गृह राज्य मंत्री श्री माणिक राव एच. गावीत जी ने कहा कि भारत में एक राष्ट्र की भावना बनानी है तो एक संपर्क भाषा होना आवश्यक है । अधिकतर लोगों द्वारा बोली तथा समझी जाने वाली हिंदी ही संपर्क भाषा का स्थान ले सकती है । राजभाषा हिंदी को भारत की अन्य भाषाओं से शब्द अपनाकर सबल बनाना होगा । इससे हमारी मिली जुली संस्कृति मजबूत होगी और भारतीय भाषाओं का भी विकास होगा । उन्होंने आगे कहा कि सूचना तकनीकी के युग में हिंदी का प्रयोग बढ़ रहा है । सरकारी काम-काज में आम बोलचाल के शब्दों और छोटे-छोटे वाक्यों का प्रयोग करें जिसे सब आसानी से समझ सकें ।

श्री प्रशांत कुमार मिश्र, सचिव, भारत सरकार ने समारोह की अध्यक्षता करते हुए अपने स्वागत भाषण में कहा कि पश्चिम बंगाल के विद्वानों, महान विभूतियों का संपर्क भाषा के रूप में हिंदी को विकसित करने में अविस्मरणीय योगदान रहा है । उन्होंने कहा कि संघ की राजभाषा नीति का कार्यान्वयन प्रेरणा, प्रोत्साहन व सद्भावना से किया जाना है । सभी कार्यालयों आदि में राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने के लिए विभाग द्वारा विभिन्न प्रोत्साहन योजनाएं लागू की गई हैं । इसी परिपेक्ष्य में राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन में उत्कृष्ट उपलब्धियों के लिएं राष्ट्रीय स्तर पर इंदिरा गांधी राजभाषा पुरस्कार और क्षेत्रीय स्तर पर क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार प्रदान किए जाते हैं । क्षेत्रीय स्तर पर राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन की मॉनिटरिंग के लिए देश में 8 क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय स्थापित हैं । इन कार्यालयों के कार्य क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले केंद्रीय कार्यालयों, सार्वजनिक उपक्रमों, बैंकों, वित्तीय संस्थानों व नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों को राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन में उत्कृष्ट उपलब्धियों के लिए पुरस्कार प्रदान करने के लिए तथा हिंदी कार्य में सहायक साफ्टवेयरों के बारे में नवीनतम जानकारी देने हेतु विभाग द्वारा समय-समय पर क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलनों का आयोजन किया जाता है । इस सम्मेलन में पूर्व व पूर्वोत्तर क्षेत्रों के अंतर्गत आने वाले केंद्रीय सरकार के कार्यालयों/उपक्रमों/बैंकों/वित्तीय संस्थानों व नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों को हिंदी में उनके सराहनीय कार्य के लिए माननीय गृह राज्यमंत्री जी के द्वारा पुरस्कृत किया गया । सूचना प्रौद्योगिकी के बारे में उन्होंने कहा कि राजभाषा विभाग इस ओर विशेष ध्यान दे रहा है । मंत्र तथा श्रुतलेख नामक सॉफ्टवेयर विकसित किए गए हैं। जिनके माध्यम से हिंदी में बोलने के साथ ही हिंदी टेक्स्ट अपने आप ही टाइप हो जाता है ।

धन्यवाद प्रस्ताव में गृह मंत्रालय की संयुक्त सचिव श्रीमती पी.वी. वल्सला जी कुट्टी ने सभी प्रतिभागियों का आभार प्रकट करते हुए कहा कि निश्चय ही हिंदी के प्रगामी प्रयोग द्वारा राजभाषा संबंधी संवैधानिक दायित्वों को पूरा करने में हमें मदद मिलेगी।

सम्मेलन में पुस्तक, पत्र-पत्रिकाओं की प्रदर्शनी तथा कंप्यूटर प्रदर्शनी भी लगाई गई, जिसे प्रतिभागियों ने काफी सराहा ।

भारतीय मात्स्यिकी सर्वेक्षण, पोर्ट ब्लेयर राजभाषा सेमिनार का आयोजन

भारतीय मात्स्यिकी सर्वेक्षण, पोर्ट ब्लेयर द्वारा दिनांक 15-12-2006 को "राजभाषा कार्यान्वयन के विविध पहलू (Various aspects of Implementation of Official Language)" विषय पर राजभाषा सेमिनार का आयोजन किया गया ।

संस्थान के क्षेत्रीय निदेशक श्री ए. एनरोज ने बताया कि राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में आने वाली व्यवहारिक कठिनाइयों को दूर करने, उनके व्यवहारिक हल खोजने की दिशा में संस्थान का यह तीसरा प्रयास है और मैं सोचता हूं कि आज के विचार-विमर्श से कार्यान्वयन के नए रास्ते खुलेंगे। विशेष अतिथि डॉ गोविन्द सिंह पंवार ने उपस्थिति को संबोधित करते हुए संस्थान के ऐसे आयोजनों की सराहना की । कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे दूरदर्शन केंद्र के केंद्र निदेशक श्री पी. के. सुभाष ने अपने संबोधन में कहा कि हिंदी कर्मचारियों की कमी कार्यान्वयन के मार्ग में बाधा है । रिक्त पड़े पदों को न भरे जाने के फलस्वरूप कार्यान्वयन में अपेक्षित प्रगति नहीं हो पा रही है । कार्यक्रम के मुख्य अतिथि एवं नराकास अध्यक्ष श्री राममिलन मुराव ने आयोजन की प्रशंसा करते हुए कहा कि कार्यान्वयन में सरल एवं आंचलिक भाषा के शब्दों को शामिल करते हुए प्रेरणा एवं प्रोत्साहन के जरिए कर्मचारियों को हिंदी में कार्य करने के

लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए ताकि उन्हें हिंदी में काम करना बोझ न लगे। संस्थान के मात्स्यिकी वैज्ञानिक डॉ मानस कुमार सिन्हा ने उपस्थिति का आभार प्रकट करते हुए कहा कि सामूहिक जिम्मेदारी निभाते हुए हम कार्यान्वयन को आगे ले जा सकते हैं । जिसमें बड़े अधिकारी से लेकर चपरासी जैसे चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारी का सहयोग अपेक्षित है ।

विजया बैंक, क्षेत्रीय कार्यालय, इस्पात भवन, रेहाबासी, ए.के. आजाद रोड, गुवाहाटी-781008

15 दिसंबर, 2006 को विजया बैंक क्षेत्रीय कार्यालय, गुवाहाटी द्वारा एक दिवसीय राजभाषा संगोष्ठी का आयोजन, केंद्रीय हिंदी संस्थान, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार के कहलिपारा रोड स्थित गुवाहाटी केन्द्र परिसर में किया गया । संगोष्ठी के दो विषय थे–कंप्यूटरीकरण के प्रभाव में हिंदी प्रयोग का दिशा चिन्तन–तथा–भारतीय संस्कृति के प्रतीक के रूप में हिंदी ।

समारोह का उदघाटन करते हुए विजया बैंक के क्षेत्रीय प्रबंधक श्री वी. टी. नायक जी ने सूचित किया कि बैंक अपने अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में विभिन्न शहरों में राजभाषा संगोष्ठियों का आयोजन कर रहा है और इसी क्रम में गुवाहाटी में भी इस संगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है। उन्होंने राजभाषा के प्रचार-प्रसार हेतु ऐसी संगोष्ठियों के नियमित आयोजन हेतु आग्रह किया। इसी प्रकार के विचार भारतीय बैंक प्रबंधन संस्थान के संकाय सदस्य श्री के. सी. मिश्रा जी ने भी प्रकट किए । इसी कड़ी में बोलते हुए डॉ. रवि प्रकाश गुप्त ने भी अपने संस्थान की ओर से ऐसी संगोष्ठियों के लिए भविष्य में पूरा सहयोग का आश्वासन दिया ।

पहले सत्र में कंप्यूटरीकरण के प्रभाव में हिंदी प्रयोग का दिशा चिंतन विषय का प्रवर्तन श्री के. सी. मिश्रा ने किया तथा दूसरे सत्र में भारतीय संस्कृति के प्रतीक के रूप में हिंदी नामक विषय का प्रवर्तन यूको बैंक क्षेत्रीय कार्यालय के वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) श्री जयेन्द्रनाथ त्रिवेदी ने किया और तत्पश्चात् दोनों विषयों पर वाद-प्रतिवाद भी हुआ। जिसमें मुख्य रूप से हिंदी शिक्षण योजना के सहायक निदेशक डॉ. रूस्तम राय, नेशनल इंशोरेन्स कंपनी के डा. एस.के. सिंह तथा भारतीय लघु उद्योग विकास बैंक के श्री प्रवीण भारद्वाज आदि ने भाग लिया ।

केनरा बैंक राजभाषा कक्ष, अंचल कार्यालय, राँची

राज्य स्तरीय राजभाषा प्रतिनिधि सम्मेलन

दिनांक 19-12-2006 को केनरा बैंक ने झारखंड स्थित अपनी सभी शाखाओं/कार्यालयों के राजभाषा प्रतिनिधियों का वार्षिक सम्मेलन आयोजित किया । यह एक दिवसीय सम्मेलन राँची स्थित बैंक के सम्मेलन कक्ष में आयोजित हुआ जिसमें प्रधान कार्यालय बेंगलूर के मण्डल प्रबंधक श्री एम.पी. गोपालकृष्णन मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे ।

सम्मेलन में उपस्थित प्रतिनिधियों तथा मुख्य अतिथि का स्वागत करते हुए झारखंड अंचल के उपमहाप्रबंधक श्री आर.आर.शर्मा ने बैंकों में राजभाषा हिंदी की आवश्यकता को रेखांकित करते हुए कहा कि वर्तमान बैंकिंग दौर जटिल प्रतिस्पर्धा के दौर से गुजर रहा है; जहाँ जिसके पास जितने उपभोक्ता–बैंकिंग दौड़ में वह उतना ही आगे । सर्वेक्षण के अनुसार भारत में तीस करोड़ का मध्यमवर्गीय उपभोक्ता बाजार उपलब्ध है जहाँ बैंकों द्वारा अपने खुदरा ऋण के नेटवर्क का विस्तार संभव है । भारत सरकार के दिशा निर्देशानुसार अगले साल तक कृषि ऋण का विस्तार भी दुगुना करना है । झारखंड राज्य में एन.पी.ए. वसूली या निर्धन तबके के लिए चलाए जाने वाले जमा योजना यथा "केनसरल" आदि ऐसे कार्य हैं जिसके लिए राजभाषा हिंदी ही अति लाभकारी है ।"

बेंगलूर कार्यालय से आए मण्डल प्रबंधक श्री गोपालकृष्णन ने उपस्थित प्रतिनिधियों को संबोधित करते हुए कहा कि "प्रधान कार्यालय स्तर से भारत सरकार के दिशा-निर्देशों के अनुरूप केनरा बैंक राजभाषा कार्यान्वयन के प्रति सतत प्रयत्नशील है । पिछले वर्ष केनरा बैंक को इंदिरा गाँधी राजभाषा पुरस्कार योजना के अधीन प्रोत्साहन पुरस्कार नई दिल्ली के विज्ञान भवन में आयोजित कार्यक्रम में प्राप्त हुआ है जिसके लिए आप सभी प्रतिनिधि बधाई के पात्र हैं । हमारे बैंक को इसका प्रथम पुरस्कार प्राप्त हो; इसका दायित्व आप ही पर है ।" झारखण्ड राज्य में सितंबर 06 माह के दौरान केनरा बैंक को नराकास, राँची द्वारा राष्ट्रीयकृत बैंकों की श्रेणी में प्राप्त प्रथम पुरस्कार की चर्चा करते हुए श्री गोपालकृष्णन ने बताया कि हिंदी भाषी क्षेत्र में

केनरा बैंक की सभी शाखाओं में समस्त फ्रंट आफिस कार्य हिंदी में करने के लिए "बैंक स्क्रिप्ट पैकेज" प्रदान किया जा चुका है । ग्राहकों की माँग पर उन्हें बैंकिंग सेवा हिंदी में ही उपलब्ध कराया जाए । साथ ही एम.एस. वर्ड पर समस्त कार्य हिंदी में करने के लिए बैंक द्वारा प्राप्त "आकृति" के कारपोरेट लाइसेन्स की चर्चा करते हुए प्रतिनिधियों से इसके अधिकतम उपयोग का अनुरोध किया । इस सम्मेलन में वार्षिक समीक्षा के साथ प्रतिनिधियों से सुझाव भी प्राप्त किए गए। उक्त स्थल पर अंचल के राजभाषा कक्ष की तरफ से हिंदी में प्रकाशित विभिन्न बैंकिंग सामग्रियों की एक आकर्षक प्रदर्शनी भी लगाई गई थी ।

आकाशवाणी : चेन्नई

केंद्र में दिनांक 29-11-2006 को सुबह 11.00 बजे संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संयुक्त कार्यशाला के प्रतिभागी इस संगोष्ठी में भी उपस्थित हुए । संगोष्ठी में प्रपत्र वाचन करने हेतु चेन्नई स्थित केंद्रीय सरकारी कार्यालयों में कार्यरत अधिकारीगण उपस्थित थे । संगोष्ठी का शुभारंभ प्रार्थना से हुआ । केंद्र के हिंदी अनुवादक श्रीमती ललिता नायर निर्दोष ने आमंत्रित अतिथियों एवं उपस्थितों का स्वागत किया ।

केंद्र निदेशक श्री के. श्रीनिवासराघवन की अध्यक्षता में अधीक्षण अभियंता श्री आर. वरदराजन ने संगोष्ठी का उद्घाटन किया । उन्होंने अपने उद्घाटन भाषण में राजभाषा के महत्व पर प्रकाश डालकर बताया कि उद्देश्य के लिए लक्ष्य की ओर बढ़ना उस उद्देश्य तक पहुंचने की साधना है । राजभाषा का सम्पूर्ण विकास हमारा लक्ष्य है ।

इस अवसर पर अपने अध्यक्षीय अभिभाषण में केंद्र निदेशक श्री के. श्रीनिवासराघवन ने कहा कि राजभाषा का विकास और कार्यालय में उसका समुचित प्रयोग हमारा उद्देश्य है, हमें राजभाषा के लिए जो नियम है उसका अनुपालन करना है और इस दिशा में हम पूरा प्रयास कर रहे हैं।

संगोष्ठी के लिए विषय रखा गया था "राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन में व्यावहारिक कठिनाइयाँ"। इस विषय पर श्रीमती महेश्वरी रंगनाथन, हिंदी अधिकारी, दक्षिण रेलवे, श्री पी.आर.वासुदेवन हिंदी अधिकारी, महालेखाकार का कार्यालय एवं डॉ. पी.वी.राधिका, प्राध्यापिका, हिंदी शिक्षण योजना ने प्रपत्र वाचन किया । श्रीमती महेश्वरी ने हिंदीतर प्रांत होने के नाते हिंदी में काम करने में कर्मचारियों को होनेवाली झिझक एवं तदनुसार पत्राचार में हो रही कमी का जिक्र किया । डॉ. पी.वी. राधिका ने हिंदी प्रशिक्षण में आने वाली कठिनाइयों को सामने रखा । श्री पी.आर. वासुदेवन ने समग्र रूप से क्रियान्वयन में होने वाली कठिनाइयों के समाधान पर चर्चा की ।

भारतीय पेट्रोलियम संस्थान, देहरादून

आंतरिक हिंदी वैज्ञानिक संगोष्ठी

संगोष्ठी का उद्घाटन करते हुए संस्थान के निदेशक, डॉ. एम. ओ. गर्ग ने राजभाषा अनुभाग द्वारा किए जा रहे समारोहों, कार्यक्रमों व हिंदी विषयक संगोष्ठियों की सराहना करते हुए कहा कि इस प्रकार के आयोजन राजभाषा के प्रचार-प्रसार में उपयोगी सिद्ध होंगे। संगोष्ठियों में पढ़े गए आलेखों के बारे में उन्होंने कहा कि विषयवार इनका प्रकाशन किया जा सकता है जो परिष्करणियों, विश्वविद्यालयों तथा महाविद्यालयों के लिए अत्यंत लाभकारी कार्य हो सकता है । पुस्तक रूप में प्रकाशित इन लेखों से जनसाधारण भी लाभान्वित हो सकता है । विज्ञान को राजभाषा के माध्यम से अभिव्यक्त करने की शृंखला में आयोजित अब तक की पंद्रह हिंदी वैज्ञानिक संगोष्ठियां इसी प्रगति यात्रा की सूचक है । संगोष्ठी के संयोजक एवं संस्थान के वरिष्ठ हिंदी अधिकारी डॉ. दिनेश चमोला ने कहा कि अपनी भाषा हिंदी में विज्ञान का प्रचार-प्रसार करना राष्ट्रीय महत्व का कार्य है । तब तक हमारे वैज्ञानिक अनुसंधानों का विशेष महत्व नहीं है जब तक पास, परिवेश व समाज में वैज्ञानिक चेतना का विकास नहीं हो जाता। विज्ञान को जनता के करीब लाने व जनमानस में वैज्ञानिक जागरूकता फैलाने में उत्प्रेरक का कार्य कर सकती हैं, ये हिंदी वैज्ञानिक संगोष्ठियां । हमें खुलकर अपनी भाषा में विज्ञान को अभिव्यक्त करना चाहिए ।

संगोष्ठी में संस्थान के वैज्ञानिकों यथा डॉ. एच. बी. गोयल ने 'जैव-मात्रा' ; श्री आनंद सिंह ने 'पॉलिमरयुक्त बिटुमिन प्रौद्योगिकी'; सुश्री सुधा कफोला ने 'औद्योगिक विकास में जैव-प्रौद्योगिकी का योगदान'; डॉ. सुमन लता जैन ने वैनेडियम उत्प्रेरक की उपस्थिति में हाइड्रोजन परॉक्साइड द्वारा बेंजीन के एक पदीय हाइड्रोक्सीकरण विधि द्वारा फिनॉल का निर्माण'; श्री चंचल कुमार तिवारी ने 'पवन चक्की में स्नेहक की चुनौतियां' तथा डॉ. ओ. एस. त्यागी ने

'रसायन विज्ञान में मापिकी : सामुयिक प्रसंग एवं संक्षिप्त परिचय' विषय पर क्रमशः शोध-पत्रों की प्रस्तुतियां हिंदी में दीं ।

एन.एच.पी.सी. में अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का आयोजन

नैशनल हाइड्रोइलैक्ट्रिक पावर कारपोरेशन लि., फरीदाबाद द्वारा दिनांक 6 व 7 दिसंबर, 2006 को अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन आयोजित किया गया । इस सम्मेलन का उद्घाटन दिनांक 6 दिसंबर, 2006 को निगम के अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक, श्री एस. के. गर्ग ने किया । उन्होंने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि हमारा लक्ष्य है हर घर को बिजली उपलब्ध कराना । तथापि हम ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में नए रिकॉर्ड दर्ज करते हुए हम सांस्कृतिक व भाषायी समन्वय स्थापित करने के लिए भी कृतसंकल्प हैं ।

इस अवसर पर हिंदी के मूर्धन्य साहित्यकार डॉ. नरेन्द्र कोहली मुख्य अतिथि थे । सम्मेलन में एन.एच.पी.सी. के देश भर में फैले सभी कार्यालयों/परियोजनाओं के राजभाषा अधिकारियों ने भाग लिया । उद्घाटन सत्र में निगम के सभी कार्यपालक निदेशकगण भी उपस्थित थे । डॉ. कोहली ने अपने संबोधन में हिंदी साहित्य और जीवन मूल्य पर प्रकाश डालते हुए मनुष्य के सामने प्रस्तुत मौजूद चुनौतियों और उसकी संघर्षशीलता को अत्यंत सारगर्भित रूप में परिभाषित किया । उन्होंने कहा कि हम जितना अपनी संस्कृति और भाषा से जुड़ेंगे, उतना ही हमारा देश उन्नति करेगा । हमें राजनीतिक स्वतंत्रता मिल चुकी है, लेकिन अब हमें सांस्कृतिक स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करना है ।

इस अवसर पर निगम के निदेशक (परियोजनाएं), श्री एस.के. डोडेजा ने एन.एच.पी.सी. कार्मिकों की निष्ठा व लगन का उल्लेख करते हुए कहा कि हमने अनेक चुनौतियों का सफलता पूर्वक सामना किया है । राजभाषा कार्यान्वयन में भी हम पीछे नहीं है । एन.एच.पी.सी. को राजभाषा के क्षेत्र में भी समय-समय पर अनेक सम्मान व पुरस्कार प्राप्त हुए हैं । इससे पहले श्री उपेन्द्र राय, महाप्रबंधक (मानव संसाधन, कारपोरेट संचार व राजभाषा) ने सभी का स्वागत किया ।

सम्मेलन के द्वितीय सत्र की अध्यक्षता डॉ. द्वारिका प्रसाद चारूमित्र, सुप्रसिद्ध कवि, लेखक एवं रीडर, दिल्ली विश्वविद्यालय ने की । उन्होंने हिंदी के वर्तमान और भविष्य पर प्रकाश डालते हुए कहा कि हिंदी भाषा और साहित्य की जड़ें अत्यंत मजबूत हैं । आज के साहित्य में कुंठा व निराशा की जगह सृजनशील मनुष्य की सकारात्मक सोच परिलक्षित हो रही है । इस सत्र के वक्ता थे डॉ. अनिल राय, प्रसिद्ध लेखक एवं रीडर, दिल्ली विश्वविद्यालय ।

इसके अगले सत्र में श्री दिनेश कुमार पाण्डेय, अवर सचिव, संसदीय राजभाषा समिति ने राजभाषा कार्यान्वयन निरीक्षण एवं मॉनीटरिंग विषय पर व्याख्यान दिया । इस सत्र की अध्यक्षता डॉ. परमानंद पांचाल, सदस्य, हिंदी सलाहकार समिति, विद्युत मंत्रालय ने की । विद्वान लेखक एवं विचारक डॉ. पांचाल ने राजभाषा कार्यान्वयन को सुदृढ़ बनाने एवं नियमों के अनिवार्य अनुपालन पर जोर दिया ।

सम्मेलन के दूसरे दिन राजभाषा वार्षिक कार्यक्रम एवं निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति पर डॉ. राजबीर सिंह, प्रबंधक-प्रभारी (राजभाषा) ने आंतरिक परिचर्चा की । इस सत्र की अध्यक्षता श्री सुभाष सेतिया, अतिरिक्त महानिदेशक (समाचार), प्रसार भारती ने की । अगले सत्र में 'वैश्वीकरण व हिंदी' विषय पर डॉ. हरिमोहन शर्मा, प्रोफेसर, दिल्ली विश्वविद्यालय ने अपने विचार प्रस्तुत किए । उन्होंने विश्व में हिंदी के स्थान और उनके बढ़ते प्रचार-प्रसार पर प्रकाश डाला । डॉ. नित्यानंद तिवारी, प्रसिद्ध लेखक व चिंतक, पूर्व-प्रोफेसर एवं विभागीयध्यक्ष, दिल्ली विश्वविद्यालय ने इस सत्र की अध्यक्षता की । उन्होंने हिंदी भाषा के सौष्ठव का उल्लेख करते हुए कहा कि हिंदी में जितनी आत्मीयता है उतनी किसी विदेशी भाषा में नहीं है । उन्होंने भूमण्डलीकरण के भाषाओं पर पड़ने वाले प्रभाव और बाजारवाद की मौजूदा प्रवृत्तियों के परिप्रेक्ष्य में हिंदी के वर्तमान स्वरूप को रेखांकित किया । इस अवसर पर 'सूचना प्रौद्योगिकी व हिंदी के प्रयोग में कंप्यूटर की भूमिका' विषय पर श्री केवल कृष्ण, तकनीकी निदेशक, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय ने नई जानकारी से प्रतिभागियों को अवगत कराया । इस सत्र की अध्यक्षता, श्रीमती पी. वी. वल्सला जी. कुट्टी, संयुक्त सचिव, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय ने की । उन्होंने हिंदी भाषा की गरिमा पर प्रकाश डालते हुए राष्ट्रीय एकता एवं समन्वय में हिंदी के योगदान को रेखांकित किया ।

सम्मेलन के समापन सत्र के मुख्य अतिथि प्रतिष्ठित साहित्यकार, डॉ. केदार नाथ सिंह थे । डॉ. केदार नाथ सिंह ने अपने संबोधन में अत्यंत सहज, सरल शब्दों में जीवन को उद्देश्यपूर्ण बनाने पर जोर देते हुए श्रोता प्रतिभागियों का निहित स्वार्थों से ऊपर उठकर व्यक्तित्व निमार्ण का आह्वान किया । उन्होंने कहा कि हिंदी में कार्य को हिंदी दिवस/पखवाड़े तक सीमित नहीं रखना चाहिए । हिंदी में काम करना सहज आत्माभिव्यक्ति के लिए जरूरी है । उन्होंने आह्वान किया कि हमें हिंदी और भारतीय भाषाओं के विकास पर जोर देना है, इससे राष्ट्रीय चेतना और भाषायी एकता को बल मिलेगा ।

केनरा बैंक
प्रधान कार्यालय, बेंगलूर

राजभाषा अधिकारियों का सम्मेलन

बैंक के राजभाषा अधिकारियों का 24वां अखिल भारतीय सम्मेलन का आयोजन हमारे बैंक के कर्मचारी प्रशिक्षण महाविद्यालय, बेंगलूर में 2 तथा 3 मार्च 2007 को हुआ। दो दिवसीय सम्मेलन के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता श्री आलोक मिश्रा, कार्यपालक निदेशक द्वारा की गई तथा श्रीमती पी. वी. वल्सला जी कुट्टी, संयुक्त सचिव, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार, मुख्य अतिथि थीं । श्री मिश्रा ने अपने अध्यक्षीय भाषण में केनरा बैंक के सुखद सौ वर्षों के बारे में बात की, जो आज बैंकिंग क्षेत्र में प्रथम स्थान पर है । उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि आज की प्रतिस्पर्धात्मक दुनिया में वही बैंक सफल हो सकता है जो ग्राहकों की आवश्यकता को ध्यान में रखे। उन्होंने कारोबार विकास तथा ग्राहक सेवा में हिंदी की महत्वपूर्ण भूमिका की भी चर्चा की । उन्होंने प्रतिभागियों से अपील की कि राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में भारत सरकार तथा भारतीय रिज़र्व बैंक की अपेक्षाओं को पूरा करने के लिए गंभीर प्रयास करें ताकि बैंक हमेशा इस क्षेत्र में भी आगे रहे । उन्होंने यह इच्छा भी जाहिर कि कि हमारे अथक प्रयास से बैंक अगले वर्ष इंदिरा गांधी राजभाषा शील्ड जीते । मुख्य अतिथि श्रीमती कुट्टी ने ज़ोर दिया कि प्रतिभागी/कर्मचारी बैंक के कारोबार विकास पर ध्यान केंद्रित करें जो संगठन की मुख्य गतिविधि है और उसके साथ-साथ राजभाषा हिंदी के प्रयोग पर भी ध्यान दें ।

बैंक की वार्षिक हिंदी पत्रिका 'केनज्योति' का मुख्य अतिथि द्वारा विमोचन किया गया । श्री एन. एस. श्रीनाथ, महाप्रबंधक, कार्मिक विभाग, प्रधान कार्यालय ने मुख्य अतिथि का स्वागत किया तथा अपने अभिभाषण में उन्होंने जोर दिया कि राजभाषा सम्मेलन आने वाले दिनों में हमारे बैंक को एक नई ऊंचाई की ओर ले जाए । श्री एन शेषाद्री, महाप्रबंधक व प्रधानाचार्य, कर्मचारी प्रशिक्षण महाविद्यालय ने अपने संबोधन में सभी प्रतिभागियों से अपील की कि वे भारत सरकार द्वारा हिंदी कार्यान्वयन के लिए निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए एकजुटता तथा पूरे दिल से काम करें । उन्होंने यह भी कहा कि हम वित्तीय समावेशन के लक्ष्य को हिंदी तथा स्थानीय भाषाओं के द्वारा ग्राहक सेवा प्रदान कर प्राप्त कर सकते है। इसके पहले, श्री एम. पी. गोपालकृष्णन, मंडल प्रबंधक, कार्मिक विभाग, प्रधान कार्यालय ने मुख्य अतिथि का परिचय कराया तथा बैंक में राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी रिपोर्ट का पावरप्वाइंट प्रस्तुतीकरण किया । श्रीमती सी एस विजयलक्ष्मी, वरिष्ठ प्रबंधक, राजभाषा अनुभाग, प्रधान कार्यालय ने कार्यक्रम का संचालन किया तथा श्री एन एस ओमप्रकाश, प्रबंधक, राजभाषा अनुभाग, प्रधान कार्यालय ने धन्यवाद ज्ञापन किया । श्री एन. एस. श्रीनाथ, महाप्रबंधक तथा श्री एन शेषाद्री, महाप्रबंधक ने उद्घाटन सत्र के बाद प्रतिभागियों के साथ विचार-विमर्श किया ।

गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग
उप निदेशक (पश्चिम) का कार्यालय हिंदी शिक्षण योजना

केंद्रीय सदन, छठी मंजिल, सी विंग,
सेक्टर-10, सी.बी.डी. बेलापुर,
नवी मुंबई-400 614.

संपर्क अधिकारियों की बैठक का कार्यवृत्त

दिनांक 4 जनवरी, 2007 (गुरुवार) को प्रातः 10.00 बजे केंद्रीय कपास प्रौद्योगिकी अनुसंधान संस्थान, माटुंगा, मुंबई में राजभाषा हिंदी से संबंधित संपर्क अधिकारियों की बैठक का आयोजन किया गया ।

बैठक में निम्नलिखित सुझाव प्राप्त हुए :-

1. टंकण/आशुलिपि प्रशिक्षण के लिए लीला प्रबोध, प्रवीण व प्राज्ञ की तरह स्वयं शिक्षक सॉफ्टवेयर बनाना चाहिए

और आशुलिपि प्रशिक्षण के लिए पत्राचार की व्यवस्था की जानी चाहिए ।

2. बैठक में यह मुद्दा भी उभरकर सामने आया कि भाषा प्रशिक्षण की भाँति टंकण/आशुलिपि प्रशिक्षण भी विकेंद्रित किया जाना चाहिए तथा नगर के प्रमुख स्थानों पर उक्त प्रशिक्षण के लिए और केंद्र खोले जाने चाहिए । यदि नियमित प्रशिक्षकों द्वारा प्रशिक्षण दिलवाना संभव नहीं है तो मुंबई में टंकण/आशुलिपि के अंशकालिक तथा विभागीय प्रशिक्षण केंद्र खोले जाने चाहिए ।

3. सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को कार्यालयीन हिंदी का प्रशिक्षण दिलवाया जाना आवश्यक है ।

4. कार्यसाधक ज्ञान का घोषणा पत्र भरवाने से पूर्व कार्यालय प्रमुख के स्तर पर जांच की जानी चाहिए थी । संबंधित कर्मचारी को वास्तव में हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान है । इस व्यवस्था की मॉनिटरिंग होनी चाहिए ।

5. हिंदी अधिकारियों/अनुवादकों आदि के लिए यथासंभव संस्थान की तरह अल्पकालीन पुनश्चर्या पाठयक्रम चलाने चाहिए ।

6. गहन प्रशिक्षण में पूरे दिन एक ही प्रशिक्षक द्वारा प्रशिक्षण शिक्षण/प्रशिक्षक के सिद्धांतों के अनुरूप व व्यावहारिक नहीं है । अतः उक्त कक्षाओं में दो प्रशिक्षकों की व्यवस्था होने से प्रशिक्षण अधिक ग्राह्य और रुचिकर होगा ।

7. भाषा प्रशिक्षण को रोचक बनाने के लिए कुछ मनोरंजक सामग्री जोड़ी जाए । इस हेतु स्टडी टूर उपयोगी हो सकता है ।

8. भाषा प्रशिक्षण केंद्रों को आकर्षक और सुविधा संपन्न बनाया जाए व आधुनिक शिक्षा प्रौद्योगिकी से संबद्ध किया जाना चाहिए ।

9. हिंदी शिक्षण योजना के आदेशों का संकलन काफी समय से नहीं छपा है उसे शीघ्र प्रकाशित किया जाए तथा नवीनतम आदेशों व स्पष्टीकरणों को प्रकाशित किया जाए ।

10. परीक्षाएं, बिना किसी प्रकार के अनुचित साधनों के प्रयोग के सुचारू रूप से संपन्न हों, इस हेतु हिंदी शिक्षण योजना के अधिकारियों द्वारा यथा समय निरीक्षण आदि आवश्यक कार्रवाई की जानी चाहिए ।

बैठक में मुख्य अतिथि पुलिस महानिरीक्षक, श्री अतुल कुमार माथुर, आई.पी.एस. ने अपने प्रेरक एवं उत्साहवर्धक वक्तव्य में हिंदी प्रशिक्षण को अधिक रोचक व आकर्षक बनाए जाने की आवश्यकता पर बल दिया । विशेष अतिथि व केंद्रीय कपास प्रौद्योगिकी अनुसंधान संस्थान के निदेशक, श्री एस. श्रीनिवासन ने कहा कि वैज्ञानिक हिंदी भाषा को अधिकाधिक अपना रहे हैं । प्रशासनिक कार्य में हिंदी का प्रयोग अपेक्षाकृत सरल है, इसलिए इसे अधिकाधिक प्रयोग में लाया जाना चाहिए । इसी संस्थान के प्रधान वैज्ञानिक व अतिथि विशेष श्री मुंतजिर अहमद ने हिंदी प्रशिक्षण के लिए लक्ष्यों की प्राप्ति के साथ-साथ उद्देश्यों की प्राप्ति पर बल दिया । अंत में अध्यक्ष व निदेशक, केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान ने अतिथियों व प्रतिभागियों की सभी शंकाओं का समाधान करते हुए हिंदी प्रशिक्षण की उपादेयता एवं आवश्यकता पर प्रकाश डाला तथा दिए गए सुझावों पर आवश्यक कार्रवाई का आश्वासन दिया ।

प्रजातंत्रीय देश में अधिकतम जनसमुदाय द्वारा बोली और समझी जाने वाली भाषा ही राष्ट्रभाषा का कार्य संपादित कर सकती है उस दृष्टि से हिंदी इस कसौटी पर पूरी उतरती है ।

(अनन्त रायनम् आयंगर)

पुरस्कार/प्रतियोगिताएं

आकाशवाणी पणजी को राजभाषा शील्ड

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग का क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन 12 और 13 फरवरी, 2007 को जयपुर में आयोजित किया गया जिसमें गोवा, दमन-दीव, दादरा नगर हवेली, महाराष्ट्र, गुजरात, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़ और राजस्थान के केंद्र सरकार के विभागों, सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों, बैंकों और निगमों के अध्यक्षों ने भाग लिया । पुरस्कार वितरण समारोह की अध्यक्षता भारत सरकार, राजभाषा विभाग की संयुक्त सचिव श्रीमती पी. वी. वल्सला जी कुट्टी ने किया। इस सम्मेलन के मुख्य अतिथि माननीय केंद्रीय गृह राज्य मंत्री श्री माणिकराव एच. गावीत थे। आकाशवाणी पणजी के स्टेशन इंजीनियर श्री वी. एन. पागे की ओर से पश्चिम ''ग'' क्षेत्र का तृतीय पुरस्कार (राजभाषा शील्ड) मंत्री महोदय के कर कमलो से आकाशवाणी पणजी प्रशासनिक अधिकारी श्री पीटर एम. जे. ने ग्रहण किया । आकाशवाणी पणजी के हिंदी अधिकारी श्री खगेश्वर प्रसाद यादव को वर्ष 2005-2006 के दौरान राजभाषा नीति के श्रेष्ठ निष्पादन के लिए तृतीय स्थान प्राप्त करने पर भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग की ओर से प्रदत्त प्रशस्ति पत्र भी श्री पीटर ने ग्रहण किया।

भारतीय आयुध निर्माणियां, वाहन निर्माणी, जबलपुर-482009

राजभाषा शील्ड ''चल वैजयन्ती'' से दूसरी बार पुरस्कृत

विगत दिवस आयुध निर्माणी इटारसी में मध्य क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन-06 सम्पन्न हुआ। उक्त सम्मेलन में मध्य क्षेत्र स्थित सभी निर्माणियों के वरिष्ठ महाप्रबंधक / महाप्रबंधक/ वरिष्ठ अधिकारी, हिंदी अधिकारी, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक एवं राजभाषा से जुड़े कर्मचारियों ने भाग लिया। इस सम्मेलन में वाहन निर्माणी, जबलपुर को राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में सर्वश्रेष्ठ कार्य निष्पादन हेतु लगातार दूसरी बार सर्वश्रेष्ठ राजभाषा शील्ड **''चल वैजयन्ती''** से पुरस्कृत किया गया। यह सम्मेलन श्री हरनाम सिंह, सदस्य/कार्मिक, आयुध निर्माणी बोर्ड कोलकाता की अध्यक्षता में आयोजित किया गया। यह सम्मेलन के लिये वरिष्ठ महाप्रबंधक महोदय श्री सी. एस. सिवकुमार, अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति के दिशा निर्देशन एवं अपर महाप्रबंधक/प्रशासन श्री डी. के. श्रीवास्तव, उपाध्यक्ष राजभाषा कार्यान्वयन समिति के कुशल नेतृत्व में वाहन निर्माणी, जबलपुर ने अपनी प्रस्तुति दी तथा शील्ड एवं प्रमाण-पत्र हासिल किया।

भारत डायनामिक्स लिमिटेड, कंचनबाग, हैदराबाद

तकनीकी विषयों पर हिंदी में प्रपत्र प्रस्तुति प्रतियोगिता

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम) हैदराबाद के तत्वावधान में रक्षा मंत्रालयाधीन उद्यम भारत डायनामिक्स लिमिटेड द्वारा तकनीकी विषयों पर 'हिंदी में प्रपत्र प्रस्तुति' इस अंतर-उपक्रम प्रतियोगिता का आयोजन दिनांक 29-11-2006 को किया गया। इस अवसर पर भारत डायनामिक्स के श्री अशोक अपसिंगीकर, अपर महाप्रबंधक (गुणता नियंत्रण-निगम) ने उद्घाटन किया। आपने, तकनीकी विषयों पर हिंदी में अभिव्यक्ति को बढ़ावा दिए जाने की जरूरत पर बल देते हुए क्लिष्ट भाषा प्रयोग से बचने की वकालत की। श्री पी. पी. सी. अजय कुमार, महाप्रबंधक (का. एवं प्र.) राजभाषा प्रभारी ने सभी टीमों का स्वागत किया। आपने हर स्वतंत्र देश की पहचान तथा संस्कृति संवहन के लिए एक भाषा की जरूरत पर जोर देते हुए विज्ञान विषय हिंदी में सरलता से समझने पर जोर दिया। राष्ट्रीय भू-भौतिकीय अनुसंधान संस्थान हैदराबाद से निवृत्त वैज्ञानिक जी डॉ. पद्माकर धनंजय सराफ, मुख्य अतिथि थे। जिन्होंने निर्णायक की भूमिका भी निभाई । आपने अपने संबोधन में, हिंदी भाषा की क्षमता का तथा जीवन में विज्ञान के महत्व का प्रतिपादन किया तथा प्रतिभागियों के मार्गदर्शन के रूप में अपने कुछ निजी अनुभव बताए।

भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण, गोवा

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा पुरस्कृत

भारत सरकार गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा 12, 13 फरवरी, 2007 को जयपुर में आयोजित पश्चिम एवं मध्य क्षेत्रों का दो दिवसीय राजभाषा सम्मेलन में पश्चिम क्षेत्र के अन्तर्गत आने वाले 'ग' क्षेत्र के उपक्रमों में वर्ष 2005-06 के दौरान राजभाषा नीति के उत्कृष्ट कार्यान्वयन तथा हिंदी में किए गए श्रेष्ठ कार्य निष्पादन के लिए भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण, गोवा को तृतीय पुरस्कार प्रदान किया गया।

इस समारोह में माननीय गृह राज्यमंत्री, श्री माणिकराव एच. गावित मुख्य अतिथि थे। माननीय गृह राज्यमंत्री, श्री माणिकराव एच. गावित द्वारा विमानपत्तन निदेशक, गोवा के लिए श्री अनुज अग्रवाल, विमानपत्तन निदेशक, जयपुर को राजभाषा शील्ड प्रदान किया गया। माननीय गृह राज्यमंत्री, श्री माणिकराव एच. गावित द्वारा श्री इन्ताज अली, हिंदी अनुवादक, भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण, गोवा को प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया। इस अवसर पर श्रीमती पी. वी. वल्सला जी कुट्टी, संयुक्त सचिव, राजभाषा विभाग, नई दिल्ली उपस्थित थी ।

भारतीय रिजर्व बैंक, मुंबई

सरकारी क्षेत्र के बैंकों/वित्तीय संस्थाओं के लिए द्विभाषी तथा हिंदी गृह-पत्रिका प्रतियोगिता

सरकारी क्षेत्र के बैंकों/वित्तीय संस्थाओं के लिए द्विभाषी गृहपत्रिका तथा हिंदी गृहपत्रिका प्रतियोगिता के अंतर्गत वर्ष 2005-06 (अप्रैल-मार्च) के संबंध में मूल्यांकन समिति की बैठक श्री हरिचनदन प्रसाद, प्रधान मुख्य महाप्रबंधक, प्रशासन और कार्मिक प्रबंध विभाग, भारतीय रिजर्व बैंक, मुंबई की अध्यक्षता में 7 फरवरी, 2007 को बैंक के केंद्रीय कार्यालय भवन की 15वीं मंजिल पर स्थित सम्मेलन कक्ष-1 में पूर्वाह्न 11.00 बजे आयोजित की गई ।

सर्वप्रथम श्री आर. डी. धुर्वे, महाप्रबंधक (प्रभारी अधिकारी), राजभाषा विभाग, भारतीय रिज़र्व बैंक ने अध्यक्ष महोदय तथा भारत सरकार, गृह मंत्रालय के अधिकारियों एवं सभी का बैठक में स्वागत किया। तदनंतर अध्यक्ष महोदय की अनुमति से बैठक की कार्यवाही प्रारंभ हुई।

मूल्यांकन समिति के समक्ष वर्ष 2005-06 की हिंदी और द्विभाषी प्रतियोगिताओं के संदर्भ में प्राप्त क्रमशः 12 और 18 प्रविष्टियों के समेकित ब्यौरे तथा प्राप्त पत्रिकाओं के अंक प्रस्तुत किए गए । समिति के सदस्यों ने प्रतियोगिता के लिए निर्धारित मानदंडों के अनुसार पत्रिकाओं का मूल्यांकन किया ।

श्री संदीप घोष, प्रभारी मुख्य महाप्रबंधक, मानव संसाधन विकास विभाग, भारतीय रिज़र्व बैंक, मुंबई ने पिछली बैठक में व्यक्त अपने इस अभिमत पर पुनः बल दिया कि पत्रिकाओं के स्वरूप, उनमें दी गई सामग्री, कलेवर, लेख आदि की विविधता आदि सहित पत्रिकाओं का स्वरूप इस प्रकार का हो कि वह गृहपत्रिका लगे और संस्था की छवि प्रस्तुत करने के साथ संस्था की गतिविधियों को उजागर करे। समिति के अन्य सदस्यों ने इस पर सम्मति दर्शाई ।

द्विभाषी पत्रिकाओं के मूल्यांकन के संदर्भ में श्री बी. सी. मंडल, निदेशक (अनुसंधान), गृह मंत्रालय, भारत सरकार, राजभाषा विभाग, नई दिल्ली ने अभिमत दिया कि इनमें हिंदी/स्थानीय भाषा के प्रयोग को तरजीह दी गई हो और इस प्रकार यह कम से कम 40 प्रतिशत रहे इस पर जोर दिया जाए। इसे सर्व सम्मति से स्वीकार किया गया।

'कूलिंग पीरियड' में रहने वाला एक बैंक था पंजाब एण्ड सिंध बैंक जिन्हें (चतुर्थ स्थान) प्रोत्साहन पुरस्कार मिला था ।

मूल्यांकन समिति के निर्णय के अनुसार वर्ष 2005-06 (अप्रैल-मार्च) के लिए द्विभाषी और हिंदी गृहपत्रिकाओं के परिणाम निम्नानुसार तय किये गये:

द्विभाषी गृहपत्रिका प्रतियोगिता-2005-06-परिणाम

बैंक/वित्तीय संस्था का नाम	पत्रिका का नाम	स्थान
पंजाब नेशनल बैंक	पीएनबी स्टाफ जर्नल	प्रथम
देना बैंक	देना ज्योति	द्वितीय
बैंक ऑफ महाराष्ट्र	महा बैंक	तृतीय
भारतीय निर्यात आयात एक्ज़िम बैंक	एक्ज़िमियस	चतुर्थ
बैंक ऑफ बड़ौदा	बॉब मेत्री	चतुर्थ
बैंक ऑफ इंडिया	तारांगण	चतुर्थ

हिंदी गृहपत्रिका प्रतियोगिता–2005-06–परिणाम

बैंक/वित्तीय संस्था का नाम	पत्रिका का नाम	स्थान
भारतीय स्टेट बैंक	प्रयास	प्रथम
राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक (नाबार्ड)	सृजना	द्वितीय
इंडियन ओवरसीज़ बैंक	वाणी	तृतीय
कारपोरेशन बैंक	मंगला	चतुर्थ
स्टेट बैंक ऑफ इंदौर	इंदौर बैंक परिवार	चतुर्थ
राष्ट्रीय आवास बैंक (एन. एच. बी)	आवास भारती	चतुर्थ

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् कृषि भवन, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद मार्ग, नई दिल्ली–110001

परिषद् में वार्षिक हिंदी पुरस्कार वितरण समारोह

भारतीय कृषि अनुसंधान परषिद् के तत्वावधान में 28 नवम्बर, 2006 को एन ए एस सी काम्प्लेक्स, पूसा, नई दिल्ली में अपर सचिव, डेयर तथा सचिव, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, श्री अनिल कुमार उपाध्याय की अध्यक्षता में वार्षिक हिंदी पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया। इस समारोह में मुख्य अतिथि परिषद् के महानिदेशक डा. मंगला राय थे ।

वर्ष 2005–06 का "राजर्षि टंडन राजभाषा पुरस्कार" भारतीय कृषि सांख्यिकी अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली, भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली, केंद्रीय कपास प्रौद्योगिक अनुसंधान संस्थान, मुम्बई, राष्ट्रीय मृदा सर्वेक्षण भूमि उपयोग नियोजन ब्यूरो, नागपुर, केंद्रीय मात्स्यिकी प्रौद्योगिक संस्थान, कोचीन तथा गन्ना प्रजनन संस्थान, कोयम्बतूर को वर्ष 2005–06 में अपना अधिकतम कार्य हिंदी में करने के लिए प्रदान किया गया। "गणेश शंकर विद्यार्थी हिंदी कृषि पत्रिका पुरस्कार" इस वर्ष केंद्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, कोचीन और भारतीय कृषि सांख्यिकी अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली को प्रदान किया गया। इस वर्ष हिंदी चेतना मास के दौरान मुख्यालय में आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में विजयी प्रतिभागियों को भी इस अवसर पर पुरस्कृत किया गया। इसके अलावा परिषद् मुख्यालय में वर्षभर मूल रूप से हिंदी में अधिकाधिक कार्य करने वाले कर्मिकों को भी पुरस्कृत किया गया।

समारोह का शुभारम्भ सरस्वती वन्दना और परिषद् के अधिदेश से संबंधित एक मधुर गीत से हुआ। मुख्य अतिथि और मंच पर उपस्थित सभी अधिकारियों द्वारा दीप प्रज्ज्वलन किया गया। मुख्य अतिथि डा. मंगला राय ने पुरस्कार विजेताओं को बधाई देते हुए कहा कि कार्यालय कार्यों में हिंदी को बढ़ावा देने के लिए ऐसे आयोजन की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। उन्होंने कहा कि हिंदी भाषा को किसी अन्य भाषा से स्पर्धा के रूप में नहीं वरन् राष्ट्र की पहचान के रूप में प्रयोग में लाना चाहिए। उन्होंने परिषद् की राजभाषा पत्रिका "राजभाषा आलोक" के नवें अंक का भी विमोचन किया जिसमें परिषद् मुख्यालय व संस्थाओं में विगत वर्ष के दौरान राजभाषा संबंधी विभिन्न कार्यकलापों का सजीव चित्रण किया जाता है तथा कुछ उत्कृष्ट विज्ञान संबंधी आलेख भी प्रकाशित किए जाते हैं।

श्री अनिल कुमार उपाध्याय ने अपने अध्यक्षीय संबोधन में कहा कि प्रशासनिक कार्यों में हिंदी का प्रयोग बढ़ाया जाना चाहिए और सरल शब्दों का प्रयोग करना चाहिए। उन्होंने परिषद् के उन संस्थानों की भी सराहना की जो हिंदी गोष्ठियों, वैज्ञानिकों सम्मेलनों आदि का आयोजन कर रहें हैं। प्रशासनिक स्तर पर हिंदी को बढ़ावा देने पर विशेष जोर दिया। उन्होंने पुरस्कार विजेताओं को बधाई देते हुए कहा कि जो लोग इन प्रतियोगिताओं में अच्छा प्रदर्शन कर रहे हैं उन्हें अपने कार्यालयीन कार्य भी हिंदी में ही करना चाहिए तथा टिप्पणियां, प्रारूप आदि हिंदी में ही लिखने चाहिए।

महाप्रबंधक दूरसंचार का कार्यालय, मैसूर दूरसंचार जिला, जयलक्ष्मीपुरम, मैसूर

महाप्रबंधक दूरसंचार का कार्यालय, बी एस एन एल, मैसूर को वर्ष 2005–2006 के दौरान 'ग' क्षेत्र की शृंखला में राजभाषा के प्रगामी प्रयोग को बढ़ाने की दिशा में किए गए उत्कृष्ट कार्यों के लिए गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय दक्षिण, बैंगलूर द्वारा तृतीय पुरस्कार के लिए चयन किया गया व दिनांक 12 और 13 जनवरी, 2007 को कोचिन में आयोजित क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन में माननीय गृह राज्य मंत्री श्री माणिकराव एच. गावीत द्वारा एक भव्य समारोह में राजभाषा शील्ड व प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया। राजभाषा शील्ड व प्रशस्ति पत्र श्रीमती शशिकला, सहायक निदेशक (राजभाषा) द्वारा ग्रहण किया गया ।

भारतीय मात्स्यिकी सर्वेक्षण, पशुपालन, डेयरी एवं मात्स्यिकी विभाग, बोटावाला चैम्बर्स, सर पी. एम. रोड, मुम्बई–400001

साहित्यिक-सांस्कृतिक संस्था आशीर्वाद सन् 1969 से राजभाषा के प्रचार प्रसार का कार्य कर रही है। विगत 15 वर्षों से आशीर्वाद की ओर से महानगर मुम्बई में स्थित सभी केंद्रीय सरकार के कार्यालयों, सार्वजनिक उपक्रमों एवं राष्ट्रीयकृत बैंकों आदि में किए जा रहे हिंदी के काम-काज के आधार पर उन्हें आशीर्वाद समृति चिन्ह एवं आशीर्वाद चल वैजयन्ती पुरस्कार से सम्मानित भी किया जाता है। 24-11-2006 को 15वाँ आशीर्वाद राजभाषा पुरस्कार समारोह एवं सम्मेलन 2006 में आशीर्वाद संस्था द्वारा मुम्बई स्थित भारत सरकार के केंद्रीय कार्यालयों (छोटें) द्वारा राजभाषा हिंदी में सर्वाधिक काम-काज करने के लिए भारतीय मात्स्यिकी सर्वेक्षण का मुम्बई मुख्यालय को तृतीय पुरस्कार के रूप में आशीर्वाद समृति चिन्ह से सम्मानित किया गया है। इस संस्थान के विभागाध्यक्ष डॉ. वी. एस. सोमवंशी, महानिदेशक ने उक्त, पुरस्कार मुख्य अतिथि के हाथों प्राप्त किया।

इसके अतिरिक्त, 11 अक्तूबर 2006 को आयोजित 15वाँ अशीर्वाद राजभाषा सम्मेलन 2006 में भारत सरकार के कार्यालयों/उपक्रमों एवं बैंकों से हिंदी में उत्कृष्ट कार्य करने एवं उसके प्रचार-प्रसार में बहुमूल्य योगदान हेतु इस कार्यालय की श्रीमती मीरा वेल्लेन राजीव, क. हिंदी अनुवादक को आशीर्वाद स्मृतिं चिन्ह एवं प्रशस्ति पत्र से सम्मानित किया गया है। हिंदी के प्रचार-प्रसार की उपरोक्त अभिनव योजना प्रथम बार आयोजित की गई है।

पश्चिम रेलवे, मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय, कोठी कंपाउन्ड, राजकोट–360001

पुरस्कार वितरण समारोह एवं हास्य कवि सम्मेलन

पश्चिम रेलवे–राजकोट मंडल–राजभाषा विभाग द्वारा हिंदी सप्ताह वर्ष 2006 के दौरान आयोजित हिंदी वाक्, निबंध, भाषा शुद्धि पोस्टर, कहानी विस्तार, अनुवाद, गीतगायन, टंकण, पारिभाषिक शब्दावली, टिप्पण आलेखन, प्रश्नोत्तरी आदि 13 प्रतियोगिताओं के विजेताओं एवं गृह मंत्रालय की प्रोत्साहन पुरस्कार योजना के विजेताओं एवं हिंदी में अधिकाधिक व प्रशंसनीय कार्य करने वाले कर्मचारियों को दिनांक 24-11-2006 को सायं 7.00 बजे आयोजित पुरस्कार वितरण समारोह एवं हास्य कवि सम्मेलन में श्री पी. के. शर्मा, मंडल रेल प्रबंधक महोदय के करकमलों द्वारा पुरस्कार प्रदान किए गए।

नेशनल हाइड्रोइलैक्ट्रिक पावर कारपोरेशन लि. क्षेत्र-II बनीखेत, जिला-चम्बा (हि. प्र.)

श्री एम. के. रैना, कार्यपालक निदेशक, एनएचपीसी क्षेत्र-II "अतिविशिष्ट सम्मान" से पुरस्कृत

एनएचपीसी क्षेत्र-II कार्यालय, बनीखेत के कार्यपालक निदेशक एम. के. रैना को हिंदी भाषा, साहित्य व भारतीय संस्कृति को पुष्पित-पल्लवित करने में उल्लेखनीय योगदान देने हेतु देश की बहुप्रतिष्ठित संस्था अखिल भारतीय राष्ट्रभाषा विकास संगठन एवं यू.एस.एम. पत्रिका ने 14वें अखिल भारतीय हिंदी साहित्य समारोह में अतिविशिष्ट सम्मान से पुरस्कृत किया गया।

उक्त संस्था द्वारा यह पुरस्कार गाजियाबाद के हिंदी भवन में, 29 अक्तूबर 2006 को आयोजित एक भव्य समारोह में मॉरिशस के पर्यावरण एवं राष्ट्रीय विकास मंत्री श्री अनिल कुमार साहू ने भारत में मॉरिशस के उच्चायुक्त श्री मुकेश्वर चुन्नी एवं प्रसिद्ध शिक्षाविद्, साहित्यकार एवं पूर्व सांसद श्री रत्नाकर पांडेय की उपस्थिति में प्रदान किया। श्री रैना की ओर से यह पुरस्कार सम्मेलन में भाग लेने गए क्षेत्र-II कार्यालय, बनीखेत में कार्यरत श्री नानक चंद, प्रबंधक (राजभाषा) ने प्राप्त किया। दो दिन तक चले इस समारोह में देश के प्रबुद्ध साहित्यकारों, चिंतकों, शिक्षाविदों, समाज सेवियों, कवि/कवियत्रियों, लेखकों एवं हिंदी सेवियों ने भाग लिया।

गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण उप संस्थान (हिंदी टंकण/कंप्यूटर/आशुलिपि गहन प्रशिक्षण केंद्र)

विषय : **संघ सरकार के मंत्रालयों/विभागों तथा उनके नियंत्रणाधीन निगमों, सार्वजनिक क्षेत्रों, लोक उद्यमों, अभिकरणों आदि के कर्मचारियों के लिए दिनांक 10-01-2007 से 14-12-2007 तक चलाए जाने वाले हिंदी टंकण एवं आशुलिपि के पूर्णकालिक गहन प्रशिक्षण पाठ्यक्रम ।**

महोदय/महोदया,

केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान, भारत सरकार के मंत्रालयों, विभागों, उपक्रमों, बैंकों तथा अन्य कार्यालयों के कर्मचारियों के लिए अन्य पाठ्यक्रमों के साथ-साथ हिंदी टाइपलेखन और हिंदी आशुलिपि के पूर्णकालिक गहन प्रशिक्षण पाठ्यक्रम भी चलाता है।

2. केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण उप संस्थान, कोलकाता द्वारा चलाए जाने वाले हिंदी टाइपलेखन एवं हिंदी आशुलिपि के पूर्णकालिक गहन प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का वर्ष 2007 (कैलेण्डर वर्ष) का कार्यक्रम आपको आवश्यक कार्रवाई हेतु प्रेषित किया जा रहा है:–

क्र. सं.	प्रशिक्षण कार्यक्रम	प्रशिक्षण की अवधि	प्रशिक्षण की तिथियाँ	प्रशिक्षण केंद्र का नाम
1	2	3	4	5
01	हिंदी टाइपलेखन (कंप्यूटर पर)	40 कार्य दिवस	10-01-2007 से 09-03-2007 तक	केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण उप संस्थान (हिंदी टंकण/आशु. गहन प्रशिक्षण केंद्र) राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, कमरा नं.- 423 तीसरा तल,1, कौंसिल हाउस स्ट्रीट, कोलकाता-700 001
02	हिंदी टाइपलेखन (कंप्यूटर पर)	40 कार्य दिवस	12-03-2007 से 09-05-2007 तक	
03	हिंदी टाइपलेखन (कंप्यूटर पर)	40 कार्य दिवस	04-06-2007 से 27-07-2007 तक	
04	हिंदी आशुलिपि (टंकण कंप्यूटर पर)	80 कार्य दिवस	22-08-2007 से 14-12-2007 तक	

3. इन प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों में निम्नांकित कर्मचारी नामित किए जा सकते हैं:–

(क) प्रोबेशनर

(ख) उन स्थानों के कर्मचारी जहां हिंदी टंकण या आशुलिपि का कोई प्रशिक्षण केंद्र नहीं है।

(ग) शिफ्ट ड्यूटी पर काम करने वाले कर्मचारी।

(घ) अन्य कर्मचारी जिनके लिए कार्यालय यह समझते हैं कि उनको पूर्णकालिक प्रशिक्षण देना लाभदायक होगा।

4. ये पाठ्यक्रम पूर्णकालिक हैं और प्रशिक्षण के लिए कोई शुल्क नहीं लिया जाता। इन पाठ्यक्रमों की विषय वस्तु वही है जो हिंदी शिक्षण योजना के अंतर्गत निर्धारित है। प्रशिक्षण की अवधि में प्रशिक्षार्थी प्रात: 9.30 से सायं 6.00 बजे तक प्रशिक्षण केंद्र पर प्रशिक्षण प्राप्त करते हैं। पाठ्यक्रम के अंत में प्रशिक्षार्थियों की परीक्षा हिंदी शिक्षण योजना के परीक्षा स्कंध द्वारा ली जाती है। सफल प्रशिक्षार्थियों को प्रमाण-पत्र दिए जाते हैं। केंद्र सरकार के ऐसे कर्मचारी जो अधिक अंक प्राप्त करते हैं (टाइपलेखन में 90 प्रतिशत या अधिक और आशुलिपि में 88 प्रतिशत या अधिक) संबंधित नियमों के अधीन विहित शर्तें पूरी करने पर अपने कार्यालयों द्वारा नकद पुरस्कार के पात्र होंगे।

5. केंद्र सरकार के निगमों/उपक्रमों तथा राष्ट्रीयकृत बैंकों आदि को प्रति कर्मचारी 50 (पचास) रुपये की दर से

परीक्षा शुल्क देना होता है । परीक्षा शुल्क बैंक ड्राफ्ट द्वारा दिया जाएगा जो कि "उप निदेशक परीक्षा, हिंदी शिक्षण योजना, नई दिल्ली" के नाम से देय होगा।

6. केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण उप संस्थान, कोलकाता में प्रशिक्षार्थियों के लिए भोजन एवं आवास की सुविधा उपलब्ध नहीं है।

7. इन पाठयक्रमों के लिए अर्हताएं निम्न प्रकार है:–

(क) हिंदी टाइपलेखन

(1) सभी अवर श्रेणी लिपिकों एवं अंग्रेजी टंककों के लिए यह प्रशिक्षण अनिवार्य है।

(2) यू.डी.सी., हिंदी सहायकों एवं हिंदी अनुवादकों को भी स्वैच्छिक आधार पर नामित किया जा सकता है।

(3.) शैक्षणिक योग्यता:– हिंदी के साथ मैट्रिक या उसके समकक्ष अन्य परीक्षा जैसे प्राज्ञ आदि उत्तीर्ण हों । दिनांक 27–10–1980 के राजभाषा विभाग के कार्यालय ज्ञापन सं.–14016/17/988–रा.भा. (घ) के अनुसार हिंदी टंकण के प्रशिक्षण के लिए उन सभी कर्मचारियों को जिनकी शैक्षणिक योग्यता हिन्दी के साथ मिडिल अथवा समकक्ष परीक्षा जैसे प्रवीण आदि उत्तीर्ण हों, को भी प्रवेश दिया जा सकेगा।

(ख) हिंदी आशुलिपि

1. सभी वर्ग के आशुलिपिकों, पी.ए., सीनीयर पी.ए. के लिए यह प्रशिक्षण अनिवार्य है।

2. केक्षाओं में स्थान उपलब्ध होने पर ऐसे अवर श्रेणी लिपिकों/टाइपिस्टों, जो हिंदी शिक्षण योजना कि हिन्दी टाइप परीक्षा उत्तीर्ण हों तथा संबंधित कार्यालय यह प्रमाण–पत्र दे कि उनका यह प्रशिक्षण जनहित में है, को भी प्रवेश दिया जा सकता है।

3. शैक्षणिक योग्यता:–हिंदी के साथ मैट्रिक या उसके समकक्ष अन्य कोई परीक्षा जैसे प्राज्ञ आदि उत्तीर्ण हों।

8. प्रशिक्षण क्षमता का पूरा लाभ उठाया जा सके इसलिए केवल उन्हीं कर्मचारियों को नामित किया जाए, जिन्हें निश्चित रूप से प्रशिक्षण के लिए कार्यमुक्त किया जा सके। प्रशिक्षण के दौरान कर्मचारियों को लम्बी अवधि का अवकाश स्वीकृत करना संभव नहीं होगा। सत्र के दौरान कर्मचारियों को ऐसा स्थानान्तरण न किया जाए जिससे उसके प्रशिक्षण पर प्रतिकूल प्रभाव पड़े । पाठ्यक्रम में प्रवेश लेने के बाद किसी भी कर्मचारी को सत्र के मध्य से वापस बुलाने की अनुमति नहीं दी जाएगी।

9. आपसे अनुरोध है कि अपने प्रतिभागियों के नाम पाठ्यक्रम आरम्भ होने से कम–से –कम एक महीना पहले केंद्र के सहायक निदेशक, श्री जीतेन्द्र प्रसाद को भिजवा दें एवं उनके प्रवेश की पुष्टि प्राप्त होने पर ही उन्हें प्रशिक्षण के लिए भेजा जाए, पाठ्यक्रमों के लिए नामित कर्मचारियों को प्रशिक्षण आरम्भ होने के दिन प्रशिक्षण केन्द्र पर प्रातः 9.30 बजे उपस्थित होने के निर्देश भी दे दें परन्तु यदि किसी अवर श्रेणी लिपिक को आशुलिपिक पाठ्यक्रम के लिए नामित किया जाता है तो उनके प्रवेश की पुष्टि प्राप्त होने पर ही उन्हें प्रशिक्षण के लिए भेजा जाये।

10. पाठ्यक्रम में प्रवेश प्रथम आओ प्रथम पाओ के आधार पर दिया जाएगा।

स्टील अॅथारिटी ऑफ इण्डिया लिमिटेड
पूर्वी क्षेत्र, जीवन सुधा, 7वीं, 8वीं एवं 9वीं मंजिल, 42सी, जवाहरलाल नेहरू रोड, कोलकाता–700071

अनुवाद प्रशिक्षण

केंद्रीय विपणन संगठन के पूर्वी क्षेत्र ने राजभाषा कार्यान्वयन को दिशा देने और सुदृढ़ बनाने के लिए अपने कार्यालय में कर्मचारियों के लिए 5 दिवसीय संक्षिप्त अनुवाद प्रशिक्षण का आयोजन किया। इस की अवधि 16–10–06 से 20–10–06 तक रखी गई। इस प्रशिक्षण का संचालन केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो के अनुवाद विशेषज्ञों द्वारा किया गया। पूर्वी क्षेत्र के कार्मिक विभाग ने क्षेत्रीय कार्यालय, मुख्यालय एवं शाखाओं से कर्मियों का चयन किया और उन्हें प्रशिक्षित

महाप्रबंधक (विप-एफ पी) एवं क्षेत्रीय प्रबंधक/पूर्वी क्षेत्र श्री अनिल धवन ने इस प्रशिक्षण शिविर का उद्घाटन किया और कहा कि राजभाषा कार्यान्वयन की दिशा में हम ठीक दिशा में बढ़ रहे हैं। आने वाली बाधाओं को दूर करने का हम अपने स्तर पर भरपूर प्रयत्न कर रहे हैं। आपके लिए यह प्रशिक्षण एक टूल का काम देगा। हमें आप लोगों से बहुत आपेक्षाएं हैं। मैं चाहता हूं प्रगति। इसके लिए हम हर संभव सहायता करते हैं और करते रहेंगे, आप अपने कार्यालयों में रुचि लेकर तन्मयता से कार्य करेंगे। मुझे आशा है कि इस प्रशिक्षण के बाद आपको अनुवाद के लिए दूसरों की ओर नहीं देखना होगा तथा अनुवाद हेतु शाखा का कार्य नहीं रुकेगा।

उ.म.प्र. (का व प्र) श्रीमति चन्दना बनर्जी ने कहा हम ऐसे प्रशिक्षण की आवश्यकता महसूस कर रहे हैं। हमारे कार्यालय के प्रबंधक (हिंदी) ने इसे साकार किया है आप सभी यहां मौजूद संकाय सदस्यों का लाभ उठाएं। इस शिविर में संकाय सदस्य के रूप में डा. चैन पाल सिंह, अनुवाद अधिकारी एवं श्री सतीश पांडे, प्रभारी कोलकाता केंद्र, अनुवाद ब्यूरो ने अपना सक्रिय योगदान दिया।

(पृष्ठ 30 का शेष)

रही हैं फिर भी उन्होंने भगवत्प्रेम संबंधी अपनी लेखन शैली की जो छाप हमारे हृदय पर छोड़ी है, हिंद महासागर प्रशान्त महासागर व अरब सागर का समूचा पानी भी धो या मिटा नहीं सकता । कृष्ण प्रेम संबंधी उनके कुछ पंद इस प्रकार हैं :–

(क) कृष्ण मुख हेतु मात्र कृष्णोर सम्बन्ध

(ख) यार देख तारे कहैं कृष्ण उपदेश ।

(ग) कृष्णोन्द्रिय प्रीति इच्छा तार नाम प्रेम ।

भक्त प्रवर नरसी जी

भक्तराज नरसी जी का भग्तप्रेम निरंतर प्रवाहमान है :–

(क) वाके भय निकट न आवे जो श्री कृष्ण-गोविन्द है गाता ।

कवि ब्रह्मानंद

इनके गीत और पद आज भी गाए जा रहे हैं । इन्होंने भगत्प्रेम में रमकर जन साधारण को इस प्रकार चेताया है :–

हरि नाम समर सुख धाम जगत में जीवन दो दिन का

ब्रह्मानंद भजन कर वंदे भंज नाम निरंजन का

कवि दरिया जी

इनका भगवत्प्रेम इस प्रकार है :–

(क) राम नाम नहीं हृदय धारा जैसा पशु तैसा नर

(ख) जिहिं बंदे ने राम न ध्याया, सो पशु सम जन्म गंवाया ।

(ग) आदि अन्त मेरा है राम, उन बिन और सकल बेकाम ।

(घ) राम बिना दुखिया, राम संग सुखिया ।

संत कवि नारायण

इन्होंने अपनी वाणी में भगवत्प्रेम की बात कुछ इस प्रकार व्यक्त की है :–

(क) हरि सों प्रति लगाय ले, का करे सोंच-विचार ।

(ख) प्रेम हरि को करत है प्रेमी के अधीन ।

उक्त वर्णित संतो के अतिरिक्त वारकरी संत, पलटू साहब, संत दादू, संत क्षदेय, संत सरमद जी, संत ज्ञानेश्वर, गोरा कुम्हार, जनाबाई, कान्होपात्रा, जगन्नाथ रत्नाकर, तुकाराम, बुद्धिसेन, दीन दरवेश, महात्मा चरणदास व उनकी शिष्या दयाबाई तथा सहजो बाई, मैथिल कोकिल कवि विद्यापति की अनुवर्तिनी, स्नेहलता, जायसी, घनानंद, नरसी मेहता एवं रविदास आदि अनेक संतों ने भी भगवत्प्रेम के बारे में जी खोलकर वर्णन किया है । नि:सन्देह हिंदी साहित्य उक्त सभी संतों का आजीवन ऋणी रहेगा । इनके बारे में और अधिक लिखना सचमुच सूर्य को ही दीपक दिखाना है । इस लेखनी में इतनी सामर्थ्य कहाँ कि यह व्यक्त कर सके इन सभी संतों के भगवत्प्रेम का खुलकर वर्णन ।

पाठकों के पत्र

राजभाषा भारती अंक 111 में जिन लेखकों द्वारा हिंदी साहित्यिक, शैक्षणिक इत्यादि विषयों पर अपने विचार प्रस्तुत किए हैं वे सराहनीय हैं । मैं इस पत्रिका की सफलता के लिए संपादक–मंडल को बहुत-बहुत शुभकामनाएं देता हूं।

–एस. बी. पटियाल, उप सचिव (राजभाषा) दादरा एवं नगर हवेली सिलवासा

राजभाषा भारती अंक 113 को पढ़ने के पश्चात् पता चला कि आपने देशभर में स्थित केंद्र सरकार के विभिन्न कार्यालयों की राजभाषा कार्यान्वयन से संबंधित रिपोर्ट अपनी पत्रिका में प्रकाशित कर निसंदेह राजभाषा के प्रचार-प्रसार की दिशा में एक प्रशंसनीय एवं सराहनीय कार्य किया है। इसके साथ ही पत्रिका में प्रकाशित साहित्यिक आलेख पठनीय एवं ज्ञानवर्धक है। इससे पाठक व केंद्रीय कार्यालयों के कर्मचारीगण न केवल लाभांवित होंगे बल्कि उनमें राजभाषा हिंदी के अनुपालन की दिशा में कार्य करने में एक नई चेतना जाग्रत होगी

–एन. एन. अढ़िया, अनुभाग अधिकारी, राष्ट्रीय व्यावसायिक स्वास्थ्य संस्थान, पी. वी. 2031, मेघानी नगर, अहमदाबाद–380016

राजभाषा भारती त्रैमासिक पत्रिका अत्यंत सुंदर एवं स्तरीय है तथा विभिन्न वर्गों के अंतर्गत इसमें सम्मिलित लेख, राजभाषा समाचार एवं अन्य सामग्री उत्कृष्ट है एवं ये सभी मिलकर पत्रिका की सुदंरता को बढ़ाते है। आरंभ से ही इस पत्रिका ने न केवल अपना स्तर बनाएं रखा है अपितु इसमें निरंतर वृद्धि ही की है तथा अपने लिए प्रतिष्ठित शब्द को विशेषण के रूप में अर्जित किया है।

–डॉ. श्याम नारायण मिश्र, वरिष्ठ हिंदी अधिकारी, केंद्रीय इलेक्ट्रॉनिकी अभियांत्रिकी अनुसंधान संस्थान, पिलानी–333031.

राजभाषा भारती अंक 114 का अध्ययनोपरांत गृह मंत्रालय का राजभाषा हिंदी के प्रति पूर्ण समर्पित आदरभाव से अत्यंत हार्दिक प्रसन्नता का अनुभव हुआ। पत्रिका में मुद्रित एवं प्रकाशित अधिकतर लेख राजभाषा हिंदी की प्रगति को पूर्णतया समर्पित हैं एवं हिंदी भाषा की समस्त विधाओं की सारगर्भित करते हैं। पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं विकास की समस्त शुभकामनाओं सहित।

–संगीता श्रीवास्तव, सहायक प्रबंधक (राजभाषा), भारतीय अक्षय ऊर्जा विकास संस्था सीमित भारत पर्यावास केंद्र, कोर-4ए, ईस्ट कोर्ट, प्रथम तल, लोदी रोड, नई दिल्ली–110003

राजभाषा भारती अंक 114 में उपयोगी सामग्री है। "हिंदी अधिकारी के अनुभव" (स्वयं प्रकाश) में दिए गए सुझाव विचारणीय है। डॉ. दल सिंगार यादव का आलेख शोध परक है।

पत्रिका के सभी स्तंभ रोचक व पठनीय है।

–कैलाश चंद्र भाटिया, नंदन, भारती नगर, अलीगढ़–202001,

राजभाषा भारती अंक 114 मिला। पत्रिका के प्रकाशन की यह उन्नतिशील पहल है। हमारी शासन की भाषा एवं संपर्क भाषा हिंदी का प्रसार निरंतर हो रहा है, बोलने वालों की संख्या में निरंतर वृद्धि हो रही है। शिलांग के निवासी भी हिंदी सीखने के प्रति सजग हैं। हिंदी भाषा के प्रसार का यह स्वर्णिम युग है। पत्रिका के विषय अत्यंत सराहनीय एवं काबिले तारीफ है। इसमें प्रकाशित लेख प्रेरणादायक एवं ज्ञानवर्धक हैं।

–शिरीष अवस्थी, पी–37/2, अपर शिलांग, नागलियर, शिलांग, मेघालय–793009

राजभाषा भारती अंक 114 में राजभाषा की प्रगति संबंधी समस्त गतिविधियों की सविस्तार जानकारी समेकित है। डॉ. दल सिंगार यादव के आलेख में परसर्गों तथा विशेषणों की भूमिका एवं अनुवाद में तद्जनित अर्थ–परिवर्तन पर विद्वतापूर्ण प्रकाश डाला गया है, जो लेखक के विशद् व्याकरणिक ज्ञान एवं गहन शब्द–कोशीय अध्ययन का द्योतक है। इसके अतिरिक्त चिंतन, साहित्यिकी, संस्मरण, प्रबंधन, पत्रकारिता आदि स्तम्भों के अंतर्गत सम्मिलित लेख सूचनाप्रद ही नहीं ज्ञानवर्धक भी है।

इस सुरूचिपूर्ण उत्तम पत्रिका के संपादनार्थ मेरा साधुवाद स्वीकार करें।

–डॉ. अचलानंद जखमोला, 290/II, वंसत विहार, देहरादून–248006

राजभाषा भारती अंक 114 में संपादकीय की जगह मदन लाल गुप्त का लेख 'रंक से राजा एक न हुआ' आंखें खोलने के लिए पर्याप्त है। अपूर्वा जी ने माखन लाल चतुर्वेदी के कथाकार रूप से परिचय कराया, बहुत भाया। स्वयं प्रकाश का अनुभव भी दिलचस्प है। प्रो. शशिकांत पशीने 'शाकिर' ने शब्दों के अर्थ बहुत सुंदर ढंग से खोले हैं। कुल मिलाकर यह अंक सुव्यवस्थित एवं सुसंपादित है। बधाई स्वीकारें।

–ललन चतुर्वेदी, केंद्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, पिस्का नगड़ी रांची–835303

राजभाषा भारती अंक 114 बहुत अच्छा लगा। सभी रचनाएं सराहनीय हैं। खासकर मेरे जैसे पंजाबी लेखकों के लिए, जो अपनी रचनाओं का हिंदी भाषा में ठीक-सा अनुवाद देखना चाहते हैं। प्रो. शशिकांत पशीने "शाकर" जी का निबंध ज्ञानवर्धक एवं प्रेरणादायक है।

–शिवनाथ, 1257, सी–एल. आई. जी. फेस–10, मोहाली–160062

त्रैमासिक हिंदी पत्रिका "राजभाषा भारती" का 114वां अंक में समाहित सभी रचनाऐं रोचक, ज्ञानवर्द्धक और सारगर्भित तो हैं ही, अन्य रचनाऐं भी राजभाषा के प्रचार-प्रसार में सहायक सिद्ध होंगी। श्री मदन लाल गुप्ता का अग्रलेख "रंक से राजा एक न हुआ" समाज में व्याप्त अंधविश्वासों पर कड़ा व्यंग्य है जिसका विकल्प शिक्षा, चरित्र निर्माण और सात्विक कर्म में ही निहित है।

चिंतन के अन्तर्गत श्री पी. के. मिश्रा का लेख "राष्ट्रभाषा या राजभाषा" और श्री स्वयं प्रकाश का लेख "एक हिन्दी अधिकारी के अनुभव" विचारोत्तजक हैं। अपूर्वा बनर्जी का आलेख "पंडित माखन लाल चतुर्वेदी" तथा श्री अरविंद कुमार सिंह "देहाती सरोकार से कितना जुड़ा है मीडिया" बेहद प्रशंसनीय है।

ऐसी ज्ञानवर्द्धक सामग्री के प्रस्तुतिकरण के लिए संपादक मण्डल को हार्दिक बधाई। पत्रिका के उत्तरोतर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाऐं।

–डी. के. माथुर, कल्याण अधिकारी/रा.भा. कक्ष, भारतीय लेखा तथा लेखा परीक्षा विभाग
महालेखाकार (लेखा व हक) राजस्थान, जयपुर

राजभाषा भारती अंक 113 में राजभाषा के कार्यान्वयन में पत्रिका सवल अवलंबन है, तथा इनमें सभी लेख प्रेरणादायी हैं। इस पत्रिका के माध्यम से केंद्रीय कार्यालयों/संस्थानों में किए जाने वाले कार्यों की जानकारी मिलती है।

–सीताराम शर्मा, हिंदी अधिकारी, श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, खान सुरक्षा महानिदेशालय, धनबाद

राजभाषा भारती पत्रिका में प्रकाशित चिंतन, साहित्यिकी, पुरानी यादें, तकनीकी, संस्कृति, पत्रकारिता एवं विविधा सभी स्तंभ परखने योग्य है तथा राजभाषा हिंदी प्रयोग के लिए परिवेश तैयार करने में पूर्णरूप से समर्थ है। पत्रिका से जुड़े तमाम रचनाकारों से मेरी यह अभिलाषा है कि आप अपने सफलतम योगदान से हिंदी की गरिमा एवं कृति को रोशन करते रहें।

–अशोक कुमार सिंह, प्रभारी (तकनीकी/राजभाषा) विभाग, नागालैंड पल्प एवं पेपर कंपनी,
लि. पो. पेपर नगर जिला : मोकोकचुंग, नागालैंड–798623

राजभाषा भारती से पाठकों को विविध विधाओं की जानकारी प्राप्त होती है जिससे उनके ज्ञान के क्षेत्र में विस्तार हो रहा है। केंद्रीय कार्यालयों/उपक्रमों/निगमों में हो रही राजभाषा की गतिविधियों एवं प्रगति को भी जानकारी पत्रिका से मिल रही है।

ऐसी आकर्षक व उपादेय सामग्री से भरपुर पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिंदी को अपनी मंजिल पर पहुचने में प्रर्याप्त सफलता मिल रही है।

–गजानंद गुप्त, मंत्री, राष्ट्रभाषा प्रचार परिषद 19-3-946 शमशीरगँज, हैदराबाद–500053

राजभाषा भारती में चिह्नित लेख "एशिया में भी सुरक्षित हैं हमारे शब्द", भारतीय लोकतंत्र में सूचना के अधिकार की महत्ता, भारतीय संविधान की निर्माण कथा आदि विषय नवीनतम शोध-सामग्री समाहित किए हुए है। अच्छा हो यह कृति भारत के दूरवर्ती उत्तर, दक्षिण, पूर्व और पश्चिमी इलाकों के कार्यालयों तक भी उपलब्ध कराई जाए तभी भारतीय मानचित्र की भाँति राजभाषा का फैलाव संभव हो सकेगा।

–त्रिरत्न देव, सहायक निदेशक, क्षेत्रीय कार्यालय, कर्मचारी राज्य बीमा निगम
पंचदीप भवन, 143, स्टर्लिंग रोड, चेन्नै–600034

MGIPRRND—2432 HA/2007—4000

आकाशवाणी चेन्नई द्वारा आयोजित राजभाषा संगोष्ठी में अभिभाषण देते हुए केंद्र निदेशक, श्री के. श्रीनिवास राघवन

महानिदेशालय, भा.ति.सी.पु.बल में हिंदी कार्यशाला के प्रमाणपत्र वितरण समारोह में मुख्य अतिथि श्री सत्य व्रत त्यागी, उप महानिरीक्षक (अभियंता) प्रशिक्षार्थियों को प्रमाणपत्र एवं सहायक साहित्य प्रदान करते हुए ।

पं. सं. 3246/77
आई एस एम एन 0970-9398

वार्षिक कार्यक्रम

राजभाषा संकल्प, 1968 के अनुपालन में राजभाषा हिंदी के प्रसार और विकास की गति बढ़ाने के लिए तथा संघ के विभिन्न राजकीय प्रयोजनों में इसके प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए राजभाषा विभाग प्रतिवर्ष एक वार्षिक कार्यक्रम जारी करता है । वर्ष 2007-08 का वार्षिक कार्यक्रम इसी क्रम में जारी किया जा रहा है ।

सरकारी काम-काज में हिंदी के प्रगामी प्रयोग के क्षेत्र में प्रगति हुई है, किंतु अब भी लक्ष्य प्राप्त नहीं किए जा सके हैं । सरकारी कार्यालयों में हिंदी का प्रयोग बढ़ा है किंतु अभी भी बहुत सा काम अंग्रेजी में हो रहा है । लक्ष्य यह है कि सरकारी कामकाज में मूल टिप्पण और प्रारूपण के लिए हिंदी का ही प्रयोग हो । यही संविधान की मूल भावना के अनुरूप होगा । कहने की आवश्यकता नहीं कि जनता की भाषा में सरकारी कामकाज करने से विकास की गति तेज होगी और प्रशासन में पारदर्शिता आएगी ।

वार्षिक कार्यक्रम के संबंध में निम्नलिखित बिंदु विशेष रूप से विचारणीय हैं :-

- यह जरूरी है कि संसदीय राजभाषा समिति की रिपोर्ट के सात खंडों पर जारी किए गए राष्ट्रपति के आदेशों का मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों द्वारा अनुपालन किया जाए ।
- कंप्यूटर, ई-मेल, वेबसाइट सहित उपलब्ध सूचना प्रौद्योगिकी सुविधाओं का अधिक से अधिक उपयोग करते हुए हिंदी में काम को बढ़ाया जाए ।
- संबंधित विभाग वैज्ञानिक व तकनीकी साहित्य हिंदी में छपवाकर उसे जनसाधारण के उपयोग हेतु उपलब्ध करवाने के लिए आवश्यक उपाय करें ।
- हिंदी, हिंदी टंकण/आशुलिपि संबंधी प्रशिक्षण कार्य में तीव्रता लाएं ताकि तत्संबंधी लक्ष्यों को निर्धारित समय-सीमा में प्राप्त किया जा सके ।
- राजभाषा कार्य से संबंधित अधिकारियों को विभाग के समस्त कार्यकलापों से परिचित कराया जाना आवश्यक है; जिससे कि वे अपने दायित्व अधिक अच्छी तरह निभा पाएं ।
- मंत्रालय/विभाग अपने विषयों से संबंधित संगोष्ठियां हिंदी माध्यम में आयोजित करें ।
- संघ की राजभाषा नीति का आधार प्रेरणा और प्रोत्साहन है, किंतु राजभाषा संबंधी अनुदेशों का अनुपालन दृढ़तापूर्वक किया जाना चाहिए । जानबूझकर राजभाषा संबंधी आदेशों की अवहेलना के लिए मंत्रालय/विभाग अनुशासनात्मक कार्रवाई करने पर विचार कर सकते हैं ।

सचिव, भारत सरकार,
राजभाषा विभाग,
गृह मंत्रालय

मार्च, 2007

भारत सरकार, राजभाषा विभाग (गृह मंत्रालय), लोकनायक भवन, नई दिल्ली-110003 के लिए शान्ति कुमार स्याल द्वारा प्रकाशित तथा प्रबंधक, भारत सरकार मुद्रणालय, रिंग रोड, मायापुरी, नई दिल्ली-110064 द्वारा मुद्रित ।